मेरी भाषा मेरी पहचान

(हिंदी व्याकरण)

शिक्षक-संदर्शिका

(कक्षा – 6, 7 एवं 8 के लिए)

मैक्स एजुकेशनल पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड

मुख्य कार्यालय : एल-52, विजय विहार, फेस-2, सेक्टर-4, रोहिणी, दिल्ली-110085
कार्यालय : डी-16/293, सेक्टर-7, रोहिणी, दिल्ली-110085
दूरभाष : 9891303888, 9212303888, 8929283707, 8929283708

प्रकाशक :
विक्रम गुप्ता

मैक्स एजुकेशनल पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड

मुख्य कार्यालय : एल-52, विजय विहार, फेस-2, सेक्टर-4, रोहिणी, दिल्ली-110085
कार्यालय : डी-16/293, सेक्टर-7, रोहिणी, दिल्ली-110085
दूरभाष : 9891303888, 9212303888, 8929283707, 8929283708
ई-मेल : info@maxeducationalpublishers.com
वेबसाइट : www.maxeducationalpublishers.com

प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फ़ोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग व प्रसारण वर्जित है।

Disclaimer :

Every effort has been made to avoid errors or omissions in this publication. In spite of this, some errors might have crept in. Any mistake, error or discrepancy noted may be brought to our notice which shall be taken care of in the next edition. It is notified that neither the publisher nor the author or seller will be responsible for any damage or loss of action to any one, of any kind, in any manner, therefrom.

For binding mistakes, misprints or for missing pages, etc., the publisher's liability is limited to replacement within one month of purchase by similar edition. All expenses in this connection are to be borne by the purchaser.

All disputes are subject to Delhi Jurisdiction only.

Layout & Designed : Pahuja Graphix

मुद्रक : .....

विषय-सूची

1. मेरी भाषा मेरी पहचान, भाग-6 3–72
2. मेरी भाषा मेरी पहचान, भाग-7 73–148
3. मेरी भाषा मेरी पहचान, भाग-8 149–256

1. भाषा, लिपि, बोली और व्याकरण

बोलने की बारी

(क) 'भाषा' शब्द संस्कृत की 'भाष्' धातु से बना है, जिसका अर्थ होता है–अपनी बात को बोलकर व्यक्त करना। हमें विचारों के आदान-प्रदान के लिए भाषा की आवश्यकता पड़ती है।

(ख) भाषा के तीन रूप होते हैं–मौखिक, लिखित और सांकेतिक।

(ग) मातृभाषा की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि बच्चा इसे अपने परिवार के लोगों से स्वयं ही सीख जाता है।

(घ) किसी सीमित क्षेत्र में या स्थान पर भाषा का जो प्रचलित रूप होता है, उसे 'बोली' कहते हैं।

(ङ) भाषा को लिखित रूप प्रदान करने के लिए प्रयोग किए जाने वाले ध्वनि-चिह्नों को 'लिपि' कहा जाता है।

(च) जिस शास्त्र के द्वारा हम भाषा को शुद्ध रूप में बोलना, पढ़ना और लिखना सीखते हैं, उसे 'व्याकरण' कहते हैं।

लिखने की बारी

1. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✗
2. हिंदी – देवनागरी, फ्रांसीसी – रोमन, अंग्रेज़ी – रोमन
   उर्दू – फ़ारसी, बांग्ला – बांग्ला, पंजाबी – गुरुमुखी
3. (क) मौखिक (ख) मौखिक (ग) लिखित (घ) लिखित (ङ) लिखित
4. (क) लिपि (ख) क्षेत्रीय (ग) मातृभाषा (घ) मौखिक (ङ) हिंदी दिवस
5. (क) विचारों एवं भावों को बोलकर, लिखकर प्रकट करने के माध्यम को 'भाषा' कहते हैं।
   (ख) किसी भी भाषा को लिखने के लिए जिन ध्वनि-चिह्नों को प्रयोग किया जाता है, उसे 'लिपि' कहते हैं।
   (ग) जो भाषा शिक्षित समाज, विद्वान वर्ग एवं सरकारी काम-काज में प्रयोग की जाती है, उसे 'मानक भाषा' कहते हैं।
   (घ) यह भाषा का स्थायी रूप है। लिखित भाषा से हम अपने भावों एवं विचारों को अनंत काल के लिए सुरक्षित रख सकते हैं।

खेलने की बारी

(क) कश्मीरी (ख) गुजराती (ग) असमिया (घ) पंजाबी (ङ) बांग्ला (च) तमिल (छ) मलयालम (ज) मराठी

2. वर्ण-विचार

बोलने की बारी

(क) वह छोटी-से-छोटी ध्वनि जिसके और टुकड़े न किए जा सकें, उसे 'वर्ण' कहते हैं।

(ख) जिन वर्णों का उच्चारण स्वरों की सहायता से किया जाता है तथा उच्चारण के समय हवा मुँह के विभिन्न भागों को छूकर या टकराकर बाहर निकलती है, उन्हें 'व्यंजन' कहते हैं।

(ग) किसी ध्वनि को बोलने की प्रक्रिया को 'उच्चारण' कहते हैं और शब्दों को लिखने के निश्चित तरीके को 'वर्तनी' कहते हैं।

(घ) अशुद्ध उच्चारण के कारण वर्तनी में अशुद्धियाँ पाई जाती हैं।

लिखने की बारी

1. (क) बालक – ब् + आ + ल् + अ + क् + अ
   (ख) मनोहर – म् + अ + न् + ओ + ह् + अ + र् + अ
   (ग) विद्यालय – व् + इ + द् + य् + आ + ल् + अ + य् + अ
   (घ) क्षत्रिय – क् + ष् + अ + त् + र् + इ + य् + अ
   (ङ) फूलवाला – फ् + ऊ + ल् + अ + व् + आ + ल् + आ
2. क्ष – क्षत्रिय, क्षेत्र, क्षीण त्र – त्रेता, त्राण, त्रिभुज
   ज्ञ – ज्ञान, ज्ञात, ज्ञेय श्र – श्रम, श्रमिक, श्रेय
3. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✓
4. (क) वर्णों (ख) ह्रस्व (ग) सात (घ) क्ष (ङ) अनुस्वार
5. गाँव, बंदर, पाँव, आँख, हंस, छाँव, मयंक, गंगा, दाँत, चाँदनी, आँधी, संगम, अंगूर, काँच, साँप
6. (क) कोयल (ख) हिमालय (ग) सुरेश (घ) नवोदय (ङ) क्षत्रिय
7. (क) वह छोटी-से-छोटी ध्वनि जिसके और टुकड़े न किए जा सकें, उसे 'वर्ण' कहते हैं। इसके दो भेद हैं–स्वर एवं व्यंजन।
   (ख) बिना किसी अन्य ध्वनि की सहायता से जिनका उच्चारण होता है, उन्हें 'स्वर' कहते हैं; जैसे–अ, आ, ई आदि।

(ग) जिन वर्णों का उच्चारण स्वर की सहायता से किया जाता है तथा उच्चारण के समय हवा मुँह के विभिन्न भागों को छूकर या टकराकर बाहर निकलती है, उन्हें 'व्यंजन' कहते हैं।

(घ) श्रमिक, त्रेता, क्षमा, क्षत्रिय, ज्ञान, क्षण

(ङ) आगत स्वर 'ऑ' है। यह अंग्रेज़ी भाषा से आया है। नुक्ता वाले व्यंजन आगत व्यंजन होते हैं। आगत व्यंजन अंग्रेज़ी तथा अरबी-फ़ारसी भाषा से आए हैं; जैसे– ज़, फ़।

खेलने की बारी

(क) मकान – दुकान, समान

(ख) मेला – ठेला, केला

(ग) खीर – पीर, धीर

(घ) सेब – जेब, ऐब

(ङ) गाड़ी – साड़ी, खाड़ी

सोचने की बारी

- बच्चे स्वयं करेंगे।
- विसर्ग ध्वनि का उच्चारण 'ह' के समान होता है।
- शब्द-ज्ञान बढ़ाने के लिए शब्द-रचना के खेल खेलने चाहिए।

3. संधि

बोलने की बारी

(क) दो समीपवर्ती ध्वनियों के मेल को 'संधि' कहते हैं और ध्वनि के आधार पर शब्दों को अलग करने की प्रक्रिया 'संधि-विच्छेद' कहलाती है; जैसे–एक + एक = एकैक; नरेंद्र = नर + इंद्र।

(ख) दो शब्दों का मेल होने पर पहले शब्द के अंतिम वर्ण में जो बदलाव आता है, उसे 'संधि' कहते हैं; जैसे–गै + न = गायन।

(ग) वर्णों को पूर्व स्थिति में कर देना 'संधि-विच्छेद' कहलाता है।

(घ) संधि के तीन भेद हैं–स्वर संधि, व्यंजन संधि और विसर्ग संधि।

(ङ) दो स्वरों के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है, उसे 'स्वर संधि' कहते हैं।

लिखने की बारी

1. (क) वर्णों (ख) मेल (ग) दिगंबर

   (घ) विसर्ग (ङ) स्वर

2. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✓
(घ) ✗ (ङ) ✓

3. (क) रमेश – रमा + ईश (ख) शिवालय – शिव + आलय
(ग) एकैक – एक + एक (घ) नागेंद्र – नाग + इंद्र
(ङ) चंद्रोदय – चंद्र + उदय (च) परोपकार – पर + उपकार
(छ) नयन – ने + अन (ज) स्वागत = सु + आगत

4. (क) दो समीपवर्ती ध्वनियों के मेल से उत्पन्न विकार को 'संधि' कहते हैं; जैसे–विद्या (आ) + आ (आलय) – आ + आ = आ – विद्यालय।

(ख) स्वर संधि के पाँच भेद हैं–दीर्घ संधि, गुण संधि, वृद्धि संधि, यण संधि और अयादि संधि। यहाँ तीन भेदों का वर्णन किया गया है–

दीर्घ संधि – गिरि (इ) + (ई) ईश – गिरीश – इ + ई = ई

गुण संधि – महा (आ) + (ई) ईश – महेश – आ + ई = ए

वृद्धि संधि – जल (अ) + ओ (ओध) जलौध – अ + ओ = औ

(ग) जब स्वर और व्यंजन के मेल से विकार उत्पन्न होता है, वहाँ 'व्यंजन संधि' होती है; जैसे–अनु + छेद – अनुच्छेद, उत् + नति – उन्नति।

(घ) जब विसर्ग के बाद स्वर या व्यंजन के मेल से विकार उत्पन्न होता है, तो वहाँ 'विसर्ग संधि' होती है; जैसे–मनः + रंजन – मनोरंजन।

खेलने की बारी

(क) भोजनालय (ख) विद्यालय (ग) पवन (घ) मेघालय (ङ) विद्यार्जन (च) सूक्ति

4. शब्द-विचार

बोलने की बारी

(क) वर्णों के सार्थक एवं व्यवस्थित समूह को 'शब्द' कहते हैं; जैसे–कि + ता + ब – 'किताब' शब्द है।

(ख) शब्दों का वर्गीकरण चार आधारों पर किया गया है–उत्पत्ति या स्रोत के आधार पर, रचना के आधार पर, प्रयोग के आधार पर और अर्थ के आधार पर।

(ग) उत्पत्ति के आधार पर शब्दों को चार भागों में बाँटा गया है–तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशी शब्द।

(घ) रचना या बनावट के आधार पर शब्द तीन प्रकार के हैं–रूढ़ शब्द, यौगिक शब्द, योगरूढ़ शब्द।

(ङ) अर्थ के आधार पर शब्दों के दो भेद हैं–सार्थक शब्द, निरर्थक शब्द।

सार्थक शब्द–पानी, पूड़ी। निरर्थक शब्द–वानी, सूड़ी।

लिखने की बारी

1. (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✗ (ङ) ✓

2. (क) चार (ख) संस्कृत (ग) सार्थक (घ) संज्ञा

3. रूढ़ शब्द – युद्ध, घर
   यौगिक शब्द – गुणहीन, पौधशाला
   अनेकार्थी – अंक, बाल
   एकार्थी – कलम, पुस्तक
   समानार्थी – आकाश, नभ, व्योम
   विपरीतार्थी – रात × दिन, सुबह × शाम

4.

तत्सम	**तद्भव**	**तत्सम**	**तद्भव**
हस्ति	हाथी	यमुना	जमुना
हस्त	हाथ	क्षेत्र	खेत
कर्ण	कान	गृह	घर
नासिका	नाक	उद्यान	उपवन
कृष्ण	किशन		

5. रूढ़ – झंडा, रस्सी, घोड़ा, पेड़, आदमी
   यौगिक – विद्यालय, पुस्तकालय, रसोईघर, पाठशाला, प्रधानमंत्री
   योगरूढ़ – नीलकंठ, गजानन, त्रिलोचन, दशानन, हिमालय

6. देशज शब्द – पगड़ी, पेट, खिड़की, टमाटर, ठेला।
   विदेशज शब्द – पाजामा, ड्राइवर, मास्टर, रेल, इम्तिहान

7. (क) वर्णों के सार्थक एवं व्यवस्थित समूह को 'शब्द' कहते हैं।

   (ख) जब कोई शब्द व्याकरण के नियमों के अनुसार वाक्य में प्रयुक्त होता है तो 'पद' बन जाता है; जैसे–'कमल' शब्द है।

   तालाब में **कमल** खिले हैं। यहाँ कमल 'पद' है।

   (ग) जो शब्द निश्चित अर्थ के लिए प्रसिद्ध हो गए हैं और उनके खंड करने पर कोई अर्थ प्राप्त नहीं होता, उन्हें 'रूढ़ शब्द' कहते हैं; जैसे–घर, बाग।

(घ) दो या दो से अधिक शब्दों या शब्दांशों के मिलने से बनने वाले 'यौगिक शब्द' कहलाते हैं; जैसे–पौधशाला, मातृदर्शन आदि।

(ङ) संस्कृत भाषा से उत्पन्न वे शब्द जो पाली, अपभ्रंश, प्राकृत से होते हुए हिंदी में आए हैं, वे तद्भव शब्द कहलाते हैं; जैसे–कोयल, खेत आदि।

(च) टिकट, पाजामा, साइकिल, फ़न, हुनर।

खेलने की बारी

अमरूद → इनाम → कमल → चाबी → झरना → टमाटर → डमरू → तेल → थाली → दीवार → धनवान → नदी → बंदर → भारत → मछली → लड़का

सोचने की बारी

यदि आज भी हम तत्सम शब्दों का प्रयोग कर रहे होते तो कम शिक्षित लोग हमारी बातों को न समझ पाते।

5. शब्द-भंडार

1. पर्यायवाची शब्द

बोलने की बारी

(क) जिन शब्दों से एक जैसे अर्थ का बोध होता है, उन्हें 'पर्यायवाची शब्द' कहते हैं।

(ख) पर्यायवाची शब्दों को 'समानार्थी शब्द' के नाम से भी जाना जाता है।

(ग) झंडा – ध्वज, पताका, निशान; तलवार – असि, खड्ग, कृपाण।

लिखने की बारी

1. (क) समानार्थी (ख) नदी (ग) कमल (घ) फूल (ङ) बादल
2. (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✓
3. (क) पक्षी (ख) शंकर (ग) फूल (घ) पेड़ (ङ) नदी
4. जल – पानी, वारि
   पक्षी – खग, विहग
   फूल – सुमन, कुसुम
   भाई – सहोदर, बंधु
   घर – गृह, गेह
   पथ – मार्ग, रास्ता
   बादल – जलद, वारिद
   वस्त्र – अंबर, कपड़ा

5. (क) जिन शब्दों से एक जैसे अर्थ का बोध होता है, उन्हें 'पर्यायवाची शब्द' कहते हैं; जैसे– घर – आवास, गेह।

(ख) पर्यायवाची शब्द को 'समानार्थी शब्द' भी कहते हैं।

खेलने की बारी

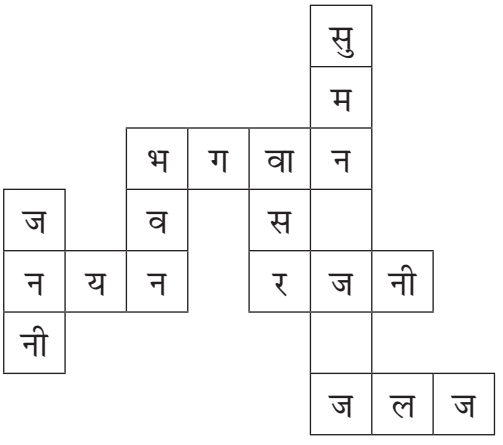

सोचने की बारी

तालाब – **सरोवर** का जल स्वच्छ है। वह **पोखर** बहुत सुंदर है।

पहाड़ – **गिरि** पर पौधे उगे थे। ऊँचे-ऊँचे **पर्वत** देखते ही बनते हैं।

2. विलोम या विपरीतार्थक शब्द

बोलने की बारी

(क) उलटा अर्थ देने वाले शब्दों को 'विलोम शब्द' कहते हैं।

(ख) विलोम शब्दों को 'विपरीतार्थक शब्द' भी कहते हैं।

(ग) आय × व्यय, ऐच्छिक × अनैच्छिक

लिखने की बारी

1. (क) (*ii*) प्रेम (ख) (*ii*) आर्द्र (ग) (*iii*) अचल
   (घ) (*iii*) अपकार (ङ) (*ii*) मुक्ति
2. (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✗

3. (क) अच्छे लोग सबको **अपना** समझते हैं, **पराया** नहीं।

(ख) हमें **आलस्य** त्यागकर **परिश्रम** करना चाहिए।

(ग) सूर्य के **उदय** होने से पूर्व ही तारे **अस्त** हो चुके थे।

(घ) किसान के परिश्रम से **बंजर** धरती अब **उर्वर** बन गई है।

(ङ) यह **शीत** प्रदेश है, **उष्ण** नहीं।

(च) सज्जन **गुण** खोजते हैं जबकि दुर्जन **अवगुण** देखते हैं।

4.

अनुराग	× विराग	निम्न	× उच्च	आय	× व्यय
अधिक	× न्यून	जय	× पराजय	उत्थान	× पतन
उष्ण	× आर्द्र	उदय	× अस्त	धनी	× निर्धन
देव	× दानव	ऐच्छिक	× अनैच्छिक	अनुज	× अग्रज

5. (क) दुख × सुख – जीवन में दुख-सुख आते रहते हैं।

(ख) आगमन × गमन – आगमन-गमन संसार का नियम है।

(ग) अमृत × विष – देवताओं को अमृत मिला तो दानवों को विष मिला।

(घ) प्रकाश × अंधकार – प्रकाश न होने के कारण चारों तरफ़ अंधकार छा गया।

(ङ) अपना × पराया – सभी अपने नहीं होते, पराए भी होते हैं।

6. जो शब्द उलटा या विपरीत अर्थ देते हैं, उन्हें 'विलोम शब्द' कहा जाता है; जैसे–कठोर × कोमल।

खेलने की बारी

मिलन × विरह	पुरस्कार × दंड	कृपालु × निर्दयी
कृत्रिम × प्राकृतिक	अथ × इति	जटिल × सरल
बलवान × निर्बल	दयालु × क्रूर	अल्पायु × दीर्घायु

सोचने की बारी

संक्षेप × विस्तार – प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए।

मंगल × अमंगल – राम वनवास के पहले ही अमंगल शुरू हो गए थे।

पक्ष × विपक्ष – विपक्ष के सभी नेता उपस्थित थे।

धीर × अधीर – अधीर लोगों को सफलता नहीं मिलती।

3. श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द

बोलने की बारी

(क) जो शब्द-युग्म बोलने-सुनने में एक जैसे लगते हैं परंतु उनके अर्थ में पर्याप्त अंतर होता है, उन्हें 'श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द' कहते हैं।

(ख) 'आयात' का अर्थ होता है–किसी अन्य स्थान से सामान मँगवाना। 'आयत' का अर्थ होता है–चार भुजाओं से घिरी आकृति।

लिखने की बारी

1. (क) बच्चे मैदान की **ओर** भाग गए।
   दो **और** दो चार होते हैं।

   (ख) चंद्रगुप्त मौर्य के **राज** में सुख-शांति थी।
   आपकी सुंदरता का **राज़** क्या है।

   (ग) महँगाई के कारण **निर्धन** का जीना मुश्किल हो गया है।
   हार्ट अटैक से नेता जी की माता का **निधन** हो गया।

   (घ) पक्षी **नीड़** में आ बैठे।
   पर्वत की गुफा से **नीर** टपक रहा था।

   (ङ) वसंत आते ही **बेल** फूलों से लद गई।
   होरी के पास दो **बैल** थे।

2. (क) ताप – गरमी – तापमान बहुत बढ़ गया है।
   तप – तपस्या – राजा भगीरथ ने बहुत तप किया।

   (ख) पथ – रास्ता – पथ पर अनेक काँटे भी थे।
   पथ्य – रोगी को दिया जाने वाला भोजन – रोगी को पथ्य दिया गया।

   (ग) कुल – संपूर्ण – मेरे पास कुल दस रुपये हैं।
   कूल – किनारा – नदी का कूल सुंदर है।

   (घ) आदि – इत्यादि – कलम, किताब आदि वस्तुएँ मेज़ पर रखो।
   आदी – अभ्यस्त – मैं सुबह चाय पीने का आदी हूँ।

   (ङ) ऊपर – ऊपर का स्थान – छत के ऊपर गमले हैं।
   ऊसर – बंजर – हमारे देश में ऊसर धरती बहुत है।

3. समान सुनाई देने वाले और अर्थ में पर्याप्त अंतर वाले शब्दों को 'श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द' कहते हैं; जैसे–अचल – पर्वत; अचला – पृथ्वी।

खेलने की बारी

(क) वह बहुत उदार दिल का है।

(ख) वर्णमाला का क्रम ठीक करो।

(ग) वह अचानक हँस पड़ा।

(घ) राघव उत्तर दिशा की ओर चला गया।

(ङ) लड़का-लड़की एक समान हैं।

सोचने की बारी

(क) आज अनन्या का परीक्षा परिणाम आ गया।

(ख) मानव दो दिन बाद जयपुर जाएगा।

4. अनेकार्थी शब्द

बोलने की बारी

(क) जिन शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं, उन्हें 'अनेकार्थी शब्द' कहते हैं।

(ख) कुंडल – कान का गहना, साँप के बैठने का तरीका

उत्सर्ग – दान, त्याग

लिखने की बारी

1. (क) (*iii*) भगवान (ख) (*iii*) स्नेह (ग) (*iii*) मित्र

(घ) (*ii*) पानी (ङ) (*i*) चाँदी

2. (क) कान (ख) तालाब (ग) हृदय (घ) नया (ङ) चैन

3. (क) कृष्ण हँसते हुए यशोदा की गोद में आ गया।

(ख) नदी के किनारे पर दो हिरन पानी पी रहे थे।

(ग) तालाब के किनारे जामुन का पेड़ था।

(घ) इस व्यक्ति को अक्षर का ज्ञान भी नहीं है।

(ङ) इन पेड़ों के पत्ते गिर चुके हैं।

4. (क) चरण – पैर – भरत जी चरण पादुका लेकर अयोध्या आ गए।
   – भाग – पहले चरण का कार्य पूरा हो गया।

   (ख) शून्य – आकाश – वह शून्य की ओर निहारता था।
   – ज़ीरो – रवि को गणित में शून्य अंक मिले।

   (ग) तनु – कृश – तपस्या के कारण ऋषि का शरीर तनु हो गया।
   – छोटा – रवीश मेरा तनु भाई है।

5. जिन शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं, उन्हें 'अनेकार्थी शब्द' कहते हैं; जैसे–कर – हाथ, किरण, टैक्स।

खेलने की बारी

बच्चे चित्र का मिलान अध्याय के आधार पर स्वयं करेंगे।

सोचने की बारी

हल – खेत जोतने का यंत्र, समाधान।

कल – आने वाला या बीता हुआ कल, मशीन, चैन।

5. वाक्यांश या अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

बोलने की बारी

(क) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द के प्रयोग को 'वाक्यांश के लिए एक शब्द' कहा जाता है।

(ख) वाक्यांश के लिए एक शब्द को 'अनेक शब्दों के लिए एक शब्द' भी कहा जाता है।

(ग) आशा बनाए रखने वाला–आशावादी, प्रतिदिन होने वाला–दैनिक।

लिखने की बारी

1. (क) शरण में आया हुआ – शरणागत

   (ख) मिट्टी के बर्तन बनाने वाला – कुम्हार

   (ग) रात में भ्रमण करने वाला – निशाचर

   (घ) फ़सल उगाने वाला – किसान

(ङ) विज्ञान का गहरा ज्ञान रखने वाला – वैज्ञानिक

(च) बहुत अधिक खर्च करने वाला – अपव्ययी

(छ) जहाँ रोगियों का इलाज होता है – अस्पताल

2. (क) पुजारी ने मंदिर के कपाट बंद कर दिए हैं।

(ख) मेढक उभयचर जीव है।

(ग) राजा हरिश्चंद्र सत्यवादी थे।

(घ) यह मेरा सहपाठी श्याम है।

(ङ) यह अखबार दैनिक है।

3. (क) नश्वर (ख) निरर्थक

(ग) सर्वव्यापी (घ) नभचर

(ङ) अंडज

4. जब कई शब्दों के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग किया जाता है तो उसे 'वाक्यांश के लिए एक शब्द' कहते हैं; जैसे–जहाँ पहुँचना कठिन हो – अगम्य।

खेलने की बारी

1. निडर	2. निर्धन	3. अतुलनीय	4. अवसरवादी
5. असह्य	6. कवि	7. सर्वज्ञ	8. सत्यवादी

सोचने की बारी

- प्रत्यक्ष
- बच्चे स्वयं लिखेंगे।

6. एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्द

बोलने की बारी

(क) जो शब्द अर्थ में समान लगते हैं परंतु उनमें सूक्ष्म अंतर होता है, उन्हें 'एकार्थक शब्द' कहते हैं।

(ख) अनुरोध – समान लोगों से आग्रह – मैंने रवि से अनुरोध किया था कि वह मेरी सहायता करे।

प्रार्थना – बड़ों से विनयपूर्वक कहना – चपरासी ने छुट्टी के लिए अधिकारी से प्रार्थना की।

लिखने की बारी

1. (क) अधिक – आवश्यकता से अधिक – अधिक खाना विष बन जाता है।

   पर्याप्त – आवश्यकता के अनुसार – मेरे लिए इतने फल पर्याप्त हैं।

   (ख) अनुमति – सहमति देना – पति ने पत्नी को बाज़ार जाने की अनुमति प्रदान की।

   आज्ञा – बड़े व्यक्ति द्वारा कुछ करने की आज्ञा देना – पिता ने पुत्र को पढ़ने की आज्ञा दी।

   (ग) अस्त्र – जिसे फेंककर चलाया जाए – भाला वज़नी अस्त्र है।

   शस्त्र – जिसे पकड़कर चलाया जाए – तलवार धारदार शस्त्र है।

   (घ) सेवा – बड़ों की सेवा – वृद्धों की सेवा करनी चाहिए।

   शुश्रूषा – रोगी एवं दुखियों की सेवा – कुलदीप ने ऐसी शुश्रूषा की कि रोगी स्वस्थ हो गया।

   (ङ) आवश्यक – ज़रूरी – आज बाज़ार जाना आवश्यक है।

   अनिवार्य – जिसे छोड़ा न जा सके – सभी प्रश्नों के उत्तर लिखना अनिवार्य है।

   (च) छाया – वृक्ष की छाया – पथिक छाया देखकर रुक गया।

   परछाईं – मनुष्य या वस्तु का प्रतिबिंब – वह तो अपनी परछाईं से भी डरता है।

2. (क) गर्व (ख) निवेदन (ग) इच्छा (घ) अस्त्र (ङ) प्रणाम (च) श्रम

3. (क) उपहास – हँसी उड़ाना – रागिनी तो दूसरों का उपहास ही करती रहती है।

   परिहास – हँसी-मज़ाक करना – मित्रों के बीच हास-परिहास तो होता रहता है।

   (ख) स्त्री – कोई भी स्त्री – स्त्री का जीवन संघर्षमय है।

   पत्नी – अपनी विवाहित स्त्री – विवाह के बाद से ही पत्नी की तबियत खराब है।

   (ग) आधि – मानसिक पीड़ा – तनीषा को आधि है।

   व्याधि – शारीरिक पीड़ा – व्याधि के कारण उसका शरीर कमज़ोर हो गया।

   (घ) कष्ट – सभी प्रकार के दुख – सुदीप का जीवन बहुत कष्ट में बीता।

   क्लेश – मानसिक पीड़ा – हमेशा का क्लेश अच्छा नहीं लगता।

   (ङ) अहंकार – धन, बल आदि का घमंड – अहंकार से मनुष्य की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।

   गर्व – अभिमान, अपने देश तथा जन्मभूमि का – हमें अपने देश पर गर्व है।

खेलने की बारी

(क) अधिक – आवश्यकता से अधिक

(ख) अनिवार्य – जिसे छोड़ा न जा सके।

(ग) इच्छा – कुछ पाने की इच्छा

(घ) आलोचना – गुण-दोष की ओर ध्यान खींचना।

(ङ) अस्त्र – जिसे फेंककर चलाया जाए।

सोचने की बारी

अपराध – कानून का उल्लंघन – उसने साक्ष्य मिटाने का अपराध किया है।
पाप – धार्मिक और सामाजिक नियमों की अवहेलना – गौ-हत्या करने वाले पाप ही करते हैं।

6. शब्द-रचना : उपसर्ग

बोलने की बारी

(क) जो शब्दांश किसी शब्द से पूर्व जुड़कर नया शब्द बनाते हैं और मूलशब्द के अर्थ में बदलाव लाते हैं, वे 'उपसर्ग' कहलाते हैं।

(ख) उपसर्ग चार प्रकार के होते हैं–संस्कृत के उपसर्ग, हिंदी के उपसर्ग, विदेशी उपसर्ग, संस्कृत के अव्यय।

(ग) उपसर्ग का स्वतंत्र प्रयोग इसलिए नहीं हो सकता क्योंकि ये शब्दांश होते हैं।

लिखने की बारी

1. (क) (*iii*) शब्दों के शुरू में (ख) (*ii*) तत्सम उपसर्ग (ग) (*iii*) अनु
   (घ) (*ii*) बिना (ङ) (*i*) मरा

2. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✗

3. (क) सार्थक (ख) तद्भव (ग) पढ़ (घ) विदेशी (ङ) संस्कृत

4.

शब्द	उपसर्ग	मूलशब्द	शब्द	उपसर्ग	मूलशब्द
अतिरिक्त	अति	रिक्त	सुमंगल	सु	मंगल
अनपढ़	अन	पढ़	हमउम्र	हम	उम्र
नासमझ	ना	समझ	दुरुपयोग	दुर्	उपयोग

5. परि – परिवर्तन, परिवार सम् – संवाद, संयोग

   गैर – गैरकानूनी, गैरहाज़िर अभि – अभिमान, अभिनव

   भर – भरपेट, भरमार बिन – बिनब्याहा, बिनकहा

6. (क) संस्कृत के जिन अव्ययों का उपयोग उपसर्ग के रूप में होता है, उन्हें 'संस्कृत के अव्यय' कहा जाता है।

   (ख) विदेशी उपसर्ग हैं–कम, खुश, ला, गैर, ना, बद, बा, हेड, सर

खेलने की बारी

प्र – प्रबल, प्रवीण, प्रकाश, प्रगति, प्रदीप्त। अ – अमर, अधर्म, अन्याय, अनिष्ट, अचूक।

सोचने की बारी

'हेडमास्टर' शब्द 'हेड' उपसर्ग के लगने से बना है। अन्य शब्द हैं–हेड-ऑफ़िस, हेड-क्लर्क

7. शब्द-रचना : प्रत्यय

बोलने की बारी

(क) जो शब्दांश किसी शब्द के अंत में जुड़कर नया शब्द बनाते हैं या अर्थ में बदलाव लाते हैं, वे 'प्रत्यय' कहलाते हैं।

(ख) प्रत्यय के दो भेद हैं– कृत् प्रत्यय, तद्धित प्रत्यय।

क्रिया के मूल रूप से जुड़ने वाले प्रत्यय कृत् प्रत्यय हैं। जबकि संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और अव्यय से जुड़ने वाले प्रत्यय 'तद्धित प्रत्यय' हैं।

(ग) कृत् प्रत्यय वाले शब्द – बहाव, बोली, सूँघनी।

लिखने की बारी

1. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✗

2. बुराई = बुरा + आई नागिन = नाग + इन

   शक्तिशाली = शक्ति + शाली पढ़ाई = पढ़ + आई

   राजनीतिक = राजनीति + इक सजावट = सज + आवट

3. भला + आई = भलाई
   हँस + ई = हँसी
   गरम + आहट = गरमाहट
   साँप + इन = साँपिन
   गीत + कार = गीतकार
   शत्रु + ता = शत्रुता
   धावक + इका = धाविका
   मामा + एरा = ममेरा
   भूल + अक्कड़ = भुलक्कड़
   बूढ़ा + आपा = बुढ़ापा
4. आव – बहाव, ठहराव
   त्व – लघुत्व, महत्व
   आकू – लड़ाकू, पढ़ाकू
   वती – धनवती, रूपवती
   पन – बचपन, अपनापन
   इन – लुहारिन, सुनारिन
5. (क) शब्द के अंत में जुड़कर नया शब्द बनाने वाले शब्दांश को 'प्रत्यय' कहते हैं।
   (ख) प्रत्यय के दो भेद हैं– कृत् प्रत्यय, तद्धित प्रत्यय।
   (ग) संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और अव्यय के साथ लगने वाले प्रत्यय 'तद्धित प्रत्यय' हैं।
   (घ) मानवीयता, दयालुता।
   (ङ) प्रत्यय के प्रयोग से मूल अर्थ में विशेषता या बदलाव भी आ जाता है; जैसे–
   माली + इन – मालिन, बल + शाली – बलशाली।

खेलने की बारी

- मानवीय, जातीय, भारतीय
- मिलावट, बनावट, लिखावट

सोचने की बारी

- गाड़ीवान, बलवान
- वार्षिक, धार्मिक, वैज्ञानिक

8. शब्द-रचना : समास

बोलने की बारी

(क) दो या दो से अधिक शब्दों को संक्षिप्त करके नया शब्द बनाने की प्रक्रिया को 'समास' कहते हैं; जैसे–बल से हीन = बलहीन।

(ख) सामासिक प्रक्रिया से बने नए शब्द को 'समस्तपद' कहते हैं।

(ग) समास के छह भेद हैं–अव्ययीभाव समास, बहुव्रीहि समास, तत्पुरुष समास, कर्मधारय समास, द्विगु समास, द्वंद्व समास।

(घ) तत्पुरुष समास के छह भेद हैं–कर्म तत्पुरुष, करण तत्पुरुष, संप्रदान तत्पुरुष, अपादान तत्पुरुष, संबंध तत्पुरुष, अधिकरण तत्पुरुष।

लिखने की बारी

1. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✗
2. (क) समास (ख) पूर्वपद (ग) अव्ययीभाव (घ) उपमान (ङ) द्विगु
3. (क) प्रतिदिन (ख) राहखर्च (ग) हाथोंहाथ (घ) पंचवटी (ङ) घुड़सवार (च) यश-अपयश
4. (क) अकालपीड़ित (ख) जय-पराजय (ग) महात्मा (घ) चतुर्भुज (ङ) दशानन
5. (क) मुरलीधर – मुरली को धारण करता है जो अर्थात् कृष्ण – बहुव्रीहि समास
   (ख) षट्कोण – छह कोण की आकृति – द्विगु समास
   (ग) पंचवटी – पाँच वटों (वृक्षों) का समाहार – द्विगु समास
   (घ) ध्यानमग्न – ध्यान में मग्न – तत्पुरुष समास
   (ङ) युद्धभूमि – युद्ध के लिए भूमि – तत्पुरुष समास
6. (क) दो या इससे अधिक शब्दों को जोड़कर संक्षिप्त पद बनाना 'समास' कहलाता है; जैसे– रसोई + घर = रसोईघर
   (ख) दो शब्दों के मेल से बने शब्द को समस्तपद कहते हैं; जैसे– राजचिह्न।
   (ग) समस्तपद के पहले भाग को 'पूर्वपद' कहते हैं; जैसे– गृह में प्रवेश = गृह (पूर्वपद) प्रवेश।
   (घ) समस्तपद के बाद वाले भाग को 'उत्तरपद' कहते हैं; जैसे– स्वर्ग को प्राप्त = स्वर्ग प्राप्त (उत्तरपद)।

खेलने की बारी

(क) नमक-मिर्च – नमक और मिर्च
(ख) ऋणमुक्त – ऋण से मुक्त
(ग) महादेव – महान हैं जो देव
(घ) विद्याधन – विद्या रूपी धन
(ङ) पचरंगा – पाँच रंगों वाला

सोचने की बारी

- कर्मधारय समास में पहला पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य होता है, जबकि बहुव्रीहि समास में कोई अन्य पद प्रधान होता है।

9. संज्ञा

बोलने की बारी

(क) किसी प्राणी, स्थान, वस्तु, भाव आदि के नाम का बोध कराने वाले शब्दों को 'संज्ञा' कहते हैं।

(ख) संज्ञा के तीन भेद हैं– व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा एवं भाववाचक संज्ञा।

(ग) व्यक्तिवाचक संज्ञा से किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु, स्थान के नाम का बोध होता है, परंतु जातिवाचक संज्ञा से संपूर्ण जाति का बोध होता है।

लिखने की बारी

1. (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✗

2. (क) लिखावट (ख) मृत्यु
   (ग) प्यास (घ) सफ़ेदी
   (ङ) अपनत्व (च) मित्रता
   (छ) बुढ़ापा (ज) लड़कपन
   (झ) मनुष्यता

3. (क) मदन, गाय, मैदान, घास
   (ख) ईमानदारी, मनुष्यता
   (ग) श्रेया, सुनील, ताज एक्सप्रेस, आगरा
   (घ) कार्यालय, रविवार, सोमवार
   (ङ) मीनाक्षी, ताई जी, कढ़ी

4. (क) जातिवाचक संज्ञा (ख) व्यक्तिवाचक संज्ञा
   (ग) भाववाचक संज्ञा (घ) भाववाचक संज्ञा
   (ङ) व्यक्तिवाचक संज्ञा

5. (क) किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान अथवा भाव के नाम को 'संज्ञा' कहते हैं।
   (ख) संज्ञा के तीन भेद हैं– व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा और भाववाचक संज्ञा।
   (ग) जिस शब्द से संपूर्ण जाति का बोध होता है, उसे 'जातिवाचक संज्ञा' कहते हैं; जैसे– पेड़, नदी, जानवर आदि।

(घ) जिस संज्ञा शब्द से किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु, स्थान आदि के नाम का पता चलता है, उसे 'व्यक्तिवाचक संज्ञा' कहते हैं।

खेलने की बारी

तर्क-खोज शक्ति के सहारे विद्यार्थी स्वयं लिखेंगे।

10. लिंग

बोलने की बारी

(क) शब्द के जिस रूप से उसके स्त्री या पुरुष जाति के होने का बोध होता है, उसे 'लिंग' कहते हैं; जैसे—बकरा (पुल्लिग), बकरी (स्त्रीलिंग)।

(ख) लिंग के दो भेद हैं– स्त्रीलिंग और पुल्लिग। स्त्रीलिंग – नदी, पुल्लिग – सागर।

(ग) शब्द के जिस रूप से उसके स्त्री जाति के होने का बोध हो, उसे 'स्त्रीलिंग' कहा जाता है।

(घ) शब्द के जिस रूप से उसके पुरुष जाति के होने का बोध हो, उसे 'पुल्लिग' कहा जाता है।

लिखने की बारी

1. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✗

2. | | |
|---|---|
| पति – पत्नी | बेटा – बेटी |
| बहन – भाई | सम्राज्ञी – सम्राट |
| बलवती – बलवान | चुहिया – चूहा |
| कवि – कवयित्री | युवक – युवती |
| स्वामी – स्वामिनी | नौकरानी – नौकर |

3. (क) पुल्लिग (ख) स्त्रीलिंग (ग) स्त्रीलिंग (घ) पुल्लिग (ङ) पुल्लिग

4. (क) नायिका अभिनय करती हैं।

   (ख) अध्यापिका पढ़ा रही हैं।

   (ग) बंदरिया पेड़ पर बैठी है।

   (घ) शेरनी हिरन पर झपट पड़ी।

   (ङ) चुहिया ने कपड़ा कुतर दिया।

5. (क) शब्द के जिस रूप से उसके स्त्रीलिंग या पुल्लिग होने का बोध हो, उसे 'लिंग' कहते हैं।

(ख) लिंग के दो भेद हैं – स्त्रीलिंग और पुल्लिग।

(ग) शब्द के जिस रूप से उसके पुल्लिग जाति का होने का बोध हो, उसे 'पुल्लिग' कहते हैं।

(घ) शब्द के जिस रूप से उसके स्त्री जाति के होने का बोध हो, उसे 'स्त्रीलिंग' कहते हैं।

(ङ) नित्य पुल्लिग शब्द – उल्लू, कौआ, चीता, खरगोश।

नित्य स्त्रीलिंग शब्द – चील, गिलहरी, मैना, कोयल।

निर्देश– खेलने की बारी और सोचने की बारी छात्र स्वयं करेंगे।

11. वचन

बोलने की बारी

(क) शब्द के जिस रूप से उसके एक या एक से अधिक होने का बोध होता है, उसे 'वचन' कहते हैं।

(ख) वचन के दो भेद होते हैं–एकवचन और बहुवचन।

(ग) संज्ञा के जिस रूप से यह जाना जाए कि वह एक से अधिक है, उसे 'बहुवचन' कहते हैं।

(घ) हमेशा एकवचन में प्रयुक्त होने वाले शब्द हैं–वर्षा, जनता, पुलिस।

लिखने की बारी

1. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✗ (ङ) ✗

2. (क) पत्ते (ख) बारिश (ग) बहुवचन (घ) गया है (ङ) निकले

3. (क) एकवचन – थैला, कामना, राशि, गमला, नदी, पैसा, शक्ति, जाति।

   (ख) बहुवचन – बातें, रुपये, कविगण, सड़कें, चींटियाँ, अंडे, ऋतुएँ, तोते।

4. (क) बहुवचन (ख) बहुवचन (ग) एकवचन (घ) बहुवचन (ङ) एकवचन (च) बहुवचन

5. (क) रेखा – रेखाएँ (ख) गाथाएँ – गाथा

   (ग) छाते – छाता (घ) थैले – थैला

   (ङ) डाली – डालियाँ (च) चिड़िया – चिड़ियाँ

   (छ) कमीज़ – कमीज़ें (ज) ऋतुएँ – ऋतु

   (झ) शक्तियाँ – शक्ति (ञ) मज़दूर – मज़दूरवर्ग

6. (क) पेड़ पर चिड़ियाँ बैठी हैं। (ख) बच्चे सो गए हैं।

(ग) किसान खेत से आ रहे हैं। (घ) फूल खिल गए।

(ङ) माओं ने खाना पकाया।

7. (क) शब्द के जिस रूप से संज्ञा के एक या अनेक होने का पता चलता है, उसे 'वचन' कहते हैं।

(ख) शब्द के जिस रूप से उसके एक होने का पता चलता है, उसे 'एकवचन' कहते हैं; जैसे–पुस्तक मेज़ पर है।

(ग) दूसरों को आदर देने के लिए एकवचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग किया जाता है।

(घ) शब्द के जिस रूप से उसके एक से अधिक होने का पता चलता है, उसे 'बहुवचन' कहा जाता है; जैसे– तोते उड़ रहे हैं।

(ङ) हमेशा बहुवचन में प्रयोग किए जाने वाले शब्द हैं–बाल, आँसू, होश, हस्ताक्षर।

खेलने की बारी

चम्मच – एकवचन	पानी की बोलत – एकवचन	कपड़े – बहुवचन
थाली – एकवचन	मोबाइल – एकवचन	चश्मा – एकवचन
गिलास – एकवचन	रस्सी – एकवचन	जुराबें – बहुवचन
पुस्तकें – बहुवचन	जूते – बहुवचन	गमले – बहुवचन

12. कारक

बोलने की बारी

(क) संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों और क्रिया से जाना जाए, उसे 'कारक' कहते हैं।

(ख) कारक के आठ भेद हैं– कर्ता कारक, कर्म कारक, करण कारक, संप्रदान कारक, अपादान कारक, संबंध कारक, अधिकरण कारक, संबोधन कारक।

(ग) करण कारक से साधन का बोध होता है, अपादान कारक से अलगाव का बोध होता है।

(घ) जहाँ देने का भाव होता है, वहाँ संप्रदान कारक होता है। जहाँ क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है, वहाँ कर्म कारक होता है।

लिखने की बारी

1. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✗ (ङ) ✓
2. (क) में (ख) पर (ग) ने (घ) के लिए (ङ) ने
3. (क) संप्रदान कारक (ख) संबंध कारक (ग) अधिकरण कारक (घ) अपादान कारक (ङ) संप्रदान कारक
4. (क) चिड़िया अपने बच्चे **के लिए** चोंच **में** दाना लाई।
   (ख) जानवर जंगल **की** ओर चले गए।
   (ग) पक्षी घोंसलें **से** उड़ गए।
   (घ) चपरासी **ने** घंटी बजा दी।
   (ङ) माँ **ने** बच्चे **को** गोद **में** उठा लिया।
5. (क) मंजुल ने पुस्तक खरीदी। (ख) यह पुस्तक रीता की है।
   (ग) पेड़ पर बंदर बैठा है। (घ) पापा ने रीमा के लिए फल खरीदे।
   (ङ) कपड़ों को लटका दो। (च) वह साइकिल के द्वारा विद्यालय आया है।
6. (क) संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों और क्रिया के साथ जाना जाए, उसे 'कारक' कहते हैं।
   (ख) कर्म कारक और संप्रदान कारक में 'को' परसर्ग होता है।
   (ग) संज्ञा के जिस रूप से कार्य करने वाले का बोध हो, उसे 'कर्ता कारक' कहते हैं। 'कौन' लगाकर प्रश्न करने से इसकी पहचान की जा सकती है।

निर्देश– खेलने की बारी और सोचने की बारी विद्यार्थी स्वयं करेंगे।

13. सर्वनाम

बोलने की बारी

(क) संज्ञा शब्दों के स्थान पर जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें 'सर्वनाम' कहा जाता है; जैसे–मैं, तुम, वह, आप आदि।

(ख) सर्वनाम के छह भेद होते हैं।

(ग) जिन शब्दों का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाता है, उन्हें 'प्रश्नवाचक सर्वनाम' कहते हैं।

(घ) वक्ता, श्रोता और किसी अन्य के स्थान पर जिन सर्वनामों का प्रयोग किया जाता है, उसे 'पुरुषवाचक सर्वनाम' कहते हैं।

(ङ) पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद हैं– उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम, मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम, अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम।

(क) उत्तम पुरुषवाचक – मैंने, हमें (ख) मध्यम पुरुषवाचक – तुम, आप

(ग) अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम – वह, उसे

लिखने की बारी

1. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✗
2. (क) मेरी (ख) वे (ग) अपने आप (घ) तुम (ङ) जिसकी... उसकी।
3. (क) वे मेला देखने गए।

   (ख) हम टहल रहे थे।

   (ग) जिन्होंने सुना वे परेशान हो गए।

   (घ) घर के सामने कोई खड़ा है।

   (ङ) उसने वह कार्य अपने-आप कर लिया।

   (च) तुम्हारा भाई कल आएगा।
4. (क) संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त शब्दों को 'सर्वनाम' कहा जाता है।

   (ख) पुरुषवाचक सर्वनाम के भेद हैं– उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम, मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम, अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम।

   (ग) जिन शब्दों द्वारा किसी अनिश्चित व्यक्ति, वस्तु की ओर संकेत किया जाता है, उन्हें 'निश्चयवाचक सर्वनाम' कहते हैं; जैसे– पानी में **कुछ** गिर गया। सामने **कोई** खड़ा है।

   (घ) जो शब्द वाक्य में आए दूसरे सर्वनाम शब्दों से संबंध बताने का कार्य करता है, उसे 'संबंधवाचक सर्वनाम' कहते हैं; जैसे– **जैसा** करोगे **वैसा** भरोगे। **जो** करेगा **वह** भरेगा।

खेलने की बारी

(क) सर्वनाम (ख) पुरुषवाचक (ग) वक्ता (घ) वे

सोचने की बारी

'कोई' और 'कुछ' सर्वनाम शब्दों का प्रयोग अनिश्चयवाचक सर्वनाम के लिए किया जाता है।

14. विशेषण

बोलने की बारी

(क) जिन शब्दों द्वारा संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता बताई जाती है, उसे 'विशेषण' कहते हैं; जैसे– **काला** कुत्ता दौड़ रहा है। यहाँ 'काला' शब्द कुत्ते की विशेषता बता रहा है। अत: 'काला' विशेषण है।

(ख) विशेषण के चार भेद होते हैं–

गुणवाचक विशेषण	– **मेहनती** लोग सफल होते हैं।
	– स्वच्छता सभी को **अच्छी** लगती है।
संख्यावाचक विशेषण	– उपवन में **कई** बच्चे थे।
	– टोकरी में **चार** सेब हैं।
परिमाणवाचक विशेषण	– मैंने **दस किलो** आटा खरीदा।
	– **सारी** रेत नदी में बह गई।
सार्वनामिक/संकेतवाचक विशेषण	– **ये** फल बहुत महँगे हैं।
	– **वह** घर मेरा है।

(ग) विशेषण की तीन अवस्थाएँ होती हैं–

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
लघु	लघुतर	लघुतम

(घ) संख्यावाचक विशेषण से संख्या का परंतु परिमाणवाचक विशेषण से मात्रा एवं नाप-तौल का बोध होता है।

लिखने की बारी

1. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✗

2. (क) सामाजिक (ख) स्वादिष्ट (ग) नागपुरी (घ) भारतीय (ङ) पढ़ाकू

3.

	विशेष्य	**विशेषण**
(क)	बगीचा	हरा-भरा
(ख)	फूल	रंग-बिरंगे
(ग)	आम	पके
(घ)	दूध	स्वास्थ्यवर्धक

4. (क) अति (ख) इतनी

(ग) बहुत (घ) अत्यंत

5. (क) संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को 'विशेषण' कहते हैं।

(ख) जिसकी विशेषता बताई जाती है, उसे 'विशेष्य' कहते हैं; जैसे– खट्टा आम नहीं खाया जाता। इसमें 'आम' शब्द विशेष्य है।

(ग) विशेषण के भेद हैं– गुणवाचक, संख्यावाचक, परिमाणवाचक, सार्वनामिक।

(घ) विशेषण की विशेषता बताने वाले शब्दों को 'प्रविशेषण' कहते हैं।

खेलने की बारी

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
कटु	कटुतर	कटुतम
मधुर	मधुरतर	मधुरतम
उच्च	उच्चतर	उच्चतम
तीव्र	तीव्रतर	तीव्रतम
सुंदर	सुंदरतर	सुंदरतम

सोचने की बारी

'हम' सर्वनाम है।

15. क्रिया

बोलने की बारी

(क) जिस शब्द से किसी कार्य के करने या होने का बोध हो, उसे 'क्रिया' कहते हैं; जैसे– पानी **बह रहा है**। कोयल **कूक रही है**।

(ख) कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद हैं–अकर्मक क्रिया और सकर्मक क्रिया।

लड़की **पढ़ रही है।** (अकर्मक क्रिया)

लड़की पुस्तक **पढ़ रही है।** (सकर्मक क्रिया)

(ग) जिस क्रिया को कर्ता स्वयं न करके दूसरों को करने की प्रेरणा देता है या करवाता है, उसे 'प्रेरणार्थक क्रिया' कहते हैं।

(घ) जब दो या दो से अधिक धातुएँ या क्रिया-पद मिलकर एक क्रिया करते हैं, तब उसे 'संयुक्त क्रिया' कहते हैं। नामधातु क्रिया संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और अनुकरणात्मक शब्दों से बनती है।

(ङ) संरचना के आधार पर क्रिया के पाँच भेद हैं–सामान्य क्रिया, संयुक्त या यौगिक क्रिया, प्रेरणार्थक क्रिया, नामधातु क्रिया, पूर्वकालिक क्रिया।

लिखने की बारी

1. (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✗ (ङ) ✓

2. (क) सकर्मक क्रिया (ख) सकर्मक क्रिया (ग) सकर्मक क्रिया (घ) सकर्मक क्रिया

3. (क) पढ़ाया (ख) चल रही थी (ग) उठा (घ) भागा (ङ) लाया

4. (क) सकर्मक क्रिया (ख) सकर्मक क्रिया (ग) सकर्मक क्रिया (घ) सकर्मक क्रिया
   (ङ) सकर्मक क्रिया

5.

	कर्ता	**कर्म**
(क)	पेड़	फल, छाया
(ख)	गाय	घास
(ग)	मोहन	आम
(घ)	मज़दूर	रोटियाँ
(ङ)	नदियाँ	जल

6. (क) विपुल पैदल चलकर मंदिर पहुँचा।
   (ख) अध्यापिका ने पाठ पढ़वाया।
   (ग) रागिनी ने सुरेश से पत्र लिखवाया।
   (घ) उसने धोबी से कुरता धुलवाया।
   (ङ) वह दृश्य फ़िल्माना कठिन था।
   (च) घोड़े अस्तबल में हिनहिना रहे थे।

7. (क) जिस शब्द से किसी कार्य के करने या होने का बोध हो, उसे 'क्रिया' कहते हैं।
   (ख) क्रिया के मूल रूप को 'धातु' कहते हैं।
   (ग) जिस क्रिया को कर्म की अपेक्षा हो, उसे 'सकर्मक क्रिया' कहते हैं; जैसे– वह बाज़ार जाता है।
   (घ) जिस क्रिया को कर्म की अपेक्षा न हो, उसे 'अकर्मक क्रिया' कहते हैं; जैसे– वह टहलता है।

खेलने की बारी

जलाया, आया, चढ़कर, होकर, दे दिया, हो गई, किया, जलाया, चढ़ के बैठा, पहुँच गया, बोला, गिरा, था, बचती, जाती, टूट, चलता, फूट, सिखाया, जलाओ, उड़ाया।

सोचने की बारी

– उपवन में फूल **खिले हैं**।
– लड़की फूल **तोड़ रही है**।
– चारों तरफ़ हरियाली **है**।
– पौधे हरे **हैं**।
– यह सुबह का दृश्य **है**।

16. काल

बोलने की बारी

(क) क्रिया के जिस रूप से उसके होने के समय का बोध हो, उसे 'काल' कहते हैं। काल के तीन भेद हैं–भूतकाल, वर्तमान काल, भविष्यत् काल।

(ख) पूर्ण भूतकाल में क्रिया पूरी हो चुकी होती है परंतु अपूर्ण भूतकाल में क्रिया के पूरी होने का पता नहीं चलता।

(ग) निर्मला के नाना जी स्वस्थ हो गए होंगे।

राकेश ने अपने कपड़े धुला लिए होंगे।

(घ) आसन्न का अर्थ है– अभी-अभी, बहुत शीघ्र। क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि काम अभी-अभी कुछ समय पहले ही समाप्त हुआ है, उसे 'आसन्न भूतकाल' कहते हैं।

लिखने की बारी

1. (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✗
2. (क) वर्तमान काल (ख) काम होने का समय (ग) चले रहे (घ) आने वाले (ङ) भूतकाल
3. (क) भूतकाल (ख) वर्तमान काल (ग) भविष्यत् काल (घ) संदिग्ध वर्तमान काल
   (ङ) अपूर्ण भूतकाल
4. (क) सोहन नाव चला रहा था।
   (ख) विनय और नमन पाठ याद करेंगे।

(ग) सौरभ कल आया था।

(घ) हर्षित दवाइयाँ खा रहा है।

(ङ) अक्षिता नृत्य सीखेगी।

5. (क) क्रिया के जिस रूप से उसके होने का पता चले, उसे 'काल' कहते हैं।

(ख) काल के भेद हैं– भूतकाल, वर्तमान काल, भविष्यत् काल।

(ग) क्रिया के जिस रूप से उसके बीते समय में होने का बोध हो, उसे 'भूतकाल' कहते हैं। इसके भेद हैं–

सामान्य भूतकाल – • मामी ने खाना बनाया। • प्रवीन कॉलेज गया।

अपूर्ण भूतकाल – • खिलाड़ी खेल रहे थे। • मिठाईवाला मिठाइयाँ बेच रहा था।

पूर्ण भूतकाल – • सैनिकों ने विद्रोह किया। • वह विद्यालय गया था।

आसन्न भूतकाल – • वह अभी-अभी आया है। • अभी-अभी बुलावा आया था।

संदिग्ध भूतकाल – • रिंकी के दादा जी स्वस्थ हो गए होंगे।

– • कमलिनी चली गई होगी।

हेतुहेतुमद् भूतकाल – • यदि धूप होगी तो कपड़े सूख जाएँगे।

– • यदि पानी बरसेगा तो फ़सल अच्छी होगी।

(घ) क्रिया के जिस रूप से कार्य के चल रहे समय का बोध हो, उसे 'वर्तमान काल' कहते हैं।

सामान्य वर्तमान काल – पवन खेल रहा है।

अपूर्ण वर्तमान काल – शीला और गीता गीत गा रही हैं।

संदिग्ध वर्तमान काल – राधिका खाना बना रही होगी।

(ङ) क्रिया के जिस रूप से उसके भविष्य में होने का पता चले, उसे 'भविष्यत् काल' कहते हैं; जैसे–

सामान्य भविष्यत् काल – निर्दोष को पुरस्कार दिया जाएगा।

संभाव्य भविष्यत् काल – बादल होने के साथ संभवत: आँधी आ जाए।

हेतुहेतुमद् भविष्यत् काल – वह मेहनत करे तो सफल हो।

खेलने की बारी

चित्र चिपकाने और लिखने का कार्य विद्यार्थी स्वयं करेंगे।

17. अव्यय (अविकारी शब्द)

1. क्रियाविशेषण

बोलने की बारी

(क) जिन शब्दों में लिंग, वचन, कारक आदि के कारण बदलाव नहीं आता, उन्हें 'अव्यय' या 'अविकारी शब्द' कहते हैं।

(ख) क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्दों को 'क्रियाविशेषण' कहते हैं।

(ग) क्रियाविशेषण के चार भेद हैं–

रीतिवाचक क्रियाविशेषण – वह धीरे-धीरे चलता है।

कालवाचक क्रियाविशेषण – रवि रात-दिन पढ़ता है।

स्थानवाचक क्रियाविशेषण – सभी सामान किनारे रख दो।

परिमाणवाचक क्रियाविशेषण – उतना खाओ जितना पचा सको।

लिखने की बारी

1. (क) कम (ख) ध्यानपूर्वक (ग) उधर (घ) झटपट (ङ) लगातार
2. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✗
3. (क) विशेषण (ख) क्रियाविशेषण (ग) क्रियाविशेषण (घ) क्रियाविशेषण (ङ) विशेषण
4. (क) घंटों (ख) कम (ग) ध्यानपूर्वक (घ) शाम (ङ) भरपेट
5. (क) वह अपना कार्य निरंतर करता रहा।
   (ख) मैं सायं तक वापस आ जाऊँगा।
   (ग) वह चुपचाप बैठा रहा।
   (घ) अधिक बोलना अच्छा नहीं होता।
   (ङ) सारा सामान उधर रख दीजिए।
6. (क) रीतिवाचक क्रियाविशेषण (ख) रीतिवाचक क्रियाविशेषण
   (ग) स्थानवाचक क्रियाविशेषण (घ) परिमाणवाचक क्रियाविशेषण
   (ङ) कालवाचक क्रियाविशेषण
7. (क) जिन शब्दों में लिंग, वचन, कारक आदि के कारण विकार उत्पन्न नहीं होता, उसे 'अव्यय' कहते हैं।

(ख) जब अव्यय क्रिया की विशेषता बताते हैं तो वहाँ क्रियाविशेषण होता है।

(ग) विशेषण संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं परंतु क्रियाविशेषण से क्रिया की विशेषता के बारे में पता चलता है।

2. संबंधबोधक अव्यय

बोलने की बारी

(क) जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम का संबंध वाक्य के अन्य शब्दों से जोड़ते हैं, उन्हें 'संबंधबोधक अव्यय' कहते हैं।

(ख) जब अव्यय क्रिया की विशेषता बताते हैं तब क्रियाविशेषण होता है परंतु जब ये अव्यय संज्ञा का वाक्य के अन्य शब्दों के साथ संबंध व्यक्त करते हैं तो वे संबंधबोधक अव्यय कहलाते हैं।

सोचने की बारी

1. (क) के विपरीत (ख) के नीचे (ग) से पहले (घ) के कारण (ङ) की अपेक्षा (च) के पास
2. (क) के अलावा (ख) के साथ (ग) के बिना (घ) के पश्चात् (ङ) से बेहतर
3. कालवाचक – के पश्चात् – राम के जाने के पश्चात् ही श्याम आएगा।

   दिशावाचक – की ओर – पूरब की ओर से चाँद निकला।

   स्थानवाचक – के पीछे – घर के पीछे सड़क थी।

   तुलनावाचक – की अपेक्षा – राघव की अपेक्षा विमल अधिक सरल है।

   विरोधसूचक – के बजाए – वह कविता के बजाए कहानी पढ़ेगा।

   समतासूचक – के समान – उसका मुख चंद्रमा के समान सुंदर है।
4. (क) वह चाय पीने के पश्चात् बाज़ार गया।

   (ख) चंद्रोदय से पूर्व ही सूर्य अस्त हो जाता है।

   (ग) गुरु के समीप ही शिष्य बैठे थे।

   (घ) घर के आसपास हरे-भरे पौधे थे।

   (ङ) देवीदीन से बेहतर कार्य सलिल करता है।
5. (क) संबंधबोधक अव्यय (ख) क्रियाविशेषण (ग) संबंधबोधक अव्यय (घ) क्रियाविशेषण

   (ङ) संबंधबोधक अव्यय

6. (क) संबंधबोधक अव्यय संज्ञा का वाक्य के अन्य शब्दों के साथ संबंध बताते हैं।

(ख) • वह पीछे बैठा है। – क्रियाविशेषण

• वह दीवार के पीछे बैठा है। – संबंधबोधक अव्यय

• सामान ऊपर रखो। – क्रियाविशेषण

• सामान मेज़ के ऊपर रखो। – संबंधबोधक अव्यय

3. समुच्चयबोधक अव्यय

बोलने की बारी

(क) जिन शब्दों द्वारा दो शब्दों, उपवाक्यों या वाक्यों को जोड़ा जाता है, उन्हें 'समुच्चयबोधक अव्यय' कहते हैं।

(ख) समान स्थिति वाले वाक्यों को जोड़ने वाले अव्ययों को 'समानाधिकरण समुच्चयबोधक' कहते हैं।

(ग) प्रधान उपवाक्य और आश्रित उपवाक्यों को जोड़ने वाले अव्ययों को 'व्यधिकरण समुच्चयबोधक' कहते हैं।

लिखने की बारी

1. (क) इसलिए (ख) परंतु (ग) तथा (घ) ताकि (ङ) कि

2. (क) यद्यपि...पर (ख) कि (ग) और (घ) या (ङ) अन्यथा

3. (क) मैं उसके घर गया परंतु वह नहीं मिला।

(ख) आप चाहे कुछ कहें या न कहें परंतु मैं अब समझ गया।

(ग) उसने मेहनत की अतएव उसे सफलता मिली।

(घ) रोहित ने मेहनत की इसलिए उसे सफलता मिली।

(ङ) ईश्वर की प्रार्थना सुबह अथवा शाम करनी चाहिए।

(च) उतना ही विश्वास करो जिससे कि धोखा न हो।

4. (क) जो शब्द दो शब्दों, वाक्यों एवं वाक्यांशों जो जोड़ते हैं, उन्हें 'समुच्चयबोधक अव्यय' कहते हैं।

(ख) तथा – राम, श्याम तथा मयंक आए थे।

और – मेरे लिए किताब और कलम लाओ।

4. विस्मयादिबोधक अव्यय

बोलने की बारी

(क) जो शब्द खुशी, आश्चर्य, घृणा, चेतावनी, लज्जा जैसे मन के भावों को व्यक्त करते हैं, उन्हें 'विस्मयादिबोधक अव्यय' कहते हैं।

(ख) – शाबाश! तुमने तो कमाल कर दिया। (हर्षबोधक)

– वाह! इसे कहते हैं नहले पर दहला मारना। (हर्षबोधक)

– बचो! सामने साँप है। (भयबोधक)

– हटो! भेड़िया आ रहा है। (भयबोधक)

(ग) – हाय! वह बर्बाद हो रहा है। (शोकबोधक)

– छि: कितने गंदे हो। (घृणाबोधक)

– अरे! यह कार्य तुमने किया था। (आश्चर्यबोधक)

लिखने की बारी

1. (क) हटो! (ख) अरे! (ग) हाय! (घ) अहा! (ङ) उफ़!

2. (क) छि:! यहाँ तो बहुत गंदगी है। (ख) हाय! बहुत चोट लग गई है।
   (ग) अरे! इतनी सुबह कैसे आ गए? (घ) होशियार! सामने गड्ढा है।
   (ङ) वाह! गज़ब का चौका मारा।

3. आश्चर्य → अहो!
   हर्ष → अहा!
   घृणा → छि:! छि:!
   संबोधन → हे!
   शोक → हाय राम!
   स्वीकृति → जी अच्छा!

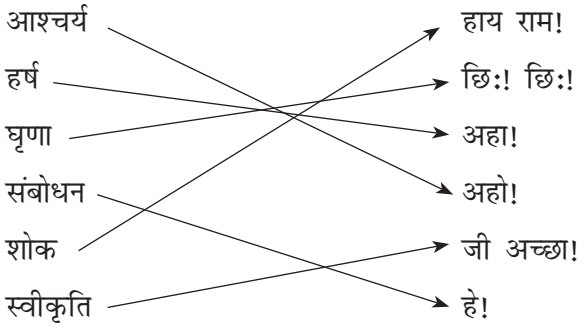

4. (क) मन के भावों को प्रकट करने वाले शब्द 'विस्मयादिबोधक' कहलाते हैं।
   (ख) होशियार! – होशियार! आगे गहरी खाई है।
   बहुत अच्छा! – बहुत अच्छा! उस समय यही करना ठीक था।
   हे राम! – हे राम! यह क्या हो गया।

खेलने की बारी

एक बार एक लोमड़ी कुएँ में गिर पड़ी। **बहुत** कोशिश करने पर भी कुएँ से **बाहर** न निकल सकी। **थोड़ी** देर **के पश्चात** एक बकरा उस कुएँ **की ओर** से गुज़रा। कुएँ से आती हुई आवाज़ सुनकर उसने कुएँ में झाँका। लोमड़ी ने कुएँ के पानी की बहुत तारीफ़ की। बकरे को प्यास लगी थी। वह **तुरंत** कुएँ में कूद पड़ा। अब उसका **वहाँ से** निकलना मुश्किल हो गया।

18. वाक्य

बोलने की बारी

(क) सार्थक शब्दों के व्यवस्थित क्रम को 'वाक्य' कहते हैं; जैसे–सुबह समय से उठना चाहिए।

(ख) वाक्य के दो अंग हैं–उद्देश्य और विधेय।

हवा बह रही है। इस वाक्य में – हवा (उद्देश्य), बह रही है (विधेय) है।

(ग) रचना की दृष्टि से वाक्य के तीन भेद हैं–सरल वाक्य, संयुक्त वाक्य, मिश्र वाक्य।

लिखने की बारी

1. (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✗

2. (क) दो (ख) उद्देश्य (ग) सार्थक (घ) कर्ता (ङ) विधेय

3. (क) मिश्र वाक्य (ख) संयुक्त वाक्य (ग) संयुक्त वाक्य (घ) सरल वाक्य (ङ) संयुक्त वाक्य

4.

	उद्देश्य	**विधेय**
(क)	वीर सिपाही	देश की रक्षा करते हैं।
(ख)	सज्जन	सदैव दूसरों के काम आते हैं।
(ग)	मधुरिमा	गीत गा रही है।
(घ)	अध्यापिका	छात्रों को पढ़ाती हैं।
(ङ)	पक्षी	आकाश में उड़ते हैं।

5. (क) प्रभा क्रिकेट नहीं खेलती है।

(ख) काश! प्राची विद्यालय जाए।

(ग) ओह! पप्पू फेल हो गया।

(घ) शायद कल हमें रंग मिलेंगे।

6. (क) सार्थक शब्दों के मेल से बने पद समूह को 'वाक्य' कहते हैं।
   (ख) वाक्य के दो अंग हैं– उद्देश्य और विधेय।
   (ग) रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद हैं– सरल वाक्य, संयुक्त वाक्य, मिश्र वाक्य।

खेलने की बारी

(क) दो घंटे में मेरे पास आओ।
(ख) वह बासी भोजन नहीं खाता।
(ग) मैंने उस सपेरे को देखा जो बीन बजा रहा था।
(घ) डीजे बजा और नृत्य शुरू हो गया।
(ङ) तुम कब तक वापस आ जाओगे?

19. अशुद्धि-शोधन

बोलने की बारी

(क) वाक्य निर्माण करते समय विद्यार्थी प्रायः विराम-चिह्न, वर्तनी, लिंग, वचन, कारक, काल, पदक्रम संबंधी अशुद्धियाँ करते हैं।
(ख) वाक्य में विशेषण और क्रिया का लिंग कर्ता के अनुसार बदलता है।

लिखने की बारी

1. (क) (*ii*) उज्ज्वल (ख) (*i*) नैतिक (ग) (*iii*) आशीर्वाद (घ) (*ii*) प्रतिज्ञा (ङ) (*ii*) भौगोलिक
2. (क) दीवार (ख) गौरव (ग) रुस्तम (घ) मूली (ङ) आयु (च) खिड़की
3. (क) बढ़ई मेज़ बना रहा है। (ख) मरीज़ की आँख में तिनका पड़ गया।
   (ग) लोमड़ी को अंगूर खट्टे लग रहे थे। (घ) चाँद निकल आया है।
   (ङ) बूढ़ा धीरे-धीरे चल रहा था।
4. (क) महादेवी वर्मा प्रसिद्ध कवयित्री थीं। (ख) राष्ट्रपति ने हस्ताक्षर कर दिए।
   (ग) वर्षा के बाद पानी बहने लगा। (घ) मुझे एक प्याली गरम चाय देना।
   (ङ) कृपया आम खाएँ।
5. व्याकरण और वर्तनी का ज्ञान न होने से अशुद्धियाँ होती हैं। इन्हीं को दूर करके अशुद्धि-शोधन किया जा सकता है।

खेलने की बारी

एक राजा था। एक बार वह लड़ाई में हार गया। दुश्मन से जान बचाने के लिए वह एक पहाड़ की गुफा में जाकर छिप गया। राजा ने गुफा में एक चींटी देखी। वह गुफा की दीवार पर चढ़ने की कोशिश कर रही थी। चींटी दीवार पर चढ़ती और गिर पड़ती। इस तरह वह कई बार ऊपर चढ़ी और नीचे गिरी। आखिर वह दीवार पर चढ़ने में सफल हो गई। इससे प्रेरित होकर राजा ने लड़ाई की योजना बनाई और सफल हो गया।

20. विराम-चिह्न

बोलने की बारी

(क) लिखित भाषा में भावों को स्पष्ट करने हेतु बीच-बीच में रुकने के लिए लगाए जाने वाले संकेतों को विराम-चिह्न कहते हैं। अर्थ-भाव की स्पष्टता के लिए इनकी उपयोगिता होती है।

(ख) विराम-चिह्न के निम्नलिखित प्रकार हैं– पूर्णविराम, अल्पविराम, अद्‌र्धविराम, प्रश्नसूचक-चिह्न, विस्मयबोधक-चिह्न, योजक-चिह्न, निर्देशक-चिह्न, शब्द-चिह्न, उद्‌धरण-चिह्न, कोष्ठक-चिह्न, लाघव-चिह्न, हंसपद या त्रुटिपूरक चिह्न एवं विवरण-चिह्न।

लिखने की बारी

1. (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✓
2. (क) चिड़िया के घोंसले में दो अंडे हैं।
   (ख) अर्जुन, भीम, नकुल, सहदेव और युधिष्ठिर पांडव कहलाते हैं।
   (ग) अहा! भारत क्रिकेट मैच जीत गया।
   (घ) क्या वर्षा बंद हो गई है?
   (ङ) रात भर रुक-रुककर वर्षा होती रही।
3. (क) ! – शाबाश! यह तुमने अच्छा काम किया।
   (ख) ? – क्या तुम भी जाओगे?
   (ग) : – लिंग के दो भेद हैं:– 1. स्त्रीलिंग, 2. पुल्लिग।
   (घ) , – राम, श्याम और मोहन आए थे।
   (ङ) रामधारी सिंह 'दिनकर' हिंदी के महान कवि थे।

4. (क) लिखते समय स्पष्टता के लिए रुकने के लिए प्रयोग किए गए चिह्नों को 'विराम-चिह्न' कहते हैं।

(ख) विराम-चिह्न का प्रयोग भावों की स्पष्टता के लिए किया जाता है।

खेलने की बारी

एक तालाब में एक मेढकी रहती थी। वह बहुत घमंडी थी। वह अपने को बहुत बड़ा समझती थी। एक दिन मेढकी के बच्चे ने एक बैल देखा। उसने मेढकी से कहा–"माँ, आज मैंने एक बहुत बड़ा जानवर देखा।" मेढकी ने अपना शरीर फुलाया और पूछा–"इतना बड़ा?" बच्चा बोला–"नहीं माँ, इससे भी बड़ा।" मेढकी ने शरीर को और फुलाया और फिर पूछा–"इतना बड़ा?" बच्चे ने कहा–"इससे भी बड़ा।" इस तरह मेढकी अपना शरीर फुलाती गई। अंत में उसका पेट फट गया और वह मर गई।

21. मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

बोलने की बारी

(क) भाषा में मुहावरों और लोकोक्तियों का बहुत महत्व है। इनके प्रयोग से भाषा में सरसता, सरलता, चमत्कार और प्रवाह उत्पन्न होता है। इनकी सहायता से बात को बहुत सुंदर तरीके से प्रभावशाली बनाकर प्रस्तुत किया जा सकता है।

(ख) मुहावरे वाक्यांश हैं और लोकोक्ति संपूर्ण वाक्य। मुहावरों का प्रयोग स्वतंत्र रूप में नहीं किया जा सकता। इसके विपरीत लोकोक्तियों का प्रयोग स्वतंत्र रूप में होता है।

लिखने की बारी

1. (क) शेर की दहाड़ सुनकर सारे छूमंतर हो गए।

(ख) श्रवण कुमार अपनी माता-पिता की आँखों का तारा है।

(ग) इस बुज़ुर्ग की बातें पत्थर की लकीर होती हैं।

(घ) उत्सव ने अपने पिता जी के जन्मदिन पर घी के दीये जलाए।

2. (क) लोहा लेना – मुकाबला करना

(ख) हथियार डालना – हार मान लेना

(ग) एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाना – बहुत परिश्रम करना

(घ) अंग-अंग टूटना – बहुत थकान होना

(ङ) अपना उल्लू सीधा करना – अपना स्वार्थ साधना

(च) बाएँ हाथ का खेल होना – अत्यंत सरल होना

3. (क) आम के आम गुठलियों के दाम – दोहरा लाभ

(ख) इधर कुआँ, उधर खाई – दोनों ओर मुसीबत होना

(ग) खोदा पहाड़, निकली चुहिया – अधिक परिश्रम का कम फल

(घ) जैसी करनी, वैसी भरनी – कर्म के अनुसार फल मिलता है

(ङ) जिसकी लाठी, उसकी भैंस – ताकतवर की जीत होती है।

4. रंग जमाना – संगीतकार ने तो महफिल में रंग जमा दिया।

हाथ फैलाना – विपुल परिश्रम नहीं करता इसलिए उसे हाथ फैलाना पड़ता है।

मुँह में पानी आना – अंगूरों को देखते ही लोमड़ी के मुँह में पानी आ गया।

पेट में चूहे कूदना – भूख के मारे पेट में चूहे कूद रहे हैं।

जान पर खेलना – हिरनी ने जान पर खेलकर अपने बच्चे को बचाया।

दाल में काला होना – छोटू सामने नहीं आ रहा। लगता है दाल में कुछ काला है।

5. (क) वे शब्द समूह जो अपने शाब्दिक अर्थ से अलग विशेष अर्थ की अभिव्यक्ति कराते हैं, उन्हें 'मुहावरा' कहते हैं।

(ख) लोकोक्ति पूर्ण वाक्य होती हैं जबकि मुहावरा वाक्य का अंश होता है। लोकोक्ति लोक में प्रचलित उक्ति होती है जो भूतकाल का लोक अनुभव होती है, जबकि मुहावरा अपने रूढ़ अर्थ के लिए प्रसिद्ध होता है।

खेलने की बारी

(क) कान पर जूँ न रेंगना
कान लगाना

(ख) आँखों का तारा
आँख की किरकिरी होना

(ग) दाँत फाड़ना
दाँत पीसना

(घ) हाथ फैलाना
हाथ उठाना

सोचने की बारी

छात्र स्वयं करेंगे।

22. अपठित बोध

लिखने की बारी

अपठित गद्यांश

1. (क) शास्त्री जी ने देश को ऊँचा उठाने के लिए अनोखी सूझ से काम किया।
   (ख) शास्त्री जी राष्ट्र की सच्ची शक्ति किसानों के हाथों में मानते थे।
   (ग) उन्होंने 'जय जवान, जय किसान' का नारा दिया।
   (घ) देश के लिए किसानों का महत्व यह है कि वे रूखा-सूखा खाकर भी देश के लिए भोजन जुटाते हैं।
   (ङ) एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाने का अर्थ है–बहुत परिश्रम करना।
2. (क) विवेक व्यक्ति को विचारशील, सहनशील, धीर और साहसी बनाता है।
   (ख) विवेक के बिना व्यक्ति को दुख और विपत्ति की प्राप्ति होती है।
   (ग) गद्यांश के अनुसार मनुष्य का शत्रु अविवेक है।
   (घ) विवेकहीनता के कारण ही रावण के वंश का नाश हुआ।
   (ङ) इस गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है–'विवेक का महत्व'।
3. (क) महापुरुषों ने अपनी वाणी से भाईचारे और एकता का संदेश दिया है।
   (ख) हमारे देश की विशेषता यह रही है कि यहाँ सभी धर्मों के अनुयायी एक साथ मिलकर रहते हैं।
   (ग) सिक्खों के प्रथम गुरु गुरुनानक देव थे।
   (घ) नानक के उपदेशों को सुनकर मरदाना उनका शिष्य बन गया।
   (ङ) 'पुत्र' शब्द का तद्भव है–'पूत'।

अपठित पद्यांश

1. (क) मेहनती लोग असंभव को भी संभव बना देते हैं।
   (ख) उलझने आने पर उत्साह बनाए रखना चाहिए।
   (ग) हमें समय को कार्य करते हुए बिताना चाहिए।
   (घ) 'काम' शब्द का तत्सम रूप है–'कार्य'।
   (ङ) काव्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक है–'कर्मवीर'।

2. (क) बादल जल की नन्ही-नन्ही बूँदें लेकर आता है।

(ख) जल की बूँदें पड़ने से चंपे की कलियाँ खिल उठती हैं।

(ग) परियों की शहजादी आकर मोती से अंचल भरती है।

(घ) मूलशब्द है–'सुरभि', प्रत्यय है–'इत'।

(ङ) काव्यांश का उपयुक्त शीर्षक है–'बादल'।

23. चित्र-वर्णन

लिखने की बारी

1. यह ताजमहल का चित्र है। यह उत्तर प्रदेश के आगरा में बना है। इसमें सफ़ेद संगमरमर का प्रयोग किया गया है। इसमें मीनार और गुबंद हैं। देश-विदेश के पर्यटक इसे देखने आते हैं। इसे मुगल बादशाह शाहजहाँ ने बनवाया था।
2. यह दीपावली का दृश्य है। परिवार के सभी लोग मिलकर त्योहार मना रहे हैं। यह त्योहार कार्तिक मास की अमावस्या को मनाया जाता है। इसे प्रकाश का पर्व भी कहते हैं। लोग पटाखे फोड़ते हैं। विभिन्न तरह के व्यंजन बनाए जाते हैं। रात में लक्ष्मी की पूजा होती है।
3. इसमें भगवान श्रीकृष्ण को गाय चराते दिखाया गया है। वे मुरली बजा रहे हैं। गायें भी ध्यान से मुरली की मधुर धुन सुन रही हैं। भगवान के गले में माला है। उनके सिर पर मोर मुकुट भी लगा है। यह सब नदी के किनारे पेड़ के पास हो रहा है।
4. इस चित्र में बंदर ठंड से काँप रहा है क्योंकि वह बारिश से भीग गया है। वह चिड़िया से रहने की जगह माँग रहा है। उसके चेहरे पर दुख के भाव स्पष्ट हो रहे हैं। चिड़िया उसे समझा रही है। वह अपने घोंसले में बैठी है। इसे चिड़िया ने अपनी मेहनत से बनाया है।

24. संवाद-लेखन

लिखने की बारी

1. अर्पित – सर नमस्ते, मेरी साइकिल चोरी हो गई। कृपया रिपोर्ट लिख लें।

   पुलिसवाला – कहाँ रखी थी अपनी साइकिल?

   अर्पित – विद्यालय के गेट के सामने।

पुलिसवाला – किस कंपनी की थी?

अर्पित – सर 'हीरो' कंपनी की साइकिल थी। बिलकुल नई।

पुलिसवाला – आसपास के लोगों से पता किया या नहीं?

अर्पित – सर, कुछ पता नहीं चल रहा।

पुलिसवाला – ठीक है, मैं पता लगाता हूँ। अपना नंबर लिखवा दो।

अर्पित – जी, मेरा नंबर है – 88xxxxxxxx

पुलिसवाला – साइकिल का पता चलते ही इसी नंबर पर तुम्हें सूचना दी जाएगी।

अर्पित – धन्यवाद सर।

2. सब्ज़ी विक्रेता – हरी ताज़ी सब्ज़ी ले लो। नरम-नरम भिंडी ले लो।

महिला – भिंडी किस भाव दे रहे हो?

सब्ज़ी विक्रेता – चालीस रुपये प्रति किलो।

महिला – कुछ सस्ती लगा लो। यह तो बहुत महँगी है।

सब्ज़ी विक्रेता – आपको कितनी चाहिए?

महिला – पाँच किलो चाहिए, लेकिन सही दाम लगाओ।

सब्ज़ी विक्रेता – आपको 35 रुपये प्रति किलो लगा दूँगा।

महिला – तौल दो, लेकिन खराब मत तौलना।

सब्ज़ी विक्रेता – बिलकुल ताज़ी हैं, आप बिलकुल चिंता न करें।

महिला – ये लो अपने रुपये।

3. नकुल – दीदी, नमस्ते! मेरे लिए उपहार ज़रूर लाना।

दीदी – उपहार, किस खुशी में नकुल?

नकुल – मेरा जन्मदिन है न। कुछ तो चाहिए।

दीदी – वाह! मैं तो भूल ही गई थी। क्या चाहिए?

नकुल – मोबाइल लाना, दीदी।

दीदी – बिलकुल, तुम्हारे लिए अच्छा वाला फ़ोन लाऊँगी।

नकुल – धन्यवाद दीदी। आप बहुत अच्छी हैं।

दीदी – परसों आऊँगी, तब बातें करूँगी।

4. आर्यन – डॉक्टर साहब मेरे पेट में बहुत दर्द है।

डॉक्टर – कल क्या खाया था?

आर्यन – कुछ नहीं। स्कूल से बाहर निकला तो टिक्की खा ली थी।

डॉक्टर – ओह! स्वास्थ्य का ध्यान रखा करो। प्रदूषण बहुत है। बाहर मत खाया करो।

आर्यन – बहुत भूख लगी हुई थी।

डॉक्टर – मैं तीन दिन की दवा दे रहा हूँ। इसे लेना, ठीक हो जाओगे।

आर्यन – धन्यवाद डॉक्टर साहब, अब कब आना होगा?

डॉक्टर – तुम स्वस्थ हो जाओगे। अब आने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।

5. अर्णव – संजय, परीक्षा तो सिर पर आ गई। तैयारी हो गई कि नहीं?

संजय – तुम्हारी तैयारी हो गई क्या? मेरी तो अभी बाकी है।

अर्णव – मेरी तैयारी तो अधूरी है। मैं बीमार हो गया था।

संजय – मैंने गणित की तैयारी तो की लेकिन हिंदी की बाकी है।

अर्णव – मेरे लिए विज्ञान पढ़ना मुश्किल हो गया है।

संजय – विज्ञान के प्रश्न तो मेरे तैयार हैं।

अर्णव – आज से मेहनत शुरू करूँगा।

संजय – मैं भी अब और मेहनत करूँगा।

6. अभिमन्यु – सर, मैं कक्षा–6 में प्रवेश चाहता हूँ।

प्रधानाचार्य – पिछली कक्षा में कितने प्रतिशत अंक मिले?

अभिमन्यु – सर 60 प्रतिशत मिले हैं।

प्रधानाचार्य – आज के समय के अनुसार कम हैं। तैयारी कैसी थी?

अभिमन्यु – मेहनत की थी फिर भी...

प्रधानाचार्य – कोई बात नहीं। मैं तुम्हें प्रवेश देता हूँ, लेकिन और मेहनत करना।

अभिमन्यु – धन्यवाद सर, मैं खूब मेहनत करूँगा।

प्रधानाचार्य – मैंने हस्ताक्षर कर दिए हैं। कक्षाध्यापक को यह प्रपत्र दे देना, वे तुम्हारा नाम लिख लेंगे।

7. राजीव – आज तो चिड़ियाघर देखकर बहुत मज़ा आया।

रंजन – जानवर भी तो कितने थे–भालू, चीता, हिरन, हाथी, शेर।

राजीव – जानवर ही क्यों पक्षी भी तो थे–मोर, खरगोश, मुरगा, तोता, है कि नहीं।

रंजन – बंदर तो केले खा रहा था।

राजीव – बंदरिया उसके सिर से जुएँ निकाल रही थी।

रंजन – शेर तो ऐसे दहाड़ रहा था कि सुनकर डर लगता था।

राजीव – तभी तो वह पिंजरे में बंद था।

रंजन – जो भी हो, जाना सफल हो गया।

राजीव – यह तो है।

8. मज़दूर – मैं आज ही आम के इस पेड़ को धराशायी कर दूँगा।

रमन – क्यों, इसने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?

मज़दूर – मेरे मालिक को लकड़ी की ज़रूरत है।

रमन – अभी तो यह हरा है, फल भी देता है।

मज़दूर – तो क्या हुआ। बगीचे में और पेड़ भी तो हैं।

रमन – पर्यावरण के लिए पेड़ ज़रूरी हैं। मैं पुलिस को फ़ोन कर रहा हूँ।

मज़दूर – अरे नहीं भाई, फ़ोन मत करो। मैं नहीं काटूँगा।

रमन – अपनी कुल्हाड़ी और आरी लेकर यहाँ से चले जाओ।

9. पहली सहेली – बिजली जाने के कारण बहुत गरमी लग रही है।

दूसरी सहेली – पढ़ना-लिखना तो मुश्किल हो गया है।

पहली सहेली – परीक्षा की तैयारी ही नहीं हो पा रही है।

दूसरी सहेली – टंकी में पानी भी खत्म है, कैसे होगा?

पहली सहेली – अब तो बिजली आने पर ही मोटर चलेगी।

दूसरी सहेली – बिजली पर हमारी बहुत निर्भरता है।

पहली सहेली – हाँ, सारा कुछ इसी पर निर्भर है।

दूसरी सहेली – चलो! बिजली आ भी गई। अब अपना काम कर लें।

10. टिकट-चेकर – टिकट...टिकट...टिकट

छात्र – सर मेरे पास टिकट नहीं है।

टिकट-चेकर – टिकट नहीं है, क्यों?

छात्र – सर मैं प्लेटफॉर्म पर पहुँचा तो गाड़ी छूटने वाली थी।

टिकट-चेकर – कहाँ से बैठे थे?

छात्र – हरपाल गंज रेलवे स्टेशन से।

टिकट-चेकर – पाँच सौ रुपये फाइन भरो।

छात्र – यह तो बहुत ज़्यादा है। मैं परीक्षा देने जा रहा हूँ।

टिकट-चेकर – तो तुम्हें सोचना चाहिए न, टिकट बनवाओ।

छात्र – टिकट बना दीजिए।

टिकट-चेकर – कहाँ तक जाना है?

छात्र – वाराणसी कैंट।

टिकट-चेकर – 175/- रुपये दो, लो पर्ची। आगे से ध्यान रखना।

छात्र – धन्यवाद, सर!

25. कहानी-लेखन

लिखने की बारी

1. एक लोमड़ी थी। वह बहुत चालाक थी। एक दिन उसने खीर बनाई तो सारस को अपने घर खाने के लिए बुलाया। सारस आया। लोमड़ी ने उसे बड़ी-सी थाली में खीर परोस दी। सारस चोंच से खीर नहीं खा सकता था। वह भूखे ही वापस लौट गया। अगले दिन उसने मछली बनाई। उसे सुराही में डाल दिया। उसने लोमड़ी को खाने पर बुलाया। लोमड़ी आई। सुराही से वह मछली नहीं निकाल सकती थी। सारस उसी के सामने मछली निकालकर खा रहा था। लोमड़ी ने कहा कि तुम अच्छा नहीं कर रहे। सारस ने कहा–"जैसे को तैसा।" लोमड़ी को सारी बात समझ में आ गई। वह दुखी मन से घर वापस लौट आई।

2. एक ऋषि गंगा में स्नान करके लौटे और योग करने बैठे। उसी समय एक चुहिया बिल्ली के डर के मारे उनकी गोद में आ गई। वह बोली कि मुझे बिल्ली से डर लगता है। मुझे बिल्ली बना दीजिए। ऋषि ने उसे बिल्ली बना दिया। अगले दिन वह कुत्ते से डर गई तो ऋषि ने उसे कुत्ता बना दिया। इसके अगले दिन वह कुत्ता शेर को देखकर डर गया। उसने ऋषि से शेर बनाने के लिए कहा। ऋषि ने जैसे ही उसे शेर बनाया उसने ऋषि के ऊपर झपटना चाहा। ऋषि ने कहा–"तू फिर चुहिया बन जा।" तब से चुहिया कुछ नहीं बन सकी।

3. (क) **एकता में शक्ति–** कुछ कबूतर उड़ रहे थे। ज़मीन पर बिखरे दाने देखकर वे नीचे उतर गए। बहेलिए ने जाल फैलाया था। वे उसी में फँस गए। बूढ़े कबूतर ने कहा कि फड़फड़ाओगे तो फँसते जाओगे। सभी लोग एक साथ ताकत लगाकर पूरब की ओर जाल सहित उड़ो। सबने वैसा ही किया। दूर जाने पर हिरण्यक चूहे ने तेज़ दाँतों से जाल को काट दिया। सभी कबूतर आज़ाद हो गए। इसी को कहते हैं–एकता में शक्ति।

(ख) **धोखेबाज़ मित्र–** दो मित्र साथ-साथ चल रहे थे। उन्हें जंगल के रास्ते में एक भालू आता दिखाई दिया। एक मित्र पेड़ पर चढ़ने लगा। दूसरे से कहा, "मुझे पेड़ पर चढ़ना नहीं आता। तुम मुझे बचा लो।" वह बोला, "मैं तुम्हारी मदद कर मरना नहीं चाहता।" ऐसा कहकर वह पेड़ पर चढ़ गया। दूसरा मित्र ज़मीन पर ही लेट गया। उसने पलभर के लिए आँखें बंद करके साँस रोक ली। उसे मरा समझकर भालू चला गया। दूसरा मित्र जब पेड़ से उतरा तो पूछा कि भालू तुम्हारे कान में क्या कह रहा था? वह बोला– "वह कह रहा था कि धोखेबाज़ से मित्रता नहीं करनी चाहिए। अब तुम मेरे मित्र नहीं हो।"

(ग) **परिश्रम का फल–** एक किसान था। वह आलसी था। उसके खेत जानवर चर लेते थे। वह खाने के लिए भी नहीं कमा पाता था। एक दिन उसने देखा कि माधव दूध बेचने जा रहा है। उसने उससे पूछा– "भाई दूध से कितना कमा लेते हो?" वह बोला, "रोज़ 200 रुपये।" "तो तुम्हारी खेती कौन करता है।" –नकुल ने पूछा। माधव ने कहा कि गाय-भैंस के गोबर से हमारे खेत की मिट्टी उपजाऊ है। उसमें अधिक पैदावार होती है। अगर तुम भी ऐसा करो तो तुम धनी हो जाओगे। उसी दिन से नकुल मेहनत करने लगा। उसका घर अनाज और दूध से भर गया। उसे परिश्रम का फल मिल गया था।

(छ) **सच्चा मित्र–** एक पत्ते और मिट्टी के ढेले में मित्रता हो गई। एक बार आँधी आई। पत्ता उड़ने लगा। उसने ढेले से बचाने की विनती की। ढेला पत्ते के ऊपर आ गया। पत्ता उड़ने से बच गया। थोड़ी ही देर में पानी की नन्ही-नन्ही बूँदें गिरने लगीं। ढेले को लगा कि वह गल जाएगा। वह रुआँसा हो गया। पत्ते ने कहा कि तुम चिंता मत करो। मैं तुम्हें बचा लूँगा। वह ढेले के ऊपर आ गया। ढेला ढँक गया। बरसात बंद हो गई तो दोनों गले मिलते हुए बोले–"हम सचमुच ही सच्चे मित्र हैं।"

26. पत्र-लेखन

लिखने की बारी

1. 26/2-सी
चारबाग, लखनऊ
उत्तर प्रदेश
दिनांक : 01-06-20xx
प्रिय मित्र विमल

नमस्कार

मुझे पता चला कि तुम्हारा स्वास्थ्य विगत दो महीने से खराब है। चाचा जी ने बताया कि तुम्हें कब्ज़ की शिकायत भी रहती है। तुम्हारी पढ़ाई भी इसी कारण नहीं हो पा रही है। अभी से

इतनी परेशानी होगी तो जीवन में सफलता मिल पाना मुश्किल है। ऐसी समस्या पहले मेरे साथ भी थी लेकिन अब पूरी तरह स्वस्थ हूँ। मैं अब रोज़ सुबह योग और व्यायाम करता हूँ। तुम भी योग-व्यायाम करना शुरू करो। तुम पूरी तरह स्वस्थ हो जाओगे। लखनऊ आने पर तुमसे बातें करूँगा।

तुम्हारा अभिन्न मित्र

राजीव

2. प्रधानाचार्य जी
सुमेर मेमोरियल स्कूल
सिविल लाइन्स, सुल्तानपुर
विषय – समर कैंप आयोजन हेतु
महोदय

मैं कक्षा 6 का विद्यार्थी हूँ। कोरोना के कारण पिछले दो वर्षों से हमारे विद्यालय में कहीं भी समर कैंप का आयोजन नहीं हुआ। हमलोग किसी शैक्षणिक पर्यटन पर भी नहीं जा सके। सभी बच्चे बहुत ऊब गए हैं।

अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि इस साल जून के महीने में समर कैंप आयोजित करवाने की कृपा करें।

सधन्यवाद
आपका आज्ञाकारी शिष्य
पारसमणि
कक्षा–6–डी, अनुक्रमांक 32
दिनांक : 10-05-20xx

3. प्रधानाचार्य
शिशु निकेतन विद्यालय
मनैतापुर, खंडवा
राजस्थान

विषय – दिल्ली भ्रमण हेतु

महोदय

मैं सुमित मिश्र अपनी कक्षा के सभी छात्रों की ओर से अनुरोध करता हूँ कि इस वर्ष हमें शैक्षणिक भ्रमण के लिए दिल्ली घुमाने की कृपा करें। हम सभी के मन में लाल किला, राष्ट्रपति भवन, संसद भवन, अक्षरधाम, कमल मंदिर के साथ शहीद स्मारक देखने की प्रबल इच्छा है। हम चाहते हैं कि इन्हें पास से देखें और इनके बारे में जानकारी प्राप्त करें।

अतः आपसे प्रार्थना है कि इस ओर ध्यान देने की कृपा करें।

सधन्यवाद
आपका आज्ञाकारी शिष्य
मंगलमूर्ति
कक्षा–6, अनुक्रमांक–23
दिनांक : 25-05-20xx

4. प्रधानाचार्य
उच्च माध्यमिक विद्यालय
कुकुआर, पट्टी-3
प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश

महोदय

सविनय निवेदन है कि विद्यालय का हैंडपंप पिछले दो दिनों से खराब है। लंच के बाद पानी भी नहीं मिलता। रमैया चपरासी से हमलोग कई बार कह चुके। वे इस परेशानी पर ध्यान ही नहीं देते। गरमी के कारण पौधे भी सूखते जा रहे हैं।

अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि संबंधित व्यक्ति के द्वारा इस समस्या का समाधान करवाने की कृपा करें।

सधन्यवाद
आपका आज्ञाकारी शिष्य
पीयूष राज
कक्षा-6
दिनांक : 07-05-20xx

5. 26/2-ए
सुगंधा अपार्टमेंट
कमरा नं० 4
मोहाली, पंजाब
दिनांक : 11-11-20xx

प्रिय अनुज मानवेंद्र

खुश रहो

कल शाम को पता चला कि तुम्हारा मन पढ़ाई में नहीं लग रहा है। पापा जी इस बात से बहुत परेशान हैं। तुम्हारी पढ़ाई को वे सबसे अधिक महत्व देते हैं। भाई, पढ़ाई-लिखाई ही जीवन में काम

आती है। बाकी यह दोस्ती एक समय के बाद किसी काम नहीं आती। अत: सब कुछ भूलकर अपनी पढ़ाई करो ताकि परीक्षा में अधिक अंक अर्जित कर सको। बाकी बातें मिलने पर...

तुम्हारा अग्रज
राघवेंद्र

6. मुख्य बाज़ार
मझौली, शंभूगंज
जौनपुर, उत्तर प्रदेश
दिनांक : 12-03-20xx

प्रिय मित्र ज्ञानेश

नमस्कार

मित्रवर

मैं यहाँ पर कुशलतापूर्वक रहकर ईश्वर से आप सबके सकुशल रहने की प्रार्थना करता हूँ। यह सूचित करते हुए हमें अतीव हर्ष हो रहा है कि मेरे भाई की शादी इसी महीने 26 मार्च को होनी तय है। इसमें निम्नलिखित कार्यक्रमानुसार आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है।

हल्दी-मेहंदी – 25.03.20xx रविवार

शुभ विवाह – 26.03.20xx सोमवार

मित्र, मैं आपकी प्रतीक्षा में रहूँगा। शेष मिलने पर।

आपका मित्र
श्यामदेव मौर्य

7. प्रधानाचार्य
सेवाश्रम बाल विद्या मंदिर
रनकपुर, झाँसी, उत्तर प्रदेश

विषय – <u>कटे फल बेचने वालों की शिकायत</u>

महोदय

मैं कक्षा-6 का विद्यार्थी प्रवीण बहुत चिंता के साथ लिख रहा हूँ कि विद्यालय के गेट पर ठेलेवाला हमेशा कटे फल बेचते हैं। गाड़ी-मोटर के चलने से जो धूल उड़ती है वह फलों पर पड़ती रहती है। उन पर मक्खियाँ भी भिनभिनाती रहती हैं। रोकने पर भी वह नहीं मानते हैं। कई बच्चे विवशता में उसे खाकर बीमार भी पड़ चुके हैं।

अत: आपसे निवेदन है कि उसे समझाकर ऐसा न करने के लिए प्रेरित करें।

साभार धन्यवाद
आपका शिष्य
प्रवीण
दिनांक : 10-01-20xx

8. केशोपुर, तरदहा
विजय विहार
मध्य प्रदेश
दिनांक : 20-04-20xx

पूजनीय माता जी

सादर चरण स्पर्श

मैं यहाँ कुशलतापूर्वक रहकर आशा करता हूँ कि आप स्वस्थ होंगी। माता जी, जब मैं इस नए विद्यालय में आया था तो सोचा कि मेरा मित्र कौन होगा। अब मुझे एक मित्र मिल गया है। उसका नाम रंजीत है। वह पढ़ने में बहुत तेज़ है। वह बोलता भी बहुत मधुर है। वह अपना हर काम समय से पूरा करता है। उसके साथ पढ़ने-लिखने और बातें करने में मुझे बहुत आनंद आता है। जब मैं घर आऊँगा तो उसके बारे में और बातें भी बताऊँगा। दादा-दादी और पापा जी को मेरा प्रणाम कहना।

आपका पुत्र
शैलेश

9. थानाध्यक्ष
थाना नौपेड़वा, मनैतापुर
राजस्थान

विषय – साइकिल चोरी की शिकायत

महोदय

मैं रवीश तोगड़िया निवासी ग्राम बाँका का रहने वाला हूँ। कल रात किसी ने मेरी साइकिल चोरी कर ली। वह मुझे बहुत कोशिश करने पर भी नहीं मिल रही है। लाल रंग की यह साइकिल मुन्ना साइकिल स्टोर से अभी तीन महीने पहले ही 6000/- में खरीदी थी। इसकी रसीद जिसका क्रमांक 266 है, मेरे पास है। आप इसे तलाशने की कृपा करें।

सधन्यवाद

शिकायतकर्ता
रवीश तोगड़िया
दिनांक : 20-05-20xx

10. स्वच्छता अधिकारी
दक्षिणी दिल्ली
नगर निगम

विषय – मोहल्ले की सफ़ाई हेतु

महोदय

मैं राघवपुरम का रहने वाला हूँ। विगत तीन सप्ताह से सफ़ाई के लिए आने वाली कूड़ागाड़ी इधर नहीं आती। यहाँ जगह-जगह कूड़े के ढेर लगे हुए हैं और उनके ऊपर मक्खियाँ भिनभिनाती रहती हैं। यहाँ बीमारी फैलने का खतरा है। अतः आपसे निवेदन है कि इस क्षेत्र के संबंधित कर्मचारी को इस दिशा में निर्देश जारी करने की कृपा करें।

साभार धन्यवाद
ओजस्विन शर्मा
दिनांक : 21-06-20xx

11. 226-26-सी
गौतम अपार्टमेंट
विमल विहार
मझगवाँ, चंडीगढ़
दिनांक : 25-04-20xx

पूज्य पिता जी

सादर चरण स्पर्श

आशा है कि आपका स्वास्थ्य ठीक होगा। माता जी तथा गौरव अच्छे होंगे। मैं यहाँ अपनी पढ़ाई मन लगाकर करता हूँ, यहाँ सब ठीक चल रहा है। पिता जी मुझे दो पुस्तकें, कुछ कॉपियाँ तथा एक कमीज़ खरीदनी है। इसके लिए मुझे 1500 रुपये की आवश्यकता है। यह राशि मुझे शीघ्र भिजवाने का प्रबंध करें। शेष शुभ! माता जी को प्रणाम और गौरव को स्नेह।

आपका पुत्र
नरेश

27. अनुच्छेद-लेखन

लिखने की बारी

1. **सदाचार का महत्व**

हमारे जीवन में सदाचार ही विकास का आधार है। जिसका आचरण अच्छा होता है उससे सभी प्रेम करते हैं और उसकी मदद भी करते हैं, परंतु जिसका आचरण बुरा होता है उससे सभी दूर

भागते हैं। मेहनत के बल पर हम सफलता के शिखर पर पहुँच तो सकते हैं परंतु वहाँ बने रहने के लिए सदाचार ही आवश्यक है। व्यवहार में सरलता सभी को अपनी ओर आकर्षित करती है। नीरस स्वभाव के लोगों से कोई बात नहीं करना चाहता। अत: हमें सदाचार का हमेशा ध्यान रखना चाहिए।

2. **प्रदूषण**

वर्तमान समय में प्रदूषण बहुत अधिक बढ़ चुका है। इसके कारण लोग बहुत अधिक संख्या में बीमार होने लगे हैं। प्रदूषण की समस्या गाँवों की तुलना में शहरों में अधिक है। यह प्रदूषण चार रूपों में देखने को मिलता है—जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, वायु प्रदूषण और मिट्टी प्रदूषण। जल एवं वायु प्रदूषण से पेट और वायु संबंधी बीमारियाँ होती हैं। ध्वनि प्रदूषण से सिरदर्द एवं माइग्रेन जैसी बीमारियाँ होती हैं। मिट्टी प्रदूषित होने के कारण अनाज के पौष्टिक तत्व नष्ट होने लगे हैं। इससे बचने हेतु अपने-अपने तरीके से सभी को प्रयास करना होगा।

3. **प्रात:कालीन भ्रमण**

प्रात:काल का समय बहुत ही सुहावना होता है। उस समय शीतल, मंद और सुगंधित हवा बहती रहती है। पेड़ों पर पक्षी कलरव करते रहते हैं। क्यारियों में फूलों के खिलने के कारण भौंरे उन पर गुंजार करते रहते हैं। ऐसे समय में टहलना बहुत सुखद और स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होता है। सामान्यतया कहा जाता है कि सुबह-शाम की हवा लाख रुपये की दवा। इसका आशय यह है कि सुबह के समय टहलना शरीर को स्वस्थ और मन को प्रफुल्लित रखने का माध्यम है।

4. **समय का सदुपयोग**

समय को बलवान कहा गया है। यह किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। जो लोग समय का सदुपयोग करते हैं वे सफल होते हैं, परंतु जो लोग समय का सही उपयोग नहीं करते उन्हें बाद में पछताना पड़ता है। पढ़ाई करने वालों के लिए तो समय का और भी अधिक महत्व होता है। जो छात्र मेहनत से पढ़ाई करते हैं वे परीक्षा में अधिक अंक प्राप्त करते हैं, परंतु जो दिनभर घूमते और रातभर सोते रहते हैं, वे असफल हो जाते हैं। अत: सभी को अपना कार्य निश्चित समय में ही पूरा कर लेना चाहिए।

5. **मेरा भारत महान**

मेरा भारत महान है। यहाँ की नदियाँ मीठे जल वाली हैं। उत्तर में हिमालय इसके शीश पर मुकुट की तरह विराजमान है। दक्षिण में अरब सागर इसके चरण पखारता रहता है। मेरे देश की प्रकृति मन को मोहित करती रहती है। यहाँ कहीं ऊँचे पहाड़ तो कहीं गहरी घाटियाँ हैं। कहीं ऊबड़-खाबड़ मैदान तो कहीं हरी-भरी समतल भूमि है। यहाँ हर दो महीने पर ऋतु बदल जाती है। यहाँ बसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, शिशिर और हेमंत ऋतु का एक निश्चित क्रम है। कश्मीर की सुंदरता तो अनुपम है। इन्हीं कारणों से मेरा भारत महान है।

6. **विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता**

अनुशासन का अर्थ है–स्वयं से शासित होना। लेकिन आजकल इस भावना का बहुत अभाव है। विद्यार्थियों में तो अनुशासनहीनता की समस्या लगातार बढ़ती जा रही है। माता-पिता और गुरुजनों का आदर करना तो जैसे लोग भूलते ही जा रहे हैं। इसके कारण लोगों का नैतिक और चारित्रिक पतन होता जा रहा है। विद्यालय से लेकर घर तक का माहौल इसीलिए खराब हो रहा है। सभी को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि आहार, व्यवहार और कार्य में अनुशासन बना रहे।

7. **परिश्रम का महत्व**

परिश्रम सफलता की कुंजी है। जो पूरे मन से परिश्रम करते हैं वे कभी भी असफल नहीं होते। संस्कृत भाषा में कहा गया है कि –'उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः' इसका अर्थ यह है कि केवल सोचने से सफलता की प्राप्ति नहीं होती, इसके लिए परिश्रम करना होता है। जो लोग पसीना बहाते हैं, धूप में कार्य करते हैं शीतल वायु का आनंद उन्हें ही समझ आता है। अतः सभी को परिश्रम करना चाहिए।

8. **विज्ञान : वरदान या अभिशाप**

आज का युग विज्ञान का युग है। नई-नई खोजें हो रही हैं। टेलीविज़न, मोबाइल, कंप्यूटर के अलावा भी इतनी चीज़ें बन गई हैं कि लोगों का जीवन सुविधाओं से भरपूर हो गया है। यही कारण है कि विज्ञान को वरदान कहा जाता है। दूसरी तरफ़ इसने विनाशकारी तत्वों का भी निर्माण कर दिया है। इसके परिणामस्वरूप आज पूरी दुनिया बारूद के ढेर पर बैठी नज़र आ रही है। ऐसी स्थिति में विज्ञान के आविष्कारों के दुरुपयोग से बचना चाहिए।

28. निबंध-लेखन

लिखने की बारी

1. **सर्व शिक्षा अभियान**

सर्व शिक्षा अभियान का अर्थ है–देश में समाज के सभी वर्गों को शिक्षित करने के लिए चलाया जाने वाला अभियान। आज़ादी के बाद से ही यह कार्य किया जाने लगा था। भारत सरकार इसके लिए बुनियादी शिक्षा को आधार मानकर कार्य करती है। इस दिशा में विगत कुछ वर्षों से व्यापक परिवर्तन दिखाई देने लगे हैं। वस्तुतः इसकी आवश्यकता इसलिए भी है कि शिक्षा के बिना किसी तरह का विकास संभव नहीं है। शिक्षा को ज्ञान का तीसरा नेत्र कहा गया है। इसे विद्या भी कहा जाता है। विद्या से ही विनय की प्राप्ति होती है, विनयशील व्यक्ति ज्ञान अर्जित करने का पात्र हो जाता है। शिक्षा के महत्व को रेखांकित करते हुए ही महात्मा गांधी ने कहा था कि शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक के शरीर, मन, आत्मा में अंतर्निहित सर्वोत्तम अंश का संपूर्ण प्रकटीकरण है।

सर्व शिक्षा अभियान का एक दूसरा पक्ष यह भी है कि जब तक समाज से सभी लोग सुशिक्षित नहीं होंगे तब तक वे आगामी पीढ़ी को शिक्षित करने में अपनी भूमिका का निर्वाह न कर सकेंगे। हमारे देश में युवाओं को अपनी ज़िम्मेदारी का निर्वाह करना चाहिए।

2. आधुनिक भारत की समस्याएँ

आधुनिक भारत में परिवर्तन की गति बहुत तेज़ है। नित्य-प्रति नए-नए प्रयोग हो रहे हैं। मानव चंद्रलोक तक की जानकारी रखने लगा है, लेकिन इसके साथ ही कई तरह की चुनौतियाँ भी उत्पन्न हो गई हैं जो विकास को रोक रही हैं। बेरोज़गारी ऐसी ही समस्या है। वर्तमान भारत में लाखों की संख्या में शिक्षित बेरोज़गार हैं। अभी देखने में यह चाहे जैसा भी लग रहा हो, लेकिन यह तय है कि आगामी वर्षों में यह समस्या बढ़ती ही जाएगी। महँगाई भी एक बड़ी समस्या है। इस समस्या के मूल में हमारे देश के सीमित संसाधनों पर बढ़ती जनसंख्या है। जब खरीदारों की संख्या कम होती है और सामान अधिक होता है तो बाज़ार भाव गिरता है। जब खरीदारों की संख्या अधिक होती है और सामान कम होता है तो बाज़ार भाव बढ़ता है। संसाधन सीमित हैं और जनसंख्या अधिक है, इसलिए महँगाई बढ़ती रहेगी। ऐसी स्थिति में गरीब और बेरोज़गार लोग बहुत ही परेशान हैं। भ्रष्टाचार एक अलग तरह की समस्या है। यह समस्या निचले स्तर के संस्थानों से लेकर उच्च स्तर तक व्याप्त है। इसके कारण न्याय और योग्यता दोनों की अनदेखी हो जाती है।

3. देहज-प्रथा

दहेज-प्रथा हमारे देश की प्राचीन परंपरा है जो अब समाज के लिए एक तरह का कलंक है, परंतु लोग इसे त्यागना नहीं चाहते। इस परंपरा का विरोध लोग मौखिक रूप से तो खूब करते हैं, परंतु व्यावहारिक रूप से इसे स्वीकार नहीं करते। जब अपनी लड़की का विवाह करना होता है तब दहेज-प्रथा बुरी लगती है और जब लड़के की शादी करनी होती है तो लोग दहेज लेना अपना अधिकार समझते हैं। यह चिंताजनक बात है। प्राचीन काल में वर पक्ष कन्या पक्ष को दहेज के रूप में आभूषण, वस्त्र, पशु आदि देता था। वह भी बिना किसी दबाव के, अर्थात् अपनी इच्छा से दिया जाता था। इसका परिणाम यह होता था कि संबंधों में माधुर्य भी बना रहता था। लड़की का विवाह करना किसी भी माता-पिता के लिए बोझ नहीं माना जाता था। बाद के वर्षों में लोग धीरे-धीरे संपन्न होने लगे तो उनमें लालच भी बढ़ने लगा। वे दहेज के नाम पर दबाव बनाने लगे। लाखों रुपयों की गाड़ी, नगद, मकान, यहाँ तक कि लोग दहेज के रूप में ज़मीन लेने लगे। अब इस दिशा में व्यापक सुधार की ज़रूरत है।

4. व्यायाम और स्वास्थ्य

व्यायाम का स्वास्थ्य से गहरा संबंध है। जो लोग नियमित रूप से व्यायाम करते हैं वे दूसरों की तुलना में अधिक स्वस्थ रहते हैं। ऐसे लोग अपने कार्यों को कम समय में और बहुत अच्छी तरह से पूरा भी कर लेते हैं क्योंकि वे ऊर्जावान रहते हैं। आज के शहरी वातावरण में ज़हरीली वायु घुली रहती है। प्रदूषण के कारण भी फेफड़ों पर बुरा असर पड़ रहा है। कहा गया है कि–

धन गया, गया नहीं कुछ भी
स्वास्थ्य गया कुछ जाता है।
सदाचार जो गया मनुज का
सब कुछ ही लुट जाता है।

अर्थात् स्वास्थ्य की रक्षा हमेशा ही की जानी चाहिए। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है। अस्वस्थ व्यक्ति विभिन्न तरह की मानसिक दुर्बलताओं का शिकार हो जाता है। उसके जीवन में एकाग्रता नहीं होती। एकाग्रता के अभाव के कारण वह हर कार्य को अधूरे मन से करता है। ऐसा व्यक्ति सफलता से कोसों दूर रहता है। प्रात:काल के समय को योग और व्यायाम के लिए सर्वाधिक उपयुक्त माना गया है। इस समय हवा स्वच्छ रहती है। अनुलोम-विलोम और विभिन्न प्रकार के आसन शरीर को लोचशील और सुडौल बनाते हैं। अत: हम सभी को नियमित रूप से व्यायाम करना चाहिए।

5. **मेरा गाँव**

मेरे गाँव का नाम मरियमपुर है। यह टाउन एरिया से तीन किलोमीटर दूर बनी एक बड़ी नहर के किनारे बसा है। इस नहर में वर्ष भर पानी बहता रहता है। दो-चार साल में कभी ऐसा भी होता है जब पानी के तेज़ बहाव के कारण इसका कोई किनारा कट जाता है, तब पूरा गाँव पानी से लबालब भर जाता है। मेरे गाँव में कई जातियों और धर्मों के लोग रहते हैं। सभी का यही प्रयास रहता है कि हर तरह से शांति बनी रहे। गाँव के एक तरफ़ दशहरी आम के बगीचे हैं जिन्हें देखते ही बनता है। बाकी तीन तरफ़ खेत हैं। बरसात के दिनों में इनमें धान की खेती होती है। सितंबर के महीने में धान काटने के बाद गेहूँ की खेती की जाती है। कुछ खेतों को खाली रखा जाता है ताकि अगेती सब्ज़ियाँ उगाई जा सकें। मेरे गाँव के बीच में एक बड़ा चौपाल भी है जहाँ किसी समारोह के समय लोग इकट्ठे होते हैं। लोगों को यदि आपस में कोई समस्या होती है तो उसका समाधान भी लोग यहीं बैठकर करते हैं। मेरे गाँव के पास ही एक प्राइमरी और उच्चतर माध्यमिक विद्यालय भी है। सारांश यह है कि पूरा गाँव किसी स्वर्ग के समान ही है।

6. **सुभाषचंद्र बोस**

'नेताजी' शब्द सुनते ही सुभाषचंद्र बोस का नाम याद आ जाता। इनका जन्म 23 जनवरी, सन 1897 में तत्कालीन उड़ीसा के कटक में हुआ था। इनके पिता का नाम जानकीनाथ बसु था जो एक प्रसिद्ध वकील थे। इनकी माता प्रभावती देवी धार्मिक विचारों वाली महिला थीं। सुभाषचंद्र बोस पढ़ने-लिखने में बहुत तेज़ थे। वे अपनी कक्षा में हमेशा ही सर्वाधिक अंक प्राप्त करते थे। इंग्लैंड के कैंब्रिज विश्वविद्यालय में भी उन्होंने पढ़ाई की। सन 1920 में उन्होंने भारतीय सिविल सेवा की परीक्षा दी। उसमें भी उनका चयन हुआ लेकिन बाद में राष्ट्रीय आंदोलन से प्रेरित होने के कारण उन्होंने इस नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। नेताजी ने आज़ाद हिंद फ़ौज की स्थापना की और नारा दिया– 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा'। उनके इस प्रयास में उन्हें देश-विदेश तक के लोगों का समर्थन मिला। आज़ादी के लिए भारत के लोगों ने उनके वज़न के बराबर सोने-चाँदी के गहनों से उनका तुलादान किया। ऐसा व्यक्तित्व भारतीय इतिहास में दूसरा कोई नहीं है।

7. **सत्संगति**

सत्संगति का अर्थ होता है– अच्छे लागों की संगति। अच्छे लोग वे होते हैं जिनमें मानवता के गुण होते हैं। सत्संगति के महत्व को व्यक्त करते हुए कहा गया है कि–

कदली सीप भुजंग मुख स्वाति एक गुन तीन।
जैसी संगति बैठिए तैसोई फल दीन।।

इसका आशय मात्र इतना ही है कि अच्छे लोग भी बुरी संगति में पड़कर बुरे हो जाते हैं। हवा का साथ पाने से धूल आसमान तक की यात्रा करती है और पानी का साथ पाने से कीचड़ बन जाती है। लोग इस कीचड़ को छूना भी नहीं चाहते। ईमानदार और चरित्रवान लोगों के साथ रहने से अच्छी आदतों का और उत्तम चरित्र का निर्माण होता है। अत: हमें घटिया स्वभाव के लोगों से स्वयं को बचाए रखना चाहिए। विद्यार्थी काल चरित्र-निर्माण के लिए सबसे उत्तम काल माना जाता है। इस समय जो आदतें पड़ जाती हैं, वे जीवनभर बनी रहती हैं। जैसे-जैसे समय बीतता जाता है, इन्हीं गुणों का विकास होता है। ये आदतें ही प्रगति का आधार बनती हैं। सारांश यह है कि हमें अच्छा बनने का प्रयास हमेशा करते रहना चाहिए।

8. **मेरे जीवन का लक्ष्य**

मैं एक कुशल शिक्षक बनना चाहता हूँ। मेरा मानना है कि राष्ट्र-निर्माण में किसी शिक्षक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। देश के अच्छे नागरिक ही देश का नाम विश्व में रोशन कर सकते हैं। ऐसे लोग किसी-न-किसी विद्यालय में अवश्य पढ़े होते हैं। मैं ऐसे ही लोगों को तैयार करना चाहता हूँ जो परोपकारी हों और राष्ट्र की सेवा को ही अपना प्रथम कर्तव्य समझें। जहाँ तक मैं समझता हूँ एक शिक्षक के रूप में ही मैं यह कार्य अच्छी तरह से कर सकता हूँ। हालाँकि मेरे लिए यह सफलता प्राप्त कर पाना बहुत आसान नहीं है। इसका कारण यह है कि मैं विज्ञान विषय का शिक्षक बनना चाहता हूँ परंतु इस विषय को समझने में मुझे बहुत परेशानी होती है। विज्ञान के नियम हमें आसानी से याद ही नहीं होते। इसके बाद भी मैं अपने निर्णय पर अटल हूँ। मुझे पूरा विश्वास है कि इस दिशा में सफलता अवश्य मिलेगी। इसके लिए अब मैं और भी अधिक मेहनत करूँगा। समय निकालकर अतिरिक्त कक्षाओं में भी बैठकर पढ़ाई करूँगा। मेहनत के बल पर विज्ञान विषय का शिक्षक बन जाने पर विज्ञान के क्षेत्र में खोज करने वाले भी तैयार हो जाएँगे। ऐसे लोग देश की सुरक्षा को मज़बूती प्रदान करेंगे।

कार्य-प्रपत्र–1

(भाषा, लिपि, बोली और व्याकरण एवं वर्तनी विचार)

1. (क) अपने मन के भावों-विचारों को दूसरों तक पहुँचाने और दूसरों के भावों-विचारों को समझने और लिखने के लिए जिस साधन का उपयोग करते हैं, उसे 'भाषा' कहते हैं।

(ख) भारत में बोली जाने वाली पाँच भाषाएँ हैं–हिंदी, मलयालम, अंग्रेज़ी, तमिल, पंजाबी।

(ग) मेरी मातृभाषा हिंदी है। इसकी लिपि देवनागरी है।

(घ) भाषा के शब्दों को लिखने के लिए जिन ध्वनि-संकेतों का प्रयोग करते हैं, उसे 'लिपि' कहते हैं।

(ङ) व्याकरण से हमें भाषा को शुद्ध रूप में बोलने और लिखने का ज्ञान होता है।

2. संस्कृत – देवनागरी
मराठी – देवनागरी
नेपाली – देवनागरी
जर्मन – रोमन
बांग्ला – बांग्ला
फ्रेंच – रोमन
पंजाबी – गुरुमुखी
उर्दू – फ़ारसी

3. (क) वर्ण (ख) स्वर (ग) व्यंजन (घ) संयुक्त (ङ) द्वित्व व्यंजन (च) अनुनासिक (छ) अनुस्वार

4. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✗

5. (क) मुख – म् + उ + ख् + अ

(ख) किताब – क् + इ + त् + आ + ब् + अ

(ग) सरगम – स् + अ + र् + अ + ग् + अ + म् + अ

(घ) गुलाब – ग् + उ + ल् + आ + ब् + अ

(ङ) स्वतंत्र – स् + व् + अ + त् + अं + त् + र् + अ

(च) रुकावट – र् + उ + क् + आ + व् + अ + ट् + अ

6. (क) दृश्य (ख) राष्ट्रीय (ग) ड्रामा (घ) स्मार्ट (ङ) कर्तव्य (च) प्रकार (छ) धर्म (ज) सर्वनाम (झ) व्यापारी

7. (क) मैं पत्र पढ़ता हूँ।
(ख) यहाँ अनेक लोग आएँगे।
(ग) मैंने हस्ताक्षर करवाए।
(घ) गुप्ता जी आए हैं।
(ङ) उनकी पत्नी का नाम श्रीमती मीनाक्षी है।
(च) उनकी माता जी बूढ़ी हैं।
(छ) हम एक ईश्वर की संतान हैं।
(ज) उन्होंने एक प्रतिज्ञा की है।
(झ) कृपया मुझे तीन दिन का अवकाश दें।
(ञ) मुझे कहानियों की किताब दे दो।

8. ् – राष्ट्र, ड्रम, ड्रामा, राष्ट्रीय
ा – प्रकाश, प्रमाण, व्रण, क्रम
र्श – फ़र्श, वर्ष, हर्ष, विमर्श
र – रमन, राकेश, रात्रि, राजेश

9. (क) बीमार (ख) प्रेरणा
(ग) त्रिभुज (घ) दैनिक
(ङ) विज्ञान

10. क्ष – क्षमा, क्षत्रिय, क्षण, क्षेत्र त्र – त्रिभुज, त्रेता, त्राण, त्रिया
ज्ञ – ज्ञान, ज्ञेय, ज्ञाता, ज्ञात श्र – श्रमिक, श्रम, श्रेय, श्रीमान

कार्य-प्रपत्र–2

(संधि, शब्द-विचार एवं शब्द-भंडार)

1. (क) नरेश – नर + ईश (ख) मनोनुकूल – मनः + अनुकूल
(ग) रवींद्र – रवि + इंद्र (घ) निश्चय – निः + चय
(ङ) महेंद्र – महा + इंद्र (च) सज्जन – सत् + जन
(छ) देवाशीष – देव + आशीष (ज) रत्नाकर – रत्न + आकर
(झ) हिमालय – हिम + आलय (ञ) पुनर्जन्म – पुनर् + जन्म

2. (क) सूर्योदय (ख) ब्रह्मर्षि (ग) अत्यधिक
(घ) संसार (ङ) निष्कलंक (च) स्वार्थ
(छ) उज्ज्वल (ज) अंतःकरण (झ) भाग्योदय
(ञ) राजर्षि

3. (क) सूर्यास्त – सूर्य + अस्त (ख) गिरीश – गिरि + ईश
(ग) विद्यार्थी – विद्या + अर्थी (घ) विद्यालय – विद्या + आलय
(ङ) शचींद्र – शची + इंद्र (च) भूर्जा – भू + ऊर्जा

4. (क) वर्णों के सार्थक मेल को 'शब्द' कहते हैं।
(ख) यौगिक शब्दों के दोनों खंडों के अर्थ होते हैं, परंतु योगरूढ़ शब्दों के भिन्न अर्थ होते हैं; जैसे– रसोई + घर – यौगिक शब्द है।
जलज – जल से उत्पन्न – 'कमल' योगरूढ़ शब्द है।
(ग) शब्दों का वर्गीकरण उत्पत्ति, रचना, प्रयोग एवं अर्थ के आधार पर किया जाता है।
(घ) अर्थ के आधार पर शब्द के दो भेद हैं–सार्थक शब्द और निरर्थक शब्द।
(ङ) बनावट के आधार पर शब्दों के तीन भेद हैं–रूढ़, यौगिक एवं योगरूढ़।

5. (क) अग्नि – आग (ख) नृत्य – नाच
(ग) गौ – गाय (घ) नींद – निद्रा
(ङ) घर – गृह (च) दाँत – दंत

6. (क) यौगिक शब्द – रसोईघर, विद्यालय (ख) रूढ़ शब्द – घर, बाग
(ग) योगरूढ शब्द – हिमालय, पंकज (घ) विकारी शब्द – पत्ता, गाय
(ङ) अविकारी शब्द – ज़ोर, के विपरीत

7. (क) इच्छा – अभिलाषा, कामना, आकांक्षा (ख) किरण – रश्मि, कर, मयूख
(ग) गणेश – गजानन, गौरीसुत, लंबोदर (घ) झूठ – मिथ्या, असत्य, मृषा
(ङ) दिन – दिवस, वासर, दिवा

8. (क) दल – पत्ता, समूह (ख) तीर – किनारा, बाण
(ग) कनक – सोना, धतूरा (घ) लाल – बेटा, लाल रंग
(ङ) पानी – जल, सम्मान

9. (क) चालाक (ख) चालक (ग) प्रणाम (घ) पानी

10. (क) उदय × अस्त – सूर्य अस्त हो गया।
(ख) कायर × साहसी – विपुल बहुत साहसी लड़का है।
(ग) एकता × अनेकता – अनेकता में एकता भारत की विशेषता है।
(घ) गुप्त × प्रकट – उसके जीवन का रहस्य प्रकट हो गया।
(ङ) उधार × नगद – व्यापार नगद में ही करना चाहिए।

कार्य-प्रपत्र–3

(उपसर्ग, प्रत्यय, समास एवं संज्ञा)

1. (क) किसी शब्द से पहले जो शब्दांश जुड़कर नए शब्द की रचना करते हैं, वे 'उपसर्ग' कहलाते हैं; जैसे–'पढ़' से पहले 'अन' उपसर्ग लगाकर 'अनपढ़' शब्द बन गया है।

2.

शब्द	उपसर्ग	मूलशब्द	शब्द	उपसर्ग	मूलशब्द
आमरण	आ	मरण	आजीवन	आ	जीवन
अनबन	अन	बन	अधिपति	अधि	पति
अवगुण	अव	गुण	अतिसुंदर	अति	सुंदर
अल्पवृष्टि	अल्प	वृष्टि	निष्पाप	निस्	पाप

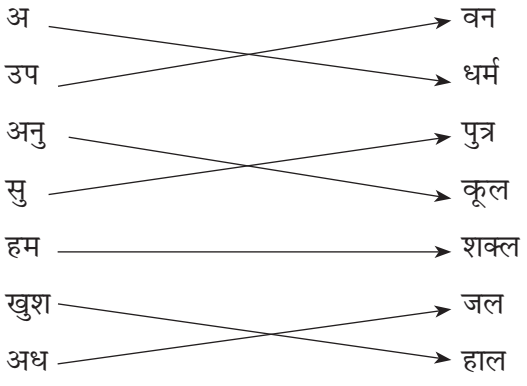

उपसर्ग → **मूलशब्द**

3. अ → धर्म
   उप → वन
   अनु → कूल
   सु → पुत्र
   हम → शक्ल
   खुश → हाल
   अध → जल

4. किसी शब्द के अंत में जुड़कर नए शब्द बनाने वाले शब्दांश 'प्रत्यय' कहलाते हैं; जैसे– श्रद्धा + आलु = श्रद्धालु।

5.

शब्द	**मूलशब्द**	**प्रत्यय**
देखनेवाला	देख	वाला
बंदरिया	बंदर	इया
रोज़ाना	रोज़	आना
घुमक्कड़	घूमना	अक्कड़
कमाऊ	कमा	आऊ
लिखावट	लिख	आवट

6. (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✓

7. (क) पीतांबर – कर्मधारय/बहुव्रीहि समास
   (ख) प्रतिदिन – अव्ययीभाव समास
   (ग) चंद्रमुख – कर्मधारय समास
   (घ) नवरात्रि – द्विगु समास
   (ङ) युद्धभूमि – तत्पुरुष समास

8. (क) दोस्ती निभाना महेश से सीखो। – व्यक्तिवाचक संज्ञा
   (ख) तुम लाल किला देखने कब चलोगे? – व्यक्तिवाचक संज्ञा
   (ग) हमारा विद्यालय बहुत बड़ा है। – जातिवाचक संज्ञा
   (घ) मैंने आज मोर देखा। – जातिवाचक संज्ञा
   (ङ) हमें किसी के साथ शत्रुता नहीं करनी चाहिए। – भाववाचक संज्ञा

9. (क) किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान अथवा भाव के नाम को 'संज्ञा' कहते हैं। इसके तीन भेद हैं–व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा एवं भाववाचक संज्ञा।

(ख) जिससे व्यक्ति, वस्तु या स्थान विशेष का बोध हो; जैसे–ताजमहल, कपूरथला, माधवी आदि।

(ग) जिससे संपूर्ण जाति का बोध हो, उसे 'जातिवाचक संज्ञा' कहते हैं; जैसे– मछली, जानवर, पहाड़, नदी।

(घ) मन के भावों को व्यक्त करने वाली संज्ञाएँ भाववाचक संज्ञाएँ हैं; जैसे–प्रसन्नता, मित्रता आदि।

10. (क) मुसकराहट (ख) ममता (ग) मोटापा (घ) गरमी

कार्य-प्रपत्र–4

(लिंग, वचन एवं कारक)

1. (क) शब्द के जिस रूप से उसके पुरुष या स्त्री जाति के होने का बोध हो उसे 'लिंग' कहते हैं।

(ख) लिंग के दो भेद हैं–स्त्रीलिंग और पुल्लिग।

(ग) संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसकी संख्या का पता चलता है, उसे 'वचन' कहते हैं।

(घ) वचन के दो भेद हैं–एकवचन और बहुवचन।

2. (क) अनुज – अनुजा (ख) अभिनेता – अभिनेत्री (ग) बकरी – बकरा
(घ) भगवान – भगवती (ङ) ग्वाला – ग्वालिन (च) मुर्गा – मुर्गी
(छ) ऊँटनी – ऊँट (ज) श्रीमान – श्रीमती (झ) कवि – कवयित्री

3. (क) मालिन हार बनाती है।

(ख) धोबी कपड़े धोता है।

(ग) गायिका सुरीली आवाज़ में गाती है।

(घ) हमारी नौकरानी प्रातः चार बजे उठती है।

(ङ) वह भारत की सम्राज्ञी बनेगी।

(च) इस मकान का मालिक कौन है?

4. (क) राखी – राखियाँ (ख) बाँह – बाँहें (ग) थाली – थालियाँ
(घ) पुस्तक – पुस्तकें (ङ) कन्या – कन्याएँ (च) छत – छतें
(छ) सभा – सभाएँ (ज) रोटी – रोटियाँ

5. (क) चिड़िया – चिड़ियाँ (ख) बात – बातें (ग) सेनाएँ – सेना
(घ) वस्तु – वस्तुएँ (ङ) बस्ते – बस्ता (च) गुरु – गुरुजन
(छ) तितलियाँ – तितली (ज) डिबिया – डिबियाँ (झ) गरीब – गरीबजन

6. (क) झरने (ख) सब्ज़ियाँ (ग) शाखाओं
(घ) तितली (ङ) दुकानें (च) स्त्रियाँ
(छ) छुट्टियों

7. (क) से (ख) का (ग) से
(घ) को (ङ) से (च) ने

8. (क) अपादान कारक (ख) कर्ता कारक (ग) करण कारक
(घ) संप्रदान कारक (ङ) अपादान कारक

9. (क) मैंने कहानियाँ पढ़ीं। (ख) रामू संतरा लाया।
(ग) बाग में लड़के खेलते हैं। (घ) भारतीय नागरिक परिश्रमी होते हैं।
(ङ) मैंने साड़ी खरीदी।

10. (क) हथिनी धीरे-धीरे चलती है।
(ख) नानी जी पुस्तक पढ़ रही हैं।
(ग) कमला जी की बेटी बुद्धिमती है।
(घ) नाटक में इस युवती ने कवयित्री का अभिवादन किया।
(ङ) वीरांगना स्त्री ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया।

कार्य-प्रपत्र–5

(सर्वनाम, विशेषण एवं क्रिया)

1. (क) संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द को 'सर्वनाम' कहते हैं।
(ख) सर्वनाम के छह प्रकार हैं– पुरुषवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, प्रश्नवाचक, संबंधवाचक, निजवाचक सर्वनाम।
(ग) संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्दों को 'विशेषण' कहते हैं।
(घ) विशेषण के चार भेद हैं–गुणवाचक, संख्यावाचक, परिमाणवाचक एवं सार्वनामिक विशेषण।

2. (क) **उसका** घर दूर है। अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम

(ख) **मुझे** रास्ते का ज्ञान है। उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम

(ग) **जिन्हें** आना था, **वे** नहीं आए। संबंधवाचक सर्वनाम

(घ) **जितना** खाया, **उतना** पचाया। संबंधवाचक सर्वनाम

(ङ) **हमारा** कार्य समाप्त हो गया। उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम

(च) **हमारी** पुस्तकें आपके पास हैं। उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम

3. (क) उसे मत रोको। (ख) भिखारी को कुछ खाने को दे दो।

(ग) वह स्वयं चला जाएगा। (घ) उसने कार्य पूर्ण कर लिया।

(ङ) जितना कहोगे, उतना मिलेगा। (च) आज किसे बुलाना चाहिए?

(छ) यह कार्य अपने आप नहीं होगा। (ज) वहाँ कोई टहल रहा था।

(झ) जैसा करोगे, वैसा भरोगे।

4.

विशेषण	**विशेष्य**
भयानक	जंगल
विशाल	पर्वत
पतली	पुस्तक
रंग-बिरंगे	गुब्बारे
रेशमी	वस्त्र
मोटा	लड़का
ऊँची	मीनार
घने	बाल

5. (क) स्वादिष्ट (ख) नई

(ग) पचास (घ) प्रथम

6. (क) नई – गुणवाचक विशेषण

(ख) चार – संख्यावाचक विशेषण

(ग) खुशबूदार – गुणवाचक विशेषण

(घ) एक दर्जन – संख्यावाचक विशेषण

(ङ) कुछ – संख्यावाचक विशेषण

7. (क) बोलते (ख) भरता (ग) होती है
   (घ) मारा (ङ) कूद (च) पकड़कर

8. (क) राम-लक्ष्मण के साथ सीता वन गई।
   (ख) रावण के दस सिर थे।
   (ग) क्या यह पुस्तक आपने लिखी है?
   (घ) श्रीमती इंदिरा गांधी भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री थीं।
   (ङ) दरवाज़ा किसने खोला?

9. (क) जिस शब्द से किसी कार्य के करने या होने का पता चले, उसे 'क्रिया' कहते हैं।
   (ख) जिस क्रिया को कर्म की अपेक्षा हो, उसे 'सकर्मक क्रिया' कहते हैं; जैसे– वह क्रिकेट खेलता है।

   जिस क्रिया को कर्म की अपेक्षा न हो, उसे 'अकर्मक क्रिया' कहते है; जैसे–चिड़िया उड़ गई।

10. (क) उपहार (ख) गाना (ग) रोटी
    (घ) चोर (ङ) तसवीर (च) कंबल

कार्य-प्रपत्र–6

(काल, क्रियाविशेषण एवं संबंधबोधक)

1. (क) भूतकाल (ख) भूतकाल
   (ग) भूतकाल (घ) वर्तमान काल
   (ङ) वर्तमान काल (च) भूतकाल

2. एक घने जंगल में शेर भोजन करके आराम कर रहा था। बहुत दिनों बाद उसे उसका प्रिय भोजन प्राप्त हुआ था। अपनी मस्ती में लेटा वह आराम कर रहा था। कहीं से उड़कर एक मक्खी आ गई थी। वह सोए हुए शेर के कानों पर भिनभिनाने रही थी।

3. (क) क्रिया के जिस रूप से किसी कार्य के होने के समय का बोध हो, उसे 'काल' कहते हैं; जैसे– वह जा रहा था। (भूतकाल)
   (ख) जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम का संबंध वाक्य के अन्य शब्दों के साथ जोड़ते हैं, उन्हें 'संबंधबोधक अव्यय' कहते हैं।

(ग) क्रियाविशेषण केवल क्रिया की विशेषता बताते हैं। संबंधबोधक अव्यय वाक्य के अन्य शब्दों के साथ संज्ञा का संबंध स्पष्ट करते हैं।

(घ) क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द क्रियाविशेषण कहलाते हैं; जैसे– वह **धीरे-धीरे** चल रहा था।

4. (क) काल (ख) तीन
   (ग) भूतकाल (घ) आसन्न भूतकाल
5. (क) आज – कालवाचक (ख) सुबह-सुबह – कालवाचक
   (ग) बाईं ओर – स्थानवाचक (घ) कभी-कभी – कालवाचक
   (ङ) उधर – स्थानवाचक
6. (क) बाहर – स्थानवाचक क्रियाविशेषण
   (ख) अधिक – परिमाणवाचक क्रियाविशेषण
   (ग) धीरे-धीरे – रीतिवाचक क्रियाविशेषण
   (घ) अंदर – स्थानवाचक क्रियाविशेषण
   (ङ) थोड़ा – परिमाणवाचक क्रियाविशेषण
   (च) अभी – कालवाचक क्रियाविशेषण
7. (क) के चारों ओर (ख) के पीछे (ग) के अंदर
   (घ) के बिना (ङ) के कारण (च) के ऊपर
   (छ) के नीचे (ज) की तुलना (झ) के साथ
   (ञ) के भीतर
8. (क) के भीतर (ख) के ऊपर (ग) के सामने
   (घ) के पास (ङ) के बारे
9. (क) के अंदर (ख) के ऊपर (ग) के विपरीत
   (घ) के नीचे (ङ) के साथ
10. (क) दरवाज़े के बाहर आदमी पुकार रहा है।
    (ख) सिर के ऊपर फूल की डाली थी।
    (ग) परिस्थिति रमेश के अनुकूल थी।
    (घ) बीमारी के कारण वह परीक्षा न दे सका।
    (ङ) हर्षिता के बिना विमला का काम पूरा न होगा।

कार्य-प्रपत्र–7

(समुच्चयबोधक एवं विस्मयादिबोधक)

1. (क) और (ख) क्योंकि (ग) इसलिए (घ) अन्यथा
2. (क) बल्कि (ख) अन्यथा (ग) परंतु (घ) या (ङ) किंतु
3. (क) मैंने उसे बुलाया था लेकिन वह नहीं आया।
   (ख) ऐसा लगा मानो चाँद निकल आया हो।
   (ग) वह असफल होगा क्योंकि उसने तैयारी ही नहीं की।
   (घ) मैं तुम्हारी मदद करता मगर तुमने गलती की है।
   (ङ) रीमा ने कपड़े एवं कुछ गहने खरीदे।
4. (क) अहा! गायिका बन गई।
   (ख) ओए! अखबार ही पढ़ते रहोगे या बाज़ार भी चलोगे?
   (ग) हे भगवान! चूहों ने तो नाक में दम कर रखा है।
   (घ) अरे! तुम कहाँ चल दिए?
   (ङ) वाह! धोनी ने सौ रन बना लिए।
   (च) सावधान! आगे सड़क टूटी हुई है।
   (छ) वाह! रसगुल्ला खाकर मज़ा आ गया।
5. (क) हर्षबोधक – वाह!
   (ख) संबोधनबोधक – अरे!
   (ग) घृणाबोधक – छि:!-छि:!
   (घ) शोकबोधक – हाय!
   (ङ) विस्मयबोधक – अहो!
6. जिन शब्दों द्वारा दो वाक्यों, शब्दों या उपवाक्यों को जोड़ा जाता है, उन्हें 'समुच्चयबोधक अव्यय' कहते हैं।
7. (क) और (ख) क्योंकि
   (ग) या (घ) अन्यथा
   (ङ) कि

8. (क) अहा! आनंद आ गया।

(ख) छि:!-छि:! यहाँ कितनी बदबू है।

(ग) अरे! इतनी सुबह आ गए।

(घ) अच्छा! तुम्हीं थे जो उस दिन आए थे।

(ङ) वाह! तुमने तो कमाल ही कर दिखाया।

9. और, तो, परंतु, इसलिए, अथवा, क्योंकि।

10. (क) समय पर पहुँचो अन्यथा ट्रेन छूट जाएगी।

(ख) पढ़ोगे तो सफल होगे।

(ग) गोताखोर ने डुबकी लगाई लेकिन सामान न निकाल सका।

(घ) पूड़ी या पराँठा में से कुछ भी खा लो।

(ङ) विपुल और सलिल घर आए थे।

कार्य-प्रपत्र–8

(वाक्य, अशुद्धि-शोधन, विराम-चिह्न, मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ)

1. (क) सार्थक शब्दों के मेल से बने पद-समूह को 'वाक्य' कहते हैं।

(ख) वाक्य के दो खंड होते हैं–उद्देश्य और विधेय; जैसे–गीता (उद्देश्य) टहलती है। (विधेय)

(ग) रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद होते हैं और अर्थ के आधार पर आठ भेद होते हैं।

2. (क) विधानवाचक वाक्य (ख) निषेधवाचक वाक्य

(ग) इच्छावाचक वाक्य (घ) विस्मयवाचक वाक्य

(ङ) प्रश्नवाचक वाक्य (च) विस्मयवाचक वाक्य

(छ) संदेहवाचक वाक्य

3. (क) **बकरी** आकर घास खा गई।

(ख) **शिवाजी** एक वीर योद्धा थे।

(ग) **अशोक** स्टेशन पर पहुँचा।

(घ) **मैंने** एक रोचक कहानी पढ़ी।

(ङ) **विधि और प्रांजल** ने मिलकर खाना बनाया।

(च) **गुणवती** स्त्री सर्वत्र पूजी जाती है।

(छ) **माधव** मन-ही-मन कुढ़ रहा था।

4. (क) यहाँ मत खेलो।

(ख) मुझे आज सोनीपत जाना है।

(ग) चारों बेटों के नाम बताओ।

(घ) मैं पत्र पढ़ता हूँ।

(ङ) दादा जी ने आशीर्वाद दिए।

5. (क) लिखित भाषा में स्थान-स्थान पर रुकने के लिए विराम-चिह्नों का प्रयोग किया जाता है।

(ख) निर्देशक-चिह्न की रेखा योजक-चिह्न से बड़ी होती है।

(ग) अल्प का अर्थ है–'थोड़ा' और विराम का अर्थ है–'रुकना'।

(घ) (०) चिह्न का नाम लाघव-चिह्न है।

(ङ) किसी कवि अथवा लेखक के उपनाम को लिखने के लिए इकहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग करते हैं।

6. भावों, विचारों की स्पष्टता के लिए विराम-चिह्नों का प्रयोग किया जाता है।

7. (क) हमें सुख-दुख, लाभ-हानि से घबराना नहीं चाहिए।

(ख) तुम कल कहाँ गए थे?

(ग) विद्या-रहित मनुष्य का जीवन बेकार है।

(घ) तुलसीदास जी ने रामचरितमानस लिखी थी।

(ङ) अरे! तुम वापस आ गए।

8. यदि हम चाहते हैं कि हमारा शरीर प्रसन्न, चुस्त और फुर्तीला रहे तो शारीरिक शक्ति का विकास अनिवार्य है। जब शरीर स्वस्थ होगा तो मस्तिष्क स्वयं स्वस्थ रहेगा। एक कहावत है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क होता है। जब मानसिक शक्ति स्वस्थ और विवेकशील होगी तब आत्मिक उन्नति हो जाएगी। इस प्रकार शारीरिक उन्नति पर ही मानसिक और आत्मिक उन्नति निर्भर है जो मानव जीवन की सफलता का मूल कारण है।

9. (क) लट्टू हो जाना – मोहित हो जाना

(ख) हाथ बँटाना – सहायता करना

(ग) नाक में दम होना – परेशान करना

(घ) घी के दीये जलाना – खुशियाँ मनाना

(ङ) बगुला भगत – धोखेबाज़ होना

(च) आस्तीन का साँप – कपटी आदमी

(छ) ईद का चाँद होना – बहुत समय बाद मिलना

10. (क) (*ii*) बहुत थकान होना (ख) (*i*) खरी-खरी सुनाना

(ग) (*ii*) उपेक्षा करना (घ) (*i*) कोई प्रयास उठा न रखना।

(ङ) (*ii*) आश्चर्यजनक कार्य करना

कार्य-प्रपत्र–9

(अपठित बोध)

1. (क) लेखक इस सिद्धांत को बहुत पसंद करता है कि सत्य के अनेक रूप होते हैं।

(ख) लेखक अंधे और हाथी की कथा का ज़िक्र करता है।

(ग) धर्म के भ्रातृ-मंडल का उद्देश्य होना चाहिए कि वह एक व्यक्ति को हिंदू, मुसलमान और ईसाई से पहले एक अच्छा इनसान बनने में मदद करे।

(घ) 'सत्य' का तद्भव–'साँच' और 'भ्रातृ' का तद्भव–'भाई' है।

(ङ) ग्राह्य, निम्नतम

(च) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है–'दृष्टिकोण'।

2. (क) अनुशासन किसी भी कार्य को ढंग से करने का तरीका है।

(ख) अनुशासन भावनाओं को नियंत्रित करता है।

(ग) अनुशासन के पालन से हमारा जीवन व्यवस्थित हो जाता है।

(घ) दक्षता – कुशलता, वरिष्ठ – श्रेष्ठ

(ङ) नियंत्रण – न् + इ + य् + अं + त् + र् + अ + ण् + अ

प्राकृतिक – प् + र् + आ + क् + ऋ + त् + इ + क् + अ

(च) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है–'अनुशासन का महत्व'।

3. (क) मेहनती लोग असंभव को भी संभव बना देते हैं।

(ख) उलझने आने पर भी उत्साह बनाए रखना चाहिए।

(ग) हमें परिश्रम करते हुए समय को बिताना चाहिए।

(घ) 'काम' का तत्सम है–'कर्म'।

(ङ) काव्यांश का उपयुक्त शीर्षक है–'कर्मवीर'।

4. (क) बादल जल की नन्ही-नन्ही बूँदें लेकर आता है।

(ख) पानी की बूँदें पड़ते ही चंपा की कलियाँ खिल उठती हैं।

(ग) परियों की शहजादी आकर अंचल में मोती भरती है।

(घ) मूल शब्द – 'सुरभि', 'प्रत्यय – 'इत'

(ङ) काव्यांश का उपयुक्त शीर्षक है–'बादल'।

कार्य-प्रपत्र–10

(चित्र-वर्णन, संवाद-लेखन एवं कहानी-लेखन)

1. यह चित्र विजयादशमी का है। विजयादशमी का मेला लगा है। दस सिर वाले रावण को दर्शाया गया है। जगह-जगह अलग प्रकार के झूले लगे हैं। कुछ दुकानें भी लगी हैं। लोग मिठाइयाँ और खिलौने खरीद रहे हैं। विजयादशमी भगवान श्रीराम के अयोध्या से वापस लौटने से पहले रावण-वध के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। यह बुराई पर अच्छाई की जीत मानी जाती है।

2. आकांक्षा – अरे! स्तुति, क्या तुमने पिकनिक चलने की तैयारी कर ली?

स्तुति – नहीं, अभी नहीं कर सकी।

आकांक्षा – क्यों, क्या घर से अनुमति नहीं मिली?

स्तुति – दादा जी तो मान गए लेकिन पिता जी की तबीयत ठीक नहीं है।

आकांक्षा – जयपुर को गुलाबी शहर कहते हैं। चलो, अच्छा लगेगा।

स्तुति – सोच रही हूँ लेकिन...

आकांक्षा – लेकिन क्या! आज मैं अंकल जी से मिलने आऊँगी।

स्तुति – हाँ, आ जाना। हो सकता है योजना बन ही जाए।

3. मनु और दीपक अच्छे मित्र थे। एक बार दोनों खेत में छुपम-छुपाई खेल रहे थे। दीपक जहाँ छुपा था वहाँ एक चोर पहले से छुपा था। वह दीपक को पकड़कर उसके मुँह में कपड़ा भर दिया ताकि वह चोर के बारे में शोर न मचा सके। मनु दीपक को पुकारता तो दीपक बोल ही न पाता। तलाशते हुए वह दीपक तक पहुँच ही गया। वह दीपक को छुड़ाने चला तभी उसके कंधे पर किसी ने हाथ रखा। दीपक चोर को देखकर डर गया। वह छुड़ाकर भागा दीपक ने एक पत्थर फेंककर चोर को मारा। पत्थर चोर को लगा और गिर गया। तब दोनों ने उसके हाथ-पाँव बाँधे और पुलिस को सौंप दिया।

कार्य-प्रपत्र–11

(पत्र-लेखन, अनुच्छेद-लेखन एवं निबंध-लेखन)

1. 260-ए
   नीलम कॉलोनी
   बरेली, उत्तर प्रदेश
   दिनांक : 10-04-20xx

   प्रिय मित्र

   अभिरंजन

   यह जानकर बहुत चिंता हो रही है कि पिछले महीने से ही तुम्हारी तबियत खराब है, लेकिन यह खबर पाकर संतुष्ट भी हूँ कि अब तुम स्वस्थ हो रहे हो। इधर कुछ वर्षों से बीमारियाँ ऐसी हो रही हैं कि पहले पता ही नहीं चलता। तुमने तो अच्छा किया जो अपनी जाँच करवा ली। खान-पान और आहार-विहार का विशेष ध्यान रखना ताकि शीघ्र स्वस्थ हो जाओ।

   मैं तुम्हारे उत्तम स्वास्थ्य की कामना करता हूँ।

   तुम्हारा अभिन्न मित्र
   निलेश

2. प्रधानाचार्य
   राजकीय माध्यमिक विद्यालय
   दशरथपुर, बाराबंकी

   विषय – छात्रवृत्ति हेतु प्रार्थना-पत्र

   महोदय

   मैं कक्षा 6 का विद्यार्थी हूँ। विगत परीक्षाओं में मैंने सर्वोत्तम अंक प्राप्त किए हैं। मेरे घर की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है। यदि मुझे छात्रवृत्ति मिलती है तो मैं अपनी तैयारी एवं पढ़ाई सुनियोजित तरीके से कर सकूँगा। इस सहयोग के लिए मैं आपका आभारी रहूँगा।

   साभार धन्यवाद
   नितिन माहेश्वरी
   अनुक्रमांक – 22, कक्षा–6
   दिनांक : 10-02-20xx

3. **पुस्तकालय–** पुस्तकालय का अर्थ होता है–पुस्तक का घर। कहा गया है कि पुस्तकें जीवंत देव प्रतिमाएँ हैं। इनके ज्ञान से तत्काल प्रकाश और उल्लास मिलता है। कुछ पुस्तकालय व्यक्तिगत होते हैं तो कुछ संस्थागत। विद्यालयी पुस्तकालयों का विशेष महत्व होता है। अंतर्राष्ट्रीय पुस्तकालयों

में विश्वभर की किताबें रखी होती हैं। तकनीकी युग में भ्रामक सूचनाओं की भरमार है। ऐसी स्थिति में पुस्तकें हमें तथ्यपरक जानकारियाँ उपलब्ध कराती हैं।

4. **स्वास्थ्य सबसे बड़ा धन**

व्यायाम का स्वास्थ्य से गहरा संबंध है। जो लोग नियमित रूप से व्यायाम करते हैं वे दूसरों की तुलना में अधिक स्वस्थ रहते हैं। ऐसे लोग अपने कार्यों को कम समय में और बहुत अच्छी तरह से पूरा भी कर लेते हैं क्योंकि वे ऊर्जावान रहते हैं। आज के शहरी वातावरण में ज़हरीली वायु घुली रहती है। प्रदूषण के कारण भी फेफड़ों पर बुरा असर पड़ रहा है। कहा गया है कि–

धन गया, गया नहीं कुछ भी
स्वास्थ्य गया कुछ जाता है।
सदाचार जो गया मनुज का
सब कुछ ही लुट जाता है।

अर्थात् स्वास्थ्य की रक्षा हमेशा ही की जानी चाहिए। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है। अस्वस्थ व्यक्ति विभिन्न तरह की मानसिक दुर्बलताओं का शिकार हो जाता है। उसके जीवन में एकाग्रता नहीं होती। एकाग्रता के अभाव के कारण वह हर कार्य को अधूरे मन से करता है। ऐसे व्यक्ति सफलता से कोसों दूर रहता है। प्रात:काल के समय को योग और व्यायाम के लिए सर्वाधिक उपयुक्त माना गया है। इस समय हवा स्वच्छ रहती है। अनुलोम-विलोम और विभिन्न प्रकार के आसन शरीर को लोचशील और सुडौल बनाते हैं। अत: हम सभी को नियमित रूप से व्यायाम करना चाहिए।

मेरी भाषा मेरी पहचान, भाग-7

1. भाषा, बोली, लिपि और व्याकरण

बोलने की बारी

(क) भाषा दो प्रकार की होती है– 1. मौखिक भाषा, 2. लिखित भाषा।
मौखिक भाषा–बातचीत, भाषण आदि मौखिक भाषा के उदाहरण हैं।
लिखित भाषा–पुस्तकें, लिखित सूचना आदि लिखित भाषा के उदाहरण हैं।

(ख) व्याकरण के तीन अंग हैं– 1. वर्ण-विचार, 2. शब्द-विचार, 3. वाक्य-विचार।

(ग) हिंदी की लिपि देवनागरी है।

लिखने की बारी

1. (क) लिखित भाषा (ख) मौखिक भाषा (ग) मौखिक भाषा
   (घ) लिखित भाषा (ङ) लिखित भाषा
2. (क) मौखिक भाषा (ख) बोली (ग) राष्ट्रभाषा
   (घ) मानक भाषा (ङ) लिपि
3. (क) मौखिक भाषा (ख) मातृभाषा (ग) राजभाषा
   (घ) बोली
4. (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✓
5. (क) भाषा वह साधन है, जिसके द्वारा हम अपने विचार प्रकट करते हैं तथा दूसरों के विचार समझते हैं। दूसरे शब्दों में, भाषा मुँह से उच्चरित ध्वनि-संकेत है, जिनकी सहायता से हम अपने भावों या विचारों का आदान-प्रदान एक-दूसरे से करते हैं। इसी ध्वनि प्रणाली को हम भाषा कहते हैं।

   (ख) भाषा के मुख्य दो रूप हैं– 1. मौखिक भाषा 2. लिखित भाषा।

   1. **मौखिक भाषा**–जब हम भाषा का प्रयोग बोलकर करते हैं और सुनकर समझते हैं तो उसे 'मौखिक भाषा' कहते हैं; जैसे–बातचीत, नाटक, भाषण, रेडियो प्रसारण आदि।
   2. **लिखित भाषा**–जब हम भाषा का प्रयोग लिखकर करते हैं और पढ़कर समझते हैं तो उसे 'लिखित भाषा' कहा जाता है; जैसे–पत्र लिखना, समाचार-पत्र, पुस्तकें, लिखित सूचना आदि।

(ग) भाषा का मूल रूप मौखिक होता है। बालक जन्म लेने पर सबसे पहले बोलना ही सीखता है। भाषा के मौखिक रूप को सीखना नहीं पड़ता। यह भाषा का अस्थायी रूप है। यह उच्चरित होने के साथ ही समाप्त हो जाता है। इस रूप की आधारभूत इकाई ध्वनि है।

2. वर्ण-विचार

बोलने की बारी

(क) भाषा की सबसे छोटी इकाई, जिसके और टुकड़े नहीं किए जा सकते हैं, उसे 'वर्ण' कहते हैं। वर्णों के दो भेद हैं– 1. स्वर 2. व्यंजन।

(ख) वर्णों के व्यवस्थित तथा क्रमबद्ध समूह को 'वर्णमाला' कहते हैं।

(ग) हिंदी में 11 स्वर हैं। स्वर के तीन भेद हैं–

1. ह्रस्व स्वर, 2. दीर्घ स्वर, 3. प्लुत स्वर।

लिखने की बारी

1. (क) वर्ण (ख) वर्णमाला (ग) सात
   (घ) चार (ङ) संयुक्त
2. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓
   (घ) ✓ (ङ) ✗
3. (क) कबूतर – क् + अ + ब् + ऊ + त् + अ + र् + अ
   (ख) उच्चारण – उ + च् + च् + आ + र् + अ + ण् + अ
   (ग) निरर्थक – न् + इ + र् + अ + र् + थ् + अ + क् + अ
   (घ) घृत – घ् + ऋ + त् + अ
   (ङ) ऐतिहासिक – ऐ + त् + इ + ह् + आ + स् + इ + क् + अ
   (च) स्वागत – स् + व् + आ + ग् + अ + त् + अ
4. (क) भाषा की सबसे छोटी इकाई, जिसके और टुकड़े नहीं किए जा सकते हैं, उसे 'वर्ण' कहते हैं।
   (ख) **स्वर**–जिन वर्णों के उच्चारण में हवा बिना रुके मुँह से बाहर आती है तथा जिनके उच्चारण में अन्य वर्णों की सहायता नहीं लेनी पड़ती है, उन्हें 'स्वर' कहते हैं; जैसे– अ, आ, ए, ओ आदि।

व्यंजन–जिन वर्णों का उच्चारण स्वरों की सहायता से किया जाता है, उन्हें 'व्यंजन' कहते हैं; जैसे–क, च, ट, त, प आदि।

(ग) जिन स्वरों के उच्चारण में सबसे कम समय लगता है, उन्हें 'ह्रस्व स्वर' कहते हैं। ये संख्या में चार हैं– अ, इ, उ तथा ऋ।

(घ) जिन स्वरों के उच्चारण में कम-से-कम समय लगता है, उन्हें 'ह्रस्व स्वर' कहते हैं। ये चार हैं–अ, इ, उ, ऋ। इन्हें मूल स्वर भी कहते हैं। जबकि दीर्घ स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वरों से दुगुना समय लगता है। ये सात हैं–आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

3. संधि

बोलने की बारी

(क) स्वर संधि के पाँच भेद हैं–

1. दीर्घ संधि– दीप + अवली = दीपावली
2. गुण संधि– नर + इंद्र = नरेंद्र
3. वृद्धि संधि– सदा + एव = सदैव
4. यण् संधि– यदि + अपि = यद्यपि
5. अयादि संधि– नै + इका = नायिका

(ख) व्यंजन ध्वनि के बाद स्वर या व्यंजन का मेल होने पर जो विकार उत्पन्न होता है, उसे 'व्यंजन संधि' कहते हैं; जैसे–अनु + छेद = अनुच्छेद।

(ग) संधि के तीन भेद होते हैं–

1. स्वर संधि, 2. व्यंजन संधि, 3. विसर्ग संधि।

लिखने की बारी

1. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✓
2. (क) अ + उ = ओ लोक + उक्ति = लोकोक्ति, सूर्य + उदय = सूर्योदय
   (ख) अ + ए = ऐ एक + एक = एकैक, लोक + एषणा = लोकैषणा
   (ग) इ + इ = ई रवि + इंद्र = रवींद्र, मुनि + इंद्र = मुनींद्र
   (घ) आ + उ = ओ महा + उदय = महोदय, महा + उत्सव = महोत्सव

3. (क) अभि + उदय = अभ्युदय (ख) धर्म + अंध = धर्मांध

(ग) दया + आनंद = दयानंद (घ) सु + आगत = स्वागत

(ङ) रजनी + ईश = रजनीश (च) अति + अधिक = अत्यधिक

4. (क) देवालय = देव + आलय (ख) नायक = नै + अक

(ग) कपीश = कपि + ईश (घ) गुरूपदेश = गुरु + उपदेश

(ङ) सूर्योदय = सूर्य + उदय (च) उच्चारण = उत् + चारण

5. (क) संधि में दो निकट के शब्दों में पहले शब्द का अंतिम वर्ण और दूसरे शब्द का पहला वर्ण एक-दूसरे से मिल जाते हैं। जब दो अक्षर या वर्ण आपस में मिलते हैं तब उनके मेल से विकार उत्पन्न होता है। वर्णों का यह विकारयुक्त मेल 'संधि' कहलाता है; जैसे– राजा + इंद्र = राजेंद्र।

(ख) संधि के तीन भेद होते हैं–

1. स्वर संधि, 2. व्यंजन संधि, 3. विसर्ग संधि।

(ग) दो स्वर वर्णों के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है, उसे 'स्वर संधि' कहते हैं; जैसे– हिम + आलय = हिमालय। इसके पाँच भेद हैं–

1. दीर्घ संधि, 2. गुण संधि, 3. वृद्धि संधि, 4. यण संधि, 5. अयादि संधि।

4. शब्द-विचार

बोलने की बारी

(क) शब्द वर्णों के मेल से बनते हैं। अर्थ के आधार पर शब्दों के दो भेद हैं–

1. सार्थक शब्द 2. निरर्थक शब्द।

(ख) वे शब्द जिनके एक से अधिक अर्थ होते हैं, उन्हें 'अनेकार्थी शब्द' कहते हैं; जैसे–कर्ण – कान, कुंती-पुत्र; कनक – सोना, धतूरा।

(ग) संस्कृत भाषा के जो शब्द हिंदी में अपने मूल रूप में प्रयुक्त होते हैं, उन्हें 'तत्सम शब्द' कहते हैं; जैसे–तृण, आम्र, ग्राम आदि।

लिखने की बारी

1. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✗

(घ) ✓ (ङ) ✓

2.

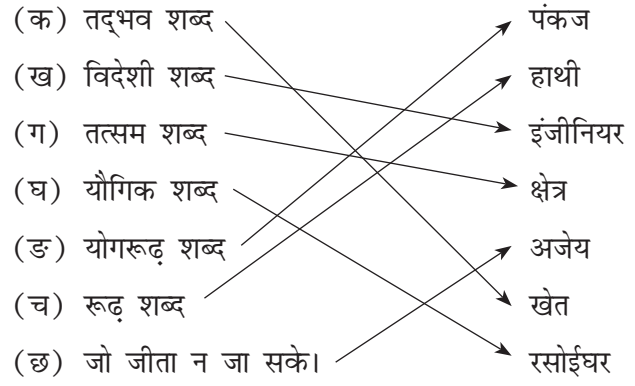

(क) तद्भव शब्द	पंकज
(ख) विदेशी शब्द	हाथी
(ग) तत्सम शब्द	इंजीनियर
(घ) यौगिक शब्द	क्षेत्र
(ङ) योगरूढ़ शब्द	अजेय
(च) रूढ़ शब्द	खेत
(छ) जो जीता न जा सके।	रसोईघर

3. देशज शब्द – लोटा, रोटी, खिचड़ी
   योगरूढ़ शब्द – दामोदर, दशानन, नीलकंठ
   विदेशी शब्द – कार, जहाज़, स्टेशन
   यौगिक शब्द – धर्मशाला, बैलगाड़ी, पाठशाला
   तत्सम शब्द – दधि, दंत, रात्रि
   अविकारी शब्द – धीरे-धीरे, के कारण, किंतु

4. (क) सार्थक (ख) एकार्थी (ग) हड्डी
   (घ) तत्सम (ङ) दो

5. तत्सम शब्द – भ्रमर, कर्ण, दुर्बल
   तद्भव शब्द – आँसू, पिता, घोड़ा
   देशज शब्द – रोटी, थैला, डिब्बा
   विदेशी शब्द – फ़ौरन, जुर्माना, फ़ोन
   यौगिक शब्द – धर्मशाला, चिड़ियाघर, शस्त्रागार
   योगरूढ़ शब्द – एकदंत, हिमालय, पंकज

6.

तत्सम	**तद्भव**
भ्राता	भाई
ओष्ठ	होंठ
उज्ज्वल	उजाला
भिक्षा	भीख
नासिका	नाक
गृह	घर

तत्सम	**तद्भव**
सत्य	सच
सूर्य	सूरज
दुग्ध	दूध
अक्षि	आँख
आम्र	आम
मस्तिष्क	माथा

7. (क) वर्णों के सार्थक और व्यवस्थित मेल को 'शब्द' कहते हैं।

(ख) शब्दों का निम्नलिखित आधारों पर वर्गीकरण किया जाता है–

1. उत्पत्ति के आधार पर
2. रचना के आधार पर
3. अर्थ के आधार पर
4. प्रयोग के आधार पर

(ग) उत्पत्ति के आधार पर शब्दों के चार भेद होते हैं–
1. तत्सम, 2. तद्भव, 3. देशज और 4. विदेशी।

5. शब्द-निर्माण : उपसर्ग

बोलने की बारी

(क) उपसर्ग एक शब्दांश या अव्यय होते हैं जो किसी शब्द के पहले लगते हैं और मूल शब्द का अर्थ बदल देते हैं; जैसे–सु + पुत्र = सुपुत्र, दुर् + जन = दुर्जन, गैर + सरकारी = गैरसरकारी।

(ख) हिंदी में उपसर्ग के चार भेद हैं–1. संस्कृत के उपसर्ग, 2. हिंदी के उपसर्ग, 3. विदेशी भाषा के उपसर्ग, 4. संस्कृत के अव्यय।

(ग) बा + कायदा = बाकायदा, खुश + हाल = खुशहाल।

लिखने की बारी

1.

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द
अधपका	अध	पका
आजीवन	आ	जीवन
सपरिवार	स	परिवार
निर्बल	निर्	बल
परिक्रमा	परि	क्रम
संयुक्त	सम्	युक्त

2. योग – उप + योग = उपयोग
पेट – भर + पेट = भरपेट
वास – आ + वास = आवास
जय – अ + जय = अजय
एक – हर + एक = हरेक
मान – अप + मान = अपमान

3. ला – लापता, लापरवाह
अध – अधखिला, अधमरा
खुश – खुशहाल, खुशकिस्मत
स – सफल, सरस
अव – अवनति, अवगुण
अन – अनमोल, अनपढ़

4. (क) ऐसे शब्दांश जो किसी शब्द के प्रारंभ में जुड़कर उसके अर्थ में विशिष्टता ला देते हैं, उन्हें 'उपसर्ग' कहते हैं।

(ख) हिंदी भाषा में उपसर्ग के चार भेद हैं– 1. संस्कृत के उपसर्ग, 2. हिंदी के उपसर्ग, 3. विदेशी भाषा के उपसर्ग, 4. संस्कृत के अव्यय।

6. शब्द-निर्माण : प्रत्यय

बोलने की बारी

(क) प्रत्यय के दो भेद होते हैं– 1. कृत् प्रत्यय, 2. तद्धित प्रत्यय।

(ख) क्रिया या धातु के अंत में प्रत्यय जुड़ने से कृत् प्रत्यय से बने शब्दों की रचना होती है।

(ग) बूढ़ा + आपा = बुढ़ापा, लूट + एरा = लुटेरा।

लिखने की बारी

1. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓
   (घ) ✓ (ङ) ✓

2.

मूलशब्द	प्रत्यय
दूध	त्व
गुरु	आहट
महा	दान
कड़वा	वाला
सिल	गार
कन्या	इमा
मदद	आई

3. आहट – घबराहट, गरमाहट
   ता – मित्रता, शत्रुता
   इयल – अड़ियल, मरियल
   आन – थकान, उड़ान
   आका – लड़का, उड़ाका
   आई – पढ़ाई, लिखाई
   नी – चलनी, नथनी
   इक – लौकिक, स्वर्गिक
   एरा – लुटेरा, कमेरा
   वाला – अखबारवाला, दूधवाला

4. धनवान – धन + वान
   मोटापा – मोटा + आपा
   अच्छाई – अच्छा + आई
   डिबिया – डिब्बा + इया
   हर्षित – हर्ष + इत
   चित्रकार – चित्र + कार
   बलवान – बल + वान
   पढ़ाकू – पढ़ + आकू
   धार्मिक – धर्म + इक
   लिखाई – लिख + आई

5. रंग + ईला = रंगीला
   चाचा + एरा = चचेरा
   तपस्वी + इनी = तपस्विनी
   मानव + ता = मानवता
   मित्र + ता = मित्रता
   छाता + वाला = छातावाला
   कला + कार = कलाकार
   प्रार्थना + ई = प्रार्थी
   बूढ़ा + आपा = बुढ़ापा
   बच्चा + पन = बचपन

6. (क) जो शब्दांश शब्द के अंत में लगकर शब्द के अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं, उन्हें 'प्रत्यय' कहते हैं। प्रत्यय सार्थक शब्द नहीं होते तथा शब्दों के अंत में प्रयुक्त होते हैं।

   (ख) प्रत्यय के दो भेद हैं–

   1. कृत् प्रत्यय, 2. तद्धित प्रत्यय।

7. शब्द-निर्माण : समास

बोलने की बारी

(क) समास के छह भेद हैं–1. अव्ययीभाव समास, 2. तत्पुरुष समास, 3. कर्मधारय समास, 4. द्वंद्व समास, 5. द्विगु समास, 6. बहुव्रीहि समास।

(ख) कर्मधारय समास में पहला पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य होता है एवं पूर्व पद एवं उत्तर पद में उपमान और उपमेय का संबंध होता है। उदाहरण–महादेव–महान है जो देव।

(ग) जिस समास का पहला पद संख्यावाची हो, उसे 'द्विगु समास' कहते हैं; जैसे–नवग्रह–नौ ग्रहों का समूह।

लिखने की बारी

1. (क) <u>सेनापति</u> का चयन होना है।

   (ख) इस यात्री को <u>राहखर्च</u> मत देना।

(ग) यह इमारत एक शताब्दी पुरानी है।

(घ) पीड़ित परिवार आमरण अनशन पर बैठ गया।

(ङ) चक्रधर सबकी रक्षा करता है।

2. (क) मोहन ने हाथ ही हाथ में मकान खाली करवा दिया।

(ख) राजा और रानी ने गरीबों को दान दिया।

(ग) मन का चाहा कहाँ मिलता है।

(घ) लाभ और हानि तो जीवन का हिस्सा है।

(ङ) आठ धातुओं से बनी यह मूर्ति चमकदार है।

3. (क) रातोंरात (ख) राजाज्ञा

(ग) नीलकमल (घ) गुरुदक्षिणा

(ङ) तुलसीकृत (च) पुरुषोत्तम

4.

समस्तपद	**समास-विग्रह**	**समास का नाम**
चिड़ियाघर	चिड़िया के लिए घर	संप्रदान तत्पुरुष समास
दिन-रात	दिन और रात	द्वंद्व समास
त्रिभुज	तीन भुजाओं का समूह	द्विगु समास
नीलगाय	नीली है जो गाय	कर्मधारय समास
यथासमय	समय के अनुसार	अव्ययीभाव समास
महात्मा	महान है जो आत्मा	कर्मधारय समास

5. (क) शब्दों को मिलाकर संक्षिप्त रूप में लिखने की प्रक्रिया को 'समास' कहते हैं।

(ख) **समस्तपद**–समास-रचना से बना हुआ शब्द 'समस्तपद' या 'सामासिक शब्द' कहलाता है; जैसे–गंगा का जल = गंगाजल।

समास-विग्रह–जब समस्तपद के सभी पदों को अलग-अलग करके लिखा जाता है, तो इस प्रक्रिया को 'समास-विग्रह' कहते हैं; जैसे–वनगमन – वन को गमन।

(ग) समास के छह भेद हैं–

1. अव्ययीभाव समास 2. तत्पुरुष समास
3. कर्मधारय समास 4. द्वंद्व समास
5. द्विगु समास 6. बहुव्रीहि समास।

8. शब्द-भंडार

1. पर्यायवाची शब्द

बोलने की बारी

(क) एक समान अर्थ का बोध कराने वाले शब्दों को 'पर्यायवाची' या 'समानार्थी शब्द' कहते हैं।

(ख) हाँ, पर्यायवाची शब्दों में भी अंतर होता है। पर्यायवाची शब्दों में अर्थ एक समान होने पर भी एक ही शब्द प्रत्येक स्थान पर प्रयोग नहीं किया जा सकता। प्रत्येक शब्द अपने में इतने पूर्ण और समर्थ हैं कि एक ही शब्द का प्रयोग सभी जगहों पर सभी स्थितियों में नहीं किया जा सकता।

लिखने की बारी

1. आसमान – आकाश, गगन हवा – पवन, वायु
   संसार – विश्व, जगत पृथ्वी – धरती, वसुंधरा
   तालाब – सर, सरोवर हाथी – हस्ती, कुंजर

2. (क) चाँद (ख) घर (ग) पंछी
   (घ) शेर (ङ) कमल

2. विलोम शब्द

बोलने की बारी

(क) एक-दूसरे के विपरीत अर्थ का बोध कराने वाले शब्द 'विलोम' या 'विपरीतार्थक शब्द' कहलाते हैं; जैसे–दुर्जन × सज्जन, सुगम × दुर्गम।

(ख) विलोम शब्दों की रचना अधिकांशतः विभिन्न उपसर्गों (सु, कु, अप, नि अ, अव आदि) के प्रयोग से होती है। हमें किसी भी शब्द का विलोम बनाते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि तत्सम शब्द का तत्सम, तद्भव शब्द का तद्भव, देशज शब्द का देशज तथा विदेशी शब्द का विदेशी ही विलोम शब्द हो।

लिखने की बारी

1. (क) पुण्य (ख) सफल (ग) साक्षर
   (घ) शहरी (ङ) मौखिक

2. (क) हार × जीत – लड़ाई में किसी की हार होती है तो किसी की जीत।

(ख) हानि × लाभ – व्यापार में कभी हानि होती है तो कभी लाभ।

(ग) अँधेरा × उजाला – यहाँ तो बहुत अँधेरा है, उजाला करो।

(घ) यश × अपयश – कर्तव्य के पथ पर यश मिले अथवा अपयश बढ़ते जाना चाहिए।

(ङ) तीव्र × मंद – कल तीव्र हवा चल रही थी, किंतु आज हवा मंद है।

3.

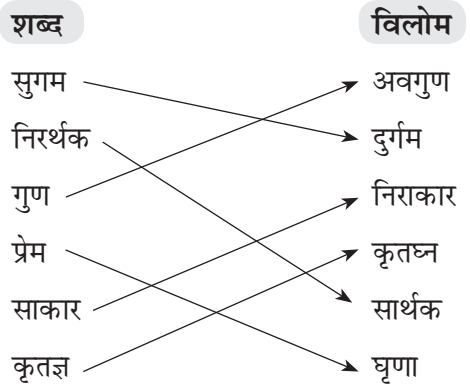

3. श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द

बोलने की बारी

(क) ऐसे शब्द जिनकी वर्तनी में थोड़ा बहुत अंतर होते हुए भी, वे सुनने में एक जैसे लगते हैं, परंतु उनके अर्थ सर्वथा भिन्न होते हैं, 'श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द' कहलाते हैं।

(ख) पवन – हवा, पावन – पवित्र, चपल – चंचल, चपला – बिजली।

लिखने की बारी

1. (क) अधम – नीच
अधर्म – पाप

(ख) अन्न – अनाज
अन्य – दूसरा

(ग) तप – तपस्या
ताप – गरमी

(घ) शूर – वीर
सुर – देवता

(ङ) जलद – बादल
जलज – कमल

(च) समान – बराबर
सम्मान – आदर

(छ) तरणी – नौका
तरणि – सूर्य

(ज) शाम – सायंकाल
श्याम – कृष्ण

2. (क) अनिल – जैसे-जैसे अनिल का वेग तेज़ हुआ तो किसान का छप्पर उड़ गया।
अनल – जंगल में लगने वाली आग को दावानल (दाव + अनल) कहते हैं।

(ख) अविराम – उसने अपना सारा काम अविराम कर लिया।
अभिराम – प्रकृति का अभिराम दृश्य अत्यंत मनोहारी लग रहा है।

(ग) मातृ – कुछ देशों में मातृ-सत्तात्मक समाज की स्थापना हुई है।
मात्र – मुझे मात्र सौ रुपये चाहिए।

3. (क) अवधी – एक भाषा
अवधि – समय-सीमा

(ख) समान – बराबर
सामान – वस्तु/पदार्थ

(ग) योग – मेल/जोड़
योग्य – लायक

(घ) दिन – वासर
दीन – गरीब

4. (क) सामान घर के बाहर रख दो।

(ख) लड़का ज़ोर-ज़ोर से हँस रहा है।

(ग) उसका लक्ष्य जीत हासिल करना है।

(घ) मैं अविराम काम कर रहा हूँ।

(ङ) चावल का एक अंश उसको भी दे दो।

4. अनेकार्थी शब्द

बोलने की बारी

(क) एक से अधिक अर्थ का बोध कराने वाले शब्द 'अनेकार्थी शब्द' कहलाते हैं; जैसे–अशोक–एक राजा, शोकरहित, एक वृक्ष।

(ख) अनेकार्थी शब्द के एक से अधिक अर्थ होते हैं। ये भिन्न-भिन्न प्रसंगों में प्रयुक्त होकर अलग-अलग अर्थ ग्रहण करते हैं; अतः इनका प्रयोग बड़ी सावधानी और प्रसंग के अनुसार करना चाहिए।

लिखने की बारी

1. अरुण – सूर्य, लाल रंग
वर – श्रेष्ठ, दूल्हा
अक्ष – धुरी, नेत्र
तात – पिता, बड़ा भाई
नाग – सर्प, बादल
वर्ण – रंग, जाति
घट – घड़ा, कम होना
रस – आनंद, अर्क

2. (क) **कनक** – धतूरा – भगवान शिव को कनक पसंद है।
गेहूँ – आज माँ ने कनक साफ़ किए।

(ख) **अंबर** – आकाश – अंबर में तारे टिमटिमा रहे हैं।
वस्त्र – श्रीकृष्ण पीतांबर पहनते हैं।

(ग) **कर** – हाथ – नेता जी ने अपने कर कमलों द्वारा पुल का शिलान्यास किया।
टैक्स – किसान पर राजा का कर बढ़ता जा रहा था।

(घ) **कुल** – समस्त – इन अंकों का कुल योग बताइए।
वंश – कर्ण किस कुल के थे।

(ङ) **पय** – दूध – दूध को पय भी कहते हैं।
पानी – बादल पय (पानी) को धारण करने के कारण पयोधर कहलाता है।

3. (क) कर्ण – कान (ख) अंतर – हृदय (ग) आम – एक फल
कर्ण – कुंती-पुत्र अंतर – भेद आम – साधारण

4. (क) एक से अधिक अर्थ प्रदान करने वाले शब्दों को 'अनेकार्थी शब्द' कहते हैं; जैसे–

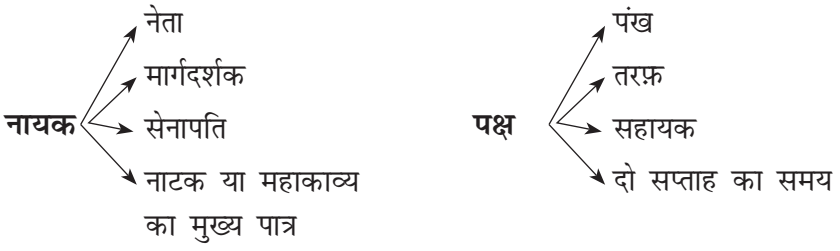

(ख) **काल** – समय – हिंदी साहित्य को चार काल में विभक्त किया गया है।
मृत्यु – उसका काल अब समझो निकट है।

नाग – सर्प – अमित को नाग ने डस लिया।
बादल – आसमान में काले नाग (बादल) आते ही मैंने सारे कपड़े अंदर रख दिए।

5. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

बोलने की बारी

(क) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द से अभिप्राय उन शब्दों से है, जिनका प्रयोग शब्द-समूह या वाक्यांशों के लिए किया जाता है।

(ख) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द से कथन में संक्षिप्तता आ जाती है। वाक्य प्रभावशाली बन जाता है।

लिखने की बारी

1. दूसरों पर उपकार करने वाला – परोपकारी

   जो साथ पढ़ता है – सहपाठी

   काम से जी चुराने वाला – कामचोर

   जिसकी उम्र कम हो – अल्पायु

   जो अभिनय करता हो – अभिनेता

   जो गाता है – गायक

2. (क) जिसमें रस हो
   (ख) पढ़ने वाला
   (ग) लिखने वाला
   (घ) जो देखने योग्य हो
   (ङ) जो पुराने ज़माने का हो
   (च) जो वर्ष में एक बार हो
   (छ) बहुत बोलने वाला

   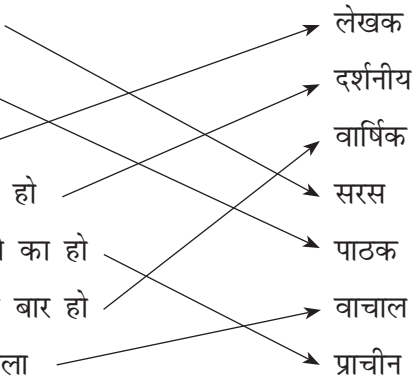

3. (क) राजा हरिश्चंद्र सत्यवादी थे।
   (ख) ग्रामीण अधिक मेहनती होते हैं।
   (ग) ईश्वर सर्वव्यापक हैं।
   (घ) यह झंडा तिरंगा है।
   (ङ) भक्त आस्तिक होते हैं।

6. एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्द

बोलने की बारी

(क) एकार्थक शब्द वे होते हैं जिनका अर्थ देखने और सुनने में एक-सा लगता है, परंतु वे समानार्थी नहीं होते हैं। ध्यान से देखने पर पता चलता है कि उनमें कुछ अंतर भी है; जैसे–कष्ट–सभी प्रकार के दुख, कलेश–मानसिक पीड़ा।

(ख) 1. शस्त्र – हथियार
शास्त्र – नियम-ग्रंथ
2. परुष – कठोर
पुरुष – नर
3. निर्माण – बनाना
निर्वाण – मोक्ष
4. तुरंग – घोड़ा
तरंग – लहर

लिखने की बारी

1. (क) श्रम (ख) गर्व (ग) आज्ञा
(घ) दान (ङ) अनिवार्य

2. (क) आमंत्रण – किसी अवसर पर सम्मिलित होने की प्रार्थना
निमंत्रण – भोजनादि के अवसर पर बुलाना
(ख) ईर्ष्या – दूसरों की उन्नति से जलना
स्पर्धा – दूसरों से आगे बढ़ने की चाहत
(ग) अपराध – कानून के विरुद्ध किया हुआ काम
पाप – धर्म एवं समाज विरुद्ध कार्य
(घ) स्नेह – छोटों के प्रति अनुराग
प्रेम – छोटे-बड़े सभी के प्रति अनुराग

3. (क) विपरीत – उलटा – गृहस्थ का विपरीत शब्द संन्यास हैं।
भिन्न – अलग – राम और श्याम गुणों में एक-दूसरे से भिन्न हैं।
(ख) साहस – हिम्मत – उसने अन्याय का साहस के साथ विरोध किया।
उत्साह – जोश – उसके जीवन में कितना उत्साह है।
(ग) प्रार्थना – पद या उम्र में बड़े लोगों से – चपरासी ने अधिकारी से छुट्टी के लिए प्रार्थना की।
अनुरोध – समान उम्र के व्यक्तियों से – पिता जी ने रामलाल से घर पर आने का अनुरोध किया।

9. संज्ञा

बोलने की बारी

(क) किसी प्राणी, व्यक्ति, वस्तु, स्थान अथवा भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्दों को 'संज्ञा' कहते हैं।

(ख) संज्ञा के मूलतः तीन भेद हैं– 1. व्यक्तिवाचक संज्ञा, 2. जातिवाचक संज्ञा, 3. भाववाचक संज्ञा।

(ग) भाववाचक संज्ञा का निर्माण जातिवाचक संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया एवं अव्यय शब्दों द्वारा किया जाता है। ऐसा करने के लिए शब्दों के अंत में कुछ शब्दांश जोड़ दिए जाते हैं।

लिखने की बारी

1. (क) गंगा – व्यक्तिवाचक संज्ञा, भारत – व्यक्तिवाचक संज्ञा,
   नदी – जातिवाचक संज्ञा।
   (ख) उपवन – जातिवाचक संज्ञा, हरियाली – भाववाचक संज्ञा
   (ग) ओला – व्यक्तिवाचक संज्ञा, सरदी – भाववाचक संज्ञा।
   (घ) रवि – व्यक्तिवाचक संज्ञा, नानी – जातिवाचक संज्ञा,
   घर – जातिवाचक संज्ञा, उत्सुक – भाववाचक संज्ञा
   (ङ) प्रकृति – जातिवाचक संज्ञा, प्रेम – भाववाचक संज्ञा
2. व्यक्तिवाचक संज्ञा – गोदावरी, सतपुड़ा, गीता, रूस, भारत, नवभारत टाइम्स
   जातिवाचक संज्ञा – नेता, शिक्षक, मज़दूर, युवक, झरना
   भाववाचक संज्ञा – बुढ़ापा, दुर्जन, बचपन, प्रभुता
   द्रव्यवाचक संज्ञा – दूध, चाँदी, तेल, मिट्टी
   समूहवाचक संज्ञा – भीड़, सेना, गुच्छा, परिवार, कक्षा
3. आवश्यक – आवश्यकता
   पराया – परायापन
   मीठा – मिठास
   मनुष्य – मनुष्यता
   उदार – उदारता
   राष्ट्रीय – राष्ट्रीयता
   मधुर – मधुरता
   चतुर – चतुराई
   पढ़ना – पढ़ाई
4. (क) बचपन – बच्चा (ख) मातृत्व – मातृ (ग) समझ – समझना
   (घ) श्रेष्ठता – श्रेष्ठ (ङ) एकता – एक (च) निजता – निज
5. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓
   (घ) ✓ (ङ) ✓
6. (क) किसी प्राणी, व्यक्ति, वस्तु, स्थान अथवा भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्दों को 'संज्ञा' कहते हैं।

(ख) संज्ञा के मुख्यतः तीन भेद हैं–

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा, 2. जातिवाचक संज्ञा, 3. भाववाचक संज्ञा

(ग) जिन संज्ञा शब्दों से किसी विशेष प्राणी, व्यक्ति, वस्तु, स्थान आदि के नाम का पता चलता है, उन्हें 'व्यक्तिवाचक संज्ञा' कहते हैं; जैसे–राम, भारत, हिमालय, होली आदि।

10. संज्ञा-विकार : लिंग

बोलने की बारी

(क) लिंग संज्ञा के पुरुष या स्त्री जाति होने का बोध कराते हैं; जैसे– शेर – शेरनी, पति – पत्नि।

(ख) हिंदी में लिंग के दो भेद हैं– 1. स्त्रीलिंग, 2. पुल्लिग।

(ग) मच्छर, उल्लू, चीता।

लिखने की बारी

1. (क) पपीता पक गया है। (ख) मच्छर काटकर उड़ गया।
   (ग) कबूतर पेड़ पर बैठ गया। (घ) उसकी कमीज़ पुरानी है।
   (ङ) इस घर की सजावट अच्छी है।
2. (क) रानी की सेविका बहुत सेवा करती है। (ख) ब्राह्मणी की पुत्री आज्ञाकारिणी है।
   (ग) हलवाइन मालिन से लड़ रही है। (घ) सम्राज्ञी ने औरतों को दान दिया।
3. इया – चुहिया, चिड़िया ता – मानवता, लघुता
   नी – मोरनी, शेरनी इमा – कालिमा, लालिमा
4. (क) सहायक – सहायिका (ख) सुत – सुता
   (ग) अध्यापिका – अध्यापक (घ) सम्राट – सम्राज्ञी
   (ङ) कवि – कवयित्री (च) शिक्षक – शिक्षिका
5. मान – बुद्धिमान, शक्तिमान त्व – मनुष्यत्व, महत्व
   पन – बचपन, बड़प्पन वान – गुणवान, बलवान
6. (क) संज्ञा के जिस रूप से व्यक्ति या वस्तु की नर या मादा जाति का बोध हो, उसे व्याकरण में 'लिंग' कहते हैं। दूसरे शब्दों में– संज्ञा शब्दों के जिस रूप से उसके पुरुष या स्त्री जाति का पता चलता है, उसे 'लिंग' कहते हैं।

(ख) हिंदी में लिंग के दो भेद हैं– 1. स्त्रीलिंग, 2. पुल्लिग।

1. स्त्रीलिंग – शब्द के जिस रूप से उसके स्त्री जाति के होने का बोध हो, उसे 'स्त्रीलिंग' कहते हैं; जैसे– मोरनी, रानी आदि।
2. पुल्लिग – शब्द के जिस रूप से उसके पुरुष जाति के होने का बोध हो, उसे 'पुल्लिग' कहते हैं; जैसे– मोर, राजा आदि।

11. संज्ञा-विकार : वचन

बोलने की बारी

(क) शब्द के जिस रूप से उसकी संख्या का बोध हो, उसे 'वचन' कहते हैं।

(ख) वचन के दो भेद हैं– 1. एकवचन, 2. बहुवचन।

एकवचन–सड़क, पंखा; बहुवचन – सड़कें, पंखे।

(ग) सदैव एकवचन में प्रयोग किए जाने वाले शब्द–सेना, पानी, वर्षा, वायु, परिवार।

सदैव बहुवचन में प्रयोग किए जाने वाले शब्द–दर्शन, आँसू, प्राण, लोग, हस्ताक्षर।

लिखने की बारी

1. एकवचन – रास्ता, कवि, दवाई, विधि, साड़ी।

   बहुवचन – पंखे, लताएँ, गुरुजन, थैले, शाखाएँ।

2. (क) एकवचन (ख) चाबियाँ (ग) बहुवचन
   (घ) चिड़िया (ङ) हस्ताक्षर

3. (क) गुड़िया – गुड़ियाँ (ख) ताला – ताले
   (ग) पंक्ति – पंक्तियाँ (घ) कमरा – कमरे
   (ङ) लाठी – लाठियाँ (च) डिबिया – डिबियाँ

4. (क) बहुवचन (ख) एकवचन (ग) एकवचन
   (घ) बहुवचन (ङ) एकवचन

5. (क) बाला – बालाएँ (ख) बस्ता – बस्ते
   (ग) मिठाई – मिठाइयाँ (घ) कटोरा – कटोरे
   (ङ) नारी – नारियाँ (च) मज़दूर – मज़दूरवर्ग

6. बाल – उसके लंबे बाल हैं।

   वर्षा – वर्षा हो रही है।

   समाचार – ललित यह समाचार सुनकर स्तब्ध रह गया।

   हस्ताक्षर – उसने संधि-पत्र पर हस्ताक्षर कर दिए।

   दर्शन – मैंने भगवान के दर्शन किए।

7. (क) शब्द के जिस रूप से उसकी संख्या का बोध हो, उसे 'वचन' कहते हैं, अर्थात् संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के जिस रूप से संख्या का बोध हो, उसे 'वचन' कहते हैं।

   (ख) वचन के दो भेद माने जाते हैं– 1. एकवचन, 2. बहुवचन।
   एकवचन–शब्द के जिस रूप से उसके एक होने का बोध हो, उसे 'एकवचन' कहते हैं; जैसे–झील, पुस्तक।

   बहुवचन–शब्द के जिस रूप से उसके संख्या में एक से अधिक होने का बोध होता है, उसे 'बहुवचन' कहते हैं; जैसे–झीलें, पुस्तकें।

   (ग) शब्द के जिस रूप से उसके अनेक होने का बोध हो, उसे 'बहुवचन' कहते हैं; जैसे–महिलाएँ, गाड़ियाँ।

12. संज्ञा-विकार : कारक

बोलने की बारी

(क) कारक संज्ञा या सर्वनाम का क्रिया के साथ संबंध स्थापित करता है।

(ख) कर्ता कारक-चिह्न वाक्य के शुरू में आता है।

(ग) कारक के आठ भेद हैं।

लिखने की बारी

1. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✗
   (घ) ✓ (ङ) ✗
2. (क) को (ख) से (ग) से
   (घ) ने (ङ) का
3. (क) करण कारक (ख) अधिकरण कारक (ग) कर्ता कारक
   (घ) संबंध कारक (ङ) करण कारक

4. ने – कवि ने कविता सुनाई।

के लिए – चाचा जी बच्चों के लिए उपहार लाएँ।

से (अलग) – उसके हाथ से गेंद छूट गई।

की – यह गांधी जी की डायरी है।

के द्वारा – उन्हें बस के द्वारा आना था।

हे! – हे प्रभु! सब पर अपनी कृपा बरसाओ।

5. (क) गीदड़ के मुँह में पानी आ गया। (ख) पानी में चीनी मत डालो।

(ग) उसने मेरी बॉल चुरा ली। (घ) वह सड़क के किनारे बैठा रहता है।

(ङ) उसके जाने से मुझे दुख होगा।

6. (क) संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य के अन्य पदों और क्रिया के साथ प्रकट होता है, उसे 'कारक' कहते हैं।

(ख) कारक के आठ भेद होते हैं–

1. कर्ता कारक (ने) – क्रिया को करने वाला।
2. कर्म कारक (को) – जिस पर क्रिया का फल पड़े।
3. करण कारक (से, के द्वारा) – क्रिया को करने का साधन।
4. संप्रदान कारक (को, के लिए) – जिसके लिए क्रिया की जाए।
5. अपादान कारक (से अलग) – जिससे अलगाव प्रकट हो।
6. संबंध कारक (का, की, के, रा, री, रे) – अन्य पदों से संबंध बताने वाला।
7. अधिकरण कारक (में, पर) – क्रिया के करने का काल या स्थान।
8. संबोधन कारक (हे! अरे!) – कर्ता के लिए संबोधन।

(ग) क्रिया के साथ 'किसको' या 'किसके लिए' लगाकर प्रश्न करने पर जो उत्तर प्राप्त होता है, उसे संप्रदान कारक कहते हैं; जैसे–मैं भाई के लिए दवा लाया हूँ।

13. सर्वनाम

बोलने की बारी

(क) सर्वनाम संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं।

(ख) सर्वनाम के छह भेद हैं।

(ग) सर्वनाम शब्दों में लिंग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता अर्थात् स्त्री-पुरुष के लिए एक है; जैसे–वह (रवि) जा रहा है। (पुरुष), वह (सीता) जा रही है। (स्त्री)

लिखने की बारी

1. (क) उसे (ख) ये, उन्हीं (ग) हम
   (घ) अपने-आप (ङ) आप
2. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓
   (घ) ✗ (ङ) ✓
3. (क) तुम – तुम सो जाओ।
   (ख) कोई – कोई आ रहा है।
   (ग) जो-सो – जो करेगा सो भरेगा।
   (घ) जिसने – जिसने की शरम उसके फूटे करम।
   (ङ) हमारी – हमारी बारी आने वाली है।
   (च) अपने-आप – मेरी माँ अपने-आप भोजन बनाती हैं।
4. (क) तुम किसके साथ आए हो? (ख) आप अपने शहर जाएँ।
   (ग) मुझे उसके घर जाना है। (घ) इस पानी में कुछ पड़ा है।
   (ङ) आप कल समारोह में आइए।
5. (क) मेरे (ख) हमारे (ग) तुम्हें
   (घ) उन्होंने/उसने (ङ) तुमने
6. (क) संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द 'सर्वनाम' कहलाते हैं; जैसे–मैं विद्यालय जाऊँगा।
   (ख) पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद होते हैं–
      1. उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम– मेरा, मैं, हम, हमारा, मुझे, हमें।
      2. मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम– तेरा, तू, तुम, तुम्हारा, तुम्हें, आप, आपका।
      3. अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम– वह, वे, उसे, उन्हें, उसका, उनका, उनके।
   (ग) जिन सर्वनामों का प्रयोग कर्ता स्वयं के लिए करता है, उन्हें 'निजवाचक सर्वनाम' कहते हैं; जैसे–मैं अपने-आप चला जाऊँगा।

14. विशेषण

बोलने की बारी

(क) जिन शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता का बोध हो, उन्हें 'विशेषण' कहते हैं।

(ख) तुलना के आधार पर विशेषण के तीन भेद (अवस्था) हैं–

(*i*) मूलावस्था–राधा सुंदर लड़की है।

(*ii*) उत्तरावस्था–राम, राहुल से ज़्यादा बुद्धिमान है।

(*iii*) उत्तमावस्था–राम कक्षा में सबसे बुद्धिमान छात्र है।

(ग) जो विशेषण शब्द संज्ञा या सर्वनाम की संख्या संबंधी विशेषता बताते हैं, उन्हें 'संख्यावाचक विशेषण' कहते हैं; जैसे–मैं सातवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। जबकि परिमाणवाचक विशेषण में विशेषण शब्द अपने विशेष्य की मात्रा, नाप-तौल आदि का बोध कराते हैं; जैसे–मुझे दो केले दो।

लिखने की बारी

1. (क) पवित्र (ख) स्वादिष्ट (ग) ऊँचे
   (घ) हरी (ङ) दस रुपये

2.

विशेषण	**विशेष्य**	**प्रविशेषण**
सुंदर	मोर	बहुत
नीला	रंग	गहरा
अच्छी	कविता	इतनी
मीठा	पान	बहुत

3.

शहर – शहरी	चतुराई – चतुर	ज्ञान – ज्ञानी
समाज – सामाजिक	बल – बलवान	लालच – लालची
दया – दयालु	मरना – मरियल	पीछे – पिछला
लड़ना – लड़ाकू	ग्राम – ग्रामीण	भूलना – भुलक्कड़
अंक – अंकित	टिकना – टिकाऊ	बाहर – बाहरी

4. (क) मूलावस्था (ख) उत्तमावस्था (ग) उत्तमावस्था
   (घ) उत्तमावस्था (ङ) उत्तरावस्था

5. (क) रोग–रोगी–अधिकांश रोगी व्यक्ति दवा के अभाव में मर जाते हैं।

(ख) प्यास–प्यासा–वन में राजकुमार प्यासा था।

(ग) रंग–रंगीन–वह रंगीन स्वभाव का व्यक्ति है।

(घ) प्यार–प्यारा–रमेश मेरा सबसे प्यारा मित्र है।

(ङ) दुख–दुखी–वह आज बहुत दुखी था।

6. (क) विशाल समुद्र (ख) ठंडी पवन

(ग) हरा तोता (घ) नीला आसमान

(ङ) विदुषी महिला (च) आलसी खरगोश

7. (क) संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द 'विशेषण' कहलाते हैं। विशेषण के चार भेद हैं–1. गुणवाचक विशेषण 2. संख्यावाचक विशेषण 3. परिमाणवाचक विशेषण 4. सार्वनामिक विशेषण।

(ख) विशेषण की विशेषता बताने वाले शब्द 'प्रविशेषण' कहलाते हैं; जैसे–
यह बहुत चमकीला वस्त्र है।

(ग) जिस विशेषण द्वारा किसी संज्ञा या सर्वनाम के भाव, रंग-रूप, आकार, स्पर्श, समय, दशा-अवस्था आदि का बोध हो, उसे 'गुणवाचक विशेषण' कहते हैं; जैसे–मुझे मीठा आम दो। इसमें 'मीठा' विशेषण आम की विशेषता (गुण) का बोध करा रहा है।

15. क्रिया

बोलने की बारी

(क) किसी क्रिया पद का धातु वह अंश है जो किसी क्रिया के प्रायः सभी रूपों में पाया जाता है। दूसरे शब्दों में जिन मूल अक्षरों से क्रियाएँ बनती हैं, उन्हें 'धातु' कहते हैं; जैसे–'पढ़ना' क्रिया में 'पढ़' धातु है।

(ख) अकर्मक क्रिया में कोई कर्म नहीं होता है।

(ग) (*i*) दीपक पुस्तक पढ़ रहा है। (*ii*) किसान हल चला रहा है।

लिखने की बारी

1. (क) वह गाना <u>गा रहा है</u>।

(ख) ठंडी हवा <u>बह रही थी</u>।

(ग) नौकरानी से गिलास टूट गया।

(घ) भावना जापान जा रही है।

(ङ) अध्यापिका छात्रों को पढ़ाती है।

2.

	कर्ता	कर्म
(क)	मैं	काम
(ख)	माँ	खाना
(ग)	नीनू	चित्र
(घ)	सविता	घर
(ङ)	अनुज	मार्ग

3. (क) अकर्मक (ख) द्विकर्मक

(ग) एककर्मक (घ) अकर्मक

(ङ) एककर्मक

4. (क) आज वर्षा ज़रूर होगी। (ख) पिता जी लंदन जाएँगे।

(ग) धोबिन कपड़े लाई। (घ) सूर्य पश्चिम दिशा में छिपता है।

(ङ) मेरे चढ़ते ही गाड़ी चल पड़ी।

5.

हाथ–हथियाना	थप-थप–थपथपाना	फ़िल्म–फ़िल्माना
अपना–अपनाना	हिन-हिन–हिनहिनाना	गरम–गरमाना
बात–बतियाना	साठ–सठियाना	टिम-टिम–टिमटिमाना

6.

पी–पीकर	उठ–उठकर	खा–खाकर
बैठ–बैठकर	बना–बनाकर	लिख–लिखकर
चल–चलकर	मिल–मिलकर	सो–सोकर

7. (क) मिलवाया–उसने मुझे तुमसे मिलवाया।

(ख) सुलवाया–माँ ने आया से बच्चे को सुलवाया।

(ग) धुलवाया–सेठ ने नौकर से कुर्ता धुलवाया।

(घ) तुड़वाया–ठेकेदार ने मज़दूर से मकान तुड़वाया।

(ङ) करवाया–माँ ने बच्चे से गृहकार्य करवाया।

8. (क) किसी कार्य के करने या होने का बोध कराने वाले शब्दों को 'क्रिया' कहते हैं।

(ख) जिस क्रिया में कर्म न हो और उसकी अपेक्षा भी न हो, उसे 'अकर्मक क्रिया' कहते हैं जबकि जिस क्रिया का प्रभाव कर्म पर पड़ता है, उसे 'सकर्मक क्रिया' कहते हैं।

(ग) जब दो या दो से अधिक क्रिया पद मिलकर एक क्रिया पूर्ण करने का बोध कराते हैं, तो उसे 'संयुक्त क्रिया' कहते हैं; जैसे–मैंने खाना खा लिया।

16. काल

बोलने की बारी

(क) काल के तीन भेद हैं–

1. भूतकाल–कल स्कूल बंद था।
2. वर्तमान काल–विवेक खेल रहा है।
3. भविष्यत् काल–कविता दिल्ली जाएगी।

(ख) वर्तमान काल के तीन भेद हैं–

1. सामान्य वर्तमान काल, 2. अपूर्ण वर्तमान काल, 3. संदिग्ध वर्तमान काल

(ग) भविष्यत् काल में आने वाले समय का पता चलता है।

लिखने की बारी

1. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✓
2. (क) चित्रकार चित्र <u>बना रहा था</u>।
   (ख) मैं बाज़ार <u>जाऊँगा</u>।
   (ग) छवि पढ़कर <u>खेलती होगी</u>।
   (घ) वह अभी-अभी <u>गया है</u>।
   (ङ) शायद दादा जी जल्दी घर <u>आएँगे</u>।
3. (क) संदिग्ध वर्तमान काल–वह कुछ खा रहा होगा।
   (ख) आसन्न भूतकाल–पिता जी अभी ऑफ़िस गए हैं।
   (ग) संभाव्य भविष्यत् काल–शायद आज वर्षा हो।
   (घ) अपूर्ण भूतकाल–बच्चे मैदान में खेल रहे थे।
   (ङ) सामान्य वर्तमान काल–वह तालाब में तैरता है।

4.

(क) अध्यापिका ने पाठ पढ़ाया।	(*iv*) सामान्य भूतकाल
(ख) पिता जी दादा जी के लिए कपड़े लाएँगे।	(*iii*) सामान्य भविष्यत् काल
(ग) कल तो बारिश हुई होगी।	(*i*) संदिग्ध भूतकाल
(घ) अर्चना पाठ याद करती है।	(*ii*) सामान्य वर्तमान काल
(ङ) यदि बस न छूटती तो मोनू अवश्य आता।	(*v*) हेतुहेतुमद् भूतकाल

5. (क) आसन्न भूतकाल (ख) अपूर्ण भूतकाल
   (ग) अपूर्ण वर्तमान काल (घ) संभाव्य भविष्यत् काल (ङ) संदिग्ध भूतकाल
6. (क) सामान्य भूतकाल–काव्या ने पत्र लिखा।
   (ख) आसन्न भूतकाल–काव्या पत्र लिख चुकी है।
   (ग) पूर्ण भूतकाल–काव्या पत्र लिख चुकी थी।
   (घ) अपूर्ण भूतकाल–काव्या पत्र लिख रही थी।
   (ङ) संदिग्ध भूतकाल–काव्या पत्र लिख चुकी होगी।
   (च) हेतुहेतुमद् भूतकाल–यदि बिजली न गई होती तो काव्या पत्र लिख चुकी होती।
7. (क) क्रिया के जिस रूप से उसके होने के समय का पता चलता है, उसे 'काल' कहते हैं।
   (ख) क्रिया के जिस रूप से पता चले कि कार्य बीते समय में काफ़ी पहले पूरा हो गया है, तब 'पूर्ण भूतकाल' होता है।

17. वाच्य

बोलने की बारी

(क) वाच्य के तीन भेद हैं–

1. कर्तृवाच्य, 2. कर्मवाच्य, 3. भाववाच्य।

(ख) कर्मवाच्य में क्रिया कर्म के लिंग, वचन और पुरुष पर आधारित होती है।

(ग) भाववाच्य में अकर्मक क्रिया का प्रयोग है जो अन्य पुरुष, एकवचन में होती है।

लिखने की बारी

1. (क) भाववाच्य (ख) कर्मवाच्य (ग) कर्तृवाच्य (घ) भाववाच्य
   (ङ) कर्तृवाच्य (च) भाववाच्य (छ) कर्तृवाच्य

2. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✓

(घ) ✗ (ङ) ✗ (च) ✓

3. (क) वाच्य (ख) भाववाच्य (ग) एकवचन

(घ) विभक्ति (ङ) कर्तृ

4. (क) खाना कर्तृवाच्य–बालक खाना खा रहा है।
भाववाच्य–बालक से खाना खाया नहीं जाता।

(ख) उठ कर्तृवाच्य–मैं सुबह जल्दी उठती हूँ।
भाववाच्य–मुझसे सुबह जल्दी नहीं उठा जाता।

(ग) लिख कर्तृवाच्य–बच्चे पत्र लिखते हैं।
भाववाच्य–बच्चे से पत्र लिखा नहीं जाता।

(घ) बैठ कर्तृवाच्य–बच्चे चुप नहीं बैठते।
भाववाच्य–बच्चों से चुप नहीं बैठा जाता।

(ङ) हँस कर्तृवाच्य–वह हँसता है।
भाववाच्य–उससे हँसा नहीं जाता।

5. (क) पिता जी से टेलीविज़न देखा जा रहा है। (कर्मवाच्य)

(ख) समिता से खाना बनाया जा रहा है। (भाववाच्य)

(ग) पंकज से खेला नहीं जाता। (भाववाच्य)

(घ) मज़दूर रास्ता बनाता है। (कर्तृवाच्य)

(ङ) रीमा से दूध नहीं पीया जाता। (भाववाच्य)

6. (क) क्रिया के जिस रूप से यह जाना जाए कि उसका प्रयोग कर्ता, कर्म या भाव में से किसके अनुसार हुआ है, उसे 'वाच्य' कहते हैं।

(ख) वाच्य के तीन भेद होते हैं–

1. कर्तृवाच्य–लड़की दौड़ रही है।
2. कर्मवाच्य–नानी द्वारा कहानी सुनाई गई।
3. भाववाच्य–राम से चला नहीं जाता।

(ग) (*i*) कर्तृवाच्य में कर्ता की प्रधानता होती है जबकि कर्मवाच्य में कर्म प्रधान और कर्ता गौण होता है।

(*ii*) कर्तृवाच्य की क्रिया सदैव कर्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार होती है जबकि कर्मवाच्य की क्रिया का रूप कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार होता है।

18. अव्यय (अविकारी शब्द)

1. क्रियाविशेषण

बोलने की बारी

(क) जिन शब्दों पर लिंग, वचन, कारक आदि विकारक तत्वों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है, उन्हें 'अव्यय' कहते हैं। अव्यय के पाँच भेद हैं।

(ख) क्रियाविशेषण के चार भेद हैं–

1. कालवाचक क्रियाविशेषण
2. स्थानवाचक क्रियाविशेषण
3. रीतिवाचक क्रियाविशेषण
4. परिमाणवाचक क्रियाविशेषण।

लिखने की बारी

1. (क) जल्दी-जल्दी (ख) सुबह से (ग) ज़रूर
   (घ) उधर (ङ) ज़रा-सा
2. (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✓
   (घ) ✓ (ङ) ✗
3. (क) कालवाचक क्रियाविशेषण
   (ख) स्थानवाचक क्रियाविशेषण
   (ग) कालवाचक क्रियाविशेषण
   (घ) रीतिवाचक क्रियाविशेषण
   (ङ) परिमाणवाचक क्रियाविशेषण
4. (क) अभी-अभी–वह गाँव से अभी-अभी आया है।
   (ख) इधर-उधर–परीक्षा देते समय इधर-उधर नहीं देखना चाहिए।
   (ग) पर्याप्त–अभी तक तुमने पर्याप्त नींद नहीं ली।
   (घ) अनायास–पिता जी की याद आते ही वह अनायास हँस पड़ा।
   (ङ) उस तरफ़–वह उस तरफ़ जा रहा है।
5. (क) सदा (ख) लगातार (ग) प्रातः
   (घ) बाहर (ङ) धीरे-धीरे

6. (क) मैं जल्दी-जल्दी लिख लेता हूँ।

(ख) हिमालय बहुत ऊँचा है।

(ग) वह आम मीठा है।

(घ) मुझे तुम्हारी बातें अच्छी लगीं।

(ङ) हमें हमेशा अच्छी बातें करनी चाहिए।

(च) पहलवान प्रतिदिन अभ्यास करता है।

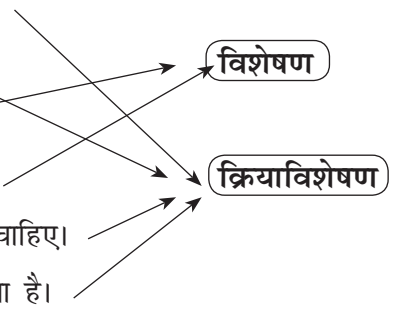

7. (क) जिन शब्दों पर लिंग, वचन, कारक आदि विकारक तत्वों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है, उन्हें 'अव्यय' कहते हैं।

(ख) अव्यय के पाँच भेद हैं–

1. क्रियाविशेषण, 2. संबंधबोधक, 3. समुच्चयबोधक, 4. विस्मयादिबोधक, 5. निपात

(ग)

	विशेषण	**क्रियाविशेषण**
(*i*)	मुझे थोड़ा खाना दे दो।	राजीव थोड़ा खा सकता है।
(*ii*)	उसने बहुत किताबें खरीदीं।	अतुल बहुत पढ़ता है।

2. संबंधबोधक

बोलने की बारी

(क) (*i*) मकान के बाहर आम का पेड़ है।

(*ii*) मेज़ के नीचे बिल्ली बैठी है।

(ख) संबंधबोधक शब्द परसर्ग के साथ आते हैं।

लिखने की बारी

1. (क) के आगे (ख) के बराबर (ग) के पश्चात
   (घ) के निकट (ङ) से पहले
2. (क) क्रियाविशेषण (ख) क्रियाविशेषण (ग) क्रियाविशेषण
   (घ) संबंधबोधक (ङ) संबंधबोधक (च) क्रियाविशेषण
3. (क) के निकट–वे दोनों गाँव के निकट पहुँच गए।
   (ख) के द्वारा–वह दिल्ली वायुयान के द्वारा गया।

(ग) के ऊपर–प्रवीण एक पत्थर के ऊपर बैठ गया।

(घ) के अलावा–रोहन के अलावा मेरा कौन है।

(ङ) के पीछे–ललिता राधा के पीछे खड़ी है।

4. (क) कालवाचक–के बाद–राम के बाद कोई मर्यादा पुरुषोत्तम नहीं हुआ।

(ख) स्थानसूचक–के सामने–मेरे घर के सामने एक पार्क है।

(ग) समानतासूचक–के समान–मानसी के समान सविता भी सुंदर है।

(घ) तुलनावाचक–की अपेक्षा–गौरव राघव की अपेक्षा अधिक वीर है।

(ङ) दिशासूचक–की तरफ़–परिवार की तरफ़ देखो कि कितने भले लोग हैं।

3. समुच्चयबोधक

बोलने की बारी

(क) समुच्चयबोधक शब्द का दूसरा नाम 'योजक' है।

(ख) विरोधसूचक समुच्चयबोधक–बल्कि, लेकिन।

(ग) समुच्चयबोधक के दो भेद हैं–

1. समानाधिकरण समुच्चयबोधक, 2. व्यधिकरण समुच्चयबोधक।

लिखने की बारी

1. (क) अन्यथा (ख) वरना (ग) या

(घ) परंतु (ङ) यदि/तो

2. (क) इसलिए–गूलर में बहुत अधिक कीड़े होते हैं इसलिए यह खाने के लिए सही नहीं है।

चूँकि–चूँकि वह बीमार था इसलिए स्कूल नहीं जा सका।

तथा–कमल तथा अतुल कमज़ोर विद्यार्थी हैं।

और–विराट कोहली और रोहित शर्मा विस्फोटक बल्लेबाज़ हैं।

लेकिन–वैभव परिश्रमी है लेकिन महेश आलसी है।

3. (क) ताकि (ख) कि (ग) जबकि

(घ) परंतु (ङ) मानो (च) इसलिए

4. विस्मयादिबोधक

बोलने की बारी

(क) बाप रे पाप!, ओह!

(ख) विस्मयादिबोधक शब्दों में परिवर्तन नहीं होता है।

लिखने की बारी

1. (क) प्रशंसाबोधक (ख) चेतावनीबोधक (ग) हर्षबोधक
   (घ) तिरस्कारबोधक (ङ) संवेदनाबोधक
2. – वाह! क्या शानदार चौका लगाया है।
   – आह! नाना जी चल बसे।
   – बहुत खूब! अब आगे जाकर दिखाओ।
   – अच्छा! फिर कल मिलते हैं।
   – खबरदार! अब मुँह से एक शब्द नहीं बोलना।

5. निपात

लिखने की बारी

1. (क) ही–मनोज को आज रात रुकना ही पड़ सकता है।
   (ख) तो–राकेश ने तो हद कर दी।
   (ग) तक–राधा ने मुझसे बात तक नहीं की।
   (घ) भी–कल से मैं भी आपके साथ स्कूल जाऊँगा।
   (ङ) मात्र–प्रदीप मात्र दो रुपये के लिए लड़ पड़ा।
2. (क) तो (ख) तक (ग) मात्र
   (घ) भर (ङ) भी (च) तो
3. (क) वैभव को <u>मात्र</u> पचास अंक मिले हैं।
   (ख) तुम कल <u>भी</u> नहीं आए थे।
   (ग) मैंने <u>तो</u> तुम्हें देखा <u>भी</u> नहीं।
   (घ) पिता जी ने <u>ही</u> मुझे भेजा है।
   (ङ) मैं कल रात-<u>भर</u> पढ़ता रहा।

19. पद-परिचय

बोलने की बारी

(क) शब्द जब वाक्य में प्रयुक्त हो जाते हैं तो उन्हें 'पद' कहते हैं। उन्हीं पदों का व्याकरणिक परिचय प्रस्तुत करना 'पद-परिचय' कहलाता है।

(ख) विस्मयादिबोधक के पद-परिचय में केवल यह बताया जाता है कि कौन-सा भाव व्यक्त कर रहा है।

लिखने की बारी

1. (क) पद (ख) शब्द
   (ग) आठ (घ) पद-परिचय
2. (क) ✓ (ख) ✗
   (ग) ✓ (घ) ✓
3. (क) शब्द स्वतंत्र होते हैं परंतु जब ये वाक्य में प्रयोग किए जाते हैं तो वाक्य के अन्य पदों के साथ उनका संबंध स्थापित हो जाता है, तब इन्हें 'पद' कहते हैं।

(ख)

शब्द	**पद**
(*i*) शब्द वर्णों की स्वतंत्र एवं सार्थक इकाई है।	(*i*) वाक्य में प्रयुक्त शब्द पद कहलाता है।
(*ii*) शब्द का मात्र अर्थ परिचय होता है।	(*ii*) पद का व्याकरणिक परिचय होता है।
(*iii*) शब्द स्वतंत्र होते हैं।	(*iii*) पद वाक्य में विभिन्न व्याकरणिक कोटियों में बँध जाता है।

20. वाक्य-विचार

बोलने की बारी

(क) शब्दों का ऐसा व्यवस्थित समूह, जिससे वांछित अर्थ की प्राप्ति हो, उसे 'वाक्य' कहते हैं; जैसे–गीता लिखती है। इस वाक्य में सभी शब्द सार्थक हैं और व्यवस्थित क्रम में रखे हुए हैं। इस कारण इनसे वांछित अर्थ की अभिव्यक्ति हो रही है।

(ख) वाक्य के दो भाग होते हैं– 1. उद्देश्य, 2. विधेय।
उदाहरण–मोहन पढ़ रहा है। इस वाक्य में 'मोहन' उद्देश्य है और 'पढ़ रहा है' विधेय है।

(ग) अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद हैं–

1. विधानवाचक वाक्य
2. निषेधवाचक वाक्य
3. प्रश्नवाचक वाक्य
4. संकेतवाचक वाक्य
5. इच्छावाचक वाक्य
6. संदेहवाचक वाक्य
7. आज्ञावाचक वाक्य
8. विस्मयादिबोधक वाक्य।

लिखने की बारी

1. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✗

2. (क) ईश्वर तुम्हें स्वस्थ रखें।
   (ख) वाह! तुम प्रथम आए हो।
   (ग) रवि उठ गया है।
   (घ) अब पढ़ने बैठो।
   (ङ) शायद अब सरदी आ जाए।
   (च) यदि वर्षा रुकती, तो हम बाज़ार जाते।

   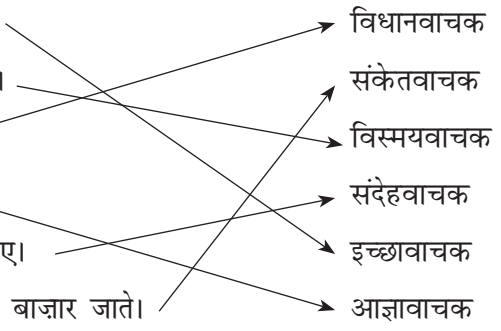

3.

	उद्देश्य	**विधेय**
(क)	कबूतर	दाना चुग रहे हैं।
(ख)	चीता	तेज़ दौड़ रहा है।
(ग)	कुछ लोग	पैदल जा रहे हैं।
(घ)	नेता जी	वायदे ही करते हैं।
(ङ)	सुरीला गाने वाली लड़की	आज चुप है।

4. (क) मिश्र वाक्य (ख) संयुक्त वाक्य (ग) सरल वाक्य
   (घ) मिश्र वाक्य (ङ) संयुक्त वाक्य

5. (क) इच्छावाचक–भगवान करे, तपस्या खूब पढ़ाई करे।
   (ख) निषेधवाचक–तपस्या पुस्तक नहीं पढ़ रही है।
   (ग) विस्मयादिवाचक–अरे! तपस्या पुस्तक पढ़ने लगी।
   (घ) संकेतवाचक–यदि तपस्या पुस्तक पढ़ेगी तो पास हो जाएगी।
   (ङ) मिश्र वाक्य–तपस्या ने कहा कि वह पुस्तक पढ़ेगी।
   (च) सरल वाक्य–तपस्या पुस्तक पढ़ रही है।

6. (क) कौन खाना बनाती है? (प्रश्नवाचक)

(ख) काश! गरीब को सोने की अँगूठी मिल जाए। (इच्छावाचक)

(ग) शायद मेरा मित्र कविताएँ लिखता है। (संदेहवाचक)

(घ) कल बारिश नहीं होगी। (निषेधवाचक)

(ङ) जैसे ही घंटी बजी, विद्यार्थी बाहर आ गए। (मिश्र वाक्य)

7. (क) (*i*) ईश्वर तुम्हें दीर्घायु करे। (*ii*) आज तो किसी तरह मेरा काम बन जाए।

(ख) जिन वाक्यों में एक उद्देश्य और एक विधेय अर्थात् एक कर्ता और एक क्रिया हो, उन्हें 'सरल वाक्य' कहते हैं। उदाहरण–

(*i*) परिश्रमी व्यक्ति सफल होते हैं। (*ii*) मैंने बाज़ार से फल खरीदे।

21. विराम-चिह्न

बोलने की बारी

(क) विराम का शाब्दिक अर्थ 'ठहराव' होता है।

(ख) (*i*) पूर्ण विराम चिह्न (*ii*) विस्मयादिबोधक चिह्न (*iii*) योजक चिह्न।

(ग) विस्मय, हर्ष, शोक, घृणा, आश्चर्य का भाव प्रकट करने वाले शब्दों तथा किसी को संबोधित करने के लिए विस्मयादिबोधक चिह्न लगाया जाता है।

लिखने की बारी

1. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗

(घ) ✗ (ङ) ✓

2. (क) अल्प विराम चिह्न → ,

(ख) पूर्ण विराम चिह्न → ।

(ग) प्रश्नवाचक चिह्न → ?

(घ) योजक चिह्न → -

(ङ) लाघव चिह्न → °

(च) अर्धविराम → ;

(छ) विस्मयादिबोधक चिह्न → !

3. – – निर्देशक चिह्न–पिता जी बोले–बच्चो पढ़ने बैठ जाओ।

, – अल्प विराम–राहुल, महेश, करण और राम पढ़ रहे हैं।

? – प्रश्नवाचक चिह्न–तुम कहाँ जा रहे हो?

"..." – उद्धरण चिह्न–नेहरू जी ने कहा–"आराम हराम है।"

/ – त्रुटिपूरक चिह्न–प्राचीन काल/ की बात है।

'...' – एकल उद्धरण चिह्न – 'गोदान' प्रेमचंद की प्रसिद्ध रचना है।

! – विस्मयादिबोधक चिह्न – अरे! आप कब आए?

4. (क) अरे! मोहनी तुम कब आई?

(ख) सुख-दुख तो आते-जाते रहते हैं।

(ग) राजा ने कहा, "सिपाही! चोर को पकड़कर लाओ।"

(घ) क्या वह पास हो गया?

(ङ) टोकरी में सेब, केले, आम आदि फल रखे हैं।

22. अशुद्धि-शोधन

बोलने की बारी

(क) भाषा में वर्ण, पद तथा वाक्य आदि के प्रत्येक स्तर पर कुछ ऐसे निश्चित नियम होते हैं, जिनसे भाषा का मानक स्वरूप बनता है। निश्चित नियमों को भंग करने से मानक रूप अमानक में परिवर्तित हो जाता है। वाक्य-रचना की अशुद्धियों का मुख्य कारण है, व्याकरण के नियमों का सही ज्ञान न होना।

(ख) हिंदी की वाक्य संरचना में सबसे अंत में क्रिया आती है।

(ग) (*i*) दूध में कौन पड़ गया? (*ii*) मैं मेरे घर जा रहा हूँ।

लिखने की बारी

1. **अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
मैहमान	मेहमान	अलोकिक	अलौकिक
छत्रिय	क्षत्रिय	परिक्षा	परीक्षा

	क्रपा	कृपा	प्रतिग्या	प्रतिज्ञा
	ग्यान	ज्ञान	विसेष	विशेष
	सढ़क	सड़क		
2.	पांच	पाँच	हंसना	हँसना
	गांव	गाँव	आंधी	आँधी
	ऊंचा	ऊँचा	कँगन	कंगन
	अँगूर	अंगूर	चांद	चाँद
	यहां	यहाँ		
3.	पड़ाई	पढ़ाई	चिड़ना	चिढ़ना
	लरका	लड़का	बडा	बड़ा
	ढ़ेर	ढेर	ढ़क्कन	ढक्कन
	बूढा	बूढ़ा	घोरा	घोड़ा
	ड़ाकू	डाकू		

4. (क) मुझे आज काम पूरा कर लेना है।

(ख) लक्ष्मीबाई वीरांगना थीं।

(ग) सरोजिनी नायडू विदुषी थीं।

(घ) प्यास के मारे उसके प्राण निकल गए।

(ङ) बाहर ज़ोरदार वर्षा हो रही है।

23. मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

बोलने की बारी

(क) मुहावरे वाक्यांश हैं।

(ख) लोकोक्ति को 'कहावत' भी कहा जाता है।

लिखने की बारी

1. (क) कमर कसना
   (ख) हाथ मलना
   (ग) नौ दो ग्यारह होना
   (घ) आँखें दिखाना
   (ङ) गले लगाना
   (च) श्री गणेश होना
   (छ) आम के आम गुठलियों के दाम
   (ज) पीठ थपथपाना

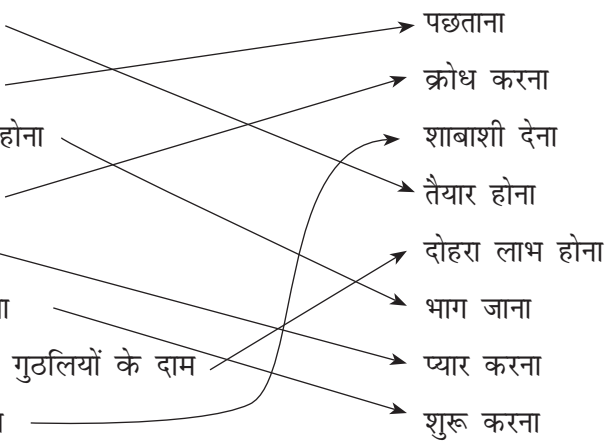

   पछताना
   क्रोध करना
   शाबाशी देना
   तैयार होना
   दोहरा लाभ होना
   भाग जाना
   प्यार करना
   शुरू करना

2. (क) दौड़ में प्रथम आने के लिए उसने जी-जान से काम किया।
   (ख) अपने बॉस को अचानक सामने देखकर कार्तिक के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ गईं।
   (ग) पुलिस को देखते ही चोर रफ़ूचक्कर हो गया।
   (घ) हैदर के कान पर जूँ नहीं रेंगती।
   (ङ) उस बहादुर आदमी ने जान पर खेलकर बच्चे की जान बचाई।
3. (क) दोपहर खाना न मिलने के कारण पेट में चूहे कूद रहे हैं।
   (ख) परीक्षा समाप्त होते ही मैं घोड़े बेचकर सो जाऊँगा।
   (ग) आज मैं तुम्हारी मदद न कर सकूँगा क्योंकि मेरे पास फूटी कौड़ी भी नहीं है।
   (घ) टॉम को समझाने का असर नहीं होता है क्योंकि वह अक्ल का दुश्मन है।
   (ङ) कक्षा में प्रथम आने के लिए रवीश ने एड़ी-चोटी का ज़ोर लगा दिया।
4. घबरा जाना – हाथ-पाँव फूलना
   असंभव कार्य करना – हथेली पर सरसों उगाना
   बहुत थक जाना – अंग-अंग ढीला होना
   धोखा देना – आँखों में धूल झोंकना
   होश आना – आँखें खुलना
   बहुत प्रयास करना – एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाना
   रुकावट डालना – काँटे बिछाना
   भेद खुलना – कलई खुलना

5. (क) आस्तीन का साँप–मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि ललित भी आस्तीन का साँप निकलेगा।
   (ख) ईंट से ईंट बजाना–प्रकृति जिस दिन क्रोध में आएगी, वह मानव जाति की ईंट से ईंट बजा देगी।
   (ग) गागर में सागर–कविवर बिहारी ने अपने दोहों में गागर में सागर भरा है।
   (घ) अँगूठा दिखाना–तुम उसकी चाहे जितनी भी मदद करो, वक्त पड़ने पर वह तुम्हें अँगूठा दिखा देगा।
   (ङ) दाल में काला होना–उसकी अटपटी हरकतें देखकर सबको लगने लगा कि दाल में कुछ काला है।
6. (क) उलटा चोर कोतवाल को डाँटे–अपराधी निरपराध को डाँटे
   (ख) का वर्षा जब कृषि सुखाने–समय निकल जाने पर प्रयास करना व्यर्थ है
   (ग) आम के आम, गुठलियों के दाम–दोहरा लाभ
   (घ) ऊँची दुकान, फीका पकवान–दिखावा अधिक वास्तविकता कम होना
   (ङ) भैंस के आगे बीन बजाना–निरर्थक प्रयत्न करना

नोट– अध्याय 24 मौखिक अभिव्यक्ति पर आधारित है।

25. अपठित गद्यांश

1. (क) परिश्रम जीवन को गति प्रदान करता है।
   (ख) परिश्रमी व्यक्ति लक्ष्मी का कृपापात्र बनता है।
   (ग) श्रम सफलता का मूलमंत्र है।
   (घ) प्रकृति + इक।
   (ङ) शीर्षक : 'श्रम : सफलता का मूलमंत्र'।
2. (क) संसार में जितने साधु, संत, महात्मा और बड़े लोग हुए हैं, उन्होंने धन से भी कीमती वस्तु को पाने की चेष्टा की।
   (ख) धन से भी मूल्यवान वस्तु को पाने अर्थात् अपने ऊँचे उद्देश्य को पाने के लिए भगवान महावीर ने राजपाट छोड़ा।
   (ग) गांधी जी समझ गए थे कि जो आनंद सादगी की ज़िंदगी में है, वह पैसे की ज़िंदगी में नहीं।
   (घ) सादा – सादगी।
   (ङ) शीर्षक – 'जीवन का लक्ष्य'।

3. (क) मानव का अस्तित्व वन-संपदा पर टिका हुआ है।

(ख) प्रदूषण की वजह से ओज़ोन परत में दरार पड़ने लगी है।

(ग) आज इस बात की आवश्यकता है कि वनों की अंधाधुंध कटाई पर रोक लगाई जाए और बढ़ती हुई जनसंख्या पर नियंत्रण किया जाए।

(घ) 'मानव' का विलोम 'दानव' है।

(ङ) शीर्षक–'वन संरक्षण'।

4. (क) आज भारतीय नारी अपने कर्तव्य का निर्वाह पूरी निष्ठा व ईमानदारी से कर रही है।

(ख) रानी लक्ष्मीबाई, विजय लक्ष्मी पंडित, कल्पना चावला आदि नारियों का राष्ट्रीय निर्माण में अमूल्य योगदान रहा है।

(ग) स्वतंत्रता से पूर्व नारी की स्थिति अच्छी नहीं थी।

(घ) नारी का कर्तव्य है कि वह समाज की उन्नति के लिए कार्य करे, नवयुवक व बच्चों को सही मार्ग दिखाए तथा देश के विकास में सक्रिय योगदान दे।

(ङ) उत् + नति।

5. (क) प्रदूषण का अर्थ है–दोषयुक्त करना अर्थात् ऐसा कुछ करना जिससे वायुमंडल या वातावरण दूषित हो जाए।

(ख) प्रदूषण कई प्रकार का होता है; जैसे–वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण तथा मृदा प्रदूषण।

(ग) चिमनियों से निकलता धुआँ, कल-कारखानों से उत्पादित बेकार पदार्थों का नदियों में डाला जाना, जंगलों की अंधाधुंध कटाई, वाहनों से निकलता धुआँ, मशीनों एवं वाहनों का शोर आदि पर्यावरण के दूषित होने के कारण हैं।

(घ) जनसंख्या पर नियंत्रण करके, कल-कारखानों को शहरों से दूर स्थापित करके, हवा में ज़हर घोलने वाले कारखानों पर पाबंदी लगाकर और वृक्षारोपण को बढ़ावा देकर प्रदूषण को रोका जा सकता है।

(ङ) शीर्षक–'प्रदूषण की समस्या'।

26. अपठित पद्यांश

1. (क) समय इस बात का साक्षी है कि पवन ने अनेक दीपक बुझाए हैं।

(ख) मनुष्य ने पहली बार अंधकार के सामने पहला दीप जलाकर अंधकार की चुनौती स्वीकार की थी।

(ग) दीये और तूफ़ान की कहानी चली आ रही है और चलती रहेगी।

(घ) अगर धरती पर एक भी दीया रहेगा तो निशा को सवेरा मिलेगा। अर्थात् दुनिया में चाहे कितनी भी बुराइयाँ हों और केवल एक अच्छाई हो तब भी बुराइयों को हराया जा सकता है।

(ङ) शीर्षक–'जलाते चलो'।

2. (क) प्रेम, त्याग और मानवता के बिना संसार का चलना संभव नहीं है।

(ख) कवि ने त्यागमय जीवन जीने की सलाह दी है।

(ग) कवि व्यक्ति के अंदर आशावादी होने का विश्वास जगाना चाहता है।

(घ) विश्व का कल्याण करने हेतु त्याग आवश्यक है।

(ङ) शीर्षक–'विश्व कल्याण'।

3. (क) लहरें कल-कल, छल-छल के स्वर में अपना गीत सुना रही हैं।

(ख) बेटी लहरों को बुला रही है।

(ग) लहरें तट तक आकर भाग जाती हैं।

(घ) 'मधुर' का विलोम है–'कटु'।

(ङ) शीर्षक–'लहरों का गीत'।

4. (क) विपत्ति से कायर लोग डरते हैं।

(ख) 'काँटों में राह बनाते' का आशय है कि काँटों में रास्ता बना लेते हैं अर्थात् बहादुर लोग समस्याओं को ठीक प्रकार हल कर लेते हैं।

(ग) संकट आने पर साहसी लोग घबराते नहीं हैं। वे विपत्ति का धैर्य से मुकाबला करते हैं।

(घ) 'सूरमा' का समानार्थी है–योद्धा/बहादुर/शूरवीर।

(ङ) शीर्षक–'काँटों में राह बनाते हैं'।

5. (क) 'मनुज को खोज निकालो' से कवि का अभिप्राय विभिन्न जातियों, वर्गों एवं संस्कृतियों में बँटे मनुष्य समाज में से सच्चे मनुष्य को पहचानकर उसे खोज निकालने से है अर्थात् ऐसे मनुष्य की पहचान करो जो जाति-वर्ग के भेद से ऊपर उठे हों।

(ख) कवि मनुष्य को विभिन्न जातियों-वर्गों में बँटे मनुष्य को केवल मनुज (मानव) जानकर अपनाने की बात कर रहे हैं।

(ग) विभिन्न प्रकार के भेदों व असमानताओं के कारण आज के युग में अखिल अवनि में मनुष्य रिक्त है।

(घ) राजा-भूप, नरेश।

(ङ) शीर्षक–'मनुज को खोज निकालो'।

6. (क) कवि आज़ादी का दीया बुझने नहीं देना चाहता है।

(ख) कवि स्वतंत्रता का दीया प्रत्येक द्वार पर जलाना चाहता है।

(ग) शहीद का देश की रक्षा के लिए, उसकी स्वतंत्रता के लिए आत्मबलिदान देना अर्थात् प्राणदान देने को पुण्यदान कहा गया है।

(घ) 'तीर' के दो समानार्थी हैं–किनारा, बाण।

(ङ) शीर्षक–'दीया बुझे नहीं'।

7. (क) कवि की आँख में अचानक एक तिनका आकर गिर गया।

(ख) तिनका निकलने पर कवि को समझ में आ गया कि उन्हें परेशान करने के लिए एक तिनका ही काफ़ी है। अत: उसे किसी बात पर घमंड नहीं करना चाहिए।

(ग) तिनके की घटना से कवि को समझ में आ गया कि घमंड नहीं करना चाहिए क्योंकि एक छोटा-सा तिनका भी आँख में पड़ जाए तो मनुष्य को बेचैन कर देता है।

(घ) 'आँख' का तत्सम रूप है–'अक्षि'।

(ङ) शीर्षक–'एक तिनका'।

27. विज्ञापन-लेखन

1.

प्रेरक कहानियों का भंडार

स्वागत है
आइए, पढ़िए

एकमात्र जगह
जनता बुक डिपो
क०ख०ग० नगर

रंग-बिरंगी कहानियाँ
परियों की कहानियाँ
कहानियाँ ही कहानियाँ

2.

खोजिए
पुरस्कार जीतिए

गायब बैग

रंग – लाल

साइज – 3 × 2

जो भी बैग को खोजकर वापस करेंगे, उन्हें 500 रुपये का नकद पुरस्कार दिया जाएगा।

मोबाइल- 8852xxxxxx

3.

पेपर बैक और हार्डबाइंड की पुस्तकें

पुस्तकों का महासंगम

आकर्षक डिज़ाइन एवं
अच्छे कागज़ों पर मुद्रित

एक जगह अनेक लेखक

समय : सुबह 9.00 से शाम 5.00 बजे तक

स्थान : रामराज इंटर कॉलेज के सामने

4.

मदद को हाथ बढ़ाएँ बेबस को हृदय लगाएँ

दीप से दीप जलाएँ

कोसी नदी के बाढ़ से प्रवाभित लोगों
की मदद के लिए जुड़ें

स्वयंसेवी संस्था : संजीवनी ट्रस्ट

संपर्क सूत्र : 9622xxxxxx

5.

वार्षिकोत्सव का अनूठा कार्यक्रम

साहित्य
संगीत कला

- **खेल**
- **सृजन**
- **हस्तकौशल**

सभी कुछ तीन दिन तक प्रस्तुत है

समय : सुबह 10.00 से शाम 4.00 बजे तक

28. संवाद-लेखन

1. राहगीर – भाई, ज़रा एक कप चाय पिलाना।
   चायवाला – बैठिए जी, अभी बनाकर पिलाता हूँ।
   राहगीर – चाय कितने की है?
   चायवाला – दस रुपये प्रति कप।
   राहगीर – इतनी महँगी चाय हो गई।
   चायवाला – दूध भी तो अस्सी रुपये लीटर है।
   राहगीर – बात तो सही है।
   चायवाला – लीजिए जी, आपके लिए चाय तैयार हो गई।

2. पुत्र – पापा, मुझे एक मोबाइल फ़ोन चाहिए।
पिता – तुम्हें फ़ोन की क्या ज़रूरत है?
पुत्र – स्कूल के सभी प्रोजेक्ट वाट्सएप पर ही आते हैं।
पिता – बात तो ठीक कह रहे हो।
पुत्र – तो आज ही खरीद दीजिए न पापा।
पिता – हाँ, ठीक है। अगले सप्ताह खरीदेंगे।
पुत्र – तब तक क्या करूँ।
पिता – लो, मेरे फ़ोन से काम करते रहो।

3. पहला आदमी – महँगाई आजकल बहुत बढ़ गई है।
दूसरा आदमी – सोचिए, भला खाने-पीने की सभी सामग्री भी कितनी महँगी हो गई है।
पहला आदमी – सस्ता क्या है। सब तो महँगा है।
दूसरा आदमी – सब्ज़ियों के भाव तो आसमान छू रहे हैं।
पहला आदमी – बच्चों की पढ़ाई कराना अब आसान नहीं है।
दूसरा आदमी – जब पालन-पोषण करना मुश्किल है तो फिर क्या होगा?
पहला आदमी – सरकार भी तो ध्यान नहीं दे रही।
दूसरा आदमी – यह सब नीतियों का ही तो परिणाम है।

4. पहला मित्र – क्यों भाई, तुम्हें तो बहुत खाँसी आ रही है।
दूसरा मित्र – हाँ भाई, डॉक्टर ने तो कहा है कि प्रदूषण से बचो, लेकिन बचना मुश्किल है।
पहला मित्र – प्रदूषण तो इतना है कि दवा काम ही नहीं करती।
दूसरा मित्र – पानी से मिट्टी तक सब कुछ प्रदूषित है।
पहला मित्र – इसीलिए तो खाने-पीने की चीज़ें भी हानिकारक हो गई हैं।
दूसरा मित्र – हर तरह की बीमारियाँ इसीलिए हो रही हैं।
पहला मित्र – हमें स्वयं के लिए और दूसरों के लिए पर्यावरण को शुद्ध रखना होगा।

5. रोहन – गुरु जी, फुटबॉल नहीं है। मँगवाने की कृपा करें।
अध्यापक – हाँ, रोहन, मैं आज ही व्यवस्था करता हूँ और क्या चाहिए?
रोहन – लगभग सभी खेलों के सामान पुराने हो गए हैं।
अध्यापक – इसी सप्ताह में खेल शिक्षक को सूचित कर दूँगा।
रोहन – गुरु जी, क्या अगले सप्ताह तक सामान मिल जाएगा।
अध्यापक – हाँ, रोहन! तुम सभी खेलों के लिए टीम बना लो।
रोहन – गुरु जी, यह काम मैं आज ही शुरू कर देता हूँ।
अध्यापक – शाबाश! मुझे तुमसे ऐसी ही आशा थी।

6. मैं – अरे विपुल, आपको यह जानकर खुशी होगी कि मेरे शहर में मैट्रो चलने लगी है।
   मित्र – यह तो बहुत अच्छी बात है। अब आपका समय भी बचेगा।
   मैं – समय भी बचेगा और अनावश्यक भीड़ भी नहीं होगी।
   मित्र – भीड़ तो होगी क्योंकि लोग यात्रा तो करेंगे ही।
   मैं – हाँ, लेकिन मैट्रो कई चक्कर लगाती हैं।
   मित्र – यह तो सही है। इसके कारण आसानी होगी।
   मैं – कभी मेरे शहर में आइए। आपको अच्छा लगेगा।
   मित्र – अवश्य आऊँगा मित्र! शायद अगले सप्ताह ही आ जाऊँ।

29. चित्र-वर्णन

1. यह किसी रेलवे प्लेटफॉर्म का दृश्य है। ट्रेन रुकी हुई है। कुछ यात्री उतर रहे हैं और कुछ यात्री ट्रेन में चढ़ना चाहते हैं। एक आदमी बॉक्स लिए उतर रहा है। एक दूसरा आदमी हाथ में बॉक्स लिए अपने परिवार के साथ ट्रेन में सवार होना चाहता है। सामान अधिक होने के कारण एक कुली सिर पर उनका सामान रखकर चल रहा है। यह बात ठीक नहीं है। हमें यात्रा में उतना ही सामान रखना चाहिए जितना स्वयं लेकर चल सकें।

2. यह सड़क पर चलती गाड़ियों का दृश्य है। कई गाड़ियाँ एक साथ चल रही हैं। इनके बीच उचित दूरी भी नहीं है। यह दुर्घटना का कारण हो सकता है। रास्ते में सड़क के किनारे लाइट लगी हुई है। इससे रात के समय भी सड़क पर प्रकाश रहता है। सभी को परिवहन के नियमों का पालन करना चाहिए एवं किसी के लिए असुविधा का कारण नहीं बनना चाहिए।

3. यह दृश्य पर्यावरण प्रदूषण की समस्या को प्रस्तुत करता है। कल-कारखानों से प्रदूषित धुआँ ऊपर वायुमंडल की ओर जा रहा है। इसके कारण हवा में क्लोरोफ्लोरो कार्बन की मात्रा बढ़ती ही जा रही है। इससे श्वास संबंधी बीमारी भी बढ़ती है। लोगों का धन उपचार कराने में खर्च हो जाता है। चित्र में गंदे पानी को बहते हुए दर्शाया गया है। इसमें अपशिष्ट पदार्थ बह रहे हैं। यह जल प्रदूषण का कारण है। हमें अपने जल स्रोतों को शुद्ध रखना चाहिए।

4. यह किसी पार्क का चित्र है। पार्क की ज़मीन समतल तो नहीं है, परंतु इस पर हरी-भरी घास उगी हुई है। कुछ रंग-बिरंगे फूल भी खिले हैं। कुछ छोटे पौधे हैं तो कुछ बड़े विटप हैं। इन पेड़ों से हमें लकड़ी मिलती है। पशुओं को चारा मिलता है। फल-फूल भी वृक्षों से ही प्राप्त होते हैं। ये वृक्ष अपनी पत्तियों से हमारी धरती को उपजाऊ बनाते हैं, वर्षा को आकर्षित भी करते हैं। ऐसे पौधों वाले उपवन प्रातःकालीन भ्रमण के लिए उपयोगी होते हैं।

5. यह सूर्योदय का चित्र है। पहाड़ के पीछे स्वर्णिम सूर्योदय हो रहा है। प्रकाश की किरणें धीरे-धीरे फैलती जा रही हैं। ऊपर की तरफ़ बादल भी दिख रहे हैं। पहाड़ के पास एक नदी बह रही है। इस नदी का जल बहुत निर्मल है। इसका आशय यह है कि नदियाँ मूलतः स्वच्छ होती हैं, परंतु

हम इन नदियों की स्वच्छता का ध्यान नहीं रखते, यह बात चिंताजनक है। हमें जल के स्रोतों को स्वच्छ रखना चाहिए।

30. सूचना-लेखन

1. दिनांक : 25.04.20xx **सूचना**

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि विद्यालय की तरफ़ से तीन दिवसीय शैक्षिक भ्रमण का आयोजन किया है। दिल्ली से जम्मू भ्रमण के लिए बस का प्रबंध किया गया है। अत: सभी छात्र 26.07.20xx से 28.07.20xx तक चलने की तैयारी कर लें। विद्यालय से प्रस्थान का समय प्रात: 8.00 बजे रहेगा।

आदेशानुसार
प्रधानाचार्य

2. दिनांक : 1.06.20xx **सूचना**

समस्त ग्रामवासियों को सूचित किया जाता है कि इस वर्ष पर्यावरण दिवस पर वृक्षारोपण किया जाना है। सरकारी संस्थान से मिलने वाले पौधों की संख्या कम है। अत: आपसे निवेदन है कि अपने आसपास से उपयोगी पौधे एक स्थान पर एकत्र कर लें ताकि वृक्षारोपण का कार्य विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को ही संपन्न हो सके।

निवेदक – रवि मल्होत्रा

3. दिनांक : 03.03.20xx **सूचना**

आप सभी को सूचित किया जाता है कि कल दिनांक 02.03.20xx को मेरी जेब से 2000 रुपये विद्यालय परिसर में ही कहीं गिर गए। ये रुपये मैंने फ़ीस जमा करने के लिए रखे थे। मैंने इन्हें खोजने की बहुत कोशिश की, लेकिन अभी तक नहीं मिले। अत: आप सबसे निवेदन है कि यदि किसी को मेरे रुपये मिले हों तो वापस करने की कृपा करें।

विपिन कुमार
कक्षा : सातवीं 'अ'

4. दिनांक : 06.02.20xx **सूचना**

मेरे क्षेत्र रामपुरा में स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया है। इसमें बच्चों और वृद्ध लोगों की जाँच नि:शुल्क रूप से की जाएगी। सरकारी खर्चे पर आयोजित इस शिविर में आप लोग अपने परिचय एवं पहचान-पत्र के साथ आएँ। शिविर में परीक्षण एवं उपचार का समय 11.02.20xx से 17.02.20xx तक 11.00 बजे से अपराह्न तक है।

निवेदक
प्रयास

5. दिनांक : 8.04.20xx **सूचना**

आप सभी को सूचित किया जाता है कि मेरी कॉलोनी नीलम विहार में 10-04-20xx को होलिकोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। मैं चाहता हूँ कि आप सभी लोग उपस्थित हों। कॉलोनी द्वारा आयोजित इस उत्सव में जलपान और भोजन का प्रबंध किया गया है। आप सभी के लिए यहाँ अबीर-गुलाल की भी व्यवस्था है।

निवेदक
प्रदीप 'सुमन'

31. पत्र-लेखन

1. प्रधानाचार्य
सेवाश्रम विद्यालय लंभुआ
सुल्तानपुर, उत्तर प्रदेश
विषय : वन-महोत्सव मनाने का अनुरोध
महोदय

विद्यालय में विगत दो वर्षों से वन-महोत्सव कार्यक्रम का आयोजन नहीं हो सका है। ऐसा इसलिए भी नहीं हो सका क्योंकि कोरोना के बढ़ते प्रभाव के कारण सभी लोगों का एक जगह इकट्ठा होना संभव नहीं था। अब स्थितियाँ ठीक हैं तो इस कार्यक्रम को पुनः आयोजित किया जाना चाहिए। हम लोग अपने नाम से एक-एक पौधा स्वयं लगाएँगे और उसकी देखभाल भी करेंगे। ऐसा करने से हमारे विद्यालय का पूरा प्रांगण हरा-भरा हो जाएगा। वन-महोत्सव का कार्यक्रम एक सप्ताह तक लगातार चलता रहे तो सभी छात्रों को इसमें भाग लेने का अवसर मिल सकता है। अतः आपसे विनम्र अनुरोध है कि इस कार्यक्रम का आयोजन करके हमें अपनी-अपनी सहभागिता निभाने का अवसर प्रदान करने की कृपा करें।

धन्यवाद
आपका आज्ञाकारी शिष्य

शिवम राज
कक्षा : सातवीं 'ब'
दिनांक : 03.04.20xx

2. प्रधानाचार्य महोदय
दीनदयाल माध्यमिक विद्यालय
गौरीगंज, अमेठी
विषय : तीन दिन के अवकाश के संबंध

महोदय

यह बताते हुए बहुत हर्ष हो रहा कि मेरे बड़े भाई प्रतुल की शादी निश्चित हो गई है। घर के सभी लोग बहुत खुश हैं। इसकी तैयारियाँ बहुत धूमधाम से हो रही हैं। अब शादी में बहुत कम समय बचा है। सभी मेहमान जमा हो रहे हैं। उनका स्वागत करना है। ऐसी दशा में विद्यालय आना संभव न हो सकेगा। अत: आपसे विनम्र निवेदन है कि मुझे 24.06.20xx से 26.06.20xx तक तीन दिनों का अवकाश प्रदान करने की कृपा करें। मैं आपका आभारी रहूँगा।

आपका आज्ञाकारी शिष्य
नितिन मंडाविया
कक्षा - सातवीं 'स'
दिनांक : 23.06.20xx

3. मुख्य डाकपाल
प्रीत विहार, अहमदाबाद
दिनांक : 01.07.20xx

विषय : डाकिए की लापरवाही के संबंध में

महोदय

विगत छह महीने से मेरे गाँव में डाकिया आता ही नहीं। कोई भी पत्र चाहे जितना महत्वपूर्ण हो वह समय पर प्राप्त नहीं होता। हम लोग बार-बार फ़ोन करके पूछते रहते हैं, फिर भी सही सूचना नहीं मिलती। बहुत समझाने पर भी डाकिया गाँव में नहीं आता। कभी आता भी है तो चौराहे पर ही किसी को पत्र देकर वापस हो जाता है। सबसे बड़ी कठिनाई तो प्रतियोगी परीक्षा देने वाले अभ्यर्थियों को होती है। समय पर प्रवेश-पत्र न मिल पाने के कारण वे परीक्षा में शामिल होने से वंचित रह जाते हैं। इसके कारण वे परिश्रम करके भी असफल हो जाते हैं। अत: आपसे अनुरोध है कि ऐसे बेपरवाह और लापरवाह डाकिए को समय पर कार्य करने के लिए निर्देश जारी करें।

साभार धन्यवाद
पवन राठी

4. थानाध्यक्ष
कन्हई हनुमानगंज
पीलीभीत
दिनांक : 26.01.20xx

विषय : साइकिल चोरी होने के संबंध में

महोदय

कल दिनांक 25.1.20xx को दोपहर के समय मैं अपने स्कूल के सामने जनता बुक डिपो से पुस्तकें खरीद रहा था। मैंने अपनी साइकिल दुकान के पास ही खड़ी कर दी थी। मैं जब पुस्तकों को पैक करके पीछे मुड़ा तो देखा कि साइकिल ही गायब थी। चूँकि मेरा छोटा भाई भी मेरे साथ आया था। मुझे वह भी नहीं दिखा तो मैंने सोचा कि हो सकता है वह साइकिल से घर चला गया हो। जब मैं घर आया तो उसने बताया कि वह तो पैदल ही आया था। हम दोनों ने मिलकर एटलस कंपनी की लाल रंग की साइकिल को ढूँढ़ने की बहुत कोशिश की, लेकिन अभी तक कुछ पता नहीं चला। अतः आपसे अनुरोध है कि इसका पता लगाने की कृपा करें।

भवदीय
गोपेश ददलानी

5. संपादक
दैनिक भास्कर
नई दिल्ली
दिनांक : 7.03.20xx
विषय : बिजली की अत्यधिक कटौती के संबंध में
महोदय

पिछले एक महीने से मेरे वार्ड संख्या-4 में बिजली कटौती बहुत अधिक होने लगी है। पहले बीस से बाइस घंटे तक बिजली रहती थी। पहले किसी तरह की परेशानी नहीं थी, लेकिन अब मुश्किल से आठ से दस घंटे तक ही लाइट रहती है। इसके कारण पढ़ाई भी नहीं हो पा रही है। परीक्षाएँ भी नज़दीक आ गई हैं। करेली पॉवरहाउस 132 को तीन बार इस बारे में जानकारी दी गई, लेकिन पता नहीं क्यों हमारे आवेदन पर ध्यान ही नहीं दिया जा रहा। ऐसी स्थिति में आप अपने समाचार-पत्र में इस समस्या को प्रमुखता से प्रकाशित करने की कृपा करें ताकि हमारी बात प्रशासन तक पहुँच सके।

भवदीय
नवलकिशोर नवसारी
स्थान– क०ख०ग०

6. डी-8, सोवियर अपार्टमेंट
त्रिवेंद्रम, केरल
दिनांक : 11.2.20xx
प्रिय अनुज कुणाल
खुश रहो

आज सुबह ही तुम्हारे साथ रहकर पढ़ाई करने वाला नीरज आया था। उसने सारा समाचार बताया। यह जानकर खुशी हुई की तुम मेहनत से पढ़ रहे हो, लेकिन एक बात की बहुत चिंता है कि

तुम कभी भी योग-व्यायाम नहीं करते जो कि अच्छी आदत नहीं है। पढ़ना-लिखना तो ज़रूरी है, लेकिन यह भी तभी हो सकेगा जब तुम्हारा शरीर स्वस्थ रहेगा। स्वास्थ्य एक ऐसा धन है जो हमें अधिक मेहनत करने और सफलता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है। अत: यदि एक घंटे न संभव हो तो आधे घंटे ही सही, लेकिन व्यायाम ज़रूर किया करो। नियमित रूप से ऐसा करते रहने से तुम्हारा शरीर स्वस्थ हो जाएगा। मैं आशा करता हूँ कि तुम मेरी बातों का ध्यान रखोगे। योग–व्यायाम के बारे में और बातें मिलने के बाद बताऊँगा।

आपका अग्रज

विमलेश

7. ग्राम–सराय भीमसेन

पोस्ट–मानिकपुर

शीतलागंज, हरदोई

उत्तर प्रदेश

दिनांक : 9.8.20xx

प्रिय बहन माधवी

मुझे यह बताते हुए बहुत हर्ष हो रहा है कि मेरे विद्यालय में सभी सुविधाएँ हैं। खेलने के लिए मैदान और अलग-अलग प्रकार के खेलों के सामान, पढ़ने के लिए पुस्तकालय हैं। इस पुस्तकालय में विषय पर आधारित किताबों के साथ कहानी और कविता की विभिन्न पत्रकाएँ भी हैं। हमारा छात्रावास भी बहुत सुंदर है। हर कमरे में पढ़ने के लिए टेबललैंप भी है। मेरे विद्यालय का प्रांगण लताओं और फूलों के पौधों से महकता रहता है। विद्यालय का भवन तो इतना आलीशान है कि देखते ही बनता है। इसके सभी कमरे वातानुकूलित हैं। किसी भी मौसम में कोई परेशानी नहीं होती। अब तो कुछ लोगों से मेरी दोस्ती भी हो गई है। मेरे दोस्त भी बहुत अच्छे हैं। वे सभी मन लगाकर पढ़ाई करते हैं। घर आने पर अपने नए विद्यालय के बारे में ढेर सारी बातें बताऊँगा।

तुम्हारा भाई

सुदीप्तमणि

8. स्वर्णा कालोनी

मंजुल विहार–4

गली संख्या–10

दिनांक : 15.10.20xx

प्रिय मित्र अंशुल

नमस्कार

आपको सूचित करते हुए बहुत हर्ष हो रहा है कि मेरी बहन सुधा का विवाह 3.11.20xx को होना सुनिश्चित हुआ है। शादी की तैयारियाँ चल रही हैं। मौसी और बुआ के अलावा भी सभी रिश्तेदार आ रहे हैं। ऐसे में बहुत धूमधाम रहेगी। आप मेरे मित्र हैं इसलिए आपको 30.10.20xx

को ही आना होगा। आप के बिना मेरा मन उदास रहेगा। मुझे पूरा विश्वास है कि आप मेरे आग्रह को अवश्य स्वीकार करेंगे और इस कार्यक्रम को सुचारु रूप से पूरा करने में हमारी मदद करेंगे। निमंत्रण-पत्र तो मैं मात्र औपचारिकता के लिए भेज रहा हूँ। अति व्यस्तता के कारण आपसे मिलने स्वयं नहीं आ पा रहा हूँ। मुझे आपके आने की प्रतीक्षा रहेगी।

आपका मित्र
समीर जोशी

9. ग्राम–कुसुमपुर
पोस्ट–राजासराय
कलबुर्गी, कर्नाटक
दिनांक : 1.7.20xx
आदरणीय मौसा जी
सादर चरण स्पर्श

मेरे जन्मदिन पर सभी लोग इकट्ठे हुए थे। मैंने केक काटा। सभी लोगों ने मुझे आशीष प्रदान किया और उपहार भी दिया। सभी उपहार बहुत सुंदर हैं। यह सब देखकर मैं फूला नहीं समा रहा हूँ। किसी ने चमकीले कपड़े दिए तो किसी ने मिठाइयाँ। कुछ लोगों ने तो कविताओं और कहानियों की पुस्तकें भी दीं। मेरे लिए यह बहुत गौरव की बात है, लेकिन आपने लाल रंग की जो साइकिल भेजी है, वह मेरे लिए बहुत उपयोगी है। मुझे इसकी बहुत ज़रूरत थी। यदि आप मेरे लिए साइकिल न भेजते तो स्कूल जाने में मुझे बहुत परेशानी उठानी पड़ती। अब मैं समय पर स्कूल पहुँच जाऊँगा। इस उपहार के लिए आपको एक बार पुनः धन्यवाद देता हूँ।

आपका आज्ञाकारी
सोमेश चटर्जी

10. 122–बी
राधिका कुंज, पडरौना
हुंडरा, उड़ीसा
दिनांक : 5.9.20xx

पूजनीय पिता जी

सादर चरण स्पर्श

यहाँ पर कुशलतापूर्वक रहते हुए आशा करता हूँ कि आप लोग भी कुशलतापूर्वक होंगे। मुझे पता है कि आप मेरी पढ़ाई के बारे में चिंतित रहते होंगे, लेकिन मैं खूब मेहनत से अपनी पढ़ाई कर रहा हूँ। सुबह के समय हल्का व्यायाम भी करता हूँ। मैं यह अच्छी तरह समझता हूँ कि पढ़ाई मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। मैं प्रतिदिन आठ घंटे नियमित रूप से पढ़ता हूँ। सभी विषयों को पढ़ने

के लिए मैंने एक टाईम-टेबल बना रखा है। इसमें विज्ञान, गणित और अंग्रेज़ी को अधिक समय दिया है ताकि आने वाले समय में मैं स्वयं को प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए तैयार कर सकूँ।

आपका पुत्र
नीलेश

32. अनुच्छेद-लेखन

1. **सच्चा मित्र**—मित्रता जीवन का एक ऐसा अनमोल धन है, जो किसी को बहुत मुश्किल से मिलता है। हर किसी से मित्रता नहीं हो सकती। इसके लिए रूप-रंग, गुण का नहीं बल्कि विचारों का महत्व होता है। समान विचार वाले ही आपस में मित्र बन पाते हैं। ऐसे लोग ही एक-दूसरे की मदद भी करते हैं। विपरीत विचार के लोगों में मित्रता का भाव जन्म ही नहीं लेता। यदि कभी उनमें स्वार्थवश मित्रता हो भी जाए तो जल्दी ही यह समाप्त भी हो जाती है। अच्छा मित्र आपकी मदद करता है और आपके दुख को अपना दुख समझता है। लोगों के बीच अच्छी और सच्ची मित्रता होने पर वे कठिन-से-कठिन कार्यों को भी पूरा कर लेते हैं। अत: हमें अच्छे लोगों से ही मित्रता करनी चाहिए और स्वयं को भी अच्छा बनाना चाहिए।
2. **मेरा प्रिय खेल**—मेरा प्रिय खेल हॉकी है। इसे खेलने के प्रति मेरे मन में उस समय रुचि उत्पन्न हुई जब स्कूल में इसका आयोजन किया गया और मेरे दोस्तों ने इसमें भाग लेना शुरू किया। देखते-देखते मेरा मन भी इसे खेलने को कहने लगा। फिर क्या था! एक दिन मैंने अपने दोस्तों के साथ इसे खेलना शुरू कर दिया। सचमुच ही बहुत भागदौड़ का खेल है। पूरा शरीर चुस्त रहता है। इस खेल की शुरुआत टॉस के साथ होती है। टॉस जीतने वाली टीम के पास पहले दो क्वार्टर में गोल करने या सेंटर पास के साथ मैच शुरू करने का एक विकल्प होता है। एक टीम दूसरे टीम के गोलपोस्ट में हिट करने के लिए घुमावदार स्टिक का इस्तेमाल करती है। हॉकी स्टिक की लंबाई 35-38 इंच होनी चाहिए। सारांश यह की जो टीम अधिक गोल कर पाती है, वह विजयी घोषित होती है।
3. **सत्संगति**—सत्संगति का अर्थ होता है—सच्चे लोगों की संगति। कहा गया है कि सत्संगति सब मंगल मूला अर्थात् सच्चे लोगों का साथ करना ही कल्याण की जड़ है। जिन लोगों के संस्कार अच्छे होते हैं, उनके प्रभाव में रहने वाले भी अच्छे बन जाते हैं। संस्कारी बनने के लिए जिन साधनों की आवश्यकता होती है विनम्रता उसमें प्रमुख है। विनम्र लोगों का सभी आदर करते हैं। यही कारण है कि उनसे सभी लोग प्रेम करते हैं। चरित्र निर्माण जीवन की प्रथम सीढ़ी है। जिनका चरित्र अच्छा होता है वे सूर्य की भाँति कांतिमान रहते हैं। उनके संस्कार और ज्ञान के आलोक से सभी प्रकाशित होते रहते हैं। अत: अच्छे चरित्र का निर्माण हमेशा करना चाहिए।
4. **भारत के राष्ट्रीय पर्व**—भारत के तीन राष्ट्रीय पर्व हैं— 15 अगस्त, 26 जनवरी और 2 अक्टूबर। 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस मनाया जाता है। सन 1947 में इसी तारीख को हमारा देश स्वतंत्र

हुआ था। इस दिन लालकिले पर प्रधानमंत्री राष्ट्रीय ध्वज फहराते हैं और देश के नाम संबोधन देते हैं। 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाता है क्योंकि इस तारीख को हमारे देश का अपना संविधान लागू हुआ था। इस दिन राष्ट्रपति को तोपों की सलामी दी जाती है। भारत के विभिन्न राज्यों की झाँकियाँ प्रदर्शित की जाती हैं। वायु सेना के विमान अपना करतब दिखाते हैं। बहुत उत्साह का माहौल होता है। 2 अक्टूबर को हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का जन्मदिन होता है। इस दिन भी संस्थाओं में ध्वजारोहण होता है और कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

5. **विद्यार्थी जीवन**–'विद्यार्थी' शब्द विद्या + अर्थी के मेल से बना है। इसका अर्थ होता है– विद्या अर्थात् ज्ञान को उपयोग में लाने वाला। विद्यार्थी जीवन किसी के भी जीवन का सबसे महत्वपूर्ण समय है। यह ऐसा समय है कि जब एक बार बीत जाता है तो पुनः कुछ सीख पाना संभव नहीं होता। ऐसी स्थिति में विद्यार्थी का एकमात्र कर्तव्य है कि वह अधिक-से-अधिक उपयोगी ज्ञान अर्जित करे। उसे अपनी रुचि के विषय में इतना परिश्रम करना चाहिए कि वह उस विषय को दूसरे को पढ़ा सके। इसके लिए अनुशासन का होना बहुत ज़रूरी है। जो लोग अनुशासित रहते हैं, वे निश्चित समय में अपना कार्य पूरा कर लेते हैं। उनके शयन, भोजन और अध्ययन का समय सब कुछ निश्चित रहता है। अतः सभी विद्यार्थियों को अपने समय का भरपूर उपयोग करना चाहिए।

6. **कंप्यूटर**–कंप्यूटर को हिंदी में संगणक कहते हैं। जब इसका आविष्कार हुआ था तब इसका उपयोग केवल गणना करने के लिए किया जाता था, लेकिन बदलते समय के साथ इसमें भी व्यापक बदलाव हुआ। आज के समय में तो इसकी उपयोगिता इतनी बढ़ गई है कि इसके बिना कोई कार्य ही नहीं हो पाता। पुस्तकों के लेखन से रेलवे टिकट की बुकिंग और सेटेलाइट को प्रक्षेपित करने तक इसकी ज़रूरत पड़ती है। प्रोजेक्ट बनाना और विभिन्न तरह की कार्ययोजना को एक ही प्रोजेक्टर पर प्रदर्शित करने का कार्य भी अब कंप्यूटर की सहायता से ही किया जाता है। सारांश यह है कि आज की सदी कंप्यूटर की सदी है। अब संप्रेषण की नवीन तकनीकों के कारण कंप्यूटर की उपयोगिता निरंतर बढ़ती ही रहेगी।

7. **परोपकार**–परोपकार का अर्थ है–दूसरों का उपकार करना। यह मानवता का गुण है। किसी अच्छे नागरिक में यह गुण उसे पहले से अधिक अच्छा बना देता है। दया की तरह ही यह भी दोहरा वरदान है। जिस पर उपकार किया जाता है उसका कार्य होता है और जो उपकार करता है वह संतुष्ट और यशस्वी होता है। कहा भी गया है कि– 'परोपकाराय सतां विभूतयः'। परोपकारी के प्रति सभी में स्नेह का भाव होता है। ऐसे लोग दूसरों की भलाई की कामना करते हैं। संसार में ऐसे बहुत लोग हुए हैं जिन्होंने परोपकार करने में ही अपना जीवन बिता दिया। महात्मा गांधी, पंडिता रमाबाई, ज्योतिबा फुले आदि कुछ ऐसे नाम हैं जिन्हें उनके परोपकारी कार्यों के कारण हमेशा याद किया जाता है।

33. निबंध-लेखन

1. **होली**—भारत को त्योहारों का देश कहा जाता है। यहाँ हर महीनें में कोई-न-कोई त्योहार मनाया जाता है। इन्हीं में होली का त्योहार भी है। इसे रंगों का त्योहार कहा जाता है। हिंदी कैलेंडर के अनुसार फाल्गुन महीने के अंतिम दिन इसे मनाया जाता है। इस समय किसान के खेत में फसल पककर तैयार हो चुकी होती है। उपवन में रंग-बिरंगे फूल खिले होते हैं। पलाश के फूल तो ऐसे दिखते हैं जैसे डालों को वसंत के देवता ने स्वयं अपने हाथों से सजा दिया हो। फूलों की मादकता वायु को सुगंध से भरपूर कर देती है। चारों तरफ़ हर्षोल्लास बना रहता है। होली का त्योहार मनाए जाने से पहले होलिका दहन किया जाता है। इसके पीछे एक पौराणिक घटना है। पुराणों में वर्णित है कि किसी समय हिरण्यकश्यप नाम का एक असुर था जो भगवान विष्णु का शत्रु था। उसकी पत्नी कयाधू के गर्भ से जन्मा प्रह्लाद भगवान विष्णु का भक्त था। अपने ही पुत्र को भगवान की पूजा करते देखना हिरण्यकश्यप के लिए असहनीय था। उसने प्रह्लाद को जान से मारने के लिए कई बार कोशिश की लेकिन भगवान की कृपा से हर बार असफल रहा। अंत में उसकी बहन होलिका ने प्रह्लाद को अपने साथ लेकर आग में बैठने का निश्चय किया। होलिका को ब्रह्मा का वरदान था जिसके कारण आग उसे नहीं जला सकती थी। लेकिन जब आग जलने लगी तो होलिका भी जलने लगी। उसने कहा कि हे ब्रह्मा! क्या तुम्हारा वरदान झूठा था? ब्रह्मा ने कहा कि मेरा वरदान झूठा नहीं है। मैंने तो पहले ही कह दिया था कि भगवान के भक्त के खिलाफ़ यह वरदान काम नहीं आएगा। होलिका जल गई लेकिन प्रह्लाद बच गए। इसी खुशी में होली का त्योहार मनाया जाता है।

2. **राष्ट्रीय एकता**—राष्ट्रीय एकता का अर्थ है— राष्ट्र में रहने वाले लोगों में एकजुट रहने का भाव। भारत एक ऐसा देश है जिसमें अलग-अलग भाषा, जाति और धर्म के लोग रहते हैं। पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक के सभी लोगों की संस्कृति और भाषा में अंतर है। पहनावे, संस्कृति, लोकरीति, लोकगीत और खानपान में पर्याप्त अंतर है। इतना सब होने के बाद भी भारत एक है और सभी के प्रति सभी के मन में समानता और उदारता का भाव है। कहा जाता है कि एकता में बल है। बिखराब हमारी शक्ति को समाप्त कर देता है। भारत सैंकड़ों वर्षों तक गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा रहा। हमारी सभ्यता और संस्कृति पर अनगिनत प्रहार हुए लेकिन हर बार हमने विजय प्राप्त की और अपनी पहचान बनाए रखी। यह राष्ट्रीय एकता के कारण ही संभव हो सका। राष्ट्रीय एकता का महत्व इसलिए भी है कि इसी के बल पर हम उन विदेशी शक्तियों के समक्ष चुनौती भी प्रस्तुत कर पाते हैं जो भारत को कमज़ोर करने के लिए नित प्रति साज़िश रचते हैं। हमारे देश में जब भी कभी राष्ट्रीय एकता की भावना कमज़ोर पड़ी तब हमें भीषण मुसीबतों का सामना करना पड़ा। अतः हमें इस बात का हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि राष्ट्रवाद का दीप हमेशा प्रज्वलित रहे। एकता की भावना सशक्त राष्ट्र के निर्माण की जड़ है। इस जड़ को समानता रूपी अमृत से सिंचित करते रहना होगा। यह ज़िम्मेदारी देश के प्रत्येक नागरिक की

है। राष्ट्रीय एकता में कुछ बाधक तत्व भी हैं। ऐसे लोग भारत में रहकर भी भारत को खोखला करने की कोशिश में लगे रहते हैं। ऐसे लोगों से विशेष रूप से सतर्क रहने की ज़रूरत है।

3. **यदि मैं प्रधानाचार्य होता**–किसी भी विद्यालय में प्रधानाचार्य की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। वह विद्यालय की समस्त योजनाओं का नियामक एवं निर्धारक होता है। सभी शिक्षकों को शिक्षण प्रक्रिया के लिए उचित परिवेश उपलब्ध कराना भी प्रधानाचार्य का काम होता है। प्रधानाचार्य की छवि बहुत आदर्श होती है। उसके व्यवहार का सभी पर गहरा प्रभाव पड़ता है। विविध प्रकार के कार्यक्रम भी उनकी अनुमति से ही आयोजित किए जाते हैं। यदि मैं प्रधानाचार्य होता तो सभी को समय के प्रति पाबंद रहने के लिए प्रेरित करता। शिक्षण व्यवस्था में नई शिक्षा नीति के अनुसार बदलाव करता और शिक्षकों को यह निर्देश देता कि वे निश्चित समय पर पठन-पाठन की प्रक्रिया पूरी करें। मैं उन्हें यह भी निर्देश देता कि छात्रों को अच्छा नागरिक बनने की भी शिक्षा दें ताकि वे देश में भलाई का कार्य कर सकें। यदि मैं प्रधानाचार्य होता तो विद्यालय में फूलों के और भी पौधे लगवाता। ऐसा करने से विद्यालय का पूरा प्रांगण खुशबू से महकता रहता। समय-समय पर शारीरिक विकास करने वाले खेलों के साथ-साथ मानसिक विकास करने करने वाले खेलों का भी आयोजन करता। ऐसा करने से सभी बच्चों को समान रूप से लाभ होता। विद्यालय में छात्रों की उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए कक्षाध्यापक के साथ-साथ विषय अध्यापक को भी उपस्थिति पंजिका उपलब्ध करवाता ताकि यह पता चल सके कि कौन से छात्र किस विषय की कक्षा में अनुपस्थित रहते हैं। ऐसा करने से इस कारण का पता लगाया जा सकता है और समस्या का समाधान भी किया जा सकता है।

4. **स्वास्थ्य ही जीवन है**–कहा गया है कि 'धन गया तो गया नहीं कुछ भी, स्वास्थ्य गया कुछ जाता है'। इसका आशय यही है कि स्वास्थ्य का महत्व धन की तुलना में बहुत अधिक है। कभी-कभी तो ऐसा होता है कि स्वास्थ्य की रक्षा करने में संपूर्ण धन खर्च हो जाता है, फिर भी आदमी स्वस्थ नहीं रह पाता। पहले की तुलना में अब स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ अधिक बढ़ गई हैं। अनाज की उपज बढ़ाने के लिए रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का अधिक उपयोग किया जाने लगा है। इसके कारण हृदयाघात और ब्रेनहैंब्रज जैसी समस्याएँ बहुत तेज़ी से बढ़ रही हैं। बीमारी का एक कारण लोगों की दिनचर्या भी है। आज के तकनीकी युग में लोग देर रात तक कार्य करते रहते हैं और सुबह देर तक सोते रहते हैं। कसरत, योग-व्यायाम की तरफ़ लोग बिलकुल भी ध्यान नहीं देते। ऐसी अनियमितता के कारण लोग शुगर और रक्तचाप के शिकार भी हो रहे हैं। स्वास्थ्य के संदर्भ में एक बात समझना बहुत ज़रूरी है कि हमारा मन हमारे शरीर को नियंत्रित करता है। चंचल और अस्थायी मन शारीरिक गतिविधियों को कई गुना अव्यवस्थित कर देता है। मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि स्वस्थ मन का निर्माण स्वस्थ शरीर में ही होता है। अत: इसे स्वस्थ रखना ही सुखी रहने का मुख्य आधार है। यह बात हम सभी को याद रखनी चाहिए कि सबसे बड़ा सुख शरीर का स्वस्थ रहना ही है। शरीर को एक साधन मानना चाहिए और कार्य को पूरा करने के लिए साधन को सुंदर और मज़बूत बनाना चाहिए।

5. **दूरदर्शन**–वर्तमान समय में दूरदर्शन की पहुँच भारत के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में सभी जगह है। समाचार, धारावाहिक, गीत-संगीत, विज्ञापन, सामानों की बिक्री एवं खरीद तक की सूचनाओं का प्रसारण दूरदर्शन पर होता रहता है। यह वैज्ञानिकों के प्रयासों का ऐसा परिणाम है जिसने हमारी जीवन-शैली को बहुत गहराई तक प्रभावित किया है। लोग एक रिमोट के सहारे चैनल बदलते हैं और दुनिया के किसी भी देश के बारे में रोचक जानकारियाँ प्राप्त करते हैं। फिल्में तो हमेशा ही किसी-न-किसी चैनल पर आती ही रहती हैं। यह सब देखना बहुत सुखद होता है। किसी भी आविष्कार के साथ जहाँ सकारात्मकता होती है वहीं कुछ नकारात्मकता भी रहती है। उदाहरण के लिए दूरदर्शन पर शैक्षिणक कार्यक्रमों का भी प्रसारण होता है, लेकिन कुछ ऐसे कार्यक्रम भी प्रसारित किए जाते हैं जिनमें हिंसक दृश्य होते हैं, जो मन को विचलित कर देते हैं। इनसे कुंठा की भावना और हिंसा की प्रवृत्ति बढ़ती है। यह स्थिति बेहद चिंताजनक होती है। रचनात्मकता ही सफलता का आधार है। हमें अपने जीवन में हमेशा कुछ-न-कुछ नया करने के लिए स्वयं को तैयार करते रहना चाहिए। दूरदर्शन पर ऐसे बहुत से कार्यक्रम प्रसारित होते हैं, जो हमें किसी नई दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं। इनसे बहुत कुछ सीखा जा सकता है, लेकिन कई घंटे तक स्क्रीन से चिपके रहना समय की बर्बादी है। हमें सूचनाओं को आधार बनाकर कार्य करना चाहिए। हमें हर समय केवल सूचनाओं का संग्रह ही नहीं करना चाहिए। सारांश यह है कि दूरदर्शन का उपयोग ज्ञानार्जन और सकारात्मक प्रयोग के लिए ही किया जाना चाहिए।

34. संक्षिप्त संदेश सेवा

1. प्रिय मित्र प्रवीण! आपके जन्मदिन के अवसर पर मुझे पहुँचना चाहिए था। मुझे पहले से ही पता है कि आपका जन्मदिन प्रतिवर्ष 26 जुलाई को मनाया जाता है। इस वर्ष मैं परीक्षा देने के लिए जा रहा हूँ। इसलिए वहाँ से आने के बाद आपसे मिलूँगा। मैं अभी से आपको बहुत-बहुत बधाई देता हूँ।
2.
3. (क) प्रिय सखी विमला, मुझे पता चला है कि परीक्षा में तुम्हें सर्वाधिक अंक मिले हैं। यह सब तुम्हारी मेहनत का ही फल है। मैं तुम्हें बहुत-बहुत शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूँ।

   (ख) प्रिय मित्र नरीम, मैं तुम्हारे विवाह के कार्यक्रम की कुशलतापूर्वक संपन्नता के लिए तुम्हें हृदय से शुभकामनाएँ प्रेषित कर रहा हूँ।

   (ग) प्रिय अनुज राममणि, तुम घर से बाहर पढ़ाई करने जा रहे हो। मैं तुम्हारे उत्तम स्वास्थ्य एवं उज्ज्वल भविष्य एवं सफलता की कामना करता हूँ।

कार्य-प्रपत्र–1

(भाषा, लिपि, बोली और व्याकरण, वर्ण-विचार, संधि)

1. (क) भाषा वह साधन है, जिसके द्‌वारा हम अपने विचार प्रकट करते हैं तथा दूसरों के विचार समझते हैं।

   (ख) – बोली का क्षेत्र सीमित होता है जबकि भाषा का क्षेत्र व्यापक।
   – भाषा का अपना साहित्य होता है, बोली का नहीं।
   – भाषा का प्रयोग व्याकरण के अनुसार होता है, बोली का नहीं।

   (ग) जिस भाषा को बच्चा अपने परिवार द्‌वारा सीखता है, उसे 'मातृभाषा' कहते हैं। हमारी मातृभाषा हिंदी है।

   (घ) मौखिक भाषा–बातचीत, नाटक, भाषण।
   लिखित भाषा–पत्र लिखना, पुस्तकें, समाचार-पत्र।

   (ङ) भाषा के चिह्‌नों का व्यवस्थित रूप ही 'लिपि' कहलाता है।

   (च) व्याकरण से हम भाषा को शुद्‌ध रूप में लिखना सीखते हैं। शुद्‌ध रूप में बोलना सीखते हैं। शुद्‌धता के कारण हमारी भाषा पर पकड़ मज़बूत होती है।

2.

भाषा	लिपि	भाषा	लिपि
बांग्ला	बांग्ला	फ्रेंच	रोमन
नेपाली	देवनागरी	उर्दू	फ़ारसी
संस्कृत	देवनागरी	मराठी	देवनागरी
पंजाबी	गुरुमुखी	जर्मन	रोमन

3. (क) भाष्‌ (ख) क्षेत्रीय (ग) लिखित
   (घ) 22 भाषाओं (ङ) मौखिक एवं लिखित

4. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✓
   (घ) ✗ (ङ) ✓

5. (क) ऊंचा – ऊँचा (ख) प्रभू – प्रभु
   (ग) सन्सार – संसार (घ) प्रान – प्राण
   (ङ) हिन्सा – हिंसा (च) निष्टा – निष्ठा
   (छ) मधू – मधु (ज) शुन्य – शून्य

6. (क) भाषा की सबसे छोटी इकाई, जिसके और टुकड़े नहीं किए जा सकते हैं, उसे 'वर्ण' कहते हैं।

(ख) जिन वर्णों का उच्चारण स्वरों की सहायता से किया जाता है, उन्हें 'व्यंजन' कहते हैं।

(ग) जिन वर्णों के उच्चारण में हवा बिना रुके मुँह से बाहर आती है तथा जिनके उच्चारण में अन्य वर्णों की सहायता नहीं लेनी पड़ती है, उन्हें 'स्वर' कहते हैं। स्वर के तीन भेद हैं–1. ह्रस्व स्वर, 2. दीर्घ स्वर, 3. प्लुत स्वर।

(घ) जिन व्यंजनों का उच्चारण कंठ, तालु (मूर्धा), दाँत और ओष्ठ के स्पर्श से होता है, उन्हें 'स्पर्श व्यंजन' कहते हैं। इनकी कुल संख्या पच्चीस है।

(ङ) मुख से अक्षरों को बोलना उच्चारण कहलाता है। सभी वर्णों के लिए मुख में उच्चारण स्थान होते हैं। यदि वर्णों का उच्चारण शुद्ध न किया जाए तो लिखने में भी अशुद्धियाँ हो जाती हैं, क्योंकि हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है। इसे जैसा बोला जाता है वैसा ही लिखा जाता है। लिखने की रीति को 'वर्तनी' या 'अक्षरी' कहते हैं।

(च) दो वर्णों के मेल को 'संधि' कहते हैं। उदाहरण–

देव + इंद्र = देवेंद्र राजा + ईश = राजेश

(छ) दो स्वर वर्णों के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है, उसे 'स्वर संधि' कहते हैं।

7. अंकुर, आग, आज्ञा, उठना, कर, कर्म, कलम, खरीदना, गंगा, गाय, घास, झरना, तुलसी, दाल, धरती, नई, नर, पंख, पक्षी, पेड़, फ़ैसला, बाग, बालक, भाषा, मानक, मूल, मूल्य, मौखिक, रुपया, रूप, वचन, वर्ण, व्याकरण, शृंगार, सारस, स्वर्ग, स्वास्थ्य।

8. (क) वीरेंद्र – वीर + इंद्र (ख) भानूर्जा – भानु + ऊर्जा

(ग) स्वागत – सु + आगत (घ) महात्मा – महा + आत्मा

(ङ) गंगोर्मि – गंगा + ऊर्मि (च) अत्याचार – अति + आचार

9. (क) इति + आदि – इत्यादि (ख) ने + अन – नयन

(ग) महा + औषध – महौषध (घ) सदा + ऐव – सदैव

(ङ) सु + उक्ति – सूक्ति (च) सती + ईश – सतीश

(छ) नर + इंद्र – नरेंद्र (ज) विद्या + अर्थी – विद्यार्थी

(झ) निः + धन – निर्धन (ञ) सु + अच्छ – स्वच्छ

10.

	शब्द	संधि-विच्छेद	संधि का नाम
(क)	पयोधर	पयः + धर	विसर्ग संधि
(ख)	देवालय	देव + आलय	स्वर संधि
(ग)	वागीश	वाक् + ईश	व्यंजन संधि
(घ)	रामायण	राम + अयन	स्वर संधि
(ङ)	दुष्कर	दुः + कर	विसर्ग संधि

कार्य-प्रपत्र–2

(शब्द-विचार, शब्द-निर्माण : समास, उपसर्ग एवं प्रत्यय)

1. (क) वर्णों के सार्थक और व्यवस्थित मेल को 'शब्द' कहते हैं; जैसे–कमल।

   (ख) उत्पत्ति के आधार पर शब्दों को चार भागों में बाँटा गया है–
   1. तत्सम, 2. तद्भव, 3. देशज, 4. विदेशी।

   (ग) जब दो या दो से अधिक शब्दों का मेल हो, तो उसे 'समास' कहते हैं। उदाहरण–वनगमन–वन को गमन, प्रत्येक–हर एक।

   (घ) ऐसे शब्दांश जो किसी शब्द के प्रारंभ में जुड़कर उसके अर्थ में विशिष्टता ला देते हैं, उन्हें 'उपसर्ग' कहते हैं। उदाहरण–सु + पात्र = सुपात्र, अन + पढ़ = अनपढ़।

   (ङ) प्रत्यय के दो भेद हैं–1. कृत् प्रत्यय, 2. तद्धित प्रत्यय।
   उदाहरण–उड़ + आन = उड़ान (कृत् प्रत्यय)
   मित्र + ता = मित्रता (तद्धित प्रत्यय)

2. संस्कृत के जो शब्द हिंदी में अपने मूल रूप में प्रयुक्त होते हैं, उन्हें 'तत्सम शब्द' कहते हैं; जैसे–कोकिल, नासिका, तृण, जबकि संस्कृत के वे शब्द जो कुछ बदलाव के साथ हिंदी में प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें 'तद्भव शब्द' कहते हैं; जैसे–कोयल, नाक, तिनका आदि।

3. (क) रमा ने बढ़िया कहानी सुनाई।

   (ख) कल शाम भयंकर तूफ़ान आया।

   (ग) हमारे इम्तिहान समीप आ गए हैं।

   (घ) उपवन की सुंदरता देखते ही बनती है।

   (ङ) लोगों ने उसे बाहर निकालने का प्रयास किया।

4.

समस्तपद	विग्रह	समास
वीणापाणि	वीणा है पाणि में जिसके अर्थात् सरस्वती	बहुव्रीहि समास
चंद्रमुख	चंद्र रूपी मुख	कर्मधारय समास
युद्धभूमि	युद्ध के लिए भूमि	संप्रदान तत्पुरुष समास
तुलसीरचित	तुलसी द्वारा रचित	करण तत्पुरुष समास
राजपुत्र	राजा का पुत्र	संबंध तत्पुरुष समास
अधर्म	न धर्म	नञ् तत्पुरुष समास
रातों-रात	रात ही रात में	अव्ययीभाव समास
यथासंभव	जैसा संभव हो	अव्ययीभाव समास

5. (क) वृक्ष – पेड़, तरु, विटप (ख) तालाब – सर, सरोवर, जलाशय
(ग) पुत्र – बेटा, आत्मज, सुत (घ) घोड़ा – घोटक, अश्व, हय
(ङ) देव – देवता, सुर, अमर

6. (क) पताका – ध्वज, प्रतीक (ख) कर – हाथ, किरण
(ग) लाल – एक रंग, पुत्र (घ) आम – एक फल, साधारण
(ङ) कुल –वंश, समस्त
(च) भाग – हिस्सा, विभाजन

7. (क) अमृत × विष (ख) आकर्षक × अनाकर्षक
(ग) उग्र × शांत (घ) आदान × प्रदान
(ङ) चंचल × गंभीर (च) उत्थान × पतन
(छ) गुरु × लघु (ज) हिंसा × अहिंसा

8. (क) अपेक्षा (ख) ओर (ग) अवधि
(घ) जरा (ङ) तप

9.

	मूलशब्द	प्रत्यय
(क) दर्दनाक –	दर्द	नाक
(ख) चूहेदानी –	चूहा	दानी
(ग) चित्रकार –	चित्र	कार
(घ) सपेरा –	साँप	एरा
(ङ) मानवता –	मानव	ता
(च) थकान –	थक	आन
(छ) झगड़ना –	झगड़ा	ना
(ज) मिलाप –	मिल	आप

10.

विग्रह	समस्तपद	समास का नाम
देश से निकाला	देशनिकाला	अपादान तत्पुरुष समास
चार मासों का समाहार	चौमासा	द्विगु समाास
प्रधान है जो आचार्य	प्रधानाचार्य	कर्मधारय समास
ऋण से मुक्त	ऋणमुक्त	अपादान तत्पुरुष समास

11. (क) उत् – उत्तम
(ख) स्व – स्वतंत्र
(ग) परा – पराजय
(घ) अनु – अनुमान
(ङ) अध – अधपका
(च) गैर – गैरकानूनी
(छ) सम् – सम्मान
(ज) अति – अत्यधिक
(झ) दु – दुगुना

कार्य-प्रपत्र–3

(संज्ञा एवं लिंग)

1. (क) किसी प्राणी, व्यक्ति, वस्तु, स्थान अथवा भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्दों को 'संज्ञा' कहते हैं।

(ख) संज्ञा के मुख्यत: तीन भेद हैं–

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा – भारत, गंगा आदि।
2. जातिवाचक संज्ञा – पर्वत, गाय आदि।
3. भाववाचक संज्ञा – मिठास, मधुरता आदि।

(ग) शब्द के जिस रूप से उसके स्त्री जाति या पुरुष जाति के होने का पता चले, उसे 'लिंग' कहते हैं; जैसे–नाना–नानी, लड़का–लड़की आदि।

(घ) प्राणीवाचक संज्ञा शब्दों का लिंग उनकी शारीरिक बनावट आदि को देखकर पहचाना जा सकता है। अप्राणीवाचक संज्ञा शब्दों का लिंग-निर्धारण प्राय: व्यवहार के आधार पर निर्धारित किया जाता है।

(ङ) शरीर के कुछ अंगों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं–आँख, नाक, कमर, जाँघ, टाँग, एड़ी, अँगुली, छाती आदि।

शरीर के कुछ अंगों के नाम पुल्लिग होते हैं–पेट, सिर, माथा, कान, बाल, मुँह, हाथ आदि।

(च) पाँच नित्य पुल्लिग शब्द–मच्छर, उल्लू, खरगोश, तोता, भालू।

पाँच नित्य स्त्रीलिंग शब्द–मैना, मछली, कोयल, तितली, छिपकली।

2. (क) मोनिका (व्यक्तिवाचक संज्ञा), कमरे (जातिवाचक संज्ञा),
सजावट (भाववाचक संज्ञा)

(ख) बुढ़ापा (भाववाचक संज्ञा), डर (भाववाचक संज्ञा)

(ग) थकावट (भाववाचक संज्ञा)

(घ) हाथियों (जातिवाचक संज्ञा), झुंड (समुदायवाचक संज्ञा), नदी (जातिवाचक संज्ञा), पानी (द्रव्यवाचक संज्ञा)

(ङ) पर्वत (जातिवाचक संज्ञा), चढ़ाई (भाववाचक संज्ञा)

3. (क) चोर – चोरी (ख) भाई – भाईचारा

(ग) राष्ट्र – राष्ट्रीयता (घ) दुष्ट – दुष्टता

(ङ) पुरुष – पुरुषत्व (च) नारी – नारीत्व

(छ) पशु – पशुता (ज) पर्वत – पर्वतीय

(झ) दास – दासता (ञ) गुरु – गुरुत्व

4. व्यक्तिवाचक संज्ञा–अमृतसर, लालकिला, प्रणव मुखर्जी, ताजमहल

जातिवाचक संज्ञा–सड़क, पहाड़, नारी, नदी, कुत्ता, मज़दूर

भाववाचक संज्ञा–हँसी, नारीत्व

5. (क) यमुना–श्रीकृष्ण यमुना के किनारे बाँसुरी बजा रहे हैं।

(ख) प्यासा–रोहन बहुत समय से प्यासा है।

(ग) युवक–तुम बहुत सुंदर युवक हो।

(घ) मित्र–सच्चा मित्र विपत्ति में साथ देता है।

(ङ) लंबाई–इस मकान की लंबाई कम और चौड़ाई ज़्यादा है।

6. (क) पूज्य – पूज्या (ख) साधु – साध्वी

(ग) धनवान – धनवती (घ) सेवक – सेविका

(ङ) बेटा – बेटी (च) गायक – गायिका

(छ) सेठ – सेठानी (ज) तपस्वी – तपस्विनी

7. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✓

8. लिंग के दो भेद हैं–1. स्त्रीलिंग, 2. पुल्लिग।

स्त्रीलिंग – दादी, पुल्लिग – दादा।

9. (क) मैंने तीन कमीज़ें सिलवाई हैं।

(ख) विद्यार्थियों ने संगीत का भरपूर आनंद उठाया।

(ग) चित्रों को देखकर वसुधा प्रसन्न हुई।

10. (क) वृक्ष पर चिड़ा बैठा है।

(ख) कुतिया बिलाव के पीछे भाग रही है।

(ग) बच्ची पार्क में खेल रही है।

(घ) अध्यापिका ने छात्रा को पढ़ाया।

कार्य-प्रपत्र–4

(वचन, कारक एवं सर्वनाम)

1. (क) शब्दों के जिस रूप से उनके एक या अनेक होने का बोध हो, उसे 'वचन' कहते हैं।

(ख) वचन के दो भेद होते हैं–1. एकवचन, 2. बहुवचन।

(ग) संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य के अन्य पदों और क्रिया के साथ प्रकट होता है, उसे 'कारक' कहते हैं। कारक के आठ भेद हैं।

(घ) संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द 'सर्वनाम' कहलाते हैं। दूसरे शब्दों में सर्वनाम उन शब्दों को कहा जाता है, जिन शब्दों का प्रयोग संज्ञा अर्थात् किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान आदि के नाम के स्थान पर करते हैं। इसके अंतर्गत मैं, तुम, तुम्हारा, आप, आपका, इस, उस, यह, वह, हम, हमारा आदि शब्द आते हैं।

2. (क) महिला – उस महिला ने लाल साड़ी पहनी है।

(ख) महिलाएँ – आज महिलाएँ किसी भी बात में पुरुषों से कम नहीं हैं।

(ग) कथा – पंडित जी ने भागवत की कथा सुनाई।

(घ) कथाएँ – उसे पुराणों की अनेक कथाएँ याद हैं।

(ङ) कपड़ा – वह दुकान से दो मीटर कपड़ा लाया।

(च) कपड़े – मोहन हमेशा साफ़-सुथरे कपड़े पहनता है।

3. (क) पुस्तक – पुस्तकें (ख) तलवार – तलवारें

(ग) छात्रगण – छात्र (घ) गुरु – गुरुजन

(ङ) पाठशालाएँ – पाठशाला (च) वधू – वधुएँ

(छ) चाबियाँ – चाबी (ज) गुड़िया – गुड़ियाँ

4. (क) हमें उनकी पुत्री के विवाह की सूचना यथासमय मिल गई थी।

(ख) नौकरों के लिए खाना लाओ।

(ग) हिमालय से अनेक नदियाँ निकलती हैं।

(घ) गमले में एक अच्छा पौधा लगा है।

(ङ) दर्शकों ने चित्रों की सराहना की।

5. (क) हमने यह किताब पढ़ ली।

(ख) बच्चे सो गए हैं।

(ग) अध्यापिकाएँ बच्चों को पढ़ा रही हैं।

(घ) मैंने फल खा लिए हैं।

6. (क) संप्रदान कारक (ख) कर्ता कारक

(ग) अधिकरण कारक (घ) अपादान कारक

(ङ) संप्रदान कारक

7. (क) वह राम का भाई है।

(ख) मुझे शेर से डर लगता है।

(ग) डाक्टर ने मरीज़ को दवाई दी।

(घ) सड़क पर मत खेलो।

8. (क) तुम – तुम क्या कर रहे हो।

(ख) हम – हम घर जा रहे हैं।

(ग) उसे – उसे मत बुलाओ।

(घ) कौन – बाहर कौन आया है?

(ङ) स्वयं – तुम स्वयं ही चले जाओ।

(च) उन्हें – उन्हें यहाँ आना चाहिए था।

(छ) कोई – बाहर कोई बुला रहा है।

(ज) जिसकी – जिसकी लाठी उसकी भैंस।

(झ) अपने आप – मैं अपने आप चला जाऊँगा।

(ञ) किसने – यह कार्य किसने किया?

9. (क) ये – निश्चयवाचक सर्वनाम

(ख) कोई – अनिश्चयवाचक सर्वनाम

(ग) जिसकी ... उसकी – संबंधवाचक सर्वनाम

(घ) कोई – अनिश्चयवाचक सर्वनाम

(ङ) वह – अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम

(च) मैंने – उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम

(छ) तुम – मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम

10. (क) को – कर्म कारक (ख) ने – कर्ता कारक

(ग) परसर्ग रहित – कर्ता कारक (घ) पर – अधिकरण कारक

(ङ) के लिए – संप्रदान कारक (च) में – अधिकरण कारक

(छ) से – करण कारक

कार्य-प्रपत्र–5

(विशेषण, क्रिया एवं काल)

1. (क) संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द 'विशेषण' कहलाते हैं। उदाहरण–यह सुंदर भवन है। इस वाक्य में 'सुंदर' शब्द 'भवन' की विशेषता बता रहा है। अतः यह शब्द विशेषण है।

(ख) विशेषण के चार भेद हैं–1. गुणवाचक विशेषण, 2. संख्यावाचक विशेषण, 3. परिमाणवाचक विशेषण, 4. सार्वनामिक या संकेतवाचक विशेषण

(ग) हिंदी में कुछ शब्द मूल रूप से ही विशेषण होते हैं; जैसे–अच्छा, बुरा, भला, गंदा, मधुर आदि। परंतु कुछ विशेषण शब्दों की रचना संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, अव्यय आदि में प्रत्यय लगाकर की जाती है।

(घ) किसी कार्य के करने या होने का बोध कराने वाले शब्दों को 'क्रिया' कहते हैं। उदाहरण–वर्षा हो रही है। रेखांकित शब्द क्रिया के होने का बोध करा रहे हैं। क्रिया के बिना कोई भी वाक्य पूरा नहीं होता।

(ङ) कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद हैं– 1. अकर्मक क्रिया, 2. सकर्मक क्रिया।

राधा नाच रही है। (अकर्मक क्रिया)

कमल पतंग उड़ा रहा है। (सकर्मक क्रिया)

(च) क्रिया के जिस रूप से उसके होने के समय का पता चलता है, उसे 'काल' कहते हैं। काल के तीन भेद हैं–

1. भूतकाल, 2. वर्तमान काल, 3. भविष्यत् काल।

(छ) क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि कार्य बीते समय में काफ़ी पहले पूरा हो गया है, उसे 'पूर्ण भूतकाल' कहते हैं, जबकि क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि काम तो बीते समय में ही शुरू हो चुका था, पर उसके पूर्ण होने का पता न चले, उसे 'अपूर्ण भूतकाल' कहते हैं।

– डॉक्टर इलाज कर चुके थे। (पूर्ण भूतकाल)

– वह खाना खा रहा था। (अपूर्ण भूतकाल)

2. (क) तीन (ख) संकेतवाचक (ग) विशेष्य (घ) गुणवाचक

3. (क) उच्चतम (ख) लंबा (ग) एक लीटर (घ) गरम (ङ) अच्छा

4. (क) विज्ञान – वैज्ञानिक (ख) अच्छाई – अच्छा
   (ग) निडरता – निडर (घ) आगे – अगला
   (ङ) तर्क – तार्किक (च) ग्राम – ग्रामीण
   (छ) वह – वैसा (ज) पूजा – पूजनीय

5. (क) तैरती है – अकर्मक क्रिया (ख) पढ़ी – सकर्मक क्रिया
   (ग) पिया – सकर्मक क्रिया (घ) देखा – सकर्मक क्रिया
   (ङ) हँस रही है – अकर्मक क्रिया (च) खाएगा – सकर्मक क्रिया

6.

धातु	वर्तमान काल	भविष्यत् काल	भूतकाल
उठ	मैं उठता हूँ	मैं उठूँगा	मैं उठा
लिख	मैं लिखता हूँ	मैं लिखूँगा	मैंने लिखा
पढ़	मैं पढ़ता हूँ	मैं पढ़ूँगा	मैंने पढ़ा
नाच	मैं नाचता हूँ	मैं नाचूँगा	मैं नाचा

7. (क) हमारे – सार्वनामिक विशेषण
   (ख) मैं – उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम
   (ग) वे – सार्वनामिक विशेषण
   (घ) उसे – अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम
   (ङ) मेरे – सार्वनामिक विशेषण

8. (क) संजना ने पेंसिल दी।
   (ख) रमेश ने जन्मदिन पर मुझे किताब दी।
   (ग) बाहर वर्षा हो रही है।

(घ) आज तो खाने में आनंद आ गया।

(ङ) हमारी बस पहाड़ियों के बीच चली जा रही थी।

(च) फ़िल्म देखकर तबीयत खुश हो गई।

9. (क) आजकल विवेक विहार में कार्यशाला चल रही है। –अपूर्ण वर्तमान काल

(ख) विभु शाम को छह बजे खेलने जाता है। –सामान्य वर्तमान काल

(ग) मज़दूर ने सोचा कि माँ खाना बना रही होगी। –संदिग्ध वर्तमान काल

(घ) मैं कल कमानी ऑडीटोरियम में नृत्य देखने जाऊँगी। –सामान्य भविष्यत् काल

(ङ) मनिंदर स्कूल छोड़ चुका था। –पूर्ण भूतकाल

(च) वह अवश्य ही पढ़ रहा होगा। –संदिग्ध वर्तमान काल

(छ) शायद शाम तक वर्षा हो। –संभाव्य भविष्यत् काल

(ज) मुझे सूर्योदय देखना बेहद पसंद है। –सामान्य वर्तमान काल

10. (क) अमृता पुस्तक पढ़ चुकी थी। (भूतकाल)

(ख) राधा कहानी लिख चुकी होगी। (भूतकाल)

(ग) यह काम कब होगा? (भविष्यत् काल)

(घ) आज विद्यालय बंद है। (वर्तमान काल)

(ङ) तनु कविता सुना रही है। (वर्तमान काल)

कार्य-प्रपत्र–6

(वाच्य, अव्यय : क्रियाविशेषण एवं संबंधबोधक)

1. (क) हम रातभर नहीं जाग सकेंगे।

(ख) मुझसे उठा नहीं जाता है।

(ग) रंजना से दौड़ा नहीं जाता है।

(घ) चोर से भाग नहीं जा सका।

(ङ) आइए, चला जाए।

2. (क) क्रिया के जिस रूप से यह जाना जाए कि उसका प्रयोग कर्ता, कर्म या भाव में से किसके अनुसार हुआ है, उसे 'वाच्य' कहते हैं। उदाहरण–बालक खेल रहा है। इस वाक्य में क्रिया का प्रयोग उसके कर्ता 'बालक' के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार हुआ है।

(ख) वाच्य तीन प्रकार के होते हैं–1. कर्तृवाच्य, 2. कर्मवाच्य, 3. भाववाच्य।

(ग) कर्मवाच्य का मुख्य बिंदु कर्म होता है, इसमें लिंग, वचन, कर्ता के अनुसार न होकर कर्म के अनुसार होते हैं; जैसे–माँ ने बच्चे को सुलाया। जबकि भाववाच्य में भावों की प्रधानता होती है। इसमें भावों की प्रधानता होने के कारण अकर्मक क्रिया का प्रयोग किया जाता है; जैसे–मुझसे चला नहीं जाता।

(घ) अविकारी वे शब्द हैं जिनके वाक्य में प्रयोग होने पर लिंग, वचन, पुरुष, काल, वाच्य आदि के कारण इनमें कोई परिवर्तन नहीं होता है।

(ङ) जो शब्द क्रिया की विशेषता प्रकट करते हैं, उन्हें 'क्रियाविशेषण' कहते हैं। इसके चार भेद हैं–1. कालवाचक क्रियाविशेषण, 2. स्थानवाचक क्रियाविशेषण, 3. रीतिवाचक क्रियाविशेषण, 4. परिमाणवाचक क्रियाविशेषण

(च) जिन अव्यय शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम का संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों से जाना जाता है, वे 'संबंधबोधक' कहलाते हैं।

3. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗
(घ) ✗ (ङ) ✗

4. (क) सोहन द्वारा साइकिल चलाई गई।
(ख) माली द्वारा फूल लाया जा रहा है।
(ग) सुनीता से मिठाई खाई जा रही है।
(घ) कविता द्वारा सुंदर चित्र बनाया गया।
(ङ) बच्चे से सोचा जाता है।

5. (क) ये कहानियाँ प्रेमचंद ने लिखी हैं।
(ख) मैं बैठ नहीं सकती।
(ग) अब चलते हैं।
(घ) विशाखा खाना खा रही है।
(ङ) दादी कहानियाँ सुनाती थीं।

6. (क) भीतर – स्थानवाचक क्रियाविशेषण
(ख) जल्दी-जल्दी – रीतिवाचक क्रियाविशेषण
(ग) वहाँ – स्थानवाचक क्रियाविशेषण
(घ) अचानक – रीतिवाचक क्रियाविशेषण
(ङ) कम – परिमाणवाचक क्रियाविशेषण

7. (क) कम बोलो और काम करो।

(ख) ऋद्धि रोते-रोते सो गई।

(ग) आकांक्षा कुछ देर तक वहीं रही।

(घ) टोकरी में फल अधिक हैं।

8. (क) की अपेक्षा (ख) के साथ (ग) के लिए

(घ) के संग (ङ) सामने

9. (क) सदैव – वह सदैव खाँसता रहता है।

(ख) अधिक – वह बहुत अधिक बोलता है।

(ग) चुपचाप – वह चुपचाप चला गया।

(घ) सामने – तुम सामने देखो।

(ङ) रातभर – वह रातभर जागता रहा।

10. (क) से अलग (ख) के पास

(ग) के अंदर (घ) के बिना

(ङ) के ऊपर (च) के साथ

कार्य-प्रपत्र–7

(समुच्चयबोधक एवं विस्मादिबोधक)

1. (क) और (ख) और

(ग) कि (घ) इसलिए

(ङ) लेकिन

2. (क) किंतु – उसने कठोर परिश्रम किया किंतु सफलता नहीं मिली।

(ख) परंतु – यह विचार अत्यंत उत्तम है परंतु योगेश इस पर सहमत नहीं होगा।

(ग) इसलिए – कल मेरी परीक्षा है इसलिए खेलने नहीं चल सकूँगा।

(घ) अन्यथा – मन लगाकर पढ़ो अन्यथा अनुत्तीर्ण हो जाओगे।

(ङ) अथवा – कविता-वाचन तुम करोगे अथवा वह।

(च) तो – यदि जीवन में सफलता चाहते हो तो परिश्रम ही इसका एकमात्र उपाय है।

(छ) या – तुम चाय लोगे या कॉफी।

3. (क) परंतु (ख) इसलिए (ग) ताकि
(घ) मानों (ङ) जैसा, वैसी

4. (क) ठीक! – तुम यही चाहते हो तो फिर ठीक!
(ख) हे राम! – हे राम! यह कैसे हुआ।
(ग) ठहर! – ठहर! मैं अभी आया।
(घ) आह! – आह! तुमको किसने पीटा?
(ङ) हे भगवान! – हे भगवान! ऐसा मेरे ही साथ क्यों होता है?
(च) धत्! – धत्! मैं आपको क्या लिखने लगा।
(छ) अरे मूर्ख! – अरे मूर्ख! तुमने बना बनाया काम बिगाड़ दिया।

5. (क) जो अव्यय दो शब्दों, दो वाक्यों या उपवाक्यों को जोड़ने का काम करते हैं, उन्हें 'समुच्चयबोधक अव्यय' कहते हैं।
(ख) जो समान स्थिति वाले शब्दों, वाक्यों या वाक्यांशों को जोड़ने का कार्य करते हैं, उन्हें 'समानाधिकरण समुच्चयबोधक' कहते हैं।
(ग) वे अव्यय शब्द जो एक या अधिक आश्रित वाक्यों को प्रधान (मुख्य) वाक्य से जोड़ते हैं, उन्हें 'व्यधिकरण समुच्चयबोधक' कहते हैं।
(घ) जो अव्यय आश्चर्य, घृणा, हर्ष, पीड़ा, लज्जा, दुख आदि मनोभाव प्रकट करते हैं, उन्हें 'विस्मयादिबोधक अव्यय' कहते हैं।
उदाहरण– हाय! लुटेरों ने कुछ भी नहीं छोड़ा।
(ङ) – वाह! सचिन ने सौ रन बना लिए। (हर्षबोधक)
– हाय! अब मैं क्या करूँ। (भयबोधक)
(च) – हे राम! राघव के साथ यह क्या हो गया। (शोकबोधक)
– छिः! तुम्हारे कितने गंदे पैर हैं। (घृणाबोधक)

6. (क) हाय! बेचारा मारा गया।
(ख) वाह! बेटी तुमने तो कमाल कर दिया।
(ग) उफ़! कितनी गरमी है।
(घ) शाबाश! तुमने बहुत अच्छा किया।
(ङ) अरे! इतनी जल्दी आ जाओगे, सोचा भी नहीं था।

7. (क) या (ख) लेकिन (ग) और
(घ) अन्यथा (ङ) इसलिए

8. (क) अहा! कितना सुंदर दृश्य है।

(ख) खबरदार! अब ज़बान से एक लफ़्ज़ नहीं बोलना।

(ग) छि! कितनी गंदगी है यहाँ।

9. (क) इसलिए – बहुत वर्षा हो रही है इसलिए विद्यालय बंद रहेगा।

(ख) अथवा – अपना कमरा साफ़ करो अथवा गंदे कमरे में ही रहो।

(ग) किंतु – मुझे हिंदी पढ़ने में आनंद आता है किंतु गणित बहुत कठिन लगता है।

(घ) अन्यथा – मेरी बात मान लो अन्यथा बहुत पछताओगे।

(ङ) या – तुम आम खाओगे या केला।

(च) एवं – भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति महान है।

10.

अव्यय	**भेद**
अन्यथा	समानाधिकरण समुच्चयबोधक
या	समानाधिकरण समुच्चयबोधक
और	समानाधिकरण समुच्चयबोधक
ताकि	व्यधिकरण समुच्चयबोधक

कार्य-प्रपत्र–8

(पद-परिचय, वाक्य, अशुद्ध वाक्यों का संशोधन एवं विराम-चिह्न)

1. (क) वाक्य में प्रयोग किए गए प्रत्येक शब्द का व्याकरण की दृष्टि से पूर्ण परिचय देना 'पद-परिचय' कहलाता है। उदाहरण–बहुत जल्द मत जाओ। इस वाक्य में 'बहुत' और 'जल्द' क्रियाविशेषण पद हैं। इनका पद-परिचय इस प्रकार होगा– बहुत – परिमाणवाचक क्रियाविशेषण और जल्द का गुणबोधक है। जल्द – कालवाचक क्रियाविशेषण और क्रिया के काल को बताता है।

(ख) प्रत्येक पद का प्रकार, भेद तथा उपभेद बताना, पद का वाक्य में आए दूसरे पदों से उसका संबंध बताना, वाक्य में पद का कार्य बताना।

(ग) शब्दों का ऐसा व्यवस्थित समूह, जिससे वांछित अर्थ की प्राप्ति हो, उसे 'वाक्य' कहते हैं। उदाहरण–अजय नहा रहा है। इस वाक्य में सभी शब्द सार्थक हैं और व्यवस्थित क्रम में हैं। इस कारण इससे वांछित अर्थ की अभिव्यक्ति हो रही है।

(घ) वाक्यों का ऐसा हिस्सा जिसका अपना खुद का अर्थ हो, जिसमें उद्देश्य और विधेय हों, वे 'उपवाक्य' कहलाते हैं। उपवाक्य प्रधान उपवाक्य से हिंदी के योजक शब्दों से जुड़े रहते हैं।

(ङ) लिखित भाषा में रुकने के लिए जिन संकेत चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें 'विराम-चिह्न' कहते हैं। विराम-चिह्नों के प्रयोग से भाषा में स्पष्टता आती है तथा भाषा प्रभावपूर्ण बनती है।

2. (क) रामायण – व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्म कारक

(ख) सिद्धित – व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिग, कर्म कारक

(ग) नेहा – व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्ता कारक

घर – जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिग, एकवचन, कर्म कारक

(घ) दीपक – व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिग, कर्ता कारक

फल – जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिग, एकवचन, कर्म कारक

(ङ) बैठी – सकर्मक क्रिया, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्तृवाच्य, वर्तमान काल

(च) मैं – सर्वनाम (उत्तम पुरुष), एकवचन, पुल्लिग, 'जाऊँगा' क्रिया का कर्ता

3. (क) सरल वाक्य (ख) मिश्र वाक्य (ग) सरल वाक्य

(घ) मिश्र वाक्य (ङ) संयुक्त वाक्य

4. (क) कश्मीर में कई दर्शनीय स्थल हैं।

(ख) मुंबई राजे का भाई गया है।

(ग) गीता ने रोटी खाई।

(घ) क्या आप आ सकेंगे?

(ङ) तुम कल कहाँ गए थे?

5. (क) संकेतवाचक वाक्य

(ख) आज्ञावाचक वाक्य

(ग) आज्ञावाचक वाक्य

(घ) विस्मयवाचक वाक्य

(ङ) इच्छावाचक वाक्य

6. (क) तुम लिख रहे हो, अच्छा लिखो।

(ख) सुभाषचंद्र बोस ने कहा था, "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा।"

(ग) रामायण किसने लिखी?

(घ) "मैं तो ठहर गया, बोल तू कब ठहरेगा?" गौतम बुद्ध ने कहा।

(ङ) वाह! क्या मैच था।

7. (क) राधिका (ख) यदि ओले पड़े तो (ग) सैनिक
   (घ) उसने (ङ) वह

8. अच्छे स्वास्थ्य से क्या अभिप्राय है? अच्छे स्वास्थ्य का अर्थ है–फुर्तीला, नीरोगी और स्वस्थ शरीर। इसके लिए अनेक प्रकार के शारीरिक अभ्यास, दौड़, तरह-तरह के खेलकूद, योगासन आदि करने चाहिए। पौष्टिक आहार लेना चाहिए परंतु ध्यान रहे, ज़्यादा खाना पौष्टिक आहार नहीं है।

9. (क) जैसे ही बादल घिरते हैं तो मोर नाचते हैं।
   (ख) जिस साधु ने पीले वस्त्र पहने थे, वह चला गया।
   (ग) जैसे ही शाम होगी चाचा जी आगरा पहुँच जाएँगे।
   (घ) जब माधव गाना गाता है तब राधा नाचती है।
   (ङ) चूँकि शोर बहुत था इसलिए उसने सुना नहीं।
   (च) आजकल दिखाई नहीं देते, ईद का चाँद हो गए हो।

10. (क) तुम वहाँ क्या करते हो?
    (ख) वाह! कितना सुंदर बगीचा है।
    (ग) सुमन ने कहा, "मैं कल आऊँगी"।
    (घ) अरे! तुम कहाँ चले गए?
    (ङ) बेटा, सुबह जल्दी उठा करो।

कार्य-प्रपत्र–9

(मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ, अपठित गद्यांश/पद्यांश)

1. (क) माई का लाल – मैं देखता हूँ कौन माई का लाल यहाँ अखाड़ा बनाता है।
   (ख) गले लगाना – रोते हुए बच्चे को माँ ने गले लगा लिया।
   (ग) घी-खिचड़ी होना – आपस में क्यों झगड़ते रहते हो, पड़ोसियों को घी-खिचड़ी होकर रहना चाहिए।
   (घ) आँख खुलना – धोखा खाने के बाद ही हर किसी की आँख खुलती है।
   (ङ) अँगूठा दिखना – जब राहुल ने 500 रुपये माँगे तो उसने अँगूठा दिखा दिया।

2. (क) घी के दीये जलाना – खुशियाँ मनाना।
   (ख) तलवे चाटना – बहुत खुशामद करना।

(ग) धज्जियाँ उड़ाना – दुर्गति करना।

(घ) नौ दो ग्यारह होना – भाग जाना।

(ङ) रंग में भंग पड़ना – खुशी में बाधा पड़ना।

(च) हवा से बातें करना – बहुत तेज़ दौड़ना।

(छ) गड़े मुर्दे उखाड़ना – पिछली बातें याद करना।

3. (क) दूर के ढोल सुहावने होते हैं – दूर की वस्तुएँ अच्छी लगती हैं।

(ख) डूबते को तिनके का सहारा – मुसीबत में थोड़ी सहायता भी बहुत होती है।

(ग) रस्सी जल गई, ऐंठन नहीं गई – शक्तिहीन होने पर भी घमंड न छोड़ना।

(घ) जो गरजते हैं वो बरसते नहीं – बहुत बातें बनाने वाले करते कुछ नहीं।

(ङ) आ बैल मुझे मार – जान-बूझकर परेशानी मोल लेना।

(च) ऊँची दुकान फीका पकवान – दिखावा अधिक वास्तविकता कम।

4. लोकोक्ति पूर्ण वाक्य होती है जबकि मुहावरा वाक्य का अंश होता है। लोकोक्ति लोक में प्रचलित उक्ति होती है जो भूतकाल का लोक अनुभव होती है जबकि मुहावरा अपने रूढ़ अर्थ के लिए प्रसिद्ध होता है। मुहावरे का प्रयोग वाक्य के अंत, आरंभ और बीच में कहीं भी किया जा सकता है जबकि लोकोक्ति एक संपूर्ण वाक्य है।

5. (क) कमाल करना – राज पहलवान को हराकर उसने कमाल कर दिया।

(ख) इतिश्री करना – महात्मा गाधी की मृत्यु के साथ ही इस युग की इतिश्री हो गई।

(ग) नाक में दम करना – आजकल शहर के गुंडों ने सबकी नाक में दम किया हुआ है।

(घ) आकाश-पाताल एक करना – सूरज ने परीक्षा में प्रथम आने के लिए आकाश-पाताल एक कर दिया।

(ङ) अंग-अंग ढीला होना – आज तो इतना काम कर लिया की अंग-अंग ढीला हो गया।

6. (क) बहुत परिश्रम करना – आकाश-पाताल एक करना।

(ख) सर्वनाश करना – जड़ उखाड़ना।

(ग) शान-शौकत से रहना – नवाबी ठाठ होना।

(घ) बहुत अधिक डर जाना – थर-थर काँपना।

(ङ) बुरी तरह हरा देना – धूल चटा देना।

(च) कान पकना – रट लगाना।

7. (क) जिसकी लाठी उसकी भैंस

   (ख) उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे

   (ग) मान न मान मैं तेरा मेहमान

   (घ) अंधों में काना राजा

   (ङ) खोदा पहाड़ निकली चुहिया

8. (क) मोती राजा की सवारी का खास हाथी था।

   (ख) मोती ने गुस्से में महावत को मार डाला।

   (ग) इनाम के लालच में लोग हाथी को पकड़ने के लिए जंगल गए मगर उसमें से एक भी वापस न लौटा।

   (घ) मुरली महावत का लड़का था। वह हाथी को पकड़ने के लिए जंगल की ओर चल दिया।

   (ङ) शीर्षक–'हिम्मत का धनी'।

9. (क) कवि की आँख में अचानक एक तिनका आकर गिर गया।

   (ख) तिनका निकलने पर कवि को समझ में आया कि उन्हें परेशान करने के लिए एक तिनका ही काफ़ी है। अत: उसे किसी बात पर घमंड नहीं करना चाहिए।

   (ग) तिनके की घटना से कवि को समझ में आ गया कि घमंड नहीं करना चाहिए क्योंकि एक छोटा-सा तिनका भी आँख में पड़ जाए तो मनुष्य को बेचैन कर देता है।

   (घ) 'आँख' का तत्सम है–'अक्षि'

   (ङ) शीर्षक – 'एक तिनका'।

कार्य-प्रपत्र–10

(विज्ञापन-लेखन, अनुच्छेद-लेखन, संवाद-लेखन एवं चित्र-वर्णन)

1.

2. **व्यायाम का महत्व**–व्यायाम स्वास्थ्य का मूल है। हमें सुबह-सुबह व्यायाम करना चाहिए। इससे शरीर चुस्त रहता है और रक्त संचार बना रहता है। वर्तमान में लोग भागदौड़ में लगे रहते हैं, वे व्यायाम नहीं करते इसके कारण विभिन्न तरह की बीमारियाँ होती हैं। इससे पूरा जीवन समस्याओं से ग्रस्त हो जाता है। सभी को प्रतिदिन सुबह सूर्य नमस्कार, प्राणायाम, हलासन, भुजंगासन जैसे योगासन करने चाहिए। ऐसा करने से शारीरिक सक्रियता बनी रहती है। व्यायाम के कारण लोगों का पाचन तंत्र भी सही रहता है। अत: अपने दैनिक जीवन में योग-व्यायाम को अवश्य शामिल करना चाहिए।

3. प्रांजल – भाई तनुज, क्या तुमने परीक्षा की तैयारी कर ली?

   तनुज – हाँ लगभग। अभी गणित की दो प्रश्नावली रह गई हैं।

   प्रांजल – अब तो बहुत कम समय बचा है।

   तनुज – हाँ, यह बात तो है लेकिन मेहनत करूँगा।

   प्रांजल – हाँ भाई, अच्छी तरह से तैयारी करनी है ताकि अच्छे अंक मिलें।

   तनुज – बिल्कुल।

   प्रांजल – चलो अब अपनी तैयारी में लग जाएँ।

   तनुज – ठीक है भाई, नमस्कार।

4. यह किसी पार्क का दृश्य है। एक वृद्ध व्यक्ति बेंच पर बैठे हैं। कुछ बच्चे झूला झूल रहे हैं। ज़मीन पर लगे पौधों में रंग-बिरंगे फूल खिले हैं। पार्क में कुछ छोटे पौधे हैं तो कुछ बड़े वृक्ष हैं। ये छाया और फल देते हैं। हमें वृक्षारोपण करना चाहिए ताकि हमारा पर्यावरण सुरक्षित एवं शुद्ध रहे। वृक्षों के कारण ही हमारे वायुमंडल में गैसों का संतुलन बना रहता है।

5. संजय – कॉलोनी परिसर में बहुत गंदगी है।

   कपिल – लगता है हम लोग बीमार हो जाएँगे।

   संजय – इसकी सफ़ाई शीघ्र होनी चाहिए नहीं तो मुश्किल बढ़ जाएगी।

   कपिल – सफ़ाईकर्मी आते ही नहीं।

   संजय – गंदगी तो हम लोग फैलाते हैं। सफ़ाई भी हमें ही करनी चाहिए।

   कपिल – भाई, आपने बिलकुल सही कहा।

   संजय – कॉलोनी के सभी लोगों को बुला लेना चाहिए।

   कपिल – हाँ सफ़ाई में जनभागीदारी आवश्यक है।

6. **कंप्यूटर : आज की आवश्यकता**–कंप्यूटर हमारे जीवन की आवश्यकता बन गया है। बिना इसके विकास पथ पर बढ़ पाना संभव नहीं है। डिजिटल ऑनलाइन की शिक्षा से लेकर चिकित्सा तक, यात्रा से लेकर विपणन तक हर जगह इसकी उपयोगिता बढ़ती जा रही है। पहली बार अमेरिका में चार्ल्स बैवेज ने कंप्यूटर का निर्माण किया। इसके बाद समय-समय पर इसमें परिवर्तन होता रहा और आज यह नए रूप में हमारे सामने है। जिस तरह भोजन, वस्त्र, आवास आदि प्राथमिक ज़रूरत हैं, उसी तरह कंप्यूटर जानकारी भी आज की महत्वपूर्ण ज़रूरत है।

निर्देश–रचना भाग पर आधारित कार्य-प्रपत्र–11 के उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखेंगे। पुस्तक और उत्तरपत्र में संबंधित विषय के समकक्ष बिंदुओं का समावेश किया गया है।

मेरी भाषा मेरी पहचान, भाग-8

1. भाषा, बोली, लिपि और व्याकरण

बोलने की बारी

(क) भाषा की उत्पत्ति 'भाष्' धातु से हुई है।

(ख) भाषा के दो रूप हैं।

(ग) हिंदी को राजभाषा का दर्जा 14 सितंबर, 1949 को मिला।

(घ) भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान व्याकरण कराता है।

(ङ) घर-परिवार से मातृभाषा सीखी जाती है।

लिखने की बारी

1. (क) (*iii*) सांकेतिक भाषा (ख) (*iii*) भाषा

   (ग) (*iii*) राष्ट्रभाषा (घ) (*iii*) भाषा को लिखने का ढंग

   (ङ) (*ii*) 14 सितंबर

2.

भाषा		लिपि
(क) बंगाली		(*i*) रोमन
(ख) हिंदी		(*ii*) गुरुमुखी
(ग) पंजाबी		(*iii*) बांग्ला
(घ) अंग्रेज़ी		(*iv*) फ़ारसी
(ङ) उर्दू		(*v*) देवनागरी

3. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✗ (ङ) ✗

4. (क) लिखित (ख) लिपि (ग) बोली

   (घ) राष्ट्रभाषा (ङ) 14 सितंबर

5. (क) भाषा शब्द की उत्पत्ति 'भाष्' धातु से हुई है, जिसका अर्थ है–बोलना। जिस माध्यम से हम अपने विचार प्रकट करते हैं तथा दूसरों के विचारों को समझते हैं, उसे 'भाषा' कहते हैं। इसके दो रूप होते हैं–1. मौखिक भाषा 2. लिखित भाषा।

   (ख) भाषा को लिखित रूप प्रदान करने के लिए जिन ध्वनि-चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें 'लिपि' कहते हैं।

(ग) जिस भाषा का प्रयोग देश के अधिकांश निवासियों द्वारा किया जाता है, उसे 'राष्ट्रभाषा' कहते हैं। इसे राष्ट्र की अधिकतम जनसंख्या समझती है। इस दृष्टि से हमारे देश की राष्ट्रभाषा हिंदी है।

(घ) 14 सितंबर, 1949 में हिंदी को राजभाषा का गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ था। इसलिए यह दिन हिंदी के लिए विशेष महत्व रखता है।

(ङ) जिस शास्त्र के द्वारा हम भाषा को शुद्ध रूप में पढ़ना, लिखना और बोलना सीखते हैं, उसे 'व्याकरण' कहते हैं। व्याकरण के अंतर्गत मुख्य रूप से तीन अंगों पर विचार किया जाता है–1. वर्ण-विचार, 2. शब्द-विचार, 3. वाक्य-विचार।

खेलने की बारी

1. झारखंड – हिंदी 2. गुजरात – गुजराती 3. असम – असमिया 4. पंजाब – पंजाबी
5. बंगाल – बांग्ला 6. महाराष्ट्र – मराठी 7. केरल – मलयालम 8. तमिलनाडु – तमिल

सोचने की बारी

- 14 सितंबर, 1949
- व्याकरण संबंधी अशुद्धियों को दूर करने के लिए हमें व्याकरण का सही अध्ययन करना चाहिए। व्याकरण के विभिन्न अंग यथास्थान होने चाहिए, साथ ही विराम-चिह्नों का भी उचित स्थानों पर प्रयोग होना चाहिए। लिंग, वचन, कारक, समास, संधि, विशेषणों का उचित स्थानों पर सही प्रयोग होना चाहिए। व्याकरण का नियमित अभ्यास करना चाहिए।

2. वर्ण-विचार

बोलने की बारी

(क) स्वर तीन प्रकार के होते हैं– 1. ह्रस्व स्वर, 2. दीर्घ स्वर, 3. प्लुत स्वर।

(ख) व्यंजन के मुख्य रूप से तीन भेद हैं– 1. स्पर्श व्यंजन, 2. अंतस्थ व्यंजन, 3. ऊष्म व्यंजन।

(ग) हिंदी वर्णमाला में 11 स्वर और 33 व्यंजन हैं।

(घ) जिन वर्णों के उच्चारण में कम वायु बाहर निकलती है, उन्हें 'अल्पप्राण व्यंजन' कहते हैं।

(ङ) हिंदी वर्णमाला में चार संयुक्त वर्ण हैं– क्ष, त्र, ज्ञ, श्र।

(च) व्यंजनों को बोलते समय स्वर वर्णों की मदद ली जाती है।

लिखने की बारी

1. (क) (*ii*) उ　　(ख) (*iii*) वर्ण

   (ग) (*i*) दो　　(घ) (*i*) श

   (ङ) (*iv*) श　　(च) (*iv*) ं

2.

(क) ह्रस्व	(*i*) क, ख, ग...
(ख) द्वित्व व्यंजन	(*ii*) द्‌वारपाल
(ग) संयुक्ताक्षर	(*iii*) त, थ, द...
(घ) कंठ्य	(*iv*) श्रमिक
(ङ) दंत्य	(*v*) पल्लव
(च) संयुक्त व्यंजन	(*vi*) कर्मशील
(छ) रेफ रूप	(*vii*) ऋ

3. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✗ (ङ) ✓

4. (क) स्वर वर्ण – अ, आ, ओ　　(ख) आगत वर्ण – ज़, फ़

   (ग) स्पर्श व्यंजन – क, ग, घ, छ, झ, ड, त, थ, प, ब, भ, म

   (घ) ऊष्म व्यंजन – श, ष, स, ह

   (ङ) अंतस्थ व्यंजन – य, र, ल, व

   (च) संयुक्त व्यंजन – क्ष, त्र, ज्ञ, श्र

5. अल्पप्राण – क, च, ण, ज, ङ, ब, ञ, ट, य, ड, र, प, ल, व, म, द, न

   महाप्राण – घ, ख, झ, ठ, ढ, छ, थ, भ, ध, स, ढ, ष, श, ह

6. (क) उत्क्षिप्त　　(ख) अनुनासिक

   (ग) संयुक्त व्यंजन　　(घ) आगत

   (ङ) महाप्राण　　(च) अयोगवाह

7. प्रातः – वह प्रातः से सायंकाल तक सोया रहा।

   अतः – आज मेरी तबीयत खराब है, अतः मैं विद्‌यालय नहीं जाऊँगा।

   मन:स्थिति – स्नेहा एक अजीब-सी मन:स्थिति से गुज़र रही है।

   प्रायः – बच्चे प्रायः एक ही कहानी बार-बार सुनना चाहते हैं।

   संभवतः – संभवतः कल हम हरिद्‌वार जाएँगे।

8. (क) वह छोटी-से-छोटी ध्वनि जिसके और टुकड़े नहीं किए जा सकते हैं, उसे 'वर्ण' कहते हैं।

(ख) शब्द में प्रयुक्त वर्णों को अलग-अलग करके लिखना ही 'वर्ण-विच्छेद' कहलाता है; जैसे–नृप – न् + ऋ + प् + अ।

(ग) एक स्वर रहित व्यंजन का अन्य स्वर रहित व्यंजन से मेल को 'संयुक्ताक्षर' कहते हैं; जैसे– द् + व = द्वेष।

(घ) समान ध्वनि वाले व्यंजन जब शब्द में दो बार प्रयुक्त हों, तो उन्हें 'द्वित्व व्यंजन' कहते हैं।

(ङ) वे व्यंजन वर्ण, जिनका उच्चारण करते समय मुख से विशेष प्रकार की गरम वायु निकलती है, उन्हें 'ऊष्म व्यंजन' कहते हैं। श, ष, स और ह ऊष्म व्यंजन कहलाते हैं।

खेलने की बारी

कलम, किताब, खिलाड़ी, खून, चिड़िया, छतरी, टमाटर, ढक्कन, तृप्ति, थाली, दुकान, पत्थर, फीता, फूल, बीमार, भिखारी, भूत, मेहनत, युद्ध, रस्सी, सरकस, सिपाही, हीरा।

सोचने की बारी

➢ विसर्ग ➢ अंतस्थ व्यंजन

3. संधि

बोलने की बारी

(क) यण् संधि स्वर संधि का एक भेद है।

(ख) विसर्ग के बाद स्वर या व्यंजन आने से उत्पन्न परिवर्तन को 'विसर्ग संधि' कहते हैं।

(ग) 'निष्फल' का संधि-विच्छेद है–निः + फल।

(घ) संधियुक्त शब्दों को अलग करना 'संधि-विच्छेद' कहलाता है।

लिखने की बारी

1. (क) (*iii*) संधि में प्रयुक्त शब्दों को अलग करना

(ख) (*iv*) पाँच (ग) (*ii*) व्यंजन संधि

(घ) (*ii*) गुण संधि (ङ) (*iv*) वाक् + दत्ता

2. (क) विसर्ग संधि (ख) 1. स्वर संधि 2. व्यंजन संधि 3. विसर्ग संधि

(ग) पाँच (घ) गुण संधि

(ङ) हरि + ईश (च) नमस्ते

3. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✗ (ङ) ✓

4.

शब्द		**संधि-विच्छेद**	**शब्द**		**संधि-विच्छेद**
महोदय	=	महा + उदय	स्वागत	=	सु + आगत
शिक्षार्थी	=	शिक्षा + अर्थी	कार्यालय	=	कार्य + आलय
ज्ञानार्जन	=	ज्ञान + अर्जन	नायिका	=	नै + इका
ज्ञानेश्वर	=	ज्ञान + ईश्वर	दुराचार	=	दुर् + आचार

5. (क) विसर्ग संधि (ख) दीर्घ संधि (ग) यण् संधि (घ) व्यंजन संधि (ङ) गुण संधि

6. (क) संधि का अर्थ होता है–मेल। दो शब्दों के मेल से निकटवर्ती ध्वनियों में जो परिवर्तन होता है, उस परिवर्तन या विकार को 'संधि' कहते हैं; जैसे–दीक्षा + अंत = दीक्षांत।

(ख) 'विच्छेद' शब्द का अर्थ है–'अलग करना'। जब संधि के नियमों द्वारा मिले वर्णों को फिर से पहली अवस्था में लिखा जाता है, तो इसे 'संधि-विच्छेद' कहते हैं।

(ग) संधि के तीन भेद हैं–1. स्वर संधि 2. व्यंजन संधि 3. विसर्ग संधि।

1. दीर्घ संधि – वेद + अंत = वेदांत।
2. गुण संधि – नर + ईश = नरेश।
3. वृद्धि संधि – एक + एक = एकैक।
4. यण् संधि – प्रति + एक = प्रत्येक।
5. अयादि संधि – ने + अन = नयन।

खेलने की बारी

विद्यार्थी स्वयं करेंगे।

सोचने की बारी

➢ व्यंजन संधि में वर्ग का पहला वर्ण तीसरे वर्ण में बदल जाता है; जैसे–

वाक् + ईश = वागीश; अच् + अंत = अजंत;

षट् + दर्शन = षड्दर्शन; सत् + आचार = सदाचार।

4. शब्द-विचार

बोलने की बारी

(क) एक या एक से अधिक वर्णों से बने सार्थक ध्वनि-समूह से शब्दों की रचना होती है। शब्दों का वर्गीकरण चार आधारों पर किया जाता है–1. स्रोत/उत्पत्ति के आधार पर 2. रचना/बनावट के आधार पर 3. प्रयोग के आधार पर 4. अर्थ के आधार पर।

(ख) वर्णों का सार्थक एवं व्यवस्थित मेल 'शब्द' कहलाता है जबकि कोई शब्द जब व्याकरणिक नियमों में बँधकर वाक्य में प्रयुक्त होता है, तब उसे 'पद' कहते हैं।

(ग) आगत शब्द वे होते हैं, जिनका मूल तो दूसरी भाषा है, परंतु इनका प्रयोग हिंदी में खुलकर किया जाता है। इनमें अरबी, फ़ारसी, अंग्रेज़ी, पुर्तगाली, चीनी, फ्रांसीसी भाषाओं के शब्द आते हैं।

(घ) वे शब्द, जिनकी रचना तो यौगिक शब्दों की भाँति होती है, परंतु उनके अर्थ पूरी तरह अलग होते हैं। ऐसे शब्द किसी विशेष अर्थ के लिए प्रसिद्ध हो जाते हैं, इन्हें 'योगरूढ़' शब्द कहते हैं जबकि एक से अधिक रूढ़ शब्दों के योग से बनने वाले शब्द 'यौगिक' कहलाते हैं। रूढ़ शब्दों के योग होने के कारण इनके खंड सार्थक होते हैं।

(ङ) हिंदी भाषा में जो संस्कृत शब्द बिना किसी बदलाव के प्रयुक्त होते हैं, उन्हें 'तत्सम शब्द' कहा जाता है; जैसे– नव, ग्राम, चंद्र आदि। जबकि संस्कृत भाषा के वे शब्द जो भाषा, क्षेत्रीयता तथा लोक-व्यवहार में प्रयुक्त होते-होते परिवर्तित हो गए हैं और उनमें बदलाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, उन्हें 'तद्भव शब्द' कहते हैं; जैसे–नया, गाँव, चाँद आदि।

लिखने की बारी

1. (क) (*iii*) पद (ख) (*iii*) पद
   (ग) (*i*) उत्पत्ति (घ) (*iii*) निपात
   (ङ) (*iv*) विदेशी
2. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✓
3. (क) काज – कार्य (ख) चोर – चौर (ग) चेत – चैत्र
   (घ) तीरथ – तीर्थ (ङ) दही – दधि (च) चाँद – चंद्र
   (छ) घर – गृह (ज) आधा – अर्ध
4. (क) मेल (ख) यौगिक (ग) योगरूढ़
   (घ) निरर्थक (ङ) अनेकार्थी

5. रूढ़ शब्द – घर, वृक्ष, चाल, आम, गीता

यौगिक शब्द – पवनपुत्र, राजकुमारी, गृहकार्य, विद्यालय, पाठशाला

योगरूढ़ शब्द – श्वेतावरी, मुरलीधर, महेश, गजानन, पंकज

खेलने की बारी

प्रति – प्रतिवर्ष, प्रतिपल, प्रतिकार, प्रतिष्ठा, प्रत्युत्तर

दिन – प्रतिदिन, दिनकर, दिनमान, दिनेश, दिनोंदिन

देश – स्वदेश, विदेश, देशज, देशप्रेम, परदेश

पुत्र – सुपुत्र, कुपुत्र, राजपुत्र, देवपुत्र, धरतीपुत्र, पुत्रोपदेश

उप – उपवन, उपकार, उपकृत, उपलब्ध, उपनिषद

ज्ञान – अज्ञान, विज्ञान, संज्ञान, अभिज्ञान, ज्ञानवान

सोचने की बारी

- किसी भी भाषा का निर्माण शब्दों के द्वारा होता है। जिस भाषा में जितने शब्द होंगे वह भाषा उतनी ही समृद्ध होगी और अपने भावों और विचारों को व्यक्त करने में समर्थ होगी। किसी भी भाषा का शब्द-भंडार एक लंबी परंपरा से निर्मित होता है। शब्दों के बिना भाषा का कोई अस्तित्व नहीं है।
- शब्द पदों का रूप तब धारण करते हैं, जब वे वाक्य में प्रयुक्त होते हैं।

5. शब्द-संपदा

बोलने की बारी

(क) समानार्थी शब्दों को पर्यायवाची शब्दों के नाम से जाना जाता है।

(ख) बादल – मेघ, जलद, नीरद।

लिखने की बारी

1. (क) (*iv*) लड़का
   (ख) (*iv*) कुसुम
   (ग) (*iii*) शैल
   (घ) (*iii*) वागीश
   (ङ) (*iii*) महीधर

2. (क) पृथ्वी (ख) वस्त्र

(ग) फूल (घ) विद्यालय

(ङ) हाथी

3.

(क) तालाब	(*i*) विधु, शशि, राकेश
(ख) घर	(*ii*) केहरि, मृगपति, शार्दूल
(ग) चंद्रमा	(*iii*) ताल, पुष्कर, सर
(घ) शेर	(*iv*) माहुर, गरल, कालकूट
(ङ) विष	(*v*) आलय, भवन, आवास

4. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✗

5. शिक्षक – अध्यापक, गुरु | अंधकार – अँधेरा, तम

गणेश – लंबोदर, गजानन | हाथी – गज, हस्ती

साँप – सर्प, भुजंग | कोयल – कोकिल, श्यामा

विष – ज़हर, गरल | पहाड़ – पर्वत, गिरि

पवन – हवा, समीर | लक्ष्मी – कमला, रमा

विलोम या विपरीतार्थक शब्द

बोलने की बारी

(क) विलोम शब्दों को विपरीतार्थक शब्दों के नाम से भी जाना जाता है।

(ख) स्वाधीन × पराधीन, अनुकूल × प्रतिकूल

लिखने की बारी

1. (क) (*i*) बहुल (ख) (*iii*) अंत

(ग) (*ii*) मधुर (घ) (*ii*) पराजय

(ङ) (*i*) शांति

2. (क) विपरीतार्थक (ख) तत्सम

(ग) प्रकाश (घ) अस्त

(ङ) विष

3. (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✗

4. (क) आलस्य → (iii) स्फूर्ति
   (ख) कुमार्ग → (v) सुमार्ग
   (ग) कृतज्ञ → (i) कृतघ्न
   (घ) उत्थान → (ii) पतन
   (ङ) उन्नति → (iv) अवनति

(क) आलस्य	(*i*) कृतघ्न
(ख) कुमार्ग	(*ii*) पतन
(ग) कृतज्ञ	(*iii*) स्फूर्ति
(घ) उत्थान	(*iv*) अवनति
(ङ) उन्नति	(*v*) सुमार्ग

5. (क) हमें लोगों के **गुण** देखने चाहिए **दोष** नहीं।
   (ख) **कल** विद्यालय जाना है, **आज** नहीं
   (ग) भारत में **अन्याय** की अपेक्षा **न्याय** मिल पाना बहुत कठिन है।
   (घ) अतिथियों का **सम्मान** करना चाहिए **अपमान** नहीं।
   (ङ) **कठोर** वस्तुएँ किसी को पसंद नहीं होती और **कोमल** वस्तुएँ सभी को पसंद होती हैं।

6. (क) बुरे (ख) अस्त (ग) दिन
   (घ) पक्षपाती (ङ) प्रस्थान

खेलने की बारी

भा	ग	य	ही	न	क	प
अ	प	मा	न	अ	स	रा
सा	वि	र	ट	ना	अ	धी
त	स	ह	क	द	ना	न
वि	ता	प	न	र	द	प्रा
क	र	च	ज	श	र	ची
अ	ना	व	श	य	क	न

श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द

बोलने की बारी

(क) लिखने, सुनने तथा बोलने में समान लगने वाले, परंतु अर्थ में पर्याप्त अंतर रखने वाले शब्दों को 'श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द' कहते हैं।

(ख) बात – बातचीत – तुम अपनी बात का मान रखना।

वात – हवा – वात, पित्त और कफ ही सब बीमारियों का मूल कारण है।

लिखने की बारी

1. (क) ओर, और → (*i*) दिशा, तथा

   (ख) उद्यत, उद्धत → (*v*) तैयार, शरारती/उद्दंड

   (ग) कपट, कपाट → (*iv*) छल, दरवाज़ा

   (घ) तरणी, तरुणी → (*iii*) नाव, नवयुवती

   (ङ) उदर, उदार → (*ii*) पेट, दयालु

2. (क) राज / राज़ (ख) इस्त्री / स्त्री

   (ग) ओर / और (घ) पवन / पावन

   (ङ) बाण / बान

3. (क) राज / राज़ – शासन – सन 1947 में भारत में अंग्रेज़ों का राज समाप्त हो गया।

   रहस्य – यह राज़ की बात है, सो किसी को मत बताना।

   (ख) कलि / कली – कलयुग – कलयुग में पापाचार बहुत बढ़ जाता है।

   फूल की कली – सुबह खिली कलियाँ दोपहर तक फूल बन जाती है।

   (ग) वारीश / बारिश – समुद्र – वारीश में अपार जल राशि समाहित है।

   वर्षा – आज रात बहुत तेज़ बारिश हो गई।

   (घ) निर्धन / निधन – गरीब – अमित बहुत निर्धन व्यक्ति है।

   मृत्यु – अर्णव के दादा जी का निधन हो गया।

खेलने की बारी

हस्ति	–	हस्त	अनल	–	अनिल
शर	–	सर	नीड़	–	नीर
इस्त्री	–	स्त्री	पुरुष	–	परुष

सोचने की बारी

➢ श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द लिखने, सुनने तथा बोलने में समान लगते हैं, परंतु इनके अर्थ में पर्याप्त अंतर होता है। अतः थोड़ी-सी भ्राँति होने पर अर्थ का अनर्थ हो जाता है। इसलिए इन शब्दों के प्रयोग में अति सावधानी की आवश्यकता होती है।

अनेकार्थी शब्द

बोलने की बारी

(क) एक से अधिक अर्थ देने वाले शब्दों को 'अनेकार्थक शब्द' कहते हैं।

(ख) स्नेह–प्रेम, तेल, चिकनाई; कुटिल–टेढ़ा, घुँघराला, कपटी।

लिखने की बारी

1. (क) (*iii*) सूर्य (ख) (*iv*) वर्ण (ग) (*iii*) तीर्थ
   (घ) (*iv*) शंख (ङ) (*ii*) चाल
2. (क) नई (ख) कपड़े (ग) हाथ
   (घ) जाति (ङ) सारथी
3. (क) अंक – गिनती – एक अंक की सबसे बड़ी संख्या 9 है।
   गोद – माँ ने पुत्र को अंक में भर लिया।
   (ख) कल – आने वाला या बीता दिन – मैं कल जयपुर जाऊँगा।
   मशीन – बिजली न होने के कारण कल-कारखाने बंद रहे।
   (ग) नाना – अनेक – उपवन में नाना प्रकार के फूल खिले हैं।
   माँ के पिता जी – मेरे नाना जी कल शिमला जाएँगे।
   (घ) मगर – मगरमच्छ – मगर एक बड़ा हिंसक जल-जंतु है।
   लेकिन – उसने बहुत प्रयत्न किया मगर कामयाब नहीं हुआ।
   (ङ) नग – पर्वत – हिमालय को नगराज भी कहा जाता है।
   नगीना – मेरी अँगूठी का नग कहीं गुम हो गया।
4. (क) सर – तालाब (ख) हरि – सूर्य (ग) दल – पत्ता
   (घ) सर – तीर (ङ) नाना – अनेक

खेलने की बारी

आम	–	साधारण, एक फल	काल	–	समय, मृत्यु
पट	–	वस्त्र, दरवाज़ा	खत	–	पत्र, निशान
कर	–	साथ, टैक्स	दल	–	पत्ता, समूह
अज	–	ब्रह्मा, बकरा	छत्र	–	छाता, मुकुट

वाक्यांशों के लिए एक शब्द

बोलने की बारी

(क) जिन शब्दों का प्रयोग वाक्यांश या अनेक शब्दों के स्थान पर किया जाता है, उन्हें 'वाक्यांश के लिए एक शब्द' कहते हैं।

(ख) रजनीचर।

लिखने की बारी

1. (क) (*ii*) कर्मठ (ख) (*i*) सर्वज्ञ (ग) (*iii*) बड़वानल
   (घ) (*iii*) मासिक
2. (क) संक्षिप्तता (ख) अमर (ग) बौना
   (घ) हस्तलिखित (ङ) कुलीन
3. (क) ऊपर कहा गया — (*iv*) उपर्युक्त
   (ख) जल और थल दोनों जगह रहने वाला — (*i*) उभयचर
   (ग) किए गए उपकार को मानने वाला — (*ii*) कृतज्ञ
   (घ) एक ही समय में जो उत्पन्न हुए हों — (*v*) समकालीन
   (ङ) जिसका अंत न हो — (*iii*) अनंत
4. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✗
5. (क) विशाल कर्मठ व्यक्ति है।
   (ख) मासिक प्रतियोगिता कल होने जा रही है।
   (ग) प्रियदर्शी केवल दिखने में ही प्रिय होते हैं।
   (घ) उसकी माता जी साक्षर हैं।
   (ङ) काफ़ी दिनों से अतिवृष्टि हो रही है।
6. (क) अभिनेता (ख) अधर्म (ग) वंदनीय
   (घ) सदाचारी (ङ) पुनरुक्ति (च) हस्तलिखित
   (छ) दावानल (ज) जलचर
7. (क) वैज्ञानिक (ख) साकार (ग) नश्वर
   (घ) चिरंजीव (ङ) निशाचर

खेलने की बारी

1. अपराजेय 2. निराकार 3. निरपराध 4. अनश्वर 5. अनुकरणीय 6. कटुभाषी
7. युधिष्ठिर 8. अगम्य

सोचने की बारी

➢ जन्मांध – जो जन्म से अंधा हो; हस्तलिखित – हाथ से लिखा हुआ।

एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्द

बोलने की बारी

(क) कुछ शब्दों के अर्थ समान प्रतीत होते हैं, परंतु उनके अर्थ में सूक्ष्म भेद पाया जाता है, ऐसे शब्दों को 'एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्द' कहते हैं।

(ख) ईर्ष्या – दूसरों की उन्नति से जलना।

स्पर्धा – दूसरों से आगे बढ़ने की चाहत।

लिखने की बारी

1. (क) अनुभव – अभ्यास से प्राप्त ज्ञान

अनुभूति – चिंतन और मनन से प्राप्त आंतरिक ज्ञान

(ख) अभिनंदन – बड़े व्यक्ति का विशेष स्वागत करना

स्वागत – परंपरानुसार सत्कार करना

(ग) आधि – मानसिक पीड़ा

व्याधि – शारीरिक पीड़ा

(घ) आगामी – आगे आने वाला

भावी – भविष्य में होने वाला

(ङ) उत्साह – जोश

साहस – हिम्मत

(च) पाप – धार्मिक एवं सामाजिक नियमों का उल्लंघन

अपराध – कानून का उल्लंघन

2. (क) इच्छा – किसी वस्तु को पाने की कामना – मैं अपनी इच्छा पूरी न कर सका।

लोभ – दूसरे की चीज़ पाने की चाह – लाला जी के मन में लोभ आ गया था।

(ख) पुत्री – अपनी बेटी – उसकी पुत्री बहुत आज्ञाकारिणी है।

लड़की – सामान्य अविवाहित या विवाहित किसी की लड़की – वह लड़की अनाथ है।

(ग) अवस्था – जन्म से अब तक की उम्र – 18 वर्ष की अवस्था में उसने संन्यास ग्रहण कर लिया।

आयु – पूरे जीवन की अवधि – उसकी आयु 30 वर्ष से अधिक न थी।

(घ) उपहास – दूसरे का मज़ाक उड़ाना – द्रौपदी ने दुर्योधन का उपहास उड़ाया।

परिहास – हँसी-मज़ाक करना – सभी दोस्तों में परिहास चल रहा था।

3. (क) दान (ख) आवश्यक

(ग) आज्ञा (घ) परिश्रम

(ङ) गर्व

खेलने की बारी

1. उपहास – दूसरे का मज़ाक उड़ाना

परिहास – हँसी-मज़ाक करना

2. इच्छा – किसी वस्तु को पाने की कामना

लोभ – दूसरे की चीज़ पाने की चाह

सोचने की बारी

➢ ऐसे शब्द जिनके अर्थ समान प्रतीत होते हैं, परंतु उनमें सूक्ष्म भेद पाया जाता है, उन्हें 'एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्द' कहते हैं जबकि समान अर्थ का बोध कराने वाले शब्द 'समानार्थी' या 'पर्यायवाची शब्द' कहलाते हैं।

6. शब्द-रचना : उपसर्ग, प्रत्यय एवं समास

बोलने की बारी

(क) शब्द से पूर्व जुड़े शब्दांश को 'उपसर्ग' कहते हैं।

(ख) विदेशी उपसर्ग मुख्यत: दो प्रकार के हैं–1. उर्दू/फ़ारसी के उपसर्ग 2. अंग्रेज़ी के उपसर्ग।

(ग) 'अनु' संस्कृत का उपसर्ग है।

(घ) 'अध्यादेश' में 'अधि' उपसर्ग प्रयुक्त है।

(ङ) 'आहत' में मूलशब्द 'हत' है।

लिखने की बारी

1. (क) (*i*) अमर (ख) (*iv*) अनुसार
   (ग) (*iv*) हमराही (घ) (*iv*) अभि
   (ङ) (*iii*) जीवन
2. (क) आरंभ (ख) अर्थ
   (ग) अधि (घ) संस्कृत
   (ङ) बिना, अभाव, भिन्न
3. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✗
4. (क) उपसर्ग → (*iv*) शब्द से पूर्व प्रयुक्त शब्दांश
   (ख) हिंदी का उपसर्ग → (*iii*) नि
   (ग) संस्कृत का उपसर्ग → (*i*) अभि
   (घ) उर्दू का उपसर्ग → (*ii*) ला

5.

परि – परिवर्तन	परिणाम	परिक्रमा
अभि – अभिलाषा	अभिशाप	अभियोग
अध – अधपका	अधखिला	अधमरा
बद – बदनाम	बदशक्ल	बदतमीज़

6.

शब्द	उपसर्ग	मूलशब्द	शब्द	उपसर्ग	मूलशब्द
असंभव	अ	संभव	निरक्षर	निर्	अक्षर
अनुयायी	अनु	यायी	पुरातत्व	पुरा	तत्व
प्रसन्न	प्र	सन्न	उपहास	उप	हास

7. (क) वे शब्दांश जो किसी शब्द से पूर्व जुड़कर उसका अर्थ बदल देते हैं, 'उपसर्ग' कहलाते हैं; जैसे–परि + क्रमा = परिक्रमा

(ख) उपसर्ग के प्रयोग से मूलशब्द का अर्थ बदल जाता है। उपसर्ग के प्रयोग से मूलशब्द में कुछ विशेषता आ जाती है।

(ग) उपसर्ग के चार भेद हैं–1. संस्कृत के उपसर्ग (अति, दुर्); 2. हिंदी के उपसर्ग (अध, भर); 3. विदेशी उपसर्ग (गैर, बद, चीफ़); 4. उपसर्ग की भाँति प्रयुक्त संस्कृत के अव्यय (पुनर्, सत्)

नोट–खेलने की बारी और सोचने की बारी के प्रश्न विद्यार्थी स्वयं हल करेंगे।

7. प्रत्यय

बोलने की बारी

(क) शब्द के अंत में जुड़ने वाले शब्दांश 'प्रत्यय' कहलाते हैं।

(ख) 1. नए शब्दों की रचना कर सकते हैं।

2. मूलशब्द के अर्थ में बदलाव या विशेषता आ जाती है।

(ग) जो प्रत्यय क्रिया के धातु रूपों को छोड़कर अन्य शब्दों जैसे संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि के साथ लगकर नए शब्द बनाते हैं, वे 'तद्धित प्रत्यय' कहलाते हैं।

लिखने की बारी

1. (क) (*ii*) शब्द के अंत में (ख) (*iii*) आवट
   (ग) (*iii*) इयल (घ) (*ii*) परिवार + इक
   (ङ) (*ii*) खट्टा
2. (क) प्रत्यय (ख) संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण
   (ग) 1. कृत् प्रत्यय तथा तद्धित प्रत्यय (घ) तद्धित प्रत्यय
   (ङ) आहट
3. (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✓
4. आ – भूखा, प्यासा आई – बुराई, पढ़ाई
   वाला – सब्ज़ीवाला, फलवाला आलु – दयालु, कृपालु
   इका – गायिका, लेखिका पन – लड़कपन, बचपन
   आवट – बनावट, लिखावट ऐला – विषैला, कसैला

5.

शब्द	मूलशब्द	प्रत्यय	शब्द	मूलशब्द	प्रत्यय
ओढ़नी	ओढ़	नी	लालिमा	लाल	इमा
खटास	खट्टा	आस	भुलक्कड़	भूल	अक्कड़
सड़ियल	सड़	इयल	ऐतिहासिक	इतिहास	इक

6. (क) प्रत्यय से नए शब्दों की रचना कर सकते हैं। इनके प्रयोग से मूलशब्द के अर्थ में बदलाव या विशेषता आ जाती है।

(ख) प्रत्यय के दो भेद होते हैं–1. कृत् प्रत्यय 2. तद्धित प्रत्यय।

(ग) जिन शब्दांशों को शब्द के अंत में जोड़कर नए शब्द बनाए जाते हैं, उन्हें 'प्रत्यय' कहते हैं।

कृत् प्रत्यय–जो प्रत्यय क्रिया के मूल धातु-रूप में जुड़कर संज्ञा या सर्वनाम शब्द बनाते हैं, उन्हें 'कृत् प्रत्यय' कहते हैं; जैसे–भूल + आवा = भुलावा, पढ़ + आकू = पढ़ाकू।

(घ) मान – बुद्धिमान, शक्तिमान

(ङ) इया

खेलने की बारी

विद्यार्थी स्वयं करेंगे।

सोचने की बारी

- हारा – लकड़हारा; आपा – मोटापा; वाला – दूधवाला; इमा – लालिमा; इया – लुटिया
- शब्द के अंत में जुड़ने वाले शब्दांश 'प्रत्यय' कहलाते हैं।

8. समास

बोलने की बारी

(क) परस्पर संबंध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से एक नए शब्द के निर्माण की प्रक्रिया 'समास' कहलाती है।

(ख) समास की प्रक्रिया से बने नए पदों को 'समस्तपद' या 'सामासिक शब्द' कहते हैं।

(ग) द्विगु समास में पहला पद संख्यावाची होता है।

(घ) अव्ययीभाव समास में समस्तपद अव्यय का कार्य करता है।

लिखने की बारी

1. (क) (*ii*) छह (ख) (*iv*) विग्रह
   (ग) (*ii*) द्विगु (घ) (*ii*) द्विगु
   (ङ) (*iii*) शक्ति के अनुसार
2. (क) संक्षिप्त (ख) समस्तपद
   (ग) गजानन (घ) संख्यावाचक
   (ङ) विभक्ति-चिह्न
3. (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✓
4. (क) सूरदास जन्मांध थे। (ख) वे प्रेमातुर होकर बोले।
   (ग) वह ध्यानमग्न होकर सुनता रहा। (घ) ये हमारे मतदाता हैं।
   (ङ) मेरे सिरदर्द है। (च) हमें सत्याग्रह अवश्य करना चाहिए।
   (छ) कृपया राहखर्च लेते जाएँ।
5.

पद	**समास-विग्रह**	**समास का नाम**
राजदूत	राजा का दूत	संबंध तत्पुरुष समास
तुलसीकृत	तुलसी द्वारा कृत	करण तत्पुरुष समास
रसोईघर	रसोई के लिए घर	संप्रदान तत्पुरुष समास
प्रधानमंत्री	प्रधान है जो मंत्री	कर्मधारय समास
माता-पिता	माता और पिता	द्वंद्व समास
चरित्रहीन	चरित्र से हीन	अपादान तत्पुरुष समास
नीलांबर	नीला है जिसका अंबर	कर्मधारय समास

6. (क) समास के छह भेद हैं–
   1. अव्ययीभाव समास – हाथोंहाथ – एक हाथ से दूसरे हाथ में
   2. तत्पुरुष समास – अकालपीड़ित – अकाल से पीड़ित
   3. कर्मधारय समास – महात्मा – महान है जो आत्मा
   4. द्वंद्व समास – रात-दिन – रात और दिन
   5. द्विगु समास – पंचभुज – पाँच भुजाओं का समूह
   6. बहुव्रीहि समास – चक्रधर – चक्र को धारण करने वाला

(ख) कुछ शब्द 'कर्मधारय' और 'बहुव्रीहि' दोनों समासों के उदाहरण हो सकते हैं। कर्मधारय समास में दूसरा पद प्रधान होता है, जबकि बहुव्रीहि में दोनों पद किसी तीसरे पद की ओर संकेत करते हैं; जैसे– 'कमलनयन' – कमल जैसे नयन (कर्मधारय) – यहाँ दूसरा पद 'नयन' प्रधान है, परंतु यदि इसी शब्द का विग्रह – 'कमल के समान नयनों वाला अर्थात् कृष्ण' किया जाए तो यह बहुव्रीहि समास माना जाएगा, क्योंकि तब 'कमल' और 'नयन' ये दोनों पद मिलकर तीसरे पद 'कृष्ण' की ओर संकेत कर रहे हैं।

(ग) संधि और समास दोनों में नए शब्दों का निर्माण होता है, परंतु–

1. संधि में वर्णों का मेल होता है, जबकि समास में शब्दों का।
2. संधि में वर्णों के मेल से वर्ण-परिवर्तन भी हो जाता है, परंतु समास में प्रायः ऐसा नहीं होता।
3. समास में कुछ पदों के बीच कारकों की विभक्तियों या समुच्चयबोधकों का लोप भी हो जाता है।
4. संधिस्थ शब्दों को तोड़ने की क्रिया को 'संधि-विच्छेद' कहते हैं, जबकि समास में समस्तपदों को तोड़ने की क्रिया को 'विग्रह' कहते हैं।

(घ) जिस समास में न तो पूर्व पद प्रधान होता है और न उत्तरपद बल्कि तीसरा पद प्रधान होता है और समस्तपद किसी नए अर्थ का बोध कराते है, उन्हें 'बहुव्रीहि समास' कहते हैं, जैसे–चतुर्मुख – चार मुख हैं, जिसके अर्थात् ब्रह्मा।

खेलने की बारी

विग्रह	समस्तपद	भेद
घन के समान श्याम	घनश्याम	कर्मधारय समास
कर रूपी कमल	करकमल	कर्मधारय समास
सद् है जो गुण	सद्गुण	कर्मधारय समास
देश के लिए भक्ति	देशभक्ति	तत्पुरुष समास
प्राणों के समान प्रिय	प्राणप्रिय	तत्पुरुष समास

सोचने की बारी

- 'पूर्वपद' और 'उत्तरपद' के योग से 'समस्तपद' बनता है।
- गौशाला – गौ के लिए शाला; ऋणमुक्त – ऋण से मुक्त

9. संज्ञा

बोलने की बारी

(क) किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, भाव आदि के नाम को 'संज्ञा' कहते हैं।

(ख) भाववाचक संज्ञा का प्रयोग जब बहुवचन के रूप में किया जाता है, तब वह जातिवाचक संज्ञा बन जाती है; जैसे–

1. प्रत्येक मनुष्य को बुराई से बचना चाहिए। (भाववाचक संज्ञा)
2. उसमें कितनी बुराइयाँ हैं, मैं बता नहीं सकता। (जातिवाचक संज्ञा)

(ग) उतरना – उतार, मुस्कराना – मुस्कान/मुस्कराहट।

लिखने की बारी

1. (क) (*iii*) संज्ञा (ख) (*i*) तीन
   (ग) (*i*) व्यक्तिवाचक संज्ञा (घ) (*i*) व्यक्तिवाचक
   (ङ) (*ii*) जातिवाचक संज्ञा
2. (क) चाय – व्यक्तिवाचक संज्ञा (ख) मरीज़ – जातिवाचक संज्ञा
   (ग) पक्षी – जातिवाचक संज्ञा, आज़ाद – भाववाचक संज्ञा
   (घ) हार – जातिवाचक संज्ञा
   (ङ) शेर – जातिवाचक संज्ञा
3. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✓
4. (क) मधुरता (ख) दो (ग) जातिवाचक
   (घ) समुदायवाचक (ङ) भाववाचक संज्ञा
5.

शब्द	**भाववाचक संज्ञा**	**वाक्य-प्रयोग**
पराया	परायापन	यहाँ आपको बिल्कुल परायापन नहीं लगेगा।
क्षत्रिय	क्षत्रियत्व	अन्याय को देखकर विक्रमादित्य का क्षत्रियत्व जाग उठा।
शैतान	शैतानी	बचपन में सभी शैतानी करते हैं।
आप	आपा	अतुल ने झगड़े में अपना आपा खो दिया।
सफल	सफलता	परिश्रम सफलता की कुंजी है।
पड़ना	पड़ाव	यह उसकी उम्र का दूसरा पड़ाव है।

धिक्	धिक्कार	वह स्वयं को धिक्कार रहा था।
साधु	साधुता/साधुत्व	उसमें साधुता के सारे गुण थे।

6. व्यक्तिवाचक संज्ञा – श्रीराम, रामायण, नरेंद्र मोदी
   जातिवाचक संज्ञा – पुस्तकालय, वृक्ष, नगर
   भाववाचक संज्ञा – सजावट, भूख, हरियाली, अपनापन, बनावट, ममता
   समुदायवाचक संज्ञा – झुंड, सेना
   द्रव्यवाचक संज्ञा – सोना, लकड़ी

7. 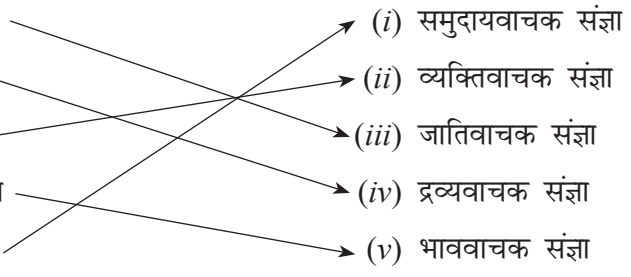

8. (क) किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, भाव आदि के नाम को 'संज्ञा' कहते हैं; जैसे– हाथी, पुस्तक, दिल्ली, वीरता आदि।

   (ख) संज्ञा के मुख्यत: तीन भेद हैं–

   1. व्यक्तिवाचक संज्ञा – **लाल किला दिल्ली** में स्थिति है।
   2. जातिवाचक संज्ञा – **वृक्ष** हमें छाया देते हैं।
   3. भाववाचक संज्ञा – ताजमहल अपनी **सुंदरता** के लिए प्रसिद्ध है।

   (ग) भाववाचक संज्ञाओं की रचना पाँच प्रकार के शब्दों से की जाती है–

   1. जातिवाचक संज्ञा से 2. सर्वनाम से 3. विशेषण से
   4. क्रिया से 5. अव्यय से

   (घ) • भाववाचक संज्ञाएँ अगणनीय होती हैं।
   • भाववाचक संज्ञाएँ सदैव एकवचन में प्रयुक्त होती हैं।

खेलने की बारी

विद्यार्थी स्वयं करेंगे।

सोचने की बारी

➢ थकावट, कायरता, बड़प्पन, गरमी, मिठास

10. संज्ञा के विकार : लिंग, वचन एवं कारक

लिंग

बोलने की बारी

(क) शब्द के जिस रूप से उसके स्त्री जाति या पुरुष जाति के होने का पता चले, उसे 'लिंग' कहते हैं।

(ख) पुरुष जाति का बोध कराने वाले शब्द 'पुल्लिग' कहलाते हैं।

(ग) सदैव स्त्रीलिंग शब्द – मैना, मछली, कोयल, तितली, छिपकली।

लिखने की बारी

1. (क) **माता** अपने पुत्र को गाड़ी चलाना सीखा रही थी।
   (ख) **गायिका** ने अपने गाने से श्रोताओं का दिल जीत लिया।
   (ग) **ज्ञानवती** स्त्री को सब इज़्ज़त देते हैं।
   (घ) दाना चुगते ही **चिड़िया** उड़ गई।
   (ङ) **अध्यापिका** ने आज केवल गणित पढ़ाया।

2.

भक्त – भक्तिन	पुत्र – पुत्री	जेठानी – जेठ
दाता – दात्री	भील – भीलनी	डिब्बा – डिबिया
नेत्री – नेता	शुक्ल – शुक्लानी	सदस्या – सदस्य

3. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✗

4. (क) सोना महँगा है।
   (ख) विशाल काम करने से नहीं थकता है।
   (ग) भारत बहुत ही अच्छा देश है।
   (घ) माता जी खाना पका रही है।

5. (क) वान – बलवान, धनवान, ज्ञानवान
   (ख) ता – जाता, खाता, लिखता
   (ग) मान – शक्तिमान, बुद्धिमान, मतिमान
   (घ) आर – लुहार, सुनार, कहार

6. (क) इन – पापिन, लुहारिन, बाघिन

(ख) इका – पाठिका, सेविका, लेखिका

(ग) ई – बेटी, दासी, दादी

(घ) वती – भगवती, गुणवती, धनवती

7. (क) पुल्लिग (ख) पुल्लिग (ग) स्त्रीलिंग

(घ) स्त्रीलिंग (ङ) स्त्रीलिंग

खेलने की बारी

गुड्डा – गुड़िया साधु – साध्वी धोबी – धोबिन हिरन – हिरनी

सोचने की बारी

➢ प्राणीवाचक और अप्राणीवाचक शब्दों का लिंग निर्धारण उनकी प्रकृति और बनावट के आधार पर होता है।

11. वचन

बोलने की बारी

(क) शब्द के जिस रूप से उसके एक अथवा अनेक होने का पता चलता है, उसे 'वचन' कहते हैं।

(ख) वचन के दो भेद हैं–1. एकवचन, 2. बहुवचन।

(ग) बहुवचन का बोध कराने वाले शब्द सदैव बहुवचन में प्रयोग किए जाते हैं।

लिखने की बारी

1. (क) (*ii*) गुड़ियाँ (ख) (*i*) गुरुजन

(ग) (*i*) किताबें (घ) (*ii*) रोटियाँ

(ङ) (*iv*) नमक (च) (*i*) वर्षा

(छ) (*ii*) दर्शन

2. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✗ (ङ) ✗

3. (क) एकवचन (ख) पुस्तकें

(ग) एकवचन (घ) हस्ताक्षर

4. (क) वे जा रहे हैं। (ख) मरीज़ के प्राण उड़ गए।

(ग) माली ने पौधे लगाए। (घ) गाय जा रही है।

5.

एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
प्याला	प्याले	चूहा	चूहे
शिक्षक	शिक्षकगण	भेड़	भेड़ें
माला	मालाएँ	दीवार	दीवारें
बत्ती	बत्तियाँ	बग्गी	बगिया

6. (क) वे (ख) बंदरों (ग) पेड़ों (घ) फूलों (ङ) ये

7.

गधा – गधे	झील – झीलें	बहन – बहनें
लड़की – लड़कियाँ	मेज़ – मेज़ें	धातु – धातुएँ
कलम – कलमें	गाय – गायें	साधु – साधुओं

8. (क) हाथी – मैंने चिड़ियाघर में हाथी देखा।

(ख) आकाश – आकाश में तारे चमक रहे हैं।

(ग) फल – पेड़ फलों से लदा हुआ है।

(घ) हस्ताक्षर – अध्यापिका ने उत्तरपुस्तिका पर हस्ताक्षर किए।

(ङ) जल – गंगा का जल शुद्ध होता है।

9. (क) वचन से हमें संज्ञा की संख्या के एक अथवा अनेक होने का पता चलता है।

(ख) वचन के दो भेद हैं –

1. एकवचन, 2. बहुवचन।

(ग) एकवचन – कला, साड़ी, नेता, दावत, चाबी।

बहुवचन – रास्ते, रातें, पंक्तियाँ, कविताएँ, ऋतुएँ।

(घ) 1. एकवचन संज्ञा का वह रूप है जिससे एक ही वस्तु, व्यक्ति या स्थान का बोध होता है जबकि बहुवचन संज्ञा का वह रूप है जिससे एक से अधिक वस्तुओं, व्यक्तियों या स्थानों का बोध होता है।

2. कुछ शब्द सदैव एकवचन में प्रयोग किए जाते हैं; जैसे–पानी, हवा, जबकि कुछ शब्द सदैव बहुवचन में प्रयोग किए जाते हैं; जैसे–आँसू, बाल आदि।

(ङ) बंदर, हाथी, पेड़, शेर।

खेलने की बारी

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
रेलगाड़ी	रेलगाड़ियाँ	टोपी	टोपियाँ
यात्री	यात्रीगण	बस्ता	बस्ते
टिकट	टिकटें	डिब्बा	डिब्बे
बच्चा	बच्चे	खिड़की	खिड़कियाँ

सोचने की बारी

➢ प्रजा (एकवचन); हत्था (एकवचन)

12. कारक

बोलने की बारी

(क) कारक-चिह्न को 'विभक्ति-चिह्न' या 'परसर्ग' के नामों से भी जाना जाता है।

(ख) कर्ता कारक का चिह्न 'ने' है।

(ग) अपादान कारक के प्रयोग से अलग होने और तुलना करने के भाव प्रकट किए जा सकते हैं।

लिखने की बारी

1. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✓

2. (क) में (ख) को (ग) से (घ) से (ङ) ने

3.

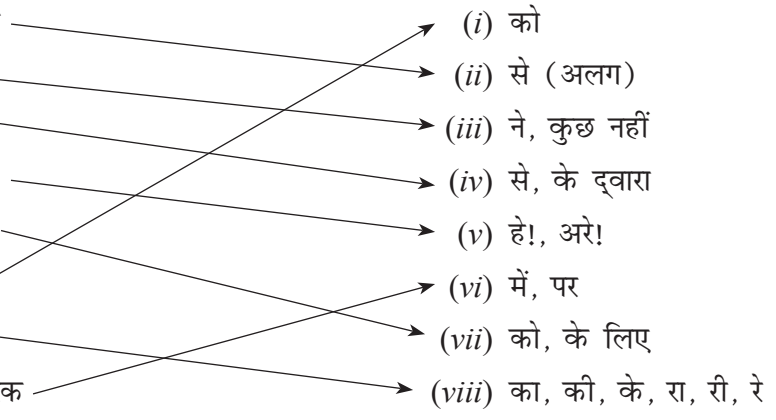

4. (क) के द्वारा – गौरव हवाई जहाज़ के द्वारा मुंबई गया।

(ख) ने – कविता ने पत्र लिखा।

(ग) में – संदूक में कपड़े रखे हैं।

(घ) री – मेरी घड़ी बहुत सुंदर है।

(ङ) हे! – हे प्रभु! रक्षा करो।

(च) अरे! – अरे! तुम आ गए।

(छ) को – श्रीकृष्ण ने कंस को मारा।

5. (क) कर्ता कारक

(ख) कर्ता कारक

(ग) संप्रदान कारक

(घ) संबंध कारक

(ङ) कर्ता कारक

(च) अपादान कारक

(छ) संबोधन कारक

6. (क) अध्यापक **ने** विद्यार्थियों **को** पढ़ाया।

(ख) माँ बच्चे **को** सुला रही है।

(ग) राम **ने** रावण **को** बाण **से** मारा।

(घ) दूल्हा घोड़े **से** गिर गया।

(ङ) भूखे **के लिए** रोटी लाओ।

(च) यह सुनील **की** किताब है।

7. करण – से – मैं दाएँ हाथ से लिखता हूँ।

संप्रदान – के लिए – मैं माँ के लिए दवा लाया हूँ।

अधिकरण – पर – मेज़ पर फल रखे हैं।

कर्ता – ने – अंकिता ने कहानी पढ़ी।

अपादान – से – पेड़ से पत्ता गिर गया।

कर्म – को – उसने भिखारी को बुलाया।

संबोधन – अरे! – अरे भाई! तुमने यह क्या किया।

8. (क) संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों से जाना जाता है, उसे 'कारक' कहते हैं।

(ख) कारक के आठ भेद हैं–

1. कर्ता कारक (ने, कुछ नहीं)
2. कर्म कारक (को)
3. करण कारक (से, के द्वारा)
4. संप्रदान कारक (को, के लिए)
5. अपादान कारक [(से (अलग)]
6. संबंधकारक (का, की, के, रा, री, रे)
7. अधिकरण कारक (में, पर)
8. संबोधन कारक (हे!, अरे!)

(ग) कर्म कारक में क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है जबकि संप्रदान कारक में किसी के लिए कुछ करने या किसी को कुछ देने का भाव होता है। उदाहरण–• प्रवीण ने गाना गाया। (कर्म कारक) • माँ बच्चों को खाना देती है। (संप्रदान कारक)

(घ) अपादान कारक से अलग होने और तुलना करने के भाव प्रकट होते हैं; जैसे– • वह घोड़े से गिर पड़ा। • अमेरिका भारत से बड़ा है।

(ङ) करण कारक साधन होता है जिसके द्वारा कार्य संपन्न होता है जबकि अपादान कारक से अलग होने और तुलना होने का पता चलता है।

उदाहरण–• वह कलम से लिखता है। (करण कारक)

• पेड़ से पत्ता गिर गया। (अपादान कारक)

खेलने की बारी

कई दिनों **से** लगातार वर्षा हो रही थी। एक भेड़िया शिकार **के लिए** अपनी माँद से बाहर न निकल सका। उसे भूख बहुत सता रही थी। वर्षा **के** रुकने **पर** वह अपने शिकार **की** खोज **में** एक नदी **के** किनारे पर गया। वहाँ उसके भाग्य **से** एक बकरी **का** मेमना थोड़ी दूर नीचे नदी **के** किनारे पानी पी रहा था। भेड़िये **की** आँखें खुशी **से** नाच उठी। वह उस मेमने **को** खाने **के लिए** मचल उठा।

सोचने की बारी

- ‘में’ और ‘पर’ परसर्ग का प्रयोग अधिकरण कारक के लिए किया जाता है।
- ‘को’–हम शाम को बाज़ार जाएँगे। ‘से’–मोहन साइकिल से विद्यालय जाता है। ‘के द्वारा’–मुझे पत्र के द्वारा सूचना मिली। ‘का’–माला का घर बहुत सुंदर है। ‘हे’–हे भगवान! रक्षा करो।

13. सर्वनाम

बोलने की बारी

(क) सर्वनाम के छह भेद हैं–

1. पुरुषवाचक सर्वनाम 2. निश्चयवाचक सर्वनाम 3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम 4. संबंधवाचक सर्वनाम 5. प्रश्नवाचक सर्वनाम 6. निजवाचक सर्वनाम।

(ख) ‘जिसने’ संबंधवाचक सर्वनाम से संबंधित है।

(ग) निजवाचक सर्वनाम।

(घ) मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम का प्रयोग वक्ता श्रोता के लिए करता है।

(ङ) निश्चित व्यक्ति एवं वस्तु की पहचान निश्चयवाचक सर्वनाम द्वारा होती है।

लिखने की बारी

1. (क) (*i*) नाम के स्थान पर (ख) (*ii*) छह (ग) (*ii*) तीन
   (घ) (*i*) हम (ङ) (*ii*) स्वयं
2. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✗ (च) ✓
3. (क) **जिसने** उगाया, उसी ने खाया। (ख) **उसने** आज गरीबों को दान दिया।
   (ग) **मुझे** भी आम खाना है। (घ) **वो** कुत्ता मर गया।
   (ङ) **हमने** रक्तदान शिविर में रक्तदान किया।
4. (क) राधा ने अपना मुँह धोया। (ख) मुझे दिल्ली जाना है।
   (ग) हरि ने अपने भाई को मारा। (घ) सुरभि किसके घर गई है।
   (ङ) यह दान उसे दे देना।
5. (क) मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम → (*iii*) मेरा, मुझसे, मुझपर
   (ख) प्रश्नवाचक सर्वनाम → (*i*) जो, जिसने, जिससे, जिसको
   (ग) अनिश्चयवाचक सर्वनाम → (*iv*) किसी ने, किसी को, किसी के लिए
   (घ) उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम → (*ii*) तुझसे, तुझमें, तुझपर
   (ङ) निजवाचक सर्वनाम → (*vi*) स्वयंमेव
   (च) संबंधवाचक सर्वनाम → (*v*) किसको, किसके लिए
   (छ) अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम → (*vii*) वह, उसने, उसे
6. (क) जिसने – जिसने खोजा उसने पाया।
   (ख) अपने आप – मैं अपने आप चला जाऊँगा।
   (ग) किसको – मैं अपने मन की बात किसको कहूँ?
   (घ) मुझपर – सेठ जी, मुझपर दया करो।
   (ङ) किसी ने – यह बात किसी ने नहीं बताई।
7. (क) कौन (ख) उसने (ग) हम/जिन्होंने (घ) जितना/उतना (ङ) जैसा/वैसा
8. (क) संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द 'सर्वनाम' कहलाते हैं; जैसे–(क) **मैं** विद्यालय जा रहा हूँ। (ख) **जिसकी** लाठी **उसकी** भैंस।
   (ख) पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद हैं–
   1. उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम – मुझे फल खाना है।

2. मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम – तुम क्या कर रहे हो।

3. अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम – उसे मत बुलाओ।

(ग) किसी निश्चित वस्तु या प्राणी का बोध कराने वाले सर्वनाम शब्दों को 'निश्चयवाचक सर्वनाम' कहते हैं जबकि जो सर्वनाम शब्द निश्चित व्यक्ति, वस्तु या स्थान का बोध नहीं कराते, उन्हें 'अनिश्चयवाचक सर्वनाम' कहते हैं; जैसे–

- तुम्हारा **घर** यह नहीं **वह** है। (निश्चयवाचक सर्वनाम)
- कोई आने वाला है। (अनिश्चयवाचक सर्वनाम)

(घ) **वे** कहाँ जा रहे हैं? (अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम)

खेलने की बारी

विद्यार्थी स्वयं करेंगे।

सोचने की बारी

➢ यदि सर्वनाम शब्द नहीं होते तो संज्ञा की बार-बार आवृत्ति होने के कारण भाषा के प्रवाह में रुकावट उत्पन्न होती और जिससे वाक्य बड़े अटपटे लगते। हम अपनी बात को सही ढंग से व्यक्त नहीं कर पाते।

14. विशेषण

बोलने की बारी

(क) तिकोना – संख्यावाचक विशेषण

(ख) विशेषण के चार भेद होते हैं–1. गुणवाचक विशेषण, 2. परिमाणवाचक विशेषण, 3. संख्यावाचक विशेषण, 4. सार्वनामिक या संकेतवाचक विशेषण।

(ग) विशेषण की तीन अवस्थाएँ होती हैं–1. मूलावस्था 2. उत्तरावस्था 3. उत्तमावस्था।

(घ) उत्तमावस्था में दो से अधिक व्यक्तियों या वस्तुओं की तुलना करके किसी एक को सबसे अधिक या सबसे कम बताया जाता है।

(ङ) सार्वनामिक विशेषण में सर्वनाम शब्द विशेषण होते हैं क्योंकि ये सर्वनाम विशेषता बताने का काम करते हैं।

लिखने की बारी

1. (क) (*i*) सुंदर (ख) (*iii*) विशेषण की (ग) (*i*) गुणवाचक
   (घ) (*i*) यह (ङ) (*ii*) उत्तरावस्था
2. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✗
3. (क) लाल (ख) दो से अधिक
   (ग) दो (घ) परिमाणवाचक
   (ङ) सर्वनाम
4. (क) लालची – गुणवाचक विशेषण
   (ख) कुछ – अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण
   (ग) ये – सार्वनामिक विशेषण, मीठे – गुणवाचक विशेषण
   (घ) दो किलो – निश्चित परिमाणवाचक विशेषण
   (ङ) चाँदनी – गुणवाचक विशेषण
5. (क) मूलावस्था (ख) उत्तमावस्था
   (ग) मूलावस्था (घ) उत्तमावस्था
   (ङ) उत्तरावस्था
6. (क) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण (ख) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण
   (ग) निश्चित संख्यावाचक विशेषण (घ) निश्चित परिमाणवाचक विशेषण
   (ङ) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण (च) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण
7. (क) पुरस्कृत (ख) खिले
   (ग) चमकीला (घ) साहसी
   (ङ) पर्वतीय
8.

मूलावस्था	**उत्तरावस्था**	**उत्तमावस्था**
प्रिय	प्रियतर	प्रियतम
उच्च	उच्चतर	उच्चतम
निम्न	निम्नतर	निम्नतम
सुंदर	सुंदरतर	सुंदरतम
महान	महानतर	महानतम
अधिक	अधिकतर	अधिकतम

9.

शब्द	विशेषण	शब्द	विशेषण
साहस	साहसी	दुख	दुखी
रंग	रंगीन/रंगीला	नगर	नगरीय/नागरिक
पठ	पठित	झगड़ना	झगड़ालू
अर्थ	आर्थिक	कहना	कथित
मैं	मुझ-सा	लिखना	लिखित

10. (क) विश्वास – विश्वसनीय – राम श्याम का विश्वसनीय मित्र है।

(ख) आप – आप-सा – आप-सा व्यक्ति मिलना दुर्लभ है।

(ग) यह – ऐसा – मुझे ऐसा बैग चाहिए।

(घ) विज्ञान – वैज्ञानिक – मैं एक कंप्यूटर वैज्ञानिक हूँ।

(ङ) ऊपर – ऊपरी – उसका वेतन कम किंतु ऊपरी आमदनी बहुत है।

(च) परिवार – पारिवारिक – वह पारिवारिक कलह से परेशान है।

(छ) भूख – भूखा – वह नियत का भूखा इंसान है।

11. (क) संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द 'विशेषण' कहलाते हैं।

(ख) विशेषण की विशेषता बताने वाले शब्द 'प्रविशेषण' कहलाते हैं।

(ग) जो विशेषण शब्द संज्ञा या सर्वनाम की नाप-तौल संबंधी विशेषता का बोध कराते हैं, उन्हें 'परिमाणवाचक विशेषण' कहते हैं। इसके दो भेद हैं–1. निश्चित परिमाणवाचक विशेषण 2. अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण।

उदाहरण–(क) एक किलो आलू दे दो। (निश्चित परिमाणवाचक विशेषण)

(ख) मैंने ढेर सारा मक्खन खाया। (अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण)

(घ) जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की संख्या संबंधी विशेषता का बोध कराते हैं, उन्हें 'संख्यावाचक विशेषण' कहते हैं।

(ङ) विशेषण – संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द 'विशेषण' कहलाते हैं।

विशेष्य – विशेषण शब्द द्वारा जिस शब्द की विशेषता बताई जाती है, उन्हें 'विशेष्य' कहते हैं।

नोट–खेलने की बारी और सोचने की बारी के प्रश्न विद्यार्थी स्वयं हल करेंगे।

15. क्रिया

बोलने की बारी

(क) संरचना के आधार पर क्रिया के चार भेद हैं–

1. संयुक्त क्रिया, 2. पूर्वकालिक क्रिया, 3. नामधातु क्रिया, 4. प्रेरणार्थक क्रिया।

(ख) संयुक्त क्रिया के दो भाग होते हैं–1. मुख्य क्रिया, 2. रंजक क्रिया।

(ग) जिस क्रिया में कर्म नहीं होता, उसे 'अकर्मक क्रिया' कहते हैं।

(घ) जो शब्द किसी कार्य के होने का बोध कराते हैं, उन्हें 'क्रिया' कहते हैं।

(ङ) 'कर' या 'करके' लगाने से क्रिया का पूर्वकालिक रूप बना सकते हैं।

लिखने की बारी

1. (क) (*iv*) किसी काम के करने या होने का

   (ख) (*iii*) कोई कर्म नहीं (ग) (*ii*) सकर्मक क्रिया

   (घ) (*iii*) संयुक्त क्रिया (ङ) (*i*) संज्ञा

2. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✓

3. (क) सकर्मक क्रिया (ख) अकर्मक क्रिया

   (ग) अकर्मक क्रिया (घ) सकर्मक क्रिया

   (ङ) सकर्मक क्रिया

4. (क) नहा – नहाना – हमें प्रतिदिन नहाना चाहिए।

   (ख) जा – जाना – मुझे कल वृंदावन जाना है।

   (ग) सो – सोना – मैं आज देर तक सोना चाहता हूँ।

   (घ) पढ़ – पढ़ना – हमें ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिए।

   (ङ) समझ – समझना – किसी को तुच्छ नहीं समझना चाहिए।

5.

	कर्ता	**कर्म**
(क)	दादी माँ	स्वेटर
(ख)	अध्यापक	पाठ
(ग)	बस	सवारियाँ

(घ) सबने	वस्त्र
(ङ) राजा	खाना
(च) प्रधानाचार्य	पुस्तकालय

6. (क) सोना – सुलाना, सुलवाना
   (ख) जाना – जनाना, जनवाना
   (ग) नहाना – नहलाना, नहलवाना
   (घ) पीना – पिलाना, पिलवाना
   (ङ) हँसना – हँसाना, हँसवाना

7.

लाज – लजाना	बात – बतियाना
हाथ – हथियाना	शरम – शरमाना
लालच – ललचाना	टन-टन – टनटनाना

8.

(क) रो	(*i*) क्रिया का सामान्य रूप
(ख) करना	(*ii*) प्रेरणार्थक क्रिया
(ग) भीगता रहा	(*iii*) सकर्मक क्रिया
(घ) खुलवाना	(*iv*) धातु
(ङ) खाकर	(*v*) रंजक क्रिया
(च) मैं फल खरीदता हूँ	(*vi*) संयुक्त क्रिया
(छ) वह बाज़ार चला गया था	(*vii*) पूर्वकालिक क्रिया

9. (क) जो शब्द किसी कार्य के करने या होने का बोध कराते हैं, उन्हें 'क्रिया' कहते हैं।
   (ख) कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद हैं–1. अकर्मक क्रिया 2. सकर्मक क्रिया।
   (ग) जिस क्रिया के साथ एक कर्म उपस्थित हो, उसे 'एककर्मक क्रिया' कहते हैं; जैसे– माता जी **खाना** बना रही है।
   (घ) पुलिस ने डाकू को **पकड़ लिया**।
   (ङ) जिस पर क्रिया का प्रभाव पड़ता है, उसे 'कर्म' कहते हैं।
   (च) क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं। धातु में ही 'ना' जोड़कर क्रिया का सामान्य रूप बनाया जाता है।

नोट–खेलने की बारी और सोचने की बारी के प्रश्न विद्यार्थी स्वयं हल करेंगे।

16. काल

बोलने की बारी

(क) क्रिया के जिस रूप से उसके होने के समय का पता चलता है, उसे 'काल' कहते हैं।

(ख) वह बाज़ार **जा रहा था**।

(ग) काल के तीन भेद हैं–1. भूतकाल, 2. वर्तमान काल, 3. भविष्यत् काल।

लिखने की बारी

1. (क) (*ii*) काल
   (ख) (*i*) वर्तमान काल
   (ग) (*i*) अपूर्ण भूतकाल
   (घ) (*iv*) हेतुहेतुमद् वर्तमान काल
   (घ) (*iii*) आने वाले समय का

2. (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✗ (ङ) ✗

3. (क) आएँगे
   (ख) बजा है
   (ग) पढ़ रहे हैं
   (घ) होगा
   (ङ) खरीदनी हैं

4. (क) जाएगा
   (ख) जाएगी
   (ग) किया
   (घ) होती है
   (ङ) मिल रहा होगा

5. (क) कल तो बस समय पर आई होगी। → (*i*) पूर्ण भूतकाल
   (ख) अध्यापक पढ़ाकर जा चुके थे। → (*ii*) हेतुहेतुमद् भूतकाल
   (ग) विद्यार्थी पढ़ रहा है। → (*iii*) आसन्न भूतकाल
   (घ) परसों बाज़ार बंद रहेगा। → (*iv*) संदिग्ध भूतकाल
   (ङ) यदि वह आ जाता तो सब खूब मस्ती करते। → (*v*) अपूर्ण वर्तमान काल
   (च) मैंने अभी-अभी नाश्ता कर लिया है। → (*vi*) सामान्य भविष्यत् काल

6. (क) काल के तीन भेद हैं–1. भूतकाल, 2. वर्तमान काल, 3. भविष्यत् काल।
   (ख) क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया वर्तमान या चल रहे समय में हो रही है, उसे 'वर्तमान काल' कहते हैं। इसके तीन भेद हैं– 1. सामान्य वर्तमान काल, 2. अपूर्ण वर्तमान काल, 3. संदिग्ध वर्तमान काल।

(ग) यदि तुम आते तो काम पूरा हो जाता।

(घ) भविष्यत् काल के दो भेद हैं–1. सामान्य भविष्यत् काल, 2. संभाव्य भविष्यत् काल।

(ङ) क्रिया के जिस रूप से उसके बीते समय में पूरे हो जाने के बारे में पता चले, उसे 'भूतकाल' कहते हैं; जैसे–सभी लोग सो चुके थे।

खेलने की बारी

विद्यार्थी स्वयं करेंगे।

सोचने की बारी

- मोहन अभी सो रहा होगा। (संदिग्ध वर्तमान काल)
- शायद वे आज आ जाएँ। (संभाव्य भविष्यत् काल)

17. वाच्य

बोलने की बारी

(क) वाक्य में क्रिया के प्रयोग का आधार 'वाच्य' कहलाता है।

(ख) वाच्य के तीन भेद होते हैं–1. कर्तृवाच्य, 2. कर्मवाच्य, 3. भाववाच्य।

(ग) अकर्मक क्रिया वाले वाक्यों से भाववाच्य बनाते हैं।

(घ) भाव की प्रधानता भाववाच्य में होती है।

(ङ) कर्मवाच्य में सदैव सकर्मक क्रिया का प्रयोग होता है।

लिखने की बारी

1. (क) (*iv*)-(*i*) और (*i*) दोनों के (ख) (*ii*) कर्ता की
   (ग) (*iii*) अकर्मक एवं सकर्मक क्रिया (घ) (*i*) 'से' जोड़ते हैं
2. (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✗
3. (क) कर्तृवाच्य (ख) कर्मवाच्य
   (ग) कर्तृवाच्य (घ) कर्तृवाच्य
   (ङ) कर्मवाच्य

4. (क) अनुप्रिया से किताब पढ़ी जाती है।

(ख) विद्यार्थी द्वारा स्कूल जाया जाता है।

(ग) बच्चे द्वारा खिलौने खरीदे जाते हैं।

(घ) माली द्वारा पौधा लगाया जाता है।

(ङ) दुकानदार द्वारा ग्राहक को सामग्री दी जाती है।

5. (क) गायिका से गाना नहीं गाया जाता।

(ख) उल्लू द्वारा दिन में सोया जाता है।

(ग) दुश्मन सेना के सैनिक से उठा न जा सका।

(घ) उससे आनंद भी न लिया जा सका।

(ङ) चलो, कार्य समाप्त कर लिया जाए।

6. (क) पढ़ना कर्तृवाच्य – आर्यन केवल रात्रि में पढ़ता है।
भाववाच्य – आर्यन से केवल रात्रि में पढ़ा जाता है।

(ख) जाना कर्तृवाच्य – अतुल विद्यालय जाता है।
भाववाच्य – अतुल से विद्यालय नहीं जाया जाता।

(ग) पकाना कर्तृवाच्य – माँ खाना पकाती है।
भाववाच्य – माँ से खाना नहीं पकाया जाता है।

7. (क) क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि उसके प्रयोग का आधार कर्ता, कर्म या भाव है, उसे 'वाच्य' कहते हैं। इसके तीन भेद होते हैं–1. कर्तृवाच्य, 2. कर्मवाच्य, 3. भाववाच्य।

(ख) वाच्य के आधार पर वाक्यों के एक वाच्य से दूसरे वाच्य में परिवर्तन को वाच्य-परिवर्तन कहते हैं।

(ग) जिन वाक्यों में क्रिया का प्रयोग कर्ता या कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार न करके भाव के अनुसार किया जाता है, उसे 'भाववाच्य' कहते हैं।

(घ) जिन वाक्यों में क्रिया का प्रयोग कर्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार होता है, उसे 'कर्तृवाच्य' कहते हैं।

(ङ) कर्तृवाच्य से भाववाच्य बनाने के नियम–

1. कर्ता के बाद 'से' जोड़ते हैं।
2. क्रिया का प्रयोग एकवचन, पुल्लिंग और अन्य पुरुष में किया जाता है।
3. क्रिया को सामान्य भूतकाल में बदलकर काल के अनुसार 'जा' का उचित रूप जोड़ दिया जाता है।

नोट–खेलने की बारी और सोचने की बारी के प्रश्न विद्यार्थी स्वयं हल करेंगे।

18. अव्यय (अविकारी शब्द)

1. क्रियाविशेषण

बोलने की बारी

(क) वे शब्द, जिनमें लिंग, वचन, कारक और काल के प्रभाव के कारण कोई बदलाव नहीं आता है, उन्हें 'अव्यय' या 'अविकारी शब्द' कहते हैं।

(ख) अव्यय में पाँच भेद होते हैं– 1. क्रियाविशेषण, 2. संबंधबोधक, 3. समुच्चयबोधक, 4. विस्मयादिबोधक, 5. निपात।

(ग) क्रियाविशेषण के चार भेद होते हैं–1. रीतिवाचक क्रियाविशेषण, 2. परिमाणवाचक क्रियाविशेषण, 3. कालवाचक क्रियाविशेषण, 4. स्थानवाचक क्रियाविशेषण।

लिखने की बारी

1. (क) एकदम से – रीतिवाचक क्रियाविशेषण
   (ख) बहुत – परिमाणवाचक क्रियाविशेषण
   (ग) कल – कालवाचक क्रियाविशेषण
   (घ) आगे – स्थानवाचक क्रियाविशेषण
   (ङ) झटपट – रीतिवाचक क्रियाविशेषण
2. (क) (*ii*) अविकारी शब्द (ख) (*ii*) क्रियाविशेषण
   (ग) (*iv*) कब, कहाँ, कैसे और कितना (घ) (*ii*) तरीका
   (ङ) (*iii*) चहुँ ओर
3. (क) स्थानवाचक क्रियाविशेषण (ख) रीतिवाचक क्रियाविशेषण
   (ग) रीतिवाचक क्रियाविशेषण (घ) रीतिवाचक क्रियाविशेषण
   (ङ) परिमाणवाचक क्रियाविशेषण
4. (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✗ (ङ) ✗
5. (क) मधुर – अजय मधुर गाता है।
   (ख) बिल्कुल – वह बिल्कुल नहीं पढ़ता है।
   (ग) सदैव – वह सदैव नहाता है।

(घ) अभी – मेहमान अभी आए हैं।

(ङ) सहसा – वह सहसा चिल्लाने लगा।

6. (क) मधुर (ख) कम

(ग) नीचे (घ) धीरे-धीरे

(ङ) अचानक

7. (क) जिन शब्दों द्वारा क्रिया की विशेषता बताई जाती है, उन्हें 'क्रियाविशेषण' कहते हैं; जैसे– वह जल्दी-जल्दी चल रहा है।

(ख) परिमाण का अर्थ है–मात्रा। जिन क्रियाविशेषण शब्दों द्वारा क्रिया के होने की मात्रा का पता चलता है, उसे 'परिमाणवाचक क्रियाविशेषण' कहते हैं। उदाहरण–आजकल श्वेता बहुत पढ़ती है।

(ग) रीति का अर्थ है–तरीका। जिन क्रियाविशेषण शब्दों द्वारा क्रिया होने के तरीके का ज्ञान होता है, उन्हें 'रीतिवाचक क्रियाविशेषण' कहते हैं; जैसे–वह लगातार बोलता रहा।

(घ) काल का अर्थ है–समय। जिन क्रियाविशेषण शब्दों द्वारा क्रिया होने के समय का पता चलता है, उन्हें 'कालवाचक क्रियाविशेषण' कहते हैं; जैसे– अतिथि अभी-अभी आए हैं।

2. संबंधबोधक

लिखने की बारी

1. (क) (*i*) अविकारी (ख) (*iii*) की भाँति

(ग) (*ii*) तुलनावाचक से (घ) (*i*) के बाद

(ङ) (*iii*) विविधा मेरे सामने बैठी है।

2. (क) की अपेक्षा (ख) के बाद

(ग) से पहले (घ) के बिना

(ङ) के योग्य

3. (क) संबंधबोधक (ख) क्रियाविशेषण

(ग) संबंधबोधक (घ) संबंधबोधक

(ङ) क्रियाविशेषण

4. (क) के कारण – रावण अपनी दुष्टता के कारण मारा गया।

(ख) के द्वारा – अर्जुन को कृष्ण के द्वारा गीता का ज्ञान प्राप्त हुआ।

(ग) की भाँति – वह बंदरों की भाँति उछलता-कूदता रहता है।

(घ) से बढ़कर – अमित राघव से बढ़कर कलाकार है।

(ङ) की खातिर – तुम्हें जीतने की खातिर दौड़ना पड़ेगा।

5. (क) जो अव्यय शब्द संज्ञा या सर्वनाम के साथ जुड़कर उनका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों के साथ बताते हैं, उन्हें 'संबंधबोधक अव्यय' कहते हैं। इसके दस भेद हैं–1. कालवाचक, 2. कारणवाचक, 3. विषयवाचक, 4. समतावाचक, 5. दिशावाचक, 6. साधनवाचक, 7. स्थानवाचक, 8. संगवाचक, 9. उद्देश्यवाचक, 10. तुलनावाचक।

(ख) कई अव्यय शब्द ऐसे हैं जिनका प्रयोग क्रियाविशेषण और संबंधबोधक दोनों रूपों में किया जाता है। संज्ञा या सर्वनाम के साथ प्रयुक्त होकर कुछ अव्यय शब्द संबंधबोधक बन जाते हैं जबकि क्रिया के साथ प्रयुक्त होकर यही शब्द क्रियाविशेषण बन जाते हैं।

(ग) (*i*) समतावाचक – वह बच्चे के समान रोने लगा।

(*ii*) साधनवाचक – वह छड़ी के सहारे चलता है।

(*iii*) उद्देश्यवाचक – वह पढ़ने के लिए आया है।

3. समुच्चयबोधक

लिखने की बारी

1. (क) और (ख) या

(ग) ताकि (घ) लेकिन

(ङ) मानो

2. (क) तथापि – रामचरन को सज़ा मिली तथापि वह निर्दोष था।

(ख) अतः – बहुत वर्षा हो रही है, अतः विद्यालय बंद रहेगा।

(ग) मगर – यह धर्म नया ज़रूर था मगर बहुत प्रभावशाली था।

(घ) मानो – वह उसे हिलाने लगा मानो उसे गहरी नींद से जगा रहा हो।

(ङ) न कि – वह डॉक्टर बनना चाहता था न कि एक अभिनेता।

3. (क) अन्यथा (ख) ताकि

(ग) लेकिन (घ) पर

(ङ) यद्यपि

4. (क) जिस अव्यय द्वारा दो शब्दों, पदों और वाक्यांशों को आपस में जोड़ने का कार्य किया जाता है, उन्हें 'समुच्चयबोधक अव्यय' कहते हैं। इसके दो भेद हैं–1. समानाधिकरण समुच्चयबोधक, 2. व्यधिकरण समुच्चयबोधक।

(ख) समुच्चयबोधक का दूसरा नाम 'योजक' है।

(ग) (*i*) अर्थात् – गाँव में, नगर में अर्थात् सब जगह यही चर्चा थी।

(*ii*) मगर – अच्छा हो या बुरा मगर जीवन जीना ही पड़ता है।

(*iii*) फलतः – उसने बहुत परिश्रम किया फलतः उसे पहचान मिली।

(*iv*) यद्यपि – वह शरारती है यद्यपि पढ़ाई में होशियार है।

4. विस्मयादिबोधक

लिखने की बारी

1. (क) होशियार!
(ख) खूब!
(ग) राम-राम!
(घ) छिः!
(ङ) जी!

2. (क) ठीक! – ठीक! यह हो जाएगा।
(ख) हट! – हट! नहीं तो बहुत मारूँगा।
(ग) थू! – थू! है तुम पर।
(घ) बचो! – बचो! इसके आगे दलदल है।
(ङ) क्या! – क्या! वह कल नहीं आ रहा है?

3. (क) थू → (*iii*) घृणा
(ख) वाह! → (*v*) विस्मय
(ग) बहुत सुंदर! → (*i*) हर्ष
(घ) अरे! → (*iv*) चेतावनीबोधक
(ङ) अफ़सोस → (*ii*) शोक/पीड़ा
(च) हटो! → (*vi*) संबोधन

5. निपात

लिखने की बारी

1. (क) केवल – अंकित की उम्र उस समय केवल दस वर्ष की थी।

(ख) ही – तुम्हें आज रात रुकना ही पड़ेगा।

(ग) भी – कल मैं भी आपके साथ चलूँगा।

(घ) तो – तुमने तो हद कर दी।

(ङ) मात्र – धन कमा लेने मात्र से जीवन सफल नहीं हो जाता।

2. (क) भर (ख) तो (ग) ही (घ) तक (ङ) भी

3. (क) अक्षत **भी** मेरे साथ गया था। (ख) वंदन ने **ही** उसे मारा है।

(ग) बबीता **तो** ऐसी लड़की नहीं है। (घ) उसका चाँद-**सा** सुंदर चेहरा है।

(ङ) मुझे **मात्र** दस रुपये चाहिए।

खेलने की बारी

विद्यार्थी स्वयं करेंगे।

सोचने की बारी

'बाहर' शब्द स्थानवाचक क्रियाविशेषण का भेद है।

19. शब्द, पद और पदबंध

बोलने की बारी

(क) वैसे तो शब्द भाषा की एक स्वतंत्र इकाई है लेकिन जब शब्द व्याकरण के नियमों में बँधकर वाक्य में प्रयुक्त किए जाते हैं तब वह पद बन जाते हैं।

(ख) वाक्य में यदि एक शब्द प्रयोग किया गया है तो वह पद कहलाता है, जबकि वाक्य में जब एक से अधिक पद मिलकर एक व्याकरणिक इकाई का काम करते हैं तब उस बँधी हुई इकाई को पदबंध कहते हैं।

लिखने की बारी

1. (क) (*iii*) शब्द (ख) (*i*) पदों का समूह

(ग) (*ii*) विश्लेषण पदबंध (घ) (*ii*) विशेषण पदबंध

(ङ) (*ii*) अंत में

2. (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✓

3. (क) क्रियाविशेषण (ख) एक

(ग) पाँच (घ) संज्ञा

(ङ) एक

4. (क) बालक → (*iii*) शब्द

(ख) बच्चों ने → (*ii*) शीर्ष पद

(ग) कुछ शरारती छात्रों ने → (*v*) विशेषण पदबंध

(घ) आलस करने वाले बच्चे → (*i*) पद

(ङ) गरमी से परेशान वृद्ध → (*iv*) संज्ञा पदबंध

5. (क) संज्ञा पदबंध (ख) क्रियाविशेषण पदबंध

(ग) विशेषण पदबंध (घ) संज्ञा पदबंध

(ङ) सर्वनाम पदबंध

6. (क) **मेन रोड से कालेज तक** जाने की कोई सुविधा नहीं है।

(ख) **आस-पास के गाँव से आए** लोगों ने खूब आनंद लिया।

(ग) **दोनों पक्षी शावक** पिंजरे से बाहर देख रहे थे।

(घ) पतले व्यक्ति भी **कागज़ की भाँति** उड़ने को तैयार रहते हैं।

(ङ) सच बोलने वाले लोगों का साथ **सब** देते हैं।

7. (क) वाक्य से अलग रहने पर 'शब्द' और वाक्य में प्रयुक्त हो जाने पर शब्द 'पद' कहलाते हैं। दूसरे शब्दों में – वाक्य में प्रयुक्त शब्द पद कहलाता है। जब दो या अधिक (शब्द) पद नियत क्रम और निश्चित अर्थ में किसी पद का कार्य करते हैं तो, उन्हें 'पदबंध' कहते हैं।

(ख) पदबंध के पाँच भेद हैं–1. संज्ञा पदबंध, 2. सर्वनाम पदबंध, 3. विशेषण पदबंध, 4. क्रिया पदबंध, 5. क्रियाविशेषण पदबंध।

(ग) पदबंध की निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं–

(*i*) पदबंध एक से अधिक पदों का समूह होता है।

(*ii*) सभी पद परस्पर बँधे होते हैं।

(*iii*) प्रत्येक पदबंध में एक शीर्ष पद तथा अन्य आश्रित पद हो सकते हैं।

(*iv*) पदबंध में एक से अधिक आश्रित पद हो सकते हैं।

(घ) **संज्ञा पदबंध**–जो पदबंध संज्ञा का कार्य करता है और जिनके शीर्ष में संज्ञा पद होता है तथा अन्य पद उस पर आश्रित होते हैं, उसे 'संज्ञा पदबंध' कहते हैं, जैसे–**दशरथ नंदन श्रीराम** चौदह वर्ष के लिए वन गए थे।

क्रिया पदबंध–जब एक से अधिक क्रिया पदबंध मिलकर क्रिया का कार्य करते हैं और उसके शीर्ष में भी क्रिया पद होता है तो इसे 'क्रिया पदबंध' कहते हैं। इसमें मुख्य क्रिया पहले और अन्य क्रियाएँ बाद में आती हैं; जैसे–लेखिका लेखन **कर रही थी**।

खेलने की बारी

- लंका का राजा रावण बहुत विद्वान था। (संज्ञा पदबंध)
- गरमियों में सफ़ेद खादी कपड़े पहनो। (विशेषण पदबंध)

सोचने की बारी

'लोगों को हँसाने वाला वह शांत हो गया।' वाक्य में सर्वनाम पदबंध है, क्योंकि वह पदबंध जो वाक्य में सर्वनाम का कार्य करे तो वह सर्वनाम पदबंध होता है। इस वाक्य में 'लोगों को हँसाने वाला वह' सर्वनाम पदबंध है।

20. पद-परिचय

बोलने की बारी

(क) वाक्य में आए शब्दों का व्याकरणिक परिचय देना 'पद-परिचय' कहलाता है।

(ख) पद-परिचय देते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए–

1. प्रत्येक पद को अलग-अलग करना; 2. प्रत्येक पद का प्रकार व भेदोपभेद बताना;
3. वाक्य में दूसरे पदों से उसका संबंध बताना; 4. वाक्य में उसका कार्य बताना;
5. पद-परिचय के समय व्याकरण का सार प्रस्तुत करना पड़ता है।

लिखने की बारी

1. (क) (*iv*) समास
   (ख) (*i*) जातिवाचक संज्ञा, बहुवचन
   (ग) (*ii*) सकर्मक क्रिया, एकवचन
   (घ) (*ii*) संयुक्त क्रिया
   (ङ) (*iv*) क्रिया के साथ संबंध
2. (क) मयंक पतंग उड़ा रहा है।

   मयंक – व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक

पतंग – जातिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्मकारक, 'उड़ा रहा है' क्रिया का कर्म
उड़ा रहा है–संयुक्त क्रिया, एकवचन, पुल्लिग, अन्य पुरुष, 'उड़' धातु, वर्तमान काल।

(ख) यह उपहार मैं तुम्हें नहीं दे सकता हूँ।
यह – सार्वनामिक विशेषण, एकवचन, पुल्लिग, विशेष्य 'उपहार'
उपहार – जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिग, एकवचन, कर्म कारक, 'दे सकता हूँ' क्रिया का कर्म
मैं – पुरुषवाचक सर्वनाम, पुल्लिग, एकवचन, कर्ता कारक
तुम्हें – पुरुषवाचक सर्वनाम, पुल्लिग, एकवचन, कर्ता कारक
नहीं – क्रियाविशेषण (नकारात्मक), 'दे सकता हूँ' क्रिया से संबंध
दे सकता हूँ – संयुक्त क्रिया, पुल्लिग, एकवचन, उत्तम पुरुष, वर्तमान काल, कर्तृवाच्य

(ग) परिश्रम के बिना सफलता नहीं मिलती है।
परिश्रम – भाववाचक संज्ञा, पुल्लिग, एकवचन, करण कारक, 'मिलती है' क्रिया का कर्म
के बिना – संबंधबोधक अव्यय
सफलता – भाववाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्ता कारक 'मिलती है' क्रिया का कर्म
नहीं – क्रियाविशेषण (नकारात्मक)
मिलती है – सकर्मक क्रिया, स्त्रीलिंग, एकवचन, अन्य पुरुष, धातु 'मिल', वर्तमान काल

(घ) धीरे-धीरे प्रभात होने लगा।
धीरे-धीरे – रीतिवाचक क्रियाविशेषण, 'होने लगा' क्रिया से संबंध
प्रभात – जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिग, एकवचन, कर्ता कारक, 'होने लगा' क्रिया का कर्म
होने लगा – संयुक्त क्रिया, पुल्लिग, एकवचन, अन्य पुरुष, वर्तमान काल, कर्मवाच्य।

नोट–खेलने की बारी और सोचने की बारी के प्रश्न विद्यार्थी स्वयं हल करेंगे।

21. वाक्य-विचार

बोलने की बारी

(क) कर्ता और क्रिया वाक्य के अति आवश्यक अंग है, इनके बिना वाक्य पूरा नहीं होता। शुद्ध वाक्यों की रचना एवं भाव अभिव्यक्ति के लिए वाक्य के पदों का निश्चित क्रम आवश्यक है। वाक्य में कर्ता और क्रिया पद का विस्तार भी किया जाता है। कभी-कभी कर्ता और क्रिया-पद के बिना भी वाक्य लिखा जाता है।

(ख) अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद हैं–

1. विधानवाचक वाक्य 2. निषेधवाचक वाक्य 3. प्रश्नवाचक वाक्य

4. आज्ञावाचक वाक्य 5. इच्छावाचक वाक्य 6. संदेहवाचक वाक्य
7. विस्मयवाचक वाक्य 8. संकेतवाचक वाक्य।

लिखने की बारी

1. (क) (*iii*) उद्देश्य (ख) (*iii*) आठ (ग) (*iii*) तीन

2.

	उद्देश्य	**विधेय**
(क)	बिजली	आ गई।
(ख)	अमन	पुस्तक पढ़ रहा है।
(ग)	मेरी माँ	खाना बना रही है।
(घ)	विद्यालय के बच्चे	खेल रहे हैं।
(ङ)	श्रीराम	ने रावण को मारा दिया।

3. (क) सार्थक व व्यवस्थित (ख) उद्देश्य / विधेय (ग) उद्देश्य
(घ) आज्ञार्थक वाक्य (ङ) मिश्र वाक्य

4. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✗

5. (क) सूर्य उदय हुआ और रोशनी हो गई। (संयुक्त वाक्य)
(ख) बिजली आते ही टी०वी० चल गया। (सरल वाक्य)
(ग) जैसे ही रात्रि हुई चंद्रमा निकल आया। (मिश्र वाक्य)
(घ) शायद वह परसों आ सकती है। (संदेहवाचक वाक्य)
(ङ) अच्छा! रितिका फेल हो गई। (विस्मयवाचक वाक्य)

6. (क) शब्दों का सार्थक समूह जिससे मन के भाव एवं विचार पूरी तरह प्रकट होते हैं, उसे 'वाक्य' कहतें हैं। वाक्य के दो अंग हैं–1. उद्देश्य, 2. विधेय।

(ख) वाक्य भाषा की सार्थक इकाई होते हैं, जो मन के भावों को व्यक्त करने में सक्षम होते हैं। कर्ता और क्रिया वाक्य के अति आवश्यक अंग हैं, इनके बिना वाक्य पूरा नहीं होता। शुद्ध वाक्यों की रचना एवं भाव अभिव्यक्ति के लिए वाक्य के पदों का निश्चित क्रम आवश्यक है। वाक्य में कर्ता और क्रिया पद का विस्तार भी किया जाता है। कभी-कभी कर्ता और क्रिया पद के बिना भी वाक्य लिखा जाता है।

(ग) रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद हैं–

1. सरल या साधारण वाक्य – रमा खाना पकाती है।
2. संयुक्त वाक्य – रीता कहानी पढ़ती है और सविता फ़िल्म देखती है।
3. मिश्र वाक्य – जब सीमा आई तब लता चली गई।

(घ) **उद्देश्य–** वाक्य में जिस व्यक्ति (कर्ता) या वस्तु के बारे में अर्थात् उनके विषय में ही कुछ कहा जाता है, उसे 'उद्देश्य' कहते हैं।

विधेय– वाक्य में कर्ता या किसी वस्तु के बारे में जो कुछ बताया जाता है, उसे 'विधेय' कहते हैं।

(ङ) जिन आश्रित उपवाक्यों द्वारा प्रधान उपवाक्य की क्रिया की विशेषता बताई जाती है, उसे 'क्रियाविशेषण आश्रित उपवाक्य' कहते हैं; जैसे– जब मैं विद्यालय पहुँचा तब तक घंटी बज चुकी थी।

खेलने की बारी

विद्यार्थी स्वयं करेंगे।

सोचने की बारी

वाक्य बातचीत के माध्यम होते हैं। इन्हीं के द्वारा हम अपने भावों एवं विचारों को दूसरों के सामने व्यक्त करते हैं और दूसरों के मनोभावों को समझ सकते हैं। इनके बिना बातचीत संभव नहीं। यह भाषा का सबसे महत्वपूर्ण अंग है।

22. वाक्य संबंधी अशुद्धियाँ और उनका संशोधन

बोलने की बारी

(क) वाक्य को शुद्ध रूप व्याकरण के समुचित ज्ञान द्वारा प्रदान किया जाता है।

(ख) वाक्य में अशुद्धि के अनेक कारण हैं; जैसे– वाक्य में अनावश्यक शब्द-प्रयोग से, सही क्रम या अन्विति न होने से, लिंग, वचन, कारक का सही प्रयोग न होने से, सही सर्वनाम एवं क्रिया का प्रयोग न होने से वाक्य अशुद्ध हो जाता है जो अर्थ के साथ भाषा-सौंदर्य को हानि पहुँचाता है।

लिखने की बारी

1. (क) मुझे एक भजनों की किताब चाहिए।
   (ख) कृपया मेरे घर पधारें।
   (ग) विवेक के पिता भारी दुखी हैं।
   (घ) उसने कविता लिखा।
   (ङ) आतंकवदियों ने हथियार फेंक दिए।

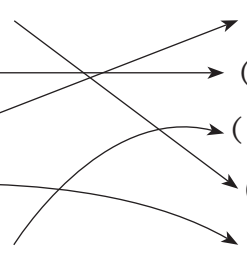

(*i*) विशेषण संबंधी
(*ii*) पदक्रम संबंधी
(*iii*) मुहावरा संबंधी
(*iv*) पुनरुक्ति संबंधी
(*v*) क्रिया संबंधी

2. (क) अशुद्ध (ख) अशुद्ध (ग) शुद्ध (घ) शुद्ध (ङ) शुद्ध

3. (क) धोबी कपड़े धो रहा है।

   (ख) सोमवार को विद्यालय बंद रहेगा।

   (ग) मेरी कलम कहीं गिर गई।

   (घ) गीता ने आकर कहा।

   (ङ) मेरी तो जान सूख गई।

खेलने की बारी

विद्यार्थी स्वयं करेंगे।

सोचने की बारी

ओर – और, कि – की, में – मैं, राज़ – राज, ग्रह – गृह आदि।

23. विराम-चिह्न

बोलने की बारी

(क) अपनी बातों का अर्थ और भाव स्पष्ट करने के लिए लिखते समय जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें 'विराम-चिह्न' कहते हैं।

(ख) बात को स्पष्ट करने और समझाने के लिए विराम-चिह्नों का प्रयोग किया जाता है।

(ग) 1. पूर्णविराम-चिह्न 2. उद्धरण-चिह्न 3. विवरण-चिह्न।

लिखने की बारी

1. (क) (*iv*) लाघव-चिह्न (ख) (*i*) पूर्णविराम-चिह्न

   (ग) (*i*) विवरण-चिह्न (घ) (*ii*) प्रश्नवाचक-चिह्न

   (ङ) (*iv*) लाघव-चिह्न

2. (क) उद्धरण (ख) योजक (ग) प्रश्नसूचक (घ) योजक-चिह्न (ङ) योजक-चिह्न

3. (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✗

4. (क) लिखते समय वाक्य के बीच विराम को प्रकट करने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, वे 'विराम-चिह्न' कहलाते हैं।

(ख) प्रश्न पूछने के लिए प्रश्नसूचक-चिह्न का प्रयोग करते हैं।

(ग) विस्मयसूचक-चिह्न।

(घ) जब लिखते समय कुछ छूट जाता है, तब हंसपद-चिह्न का प्रयोग करते हैं।

(ङ) किसी कथन को ज्यों का त्यों लिखने के लिए उद्धरण-चिह्न का प्रयोग करते हैं।

5.

(क) प्रश्नसूचक-चिह्न	(*i*) :
(ख) उपविराम-चिह्न	(*ii*) ‸
(ग) लाघव-चिह्न	(*iii*) ?
(घ) हंसपद-चिह्न	(*iv*) –
(ङ) निर्देशक-चिह्न	(*v*) ॰

6. (क) भारत की छह ऋतुएँ है:– ग्रीष्म, वर्षा, शरद, शिशिर, हेमंत और वसंत।

(ख) प्रेम से रहो, कल किसने देखा।

(ग) हँसते-खेलते जीवन बीत जाएगा, पता भी नहीं चलेगा।

(घ) अध्यापक कक्षा में आए, पढ़ाने लगे।

(ङ) अरे! कितना सुंदर गुलाब है।

नोट–खेलने की बारी और सोचने की बारी के प्रश्न विद्यार्थी स्वयं हल करेंगे।

24. मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

बोलने की बारी

(क) मुहावरे का प्रयोग लिंग, वचन और क्रिया के अनुसार वाक्यों में किया जाना चाहिए। मुहावरों में आए शब्दों के स्थान पर इनके पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

(ख) आगे-पीछे घूमना – खुशामद करना।

(ग) आँखों में धूल झोंकना।

(घ) चादर देखकर पैर फैलाना – अपनी आय के अनुसार खर्च करना।

(ङ) टका-सा जवाब देना – साफ़ मना कर देना।

लिखने की बारी

1. (क) (*ii*) गुस्सा प्रकट करना (ख) (*ii*) ललचाना

(ग) (*i*) वचन का पक्का होना (घ) (*iii*) समान गुणों वाला समूह

(ङ) (*iv*) मूर्ख गुणों की कद्र नहीं करता

2. (क) मुहावरा (ख) क्रिया

(ग) सरस, सुंदर एवं आकर्षक (घ) अंधे की लाठी

(ङ) बेफ़िक्र होकर सो जाना (च) कोई असर न होना

3. (क) काँटा दूर होना → (*iii*) कठिनाई दूर होना

(ख) कान भरना → (*v*) चुगली करना

(ग) टेढ़ी खीर होना → (*i*) बहुत कठिन होना

(घ) आस्तीन का साँप → (*ii*) धोखा देने वाली साथी

(ङ) आड़े हाथों लेना → (*iv*) कठोरता से पेश आना

4. (क) ईंट का जवाब पत्थर से देना– रमेश ने महेश को धोखा दिया तो रमेश ने भी ईंट का जवाब पत्थर से दिया।

(ख) आग में घी डालना– आपसी लड़ाई में साकेत के आँसुओं ने आग में घी डाल दिया।

(ग) अँधरे घर का उजाला– हेमंत अपने संपूर्ण परिवार में अँधरे घर का उजाला है।

(घ) गड़े मुर्दे उखाड़ना– गड़े मुर्दे उखाड़कर रोने से कोई फ़ायदा नहीं।

(ङ) घी के दीये जलाना– बोर्ड की परीक्षा में प्रथम आने पर सरला की माँ ने घी के दीये जलाए।

5. (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✓

6. (क) घर की चीज़ की कद्र नहीं होती (ख) समझाने पर दुष्ट दुष्टता नहीं छोड़ते

(ग) सरलता से काम नहीं बनता (घ) कम ज्ञान का अधिक दिखावा

खेलने की बारी

नौ दो ग्यारह होना, छाती पर पत्थर रखना, घी के दीये जलाना, तारे गिनना, पेट में चूहे कूदना, कोल्हू का बैल

सोचने की बारी

मुहावरों और लोकोक्तियों के प्रयोग से भाषा सरस, सुंदर तथा आकर्षक बन जाती है। इनसे कम शब्दों में अधिकाधिक भावों की अभिव्यक्ति की जा सकती है। इनकी सहायता से गंभीर भावों को भी बहुत सहज और सरल ढंग से अभिव्यक्त किया जा सकता है।

25. अलंकार

बोलने की बारी

(क) काव्य की शोभा बढ़ाने वाले आभूषणों को 'अलंकार' कहते हैं।

(ख) जब काव्य में शब्दों के द्वारा चमत्कार उत्पन्न होता है तो उसे 'शब्दालंकार' कहते हैं।

(ग) जब किसी व्यक्ति, वस्तु या अन्य उपमेय का वर्णन लोक सीमा से बढ़कर प्रस्तुत किया जाए तो उसे 'अतिशयोक्ति अलंकार' कहते हैं।

लिखने की बारी

1. (क) (*iv*) आभूषण (ख) (*ii*) अर्थ से (ग) (*i*) अनुप्रास (घ) (*ii*) श्लेष
   (ङ) (*iv*) चारु चंद्र की चंचल किरणें

2.

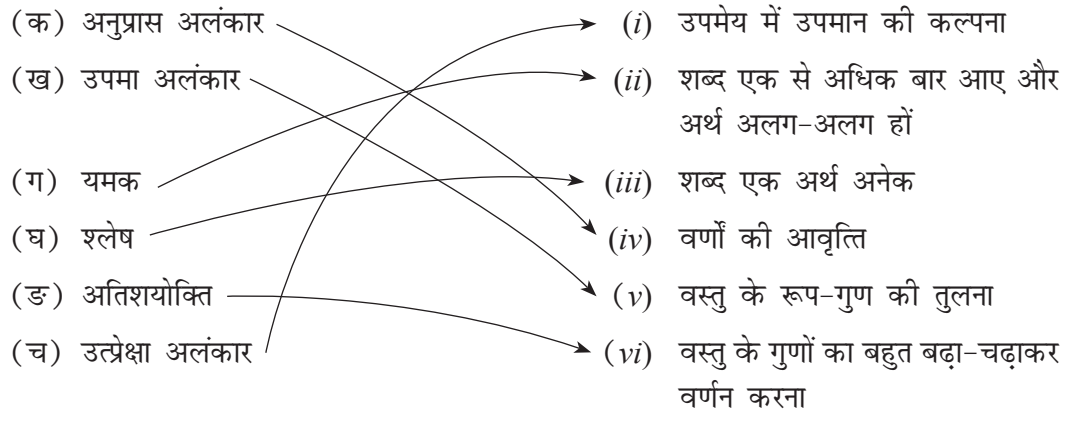

3. (क) यमक अलंकार (ख) उपमा अलंकार
   (ग) रूपक अलंकार (घ) मानवीकरण अलंकार
   (ङ) अतिशयोक्ति अलंकार

4. (क) 'देखि सुदामा की दीन दशा, करुणा करके करुणानिधि रोए।
   पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सों पग धोए।'
   (ख) 'हरिपद कोमल कमल-से'
   (ग) 'कालिंदी फूल कदंब की डारन'
   (घ) 'तू मोहन के उरबसो, है उरबसी समान'

(ङ) 'सुबरन को ढूँढ़त फिरत, कवि, व्यभिचारी, चोर'

(च) 'माली आवत देखकर कलियन करे पुकारि।

फूले फूले चुनी लिए कालि हमारी बारि।।

5. (क) काव्य की शोभा बढ़ाने वाले गुण धर्मों को अलंकार कहते हैं। इसके दो भेद हैं–

1. शब्दालंकार, 2. अर्थालंकार।

(ख) शब्दालंकार के प्रमुख भेद हैं–

1. अनुप्रास अलंकार, 2. यमक अलंकार, 3. श्लेष अलंकार।

(ग) जब वाक्य में कोई शब्द एक से अधिक बार आए, किंतु उसका अर्थ अलग-अलग हो, तब यमक अलंकार होता हैं। उदाहरण– कनक कनक ते सौगुनी मादकता अधिकाय।

(घ) जब किसी प्राणी या वस्तु की तुलना उससे बढ़कर सुंदरता एवं समानता के लिए प्रसिद्ध व्यक्ति या वस्तु से की जाती है तो उसे 'उपमा अलंकार' कहते हैं। उदाहरण– पीपर पात सरिस मन डोला।

(ङ) जब अत्यधिक समानता के कारण उपमेय में उपमान की कल्पना या संभावना की जाए तब 'उत्प्रेक्षा अलंकार' होता है। उदाहरण– सिर फट गया उसका वहीं, मानो अरुण रंग का घड़ा।

(च) जब प्रकृति पर चेतना का आरोप कर उसे मानव या मानव सदृश क्रिया या भावना के रूप में प्रस्तुत किया जाता है तो वहाँ 'मानवीकरण अलंकार' होता है; जैसे- मेघ आए बड़े बन ठन के सँवर के। जबकि जब वाक्य में कोई शब्द एक बार आए, किंतु उसके अर्थ अनेक हों, तो उसे 'श्लेष अलंकार' कहते हैं; जैसे–

जो रहीम गति दीप की, कुल कपूत की सोय।

बारे उजियारो करे, बढ़े अँधेरो होय।।

खेलने की बारी

विद्यार्थी स्वयं करेंगे।

सोचने की बारी

प्रस्तुत दोहे में श्लेष अलंकार है। इसमें 'पानी' शब्द श्लिष्ट है और इसके यहाँ तीन अर्थ हैं–चमक (मोती के संदर्भ में), प्रतिष्ठा (मनुष्य के संदर्भ में) और पानी (चूने के संदर्भ में)। अतः इस दोहे में श्लेष अलंकार है।

26. डायरी-लेखन

लिखने की बारी

1. 26 फरवरी, 20xx मंगलवार

आज मैं बहुत खुश हूँ, क्योंकि आज मेरी इच्छा पूरी हो गई है। आज कक्षा में अध्यापिका ने सबके सामने परीक्षा परिणाम घोषित किया। जब उन्होंने सबसे अधिक अंक प्राप्त करके प्रथम आने वाले छात्र का नाम लिया, तब मुझे अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हुआ, क्योंकि वह छात्र कोई और नहीं मैं ही था।

दीपक

2. 3 दिसंबर, 20xx रविवार

आजकल सर्दियों की छुट्टियाँ हैं। इसीलिए मैं अपने नाना जी के घर रोहिणी में आई हुई हूँ। आज मेरे नाना जी मुझे और मेरे भाई को दिल्ली का चिड़ियाघर दिखाने ले गए थे। वहाँ हम लोगों ने तरह-तरह के जानवर देखे। वहाँ बच्चों के लिए एक छोटी-सी गाड़ी भी थी। उसमें बैठकर हम लोगों ने चिड़ियाघर के भिन्न-भिन्न भागों की सैर की। उसमें घूमने में बड़ा मज़ा आया। उसके बाद हम लोगों ने गोलगप्पे और चाट खाई। फिर हम लोग वापस आ गए।

सुमित्रा

3. 8 मार्च, 20xx सोमवार

आज मैंने रोहतक से दिल्ली की अपनी प्रथम रेल यात्रा की। मेरी यह प्रथम रेल यात्रा मेरे लिए अविस्मरणीय है क्योंकि मेरी प्रथम रेल यात्रा ने रोमांच के साथ ही मुझे एक ऐसा मित्र भी दिया जो आज मुझे सबसे अधिक प्रिय है। अत: इस दिन को तो मैं कभी भुला ही नहीं सकता।

राघव

4. 2 अक्टूबर, 20xx बुधवार

आज हमारे विद्यालय में गांधी जयंती के अवसर पर स्वच्छता अभियान चलाया गया। विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने टोलियों में बँटकर स्वेच्छा से कक्षाओं व खेल मैदान में सफ़ाई अभियान चलाया। कक्षाओं की खिड़कियों व मैदान की घास व कूड़ा साफ़ किया। बच्चों ने पुस्तकालय, कंप्यूटर लैब, प्रयोगशाला से लेकर मेस तक सफ़ाई करके छात्रावास को भी साफ़ किया। इस अवसर पर गंदगी को कूड़ेदान में डालने की शपथ ली। शिक्षकों ने भी झाड़ू उठाकर सफ़ाई कार्य किया। प्राचार्य ने छात्र-छात्राओं को स्वच्छ रहकर स्वस्थ रहने का संदेश दिया।

अमित

5. 10 सितंबर, 20xx बृहस्पतिवार

विद्यालय में आज का दिन बहुत अच्छा बीता। विद्यालय की प्रार्थना सभा में समस्त विद्यार्थियों के सामने आज मुझे भाषण देने का अवसर मिला। मेरे द्वारा दिए गए भाषण को सभी मंत्र मुग्ध होकर सुन रहे थे। यह देखकर मुझे बहुत सुखद अनुभव हो रहा था। घर आकर जब मैंने माँ-पिता जी को बताया तो वे फूले नहीं समाए। दादा जी ने मुझे आशीर्वाद दिया।

सक्षम

27. संवाद-लेखन

लिखने की बारी

1. पूछताछ कार्यालय – महोदय कहिए, मैं आपकी कैसे सहायता कर सकता हूँ।

   यात्री – पानीपत एक्सप्रेस के आने का समय क्या है?

   पूछताछ कार्यालय – इसके आने का निर्धारित समय 4:30 बजे है।

   यात्री – सर, इसके अलावा और कौन-कौन सी गाड़ियाँ हैं?

   पूछताछ कार्यालय – पानीपत के लिए कालका शताब्दी, झेलम एक्सप्रेस, उत्तर संपर्क क्रांति, अमृतसर-नई दिल्ली एक्सप्रेस आदि गाड़ियाँ हैं।

   यात्री – सर, कृपा करके इनका समय और बता दें।

   पूछताछ कार्यालय – कालका एक्सप्रेस के आने का समय 3 बजे, झेलम एक्सप्रेस का समय 7 बजे, उत्तर संपर्क क्रांति का समय 9 बजे और अमृतसर-नई दिल्ली एक्सप्रेस का समय 10:30 बजे है।

   यात्री – सर, ये रेलगाड़ियाँ कौन-कौन से प्लेटफॉर्म पर आती हैं?

   पूछताछ कार्यालय – ये सभी रेलगाड़ियाँ प्लेटफॉर्म नंबर 1 पर आती हैं?

   यात्री – सर, जानकारी देने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

2. साहिल – सागर नमस्कार, क्या हाल-चाल है?

   सागर – क्या बताऊँ? बस मरते-मरते बचा हूँ।

   साहिल – क्यों क्या हो गया?

   सागर – होना क्या था? कल लाजपत नगर की बमबारी के वक्त मैं वहीं था। ऐसे में ज़िंदगी का क्या भरोसा?

   साहिल – तू ठीक कह रहा है, ईश्वर का कहर इन्हीं पर टूटना चाहिए, तब पता चलेगा। ये आतंकवादी देश की तरक्की की राह में बहुत बड़ी रुकावट हैं।

सागर – इन्होंने तो हम पर और हमारे अस्तित्व पर ही सवाल खड़ा कर दिया है।

साहिल – अरे! ऐसा कुछ नहीं है, सभी जानते हैं ये मुट्ठी भर लोग अपने स्वार्थ की खातिर ऐसा कर रहें हैं। लाख कोशिश करके भी ये हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते।

सागर – शुक्रिया यार, तुम जैसे दोस्तों की वजह से और देशवासियों के प्रेम के कारण ही तो हम सब में प्यार कायम है।

3. अजय – नमस्कार अमन! कैसे हो?

अमन – नमस्कार अजय। मैं ठीक हूँ। परीक्षा की तैयारी कैसी चल रही है?

अजय – अमन, तैयारी कर तो रहा हूँ, पर अच्छी तरह नहीं हो पा रही है।

अमन – क्या बात है? तबीयत तो ठीक है ना।

अजय – तबीयत तो एकदम ठीक है, पर...

अमन – पर क्या?

अजय – मेरी कॉलोनी में दो धार्मिक स्थल हैं, जिससे वहाँ शोर होता रहता है।

अमन – क्या लोगों की ज़्यादा भीड़-भाड़ होती है वहाँ?

अजय – लोगों की भीड़ तो कम पर वहाँ तेज़ आवाज़ में लाउडस्पीकर बजता रहता है।

अमन – इस बारे में सोसायटी के लोग मिलकर पुजारी से बात क्यों नहीं करते हैं।

अजय – कई बार बात की पर लगता है, दोनों पुजारियों में जैसे लाउडस्पीकर बजाने की प्रतियोगिता हो रही है।

अमन – उन्हें बताओ कि रात दस बजे के बाद लाउडस्पीकर बजाने पर प्रतिबंध है।

अजय – अब तो लगता है कि उनके विरुद्ध थाने में शिकायत करनी पड़ेगी क्योंकि इससे मेरी पढ़ाई बहुत प्रभावित हो रही है।

4. सुमित – नमस्ते दोस्त, कैसे हो?

अक्षत – अरे क्या बताएँ दोस्त, आजकल ईमानदारी का ज़माना नहीं रहा है।

सुमित – क्यों क्या हुआ ऐसा अक्षत।

अक्षत – तुम तो जानते हो कि मेरी बेटी पढ़ने में कितनी होशियार है।

सुमित – हाँ, ये तो सच है। पिछले साल उसने कॉलेज में टॉप किया था।

अक्षत – उसने इतनी मेहनत करके डिग्री प्राप्त की है, पर कोई उसे नौकरी देने को तैयार नहीं है।

सुमित – क्यों ऐसा क्या हुआ?

अक्षत – सब जगह सिफ़ारिश की आवश्यकता है, यदि कोई बड़ा वी०आई०पी० उसकी सिफ़ारिश करेगा तभी उसे नौकरी मिल सकती है और नौकरी देने के बदले में पैसों की माँग कर रहे हैं।

सुमित – ये तो भ्रष्टाचार है।

अक्षत – इसीलिए तो कह रहा हूँ कि आजकल ईमानदारी से काम नहीं चलता है।

5. राकेश – मोहन आज के बदलते हुए समय में पता नहीं चलता कब कुछ हो जाए।

मोहन – सही कह रहे हो, अचानक से प्राकृतिक आपदाएँ आ रही हैं।

राकेश – अभी तक यह कोरोना महामारी जाने का नाम नहीं ले रही है।

मोहन – हमें इस बीमारी से अपना बचाव स्वयं करना होगा।

राकेश – सही कह रहे हो, हमें अचानक आई प्राकृतिक आपदाओं से बचने के लिए अपने पर्यावरण का संरक्षण करना होगा।

मोहन – हाँ, तुमने बिल्कुल ठीक कहा। हम अचानक प्राकृतिक आपदाओं से बचाव तभी कर सकते हैं जब हम अपने वातावरण के संतुलन को बनाए रखें।

राकेश – हमें अपने आस-पास सफ़ाई का बहुत ध्यान रखना होगा।

मोहन – हाँ, हमें अपने पर्यावरण को प्रदूषण से बचाना होगा।

6. दीपक – आजकल बच्चों में अनुशासनहीनता बढ़ती जा रही है।

रोहित – तुम ठीक कहते हो। तभी तो आज सर ने अनुशासन के महत्व के बारे में बताया।

दीपक – हाँ मित्र, सुनकर बहुत अच्छा लगा।

रोहित – हमें हर काम अनुशासन से करना चाहिए, चाहे फिर अनुशासन पढ़ाई में हो या खेलने में हो।

दीपक – हमें गलत कामों से बचकर रहना चाहिए।

रोहित – अगर हम हर काम अनुशासन से करेंगे तो जीवन में अपने लक्ष्य को पूरा कर सकेंगे।

दीपक – हाँ, जीवन में अनुशासन बहुत ज़रूरी है और अनुशासनहीनता जीवन के लिए बड़ी घातक है।

रोहित – मैं आज से अनुशासन में रहकर अपना जीवनयापन करूँगा।

28. विज्ञापन-लेखन

लिखने की बारी

1.

खुशखबरी! खुशखबरी! खुशखबरी!

आपको जानकर खुशी होगी आपके शिमला शहर में खुल गया है।
आपका अपना हवेली होटल
हवेली होटल मॉल रोड में शिमला हेरिटेज संग्रहालय
से मिनटों की पैदल दूरी पर स्थित है।

5 साल के बच्चों के लिए मुफ़्त एंट्री

परिवार के लिए 40% माफ़

पर्यटकों के रुकने के लिए बड़े व हवादार कमरे

आकर्षक ऑफर और बुकिंग के लिए संपर्क करें

Mob : *5060*xxxxxx **email -** ***Haveli@gmail.com***

2.

उन्नयन स्पोर्ट्स कंपनी

यहाँ हर प्रकार की खेल-सामग्री बनाई जाती है।
प्रत्येक खरीद पर 25% छूट

आइए मौके का लाभ उठाइए

गुणवत्ता के मानदंडों पर खरी खेल-सामग्री

आकर्षक एवं मज़बूत खेल-सामग्री

संपर्क करें : उन्नयन स्पोर्ट्स कंपनी, तिलक नगर, दादरा, मुंबई फ़ोन न० 8794xxxxxx

3.

उज्ज्वल साबुन एवं डिटर्जेंट पाउडर

साबुन

डिटर्जेंट पाउडर

विशेषताएँ–

- खुशबूदार साबुन नहाने का
- सस्ता एवं अच्छा
- एंटीवायरस साबुन

कपड़ों का रंग न जाएगा
खुशबू महकाएगा
दूध-सी सफ़ेदी लाएगा।

महिलाओं की पहली पसंद कम दाम ज़्यादा काम

4.

सुफल बैग

आकर्षक रंग और डिज़ाइनों में

- क्या आप सफ़र पर जा रहे हैं?
- सुंदर बनावट
- वजन में हल्का
- मज़बूत कपड़ा
- छोटे बच्चों से लेकर बड़े लोगों के लिए उपलब्ध

तीन बैग खरीदने पर चौथा फ्री

5.

साइकिलें ही साइकिलें

• एटलस **• हीरो** **• काइनेटिक**

- सभी कंपनियों के नए मॉडल्स
- आसान किश्तों पर उपलब्ध
- गारंटी के साथ
- आज ही पधारें

प्रीत साइकिल स्टोर

पता :- मुख्य बाज़ार, मेरठ दूरभाष :- 9315xxxxxx

6.

सुरेखा साड़ी महल में आपको मिलेंगी

हर प्रकार की सुंदर साड़ियाँ वह भी उचित दामों पर
हर प्रकार की बनारसी, सूती, शिफॉन और सिल्क साड़ियाँ
बाकी दुकानों से सस्ते दामों पर

ऑफर
सीमित समय के लिए मान्य है

प्रत्येक साड़ी पर आपको मिलेगी 10% की अतिरिक्त छूट

29. संदेश-लेखन

लिखने की बारी

1.

संदेश

दिनांक : 26-01-20xx समय : प्रातः 7 बजे

प्रिय मित्र अभिनव

गणतंत्र दिवस के शुभ अवसर पर तुम्हें और तुम्हारे परिवार को मेरी तरफ़ से बहुत सारी शुभकामनाएँ। इस दिन हमें अपने शहीदों को याद करना चाहिए, जिनकी कुर्बानी के कारण हमें आज आज़ादी मिली है। हमें अपनी आज़ादी का सम्मान करना चाहिए और अपने संविधान का अनुपालन करना चाहिए। एक बार फिर तुम्हें और तुम्हारे परिवार को गणतंत्र दिवस की शुभकामना।

तुम्हारा मित्र

अखिलेश

2.

संदेश

दिनांक : 05-05-20xx समय : 8:30 बजे

मेरी प्रिय सहेली, प्रिया

आज तुम्हारा जन्मदिन है। मैं यह शुभकामना संदेश तुम्हें जन्मदिन की बधाई देने के लिए लिख

रही हूँ। मेरी प्यारी सहेली को जन्मदिन की बहुत सारी हार्दिक शुभकामनाएँ और भगवान से तुम्हारे जीवन में ढेर सारी खुशियों के लिए कामना करती हूँ। मैं जल्द ही तुमसे मिलने की कामना करती हूँ।

तुम्हारी सहेली
मीरा झा

3. **संदेश**

दिनांक : 03-03-20xx समय : प्रातः 6 बजे

प्रिय मित्र रवि

आज होली के शुभ अवसर पर आपको और आपके पूरे परिवार को हमारी तरफ़ से होली की हार्दिक शुभकामनाएँ। मैं आशा करता हूँ कि आप सभी लोग सकुशल होंगे और होली के रंगों में रंगकर खुशियाँ मना रहे होंगे। इस होली पर आपको ढेर सारी बधाइयाँ और माँ भगवती का ढेर सारा आशीर्वाद मिले। आप लोग शांति, सुख और समृद्धि हासिल करें।

आपका मित्र
भास्कर

4. **संदेश**

दिनांक : 05-09-20xx समय : प्रातः 8 बजे

आदरणीय शिक्षक जी

शिक्षक दिवस के पावन अवसर पर आपको मेरी और से हार्दिक शुभकामनाएँ। आप मेरे प्रेरणा स्त्रोत रहे हैं और आपके आशीर्वाद के कारण ही मैं शिक्षा के पथ पर निरंतर अग्रसर हूँ। आप यूँ ही हमें अपने ज्ञान से परिपूर्ण करते रहें, ऐसी मेरी कामना है।

आपका आज्ञाकारी शिष्य
अतुल

5. **सूचना**

दिनांक : 08-03-20xx समय : 7 बजे

मेरी प्यारी माँ

माँ आपको महिला दिवस की बहुत बधाइयाँ। आप सभी महिलाएँ सारी दुनिया की शान हो। हम सबकी सफलता के पीछे आपका ही हाथ है। आज हम सभी अपने लक्ष्य पर पहुँचे हैं सो माँ सिर्फ़ आपकी वजह से। आप सभी रिश्ते बहुत अच्छे से निभाती हो। आप कभी नहीं थकती हो। आप बहुत अच्छी हो। आप हमेशा खुश रहना।

आपका पुत्र
विजय

30. कहानी/लघुकथा लेखन

लिखने की बारी

1. **ईमानदार लकड़हारा**–एक गाँव में एक लकड़हारा रहता था। वह बहुत परिश्रमी था। वह ईमानदार भी था। एक बार लकड़हारा नदी के किनारे पहुँचा। वहाँ वह एक पेड़ से लकड़ी काटने लगा। लकड़ी काटते-काटते उसकी कुल्हाड़ी हाथ से छूटकर नदी में जा गिरी। लकड़हारा उदास हो गया। पेड़ से उतरकर वह नदी किनारे बैठ गया। अचानक एक जलपरी नदी के पानी से बाहर निकली। उसने लकड़हारे से उदासी का कारण पूछा। लकड़हारे ने बताया, "मेरी कुल्हाड़ी नदी में गिर गई है।" जलपरी बोली, "घबराओ नहीं! मैं तुम्हारी कुल्हाड़ी अभी निकाल लाती हूँ।" यह कहकर उसने पानी में डुबकी लगाई। जब वह पानी से बाहर निकली तब उसके हाथ में चाँदी की एक कुल्हाड़ी थी। जलपरी वह कुल्हाड़ी लकड़हारे को देने लगी। लकड़हारा उदास होकर बोला, "यह मेरी कुल्हाड़ी नहीं है।"

   "दुखी मत हो, मैं फिर से प्रयास करती हूँ।" यह कहकर जलपरी ने फिर से नदी में डुबकी लगाई। इस बार पानी से बाहर निकलने पर उसके हाथ में सोने की कुल्हाड़ी थी। सोने की कुल्हाड़ी देखकर लकड़हारा और अधिक उदास हो गया और कहने लगा, "यह कुल्हाड़ी भी मेरी नही है।" अब फिर से जलपरी ने नदी में डुबकी लगाई और लोहे की कुल्हाड़ी निकालकर लाई और उसको देने लगी। लकड़हारे ने खुशी-खुशी अपनी कुल्हाड़ी ले ली। इसकी ईमानदारी से जलपरी बहुत प्रसन्न हुई और लकड़हारे को चाँदी और सोने की कुल्हाड़ी भी दे दी। लकड़हारा तीनों कुल्हाड़ी लेकर घर आ गया।

   शिक्षा–ईमानदारी सबसे अच्छी नीति है।

2. **देवदार का पेड़**–एक जंगल में एक देवदार का पेड़ था। उसके नुकीले कोणधारी पत्ते उसे हीनभावना से ग्रसित किए रहते थे। उसको अपने ये पत्ते रास नहीं आते थे। इससे परेशान होकर उसने वनदेवता की प्रार्थना की। वनदेवता ने उसकी प्रार्थना सुन ली और उसे वर माँगने को कहा। नुकीले पत्तों से परेशान पेड़ ने नरम पत्तों की कामना की। वनदेवता ने एवमस्तु कहा और देखते-ही-देखते पेड़ के पत्ते सुंदर और नरम हो गए। अगले दिन जंगल में बकरियों का झुंड आया। बकरियों ने देवदार के अधिकांश पत्ते खा लिए। पेड़ बहुत दुखी हो गया। उसने फिर वनदेवता की स्तुति की, वनदेवता ने फिर वर माँगने को कहा। देवदार ने स्वर्ण से सुंदर पत्तों की कामना की। वनदेवता ने एवमस्तु कहा और देखते-ही-देखते सारे पत्ते बिलकुल सोने की तरह सुनहरे रंग के हो गए। देवदार का पेड़ अब बहुत खुश था, लेकिन उसकी खुशी ज़्यादा दिनों तक नहीं रही। एक दिन जंगल से कुछ चोर गुज़रे। उन्होंने जब देखा कि इस पेड़ के तो सारे पत्ते सोने के हैं, लालचवश उन्होंने पेड़ पर चढ़कर उसके पत्ते तोड़ लिए। देखते-ही-देखते देवदार का पेड़ पत्र विहीन हो गया। इस बार वह बहुत दुखी और लाचार था। उसने वनदेवता से फिर प्रार्थना की

और अपने कंटीले कोणधारी पत्तों के लिए याचना स्वरूप वरदान माँगा। वनदेवता ने उसे फिर से एवमस्तु कहा और पेड़ पर पुनः पहले जैसे पत्ते लहलहाने लगे। वह अपने पुराने रूप को पाकर बहुत खुश हुआ। उसे अपनी गलती का अहसास हो चुका था।

शिक्षा–हमें जो मिला है उसी में खुश रहना चाहिए।

3. **(क) एकता का महत्व**

किसी गाँव में एक किसान रहता था। उसके चार बेटे थे। वे सदा लड़ते-झगड़ते रहते थे। एक दिन किसान बहुत बीमार पड़ गया। उसकी मृत्यु का समय निकट आ गया था। उसने अपने चारों लड़कों को अपने पास बुलाया। किसान ने उनसे एक लकड़ी का गट्ठर मँगाया और अपने चारों लड़कों को बारी-बारी से उस गट्ठर को तोड़ने के लिए कहा, पर किसी से भी वह गट्ठर नहीं टूटा। फिर किसान ने उस लकड़ी के गट्ठर को खोलने के लिए कहा और लड़कों से बारी-बारी से एक-एक लकड़ी तोड़ने के लिए कहा। सबने आसानी से लकड़ियों को तोड़ दिया। किसान ने अपने बेटों को समझाते हुए कहा कि जिस प्रकार वे लकड़ी के गट्ठर को नहीं तोड़ पाए; उसी प्रकार उन्हें भी एक साथ मिल-जुलकर रहना चाहिए ताकि कोई भी उन्हें हानि न पहुँचा सके। यह सुनकर चारों लड़कों की आँखें खुल गईं और वे समझ गए कि आपस में मिल-जुलकर रहने में कितना बल है।

शिक्षा–एकता में बल है।

(ख) परिश्रम का फल

एक चूहा था जिसका नाम पिंकू था। वह जंगल में रहता था। वहाँ एक गिलहरी भी रहती थी जिसका नाम रिंकी था। चूहा आलसी था जबकि गिलहरी रात-दिन काम में जुटी रहती थी। एक दिन गिलहरी चूहे से बोली, "बारिश का मौसम आने वाला है, कुछ भोजन तो जमा कर लो"। चूहा लापरवाही से बोला, "देखा जाएगा।" गिलहरी ने कहा, "मेरा काम तो तुम्हें सचेत करना था, बाकि तुम्हारी इच्छा।" बारिश के दिन आ गए और चूहे के बिल में पानी भर गया। वह एक पेड़ के छेद में घुस गया। भूख के मारे उसका बुरा हाल था। उसे एक खरगोश दिखाई पड़ा। उसके हाथ में फलों की टोकरी थी। उसे देखकर चूहे ने उस खरगोश से कहा, "मित्र बहुत भूख लगी है, खाने को दो ना।" खरगोश ने जवाब देते हुए कहा, "बरसात का मौसम है, अगर तुम्हें मैं फल दे दूँगा तो मैं क्या खाऊँगा।" यह कहकर खरगोश वहाँ से चला गया।

भूख के मारे चूहा रोने लगा। चूहे को रोते हुए देखकर गिलहरी मूँगफली के कुछ दाने लेकर चूहे के पास पहुँची। गिलहरी ने चूहे को मूँगफली के दाने देते हुए कहा, "मैं तो पहले ही कहती थी कि चूहे भाई कुछ मेहनत कर लो। बारिश आराम से कट जाएगी परंतु तुम नहीं माने।" चूहे ने कहा, "तुमने सही कहा था गिलहरी बहन, अगर मैं मेहनत करता तो मुझे यह दिन देखना नहीं पड़ता।" चूहे ने मूँगफली का दाना खाया और भविष्य में मेहनत करने का संकल्प लिया।

शिक्षा–परिश्रम का फल अच्छा होता है।

(ग) सुखी जीवन का रहस्य

एक संत थे जो अपना एक आश्रम बनाना चाहते थे। इसके लिए उन्हें एक जगह से दूसरी जगह यात्रा पर जाना पड़ता था। इसी यात्रा के दौरान उनकी मुलाकात एक साधारण-सी कन्या विदुषी से हुई। विदुषी ने उनका स्वागत किया और संत से कुछ समय कुटिया में रुककर आराम करने की याचना की। संत उनके मीठे व्यवहार से बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने उसका आग्रह स्वीकार कर लिया। विदुषी ने संत को अपने हाथों का स्वादिष्ट भोजन कराया और उनके विश्राम के लिए एक खटिया पर दरी बिछा दी और खुद फ़र्श पर टाट बिछाकर सो गई। विदुषी को सोते ही नींद आ गई। उसके चेहरे के भाव से पता चल रहा था कि विदुषी चैन की सुखद नींद ले रही है। उधर संत को खाट पर नींद नहीं आ रही थी। उन्हें मोटे नरम गद्दे की आदत थी, जो उन्हें दान में मिला था। वे रातभर सोचते रहे कि इस लड़की को इस कठोर ज़मीन पर कैसे सुख की नींद आ सकती है। दूसरे दिन सवेरा होते ही संत ने विदुषी से पूछा कि तुम कैसे इस कठोर धरा पर इतने चैन से सो रही थी। तब उसने बड़ी सरलता से उत्तर दिया, "हे गुरुदेव! मेरे लिए मेरी छोटी-सी कुटिया एक महल के समान ही भव्य है। इसमें मेरे श्रम की महक है। अगर मुझे एक समय ही भोजन मिलता है तो मैं खुद को भाग्यशाली मानती हूँ। जब दिनभर के कार्यों के बाद मैं इस धरा पर सोती हूँ तो मुझे माँ की गोद का आत्मीय अहसास होता है। मैं दिनभर के अपने सत्कर्मों का विचार करते हुए चैन की नींद सो जाती हूँ। मुझे अहसास भी नहीं होता कि मैं इस कठोर धरा पर हूँ।" यह सब सुनकर संत जाने लगे। तब विदुषी ने पूछा, "हे गुरुदेव! क्या मैं आपके साथ आश्रम के लिए धन एकत्र करने चल सकती हूँ?" तब संत ने विनम्रता से उत्तर दिया, "बालिका! तुमने जो मुझे आज ज्ञान दिया है, उससे मुझे पता चला कि चित्त का सच्चा सुख कहाँ है। अब मुझे किसी आश्रम की इच्छा नहीं रह गई।" यह कहकर संत वापस अपने स्थान पर लौट गए और एकत्र किया धन उन्होंने गरीबों में बाँट दिया और स्वयं एक कुटिया बनाकर रहने लगे।

शिक्षा–आत्मशांति एवं संतोष ही सुखी जीवन का रहस्य है।

(घ) तेनालीराम–उधार का बोझ

एक बार किसी वित्तीय समस्या में फँसकर तेनालीराम ने राजा कृष्णदेव राय से कुछ रुपये उधार लिए थे। समय बीतता गया और पैसे वापस करने का समय भी निकट आ गया, परंतु तेनालीराम के पास पैसे वापस लौटाने का कोई प्रबंध नहीं हो पाया था, सो उसने उधार चुकाने से बचने के लिए एक योजना बनाई।

एक दिन राजा को तेनालीराम की पत्नी की ओर से एक पत्र मिला। उस पत्र में लिखा था कि तेनालीराम बहुत बीमार है। तेनालीराम कई दिनों से दरबार में भी नहीं आ रहा था, इसीलिए राजा ने सोचा कि स्वयं जाकर तेनालीराम से मिला जाए। साथ ही राजा को भी संदेह हुआ कि कहीं उधार से बचने के लिए तेनालीराम की कोई योजना तो नहीं है। राजा तेनालीराम के घर पहुँचे। वहाँ

तेनालीराम कंबल ओढ़कर पलंग पर लेटा हुआ था। उसकी ऐसी अवस्था देखकर राजा ने उसकी पत्नी से कारण पूछा। वह बोली, "महाराज, इनके दिल पर आपके दिए हुए उधार का बोझ है। यह चिंता ही इन्हें अंदर-ही अंदर खाए जा रही है और शायद इसी कारण ये बीमार हो गए।"

राजा ने तेनालीराम को सांत्वना दी और कहा, "तेनालीराम! तुम परेशान मत हो। तुम मेरा उधार चुकाने के लिए नहीं बँधे हुए हो। चिंता छोड़ो और शीघ्र स्वस्थ हो जाओ।" यह सुनकर तेनालीराम पलंग से कूद पड़ा और हँसते हुए बोला, "महाराज, धन्यवाद।" "यह क्या है तेनालीराम? इसका मतलब तुम बीमार नहीं थे। मुझसे झूठ बोलने का तुम्हारा साहस कैसे हुआ?" राजा ने क्रोध में कहा। तेनालीराम ने कहा, "नहीं-नहीं महाराज, मैंने आपसे झूठ नहीं बोला। मैं उधार के बोझ से बीमार था। आपने जैसे ही मुझे उधार से मुक्त किया, तभी से मेरी सारी चिंता खत्म हो गई और मेरे ऊपर से उधार का बोझ हट गया। इस बोझ के हटते ही मेरी बीमारी भी जाती रही और मैं अपने को स्वस्थ महसूस करने लगा। अब आपके आदेशानुसार मैं स्वतंत्र, स्वस्थ व प्रसन्न हूँ।" हमेशा की तरह राजा के पास कहने के लिए कुछ न था, वे तेनालीराम की योजना पर मुसकरा उठे।

31. पत्र-लेखन

लिखने की बारी

1. परीक्षा भवन
   अंबाला (हरियाणा)
   25 अप्रैल, 20xx
   आदरणीय नाना जी

   सादर प्रणाम

   कल आपके द्वारा भेजा गया उपहार मिला। उसे देखकर मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। आपने मेरे लिए घड़ी भेजी थी, वह बहुत ही प्यारी लगी। परंतु यह जानकार बहुत दुख हुआ कि आपकी तबीयत खराब है और आप इसके बाद भी मेरे लिए बाज़ार गए।

   अब आपकी तबीयत कैसी है? क्या आप डॉक्टर को दिखाने गए थे? डॉक्टर ने आपसे क्या कहा है? नाना जी आप इस तरह से अपनी सेहत के साथ खिलवाड़ न करें। हमें आपकी बहुत ज़रूरत है। आप अपना ध्यान रखें और अपने स्वास्थ्य के विषय में मुझे सारी जानकारी अवश्य लिखकर भेजिएगा। मुझे आपके पत्र का इंतज़ार रहेगा।

   आपका नाती
   गौरव शर्मा

2. परीक्षा भवन
नई दिल्ली
15 मई, 20xx
पूज्या दीदी
चरण स्पर्श

मेरी वार्षिक परीक्षा दो महीने पश्चात् होने वाली है। वैसे तो मैंने अपने शिक्षकों एवं मित्रों की सहायता से अपना पाठयक्रम लगभग पूरा कर लिया है। कहते हैं परीक्षा देना भी एक कला है। एक सुनियोजित तरीके से परीक्षा कैसे दी जाती है, इस संबंध में मुझे आपकी सलाह की आवश्यकता है ताकि मैं परीक्षा में शत-प्रतिशत अंक प्राप्त कर सकूँ। आपके पत्र की प्रतीक्षा में।

आपकी छोटी बहन
पुनीता

3. डी०पी०एस० छात्रावास
नई दिल्ली
10 अप्रैल, 20xx
पूज्य पिता जी

सादर चरण स्पर्श

मैं यहाँ ईश्वर की कृपा से सकुशल हूँ। आपकी कुशलता की आशा करता हूँ। मुझे विद्यालय के छात्रावास में जगह मिल गई है। भोजन तथा अन्य आवश्यकताओं की इस छात्रावास में बहुत अच्छी व्यवस्था है। यहाँ विद्यार्थी समय पर पढ़ना-लिखना तथा खेलना-कूदना आदि हर कार्य करते हैं। कई छात्र मेरे अच्छे मित्र भी बन गए हैं और छात्रावास के वार्डन से भी मेरी जान-पहचान हो गई है। आप मेरे विषय में किसी प्रकार की चिंता न करें।

माता जी को मेरा चरण स्पर्श।

आपका पुत्र
अभिनव

4. F-15, राजेंद्र मार्ग
उज्जैन
18 अक्टूबर, 20xx
प्रिय सुमित

सस्नेह

तुम्हारा पत्र पढ़कर मुझे बहुत दुख हुआ कि इन दिनों तुम्हारा स्वास्थ्य खराब है। मित्र! अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखो। स्वस्थ रहने के लिए तुम प्रतिदिन व्यायाम किया करो और सुबह जल्दी उठकर पार्क या बगीचे आदि में टहलने जाया करो और व्यायाम किया करो, क्योंकि प्रातःकालीन व्यायाम हमें ताज़गी देता है और हमारे तन-मन को चुस्ती-फुरती से भर देता है।

इस प्रकार व्यायाम हमारे जीवन में बहुत ही उपयोगी है। यदि तुम प्रतिदिन एक घंटा व्यायाम पर लगाओगे तो अपने स्वास्थ्य में तुम्हें शीघ्र ही लाभ दिखाई देगा। तुम्हारे पत्र के उत्तर की प्रतीक्षा में।

तुम्हारा मित्र
राजन

5. 19, लोअर मॉल
शिमला, हिमाचल प्रदेश
20 जून, 20xx
आदरणीय मौसी जी

सादर प्रणाम

कल आपका पत्र प्राप्त हुआ और जानकर मुझे खुशी हुई कि आप सब ठीक हैं। हम सब भी यहाँ ठीक हैं। मैं यह पत्र आपको यह बताने के लिए लिख रहा हूँ कि हमारी गरमी की छुट्टियाँ हो गई हैं। इस समय अमन और अक्षिता का स्कूल भी बंद रहेगा। मौसी जी, मैं चाहता हूँ कि आप लोग कम-से कम दो सप्ताह के लिए शिमला आ जाइए। यहाँ पर घूमने के लिए बहुत सारे स्थान हैं। हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आप हमारे इस आग्रह को नहीं ठुकाराएँगी। आपके आने की प्रतीक्षा में।

आपका पुत्र
अक्षत

6. प्रधानाचार्य महोदय
दिनकर पब्लिक स्कूल
पोरबंदर, गुजरात

विषय– विद्यालय छोड़ने का प्रमाण-पत्र लेने हेतु

महोदय

निवेदन यह है कि मैं आपके विद्यालय का 8वीं कक्षा का छात्र हूँ। मेरे पिता जी और माता जी दोनों पुलिस में हैं और दोनों का यहाँ से नागपुर स्थानांतरण हो गया है। मैं भी परिवार के साथ नागपुर जा रहा हूँ और वहीं विद्यालय में प्रवेश लेना चाहता हूँ जिसके लिए मुझे विद्यालय छोड़ने के प्रमाण-पत्र की आवश्यकता होगी।

अत: आप विद्यालय छोड़ने का प्रमाण-पत्र दिलाने की कृपा करें। इसके लिए मैं सदा आपका आभारी रहूँगा।

आपका आज्ञाकारी शिष्य
अमित नागर
कक्षा–8 (अ)
अनुक्रमांक–38
दिनांक–9 जुलाई, 20xx

7. प्रधानाचार्य महोदय

बाल भारती स्कूल, नई दिल्ली

विषय– पुस्तकें खोने के संबंध में

मान्यवर

मैं आपके विद्यालय का कक्षा–8 का विद्यार्थी हूँ। मैं आपको हमारी कक्षा में लगातार होने वाली चोरी के बारे में सूचित करना चाहता हूँ। लगभग एक सप्ताह हमारी कक्षा से पुस्तकें तथा नोटबुक चोरी हो रही हैं। कक्षा प्रतिनिधि होने के कारण पता चलते ही मैंने कक्षा अध्यापक को यह बात बताई और उन्होंने तुरंत सभी के बैग की तलाशी भी ली, परंतु सामान नहीं मिला। दोपहर लंच ब्रेक में हम सभी छात्र बाहर होते हैं। शायद इसी समय चोरी हो रही है। इस कारण हम सभी छात्र बहुत परेशान हैं।

अत: आपसे यह निवेदन है कि इस विषय पर ध्यान देकर कोई कठोर कदम उठाएँ और दोबारा चोरी न हो इसका सही इंतज़ाम करें।

आपका आज्ञाकारी शिष्य

अमन वर्मा

कक्षा–8 'अ'

दिनांक–19 मई, 20xx

8. परीक्षा भवन

17 जुलाई, 20xx

प्रिय अनुज

खुश रहो

मैं यहाँ कुशल से हूँ और तुम्हारी कुशलता की कामना करता हूँ। तुम पढ़ने में बहुत होशियार रहे हो। कभी-कभी तो पढ़ाई के लिए तुम अपने खाने-पीने का भी ध्यान नहीं रखते। यह बहुत अच्छी बात है कि तुम पढ़ाई के प्रति बहुत लगनशील हो, लेकिन पढ़ाई के साथ-साथ अपने स्वास्थ्य पर भी ध्यान दिया करो। स्वास्थ्य सबसे बड़ी दौलत है। अपने आपको स्वस्थ रखने के लिए सबसे सस्ता और सरल साधन है–प्रात:कालीन सैर। सुबह-सुबह टहलना एक अच्छा व्यायाम है। तुम विद्यालय जाने के समय से थोड़ी देर पहले उठकर इसे आसानी से अपना सकते हो। कल से ही इसे शुरू करो और मुझे यह बताना कि इससे तुम्हें क्या लाभ हुआ?

अपना ध्यान रखना। माँ-पिता जी तुम्हें ढेर सारा प्यार भेज रहे हैं।

तुम्हारा अग्रज
प्रेम धवन

9. प्रधानाचार्य महोदय

ज्ञान भारती स्कूल

वाराणसी, उत्तर प्रदेश

विषय– जुर्माना माफ़ी के लिए पत्र

महोदय

सविनय निवेदन यह है कि मैं आपके विद्यालय की कक्षा–8 की छात्रा हूँ। कल रास्ते में अधिक ट्रैफिक होने के कारण मैं कक्षा में 15 मिनट देर से उपस्थित हुई। इसके कारण मेरी कक्षा अध्यापिका ने 50 रुपये का जुर्माना लगाया है। अतः आपसे निवेदन है कि आप मेरी विवशता को समझें तथा जुर्माना माफ़ करने की कृपा करें।

सधन्यवाद

आपकी आज्ञाकारिणी शिष्या

स्नेहा अरोड़ा

कक्षा–8 'ब'

अनुक्रमांक–40

दिनांक–18 नवंबर, 20xx

10. अधिकारी महोदय

दिल्ली नगर निगम

नई दिल्ली

विषय– आवारा पशुओं की बढ़ती समस्या हेतु

मान्यवर

सविनय निवेदन यह है कि हम नेहरू पार्क कॉलोनी के निवासी आवारा पशुओं की वजह से बहुत परेशान हैं। सड़क पर कभी भी कोई आवारा जानवर किसी गाड़ी के आगे आकर दुर्घटना का कारण बन जाता है। गलियों में भी आवारा पशुओं की चपेट में बहुत बच्चे आ चुके हैं। इसके अलावा ये गंदगी भी बहुत फैलाते हैं।

अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि इस समस्या पर ज़रा गौर किया जाए और कोई ठोस हल निकाला जाए।

सधन्यवाद

भवदीय

आशुतोष भट्ट

दिनांक : 19 अगस्त, 20xx

32. अनुच्छेद-लेखन

लिखने की बारी

1. अनुशासन

अनुशासन शब्द दो शब्दों 'अनु' और 'शासन' के योग से बना है। अपने प्रति स्वयं नियंत्रित रहने की भावना ही अनुशासन का मूल आधार है। यह अनुशासन जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में होना चाहिए। समय का अनुशासन रखने वाले प्रगति करते हैं तो वाणी का अनुशासन लोकप्रियता प्रदान करता है। यह ऐसा गुण है जो किसी को भी गलत दिशा में नहीं ले जाता। 'स्व' को नियंत्रित रखना हमारा स्वभाव होना चाहिए। यही अनुशासन का मूल मंत्र है। जो लोग दूसरों के गलत विचारों का समर्थन करते हैं वे अनुशासित नहीं रह पाते। विद्यार्थी जीवन में तो अनुशासन का विशेष महत्व है। अनुशासित विद्यार्थी ही निश्चित समय में अपनी पढ़ाई पूरी कर पाते हैं और सफलता अर्जित कर पाते हैं।

2. ट्वैंटी-ट्वैंटी मैच की बढ़ती लोकप्रियता

भारत में प्राचीन काल से ही खेलों की परंपरा रही है। इसी क्रम में इंग्लैंड में खेले जाने वाले क्रिकेट का भी प्रचार-प्रसार हुआ। भारत में यह खेल बहुत तेज़ी से लोकप्रिय हुआ। पिछले कुछ वर्षों से पूर्व पचास ओवर के मैच होते थे। दर्शक भी बहुत उत्साह से देखते थे लेकिन समय की अधिकता के कारण लोग इसे कम समय में देखना चाहते थे। इसका परिणाम यह हुआ कि बाद में बीस-बीस ओवर के मैचों का चलन बढ़ा। इस मैच को देखने के लिए लोग अधिक आकर्षित होने लगे। अब किसी की मैच का निर्णय कुछ घंटो में ही हो जाता है। इसके कारण उत्साह बना रहता है। भारत सरकार भी ऐसे मैचों को विशेष महत्व देती है। वर्तमान पीढ़ी के लोगों के लिए ट्वेंटी-ट्वेंटी मैच देखना उत्सव के समान हो गया है।

3. जनसंख्या विस्फोट

जनसंख्या का शब्दिक अर्थ है—लोगों की संख्या। भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, परंतु यह समझना ज़रूरी है कि जब जीवन जीने के लिए ज़रूरी साधनों की कमी हो जाती है तो समस्या उत्पन्न होती है। आज हमारे देश की जनसंख्या चीन से भी अधिक होने जा रही है। प्रकृति ने हमें सब कुछ प्रदान किया लेकिन उसका भंडार सीमित है। सीमित साधनों पर जनसंख्या का बढ़ता दबाव देश को भुखमरी की ओर ले जा सकता है। यह स्थिति बेहद चिंताजनक है। महँगाई, बेरोज़गारी, अभाव या इस तरह की सभी समस्याओं की जड़ बढ़ती जनसंख्या ही है। इसे नियंत्रित करने के लिए सरकारी प्रयासों के साथ व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी का निर्वाह करना भी आवश्यक है। माँग और पूर्ति के

सिद्धांत पर ही महँगाई निर्भर करती है। उत्पादन की अपनी सीमा है। इस दिशा में सकारात्मक प्रयास की नितांत आवश्यकता है।

4. ईमानदारी उत्तम गुण है

ईमानदारी एक ऐसा मानवीय गुण है जो विश्वास को बढ़ावा देता है। जो लोग ईमानदार होते हैं उनके साथ लोग कार्य करना चाहते हैं और उनकी बातों पर विश्वास भी करते हैं। कहा गया है कि ईमानदार व्यक्ति हज़ारों मनकों में चमकने वाला अलग हीरा है। यह ईमानदारी अपने कार्य, वाणी एवं समय के प्रति होनी चाहिए। स्वार्थ की भावना से परे यह ज़िम्मेदार लोगों का विशेष गुण है। हमारे देश में फैला भ्रष्टाचार इस बात का प्रमाण है कि लोग ईमानदारी से अपना कार्य नहीं करना चाहते। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि जो लोग ईमानदार नहीं होते वे निश्चित रूप से स्वयं के साथ ही देश के गौरव और इसकी संपत्ति को बहुत ही हानि पहुँचाते हैं।

5. व्यायाम का महत्व

व्यायाम स्वास्थ्य का आधार है। प्रात:काल व्यायाम करना शरीर को ओजस्वी बनाए रखने का सरल उपाय है। व्यायाम करते समय शरीर से पसीना निकलता है। इसके द्वारा शरीर के भीतर मौजूद विषैले तत्व भी निकल जाते हैं। प्राणायाम से तो फेफड़ों को पर्याप्त ऑक्सीजन मिलती है। इससे फेफड़े स्वस्थ रहते हैं। रुधिर परिसंचरण तंत्र के सक्रिय होने के कारण रुधिर वाहनियाँ पूरे शरीर में रक्त पहुँचाती हैं। मस्तिष्क की धारणा शक्ति बढ़ती है। नियमित व्यायाम करने से स्मरणशक्ति में भी वृद्धि होती है। प्रात:कालीन भ्रमण करना भी सेहत के लिए एक तरह का वरदान ही है। कहा गया है कि सुबह-शाम की हवा लाख रुपये की दवा अर्थात् यदि कोई नियमित रूप से भ्रमण करता है तो वह कई बीमारियों से मुक्त रहता है।

6. मीठी वाणी का महत्व

वाणी के महत्व को दर्शाते हुए संत कबीरदास ने लिखा था कि–

वाणी एक अमोल है जो कोई बोले जानि।
हिए तराजू तौलिए तब मुख बाहर आनि।।

अर्थात् वाणी का महत्व तभी है जब उसे हृदय रूपी तराजू से तोलकर अर्थात् सोच-विचारकर बोला जाए। सरस वाणी सभी को अपनी तरफ़ आकर्षित करती है जबकि कटु वाणी बोलने वाले से कोई बात भी नहीं करना चाहता। कौआ किसी का कुछ छीनता नहीं और कोयल किसी को कुछ देती नहीं परंतु अपनी वाणी की कटुता और माधुर्य के कारण ही वे लोगों के लिए प्रिय-अप्रिय हो जाते हैं। मीठी वाणी मित्रता का आधार है जबकि कटु वाणी शत्रुता का कारण बन जाता है। एक विशेष बात यह भी है कि किसी की वाणी उसके संस्कार का परिचायक होती है। शिक्षा का उद्देश्य भी तभी पूरा होता है जब साथ मिलकर अच्छा कार्य किया जा सके।

7. परिश्रम सफलता का मूलमंत्र

अपने जीवन में सफलता प्राप्त करना सभी की इच्छा होती है, परंतु इसके लिए कठिन परिश्रम की आवश्यकता होती है। बहुत-से लोग ऐसे होते हैं जो परिश्रम करना ही नहीं चाहते। संस्कृत साहित्य में कहा गया है कि 'उद्यमेन हि सिधयन्ति कार्याणि न मनोरथैः' अर्थात् परिश्रम से ही सिद्धि प्राप्ति है, केवल सोचने से मन की इच्छाएँ पूरी नहीं होतीं। यहाँ एक बात विचारणीय है कि परिश्रम का लाभ भी तभी मिलता है जब वह निश्चित समय में और व्यवस्थित तरीके से किया जाए। समय और परिश्रम का बहुत गहरा संबंध है। कई बार ऐसा होता है कि बहुत परिश्रम करने पर भी हानि उठानी पड़ती है। इसका एकमात्र कारण है समय और श्रम में संतुलन न हो पाना। समय बलवान है, परंतु परिश्रम का भी अपना महत्व है। परिश्रम भी दो तरह का होता है—शारीरिक और मानसिक। दोनों तरह के परिश्रम भी अलग-अलग ही होते हैं, परंतु इतना निश्चित है कि सच्चे अर्थों में सफलता प्राप्त करने के लिए परिश्रम के अलावा दूसरा कोई विकल्प नहीं है।

8. हमारे राष्ट्रीय पर्व

राष्ट्रीय पर्व की बात करने से पहले हमें राष्ट्र को समझना चाहिए। राष्ट्र के तीन आधारभूत तत्व हैं—भूभाग, भूभाग पर रहने वाले लोग और वहाँ पर रहने वाली संस्कृति। इसके बाद ही सरकार की बात होती है। हमारे देश में आज़ादी के बाद से राष्ट्रीय पर्वों को मनाने की परंपरा शुरू हुई। जब देश आज़ाद हुआ तो उस दिन पंद्रह अगस्त को स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जाता है। 26 जनवरी 1950 को हमारे देश का संविधान लागू हुआ। उस दिन को गणतंत्र दिवस के रूप में मनाते हैं। इस दिन भी पूरे देश में धूमधाम से उत्सव मनाया जाता है। 2 अक्टूबर को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जन्मदिन को किसी राष्ट्रीय पर्व के समान ही महत्व दिया जाता है।

9. पर्वतीय सुंदरता

भारत का प्राकृतिक सौंदर्य अनुपम है। विश्व का कोई भी देश ऐसा नहीं है जो इतनी अधिक प्राकृतिक विविधता से परिपूर्ण हो। भारत के उत्तर में हिमालय है तो दक्षिण में अरब सागर लहराता रहता है। पश्चिमी घाट का सौंदर्य तो इतना है उसे देखकर लगता है जैसे ईश्वर ने इसे अपने हाथों से सँवारा है। कश्मीर की शोभा तो अन्यत्र दुर्लभ है। भारत में मौसम की अनुकूलता एवं प्रतिकूलता तो देखते ही बनती है। कहीं गहरी घाटियाँ तो कहीं ऊँचे पहाड़, कहीं रेगिस्तान तो कहीं घास के हरे-भरे मैदान देखने को मिलते हैं। यहाँ की शस्य श्यामला धरती हर तरह से सुगंध पूरित है। पर्वतों के आसपास के शंक्वाकार वृक्ष तो ऐसे लगते हैं जैसे वे नीले आसमान का स्पर्श करना चाहते हैं। सारांश का प्राकृतिक सुंदरता अवर्णनीय है।

10. स्वच्छ भारत

स्वच्छता संपन्नता का आधार है। गंदगी से दरिद्रता आती है। यह कहना भी अजीब लगता है कि सब जगह स्वच्छता रखनी चाहिए क्योंकि यह तो हमारा स्वभाव होना चाहिए। स्वच्छता बनाए रखना

व्यक्तिगत जीवन में जितना आवश्यक है, सार्वजनिक जीवन में भी उतना ही महत्वपूर्ण है। हमें अपने घर के आसपास बहुत साफ़-सुथरा रखना चाहिए। सार्वजनिक स्थानों पर भी इस बात का ध्यान रखना चाहिए। यद्यपि सरकारी विभाग की तरफ़ से नियुक्त कर्मचारी सफ़ाई कार्य में लगे रहते हैं तथापि हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वहाँ छिलके या किसी तरह का कूड़ा-कचरा न फेंके। ऐसा करके भी हम सफ़ाई के लिए सहयोग कर सकते हैं। यह समझने योग्य बात है कि लोग सड़कों पर कूड़ा फेंक देते हैं जो कि बहकर नाली में चला जाता है। इससे नालियाँ भी बंद हो जाती हैं। वर्षा ऋतु में गंदा पानी सड़कों पर फैल जाता है। यह बीमारी का कारण बन जाता है। भारतवर्ष को स्वच्छ बनाने के लिए हमें इन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

33. निबंध-लेखन

लिखने की बारी

1. मेरा प्रिय खेल

खेल खेलना किसको प्रिय नहीं लगता। विश्व में अनेक प्रकार के खेल खेले जाते हैं; जैसे–क्रिकेट, हॉकी, फुटबॉल, टेनिस आदि। क्रिकेट मेरा प्रिय खेल है। जब भी मुझे अवसर मिलता है मैं क्रिकेट खेलता हूँ। हमारे स्कूल में क्रिकेट की दो टीमें हैं। प्रत्येक टीम में ग्यारह-ग्यारह खिलाड़ी हैं। सबके पास सफ़ेद ड्रेस है। टॉस उछालकर हम निर्णय करते हैं कि पहले कौन-सी टीम बल्लेबाज़ी करेगी और कौन-सी टीम गेंद फेंकेगी। इस खेल में एक पिच होती है जो मैदान के बीचों-बीच बनी होती है। यहीं पर सारा खेल केंद्रित रहता है। इसकी लंबाई 22 गज (लगभग 20 मीटर) होती है। इसके दोनों ओर तीन-तीन डंडे लगे होते हैं, जिन्हें 'विकेट' कहते हैं। मैदान के चारों ओर एक सीमा-रेखा होती है, जिसे 'बाउंड्री लाइन' कहा जाता है। सारा खेल इसी सीमा-रेखा के अंदर खेला जाता है। यदि क्रिकेट की गेंद सीमा पार कर जाए, तो चौका माना जाता है और यदि गेंद मैदान में बिना टप्पा खाए पार हो जाए, तो छक्का माना जाता है। इस खेल में खिलाड़ी कई प्रकार से आउट होते हैं। यदि गेंद विकेट पर लग जाए या क्षेत्ररक्षक गेंद को लपक ले, तो बल्लेबाज़ आउट मान लिया जाता है। एंपायर मैच का निर्णय करते हैं।

मुझे यह खेल इसलिए पसंद है क्योंकि इसमें रोचकता आदि से अंत तक बनी रहती है। भारत की राष्ट्रीय टीम में अनेक बल्लेबाज़ों ने विश्व में नाम कमाया है। इसमें सचिन तेंदुलकर प्रमुख हैं। ये मेरे आदर्श खिलाड़ी हैं। मैं भी उनके जैसा महान खिलाड़ी बनने का सपना देखता हूँ। मेरी भी इच्छा है कि बड़ा होकर मैं भारत का प्रतिनिधित्व करूँ। इसके लिए मैं कड़ी मेहनत कर रहा हूँ, क्योंकि सच्ची लगन और मेहनत से ही कामयाबी मिलती है। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह मेरी इस इच्छा को पूरा करने में मेरी सहायता करे।

2. जीवन लक्ष्य

मनुष्य की सदा से ही यह इच्छा रही है कि वह अधिकाधिक उन्नति करता हुआ जीवन में सफलता प्राप्त करे और सुखी जीवन व्यतीत करे। प्रत्येक व्यक्ति की अपनी अभिरुचि होती है जिसके अनुसार वह अपने जीवन का लक्ष्य तय करता है। कोई डॉक्टर बनना चाहता है तो कोई पायलट। कोई सी०ए० बनना चहता है तो कोई सैनिक। कोई नेता बनना चाहता है तो कोई ज़ज। मेरी रुचि इनसे अलग है। मैं बड़ा होकर इंजीनियर बनना चाहता हूँ। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि इंजीनियर का पद सामाजिक दृष्टि से उच्च पद है जिसे आदर की दृष्टि से देखा जाता है। इंजीनियर वह प्रशिक्षित व्यक्ति होता है, जिसके लिए नौकरी और स्वरोज़गार के दोनों ही मार्ग खुले रहते हैं।

वास्तव में इंजीनियर बनने के पीछे मेरा जो उद्देश्य है, वह है—गाँवों का विकास। गाँवों की उन्नति के बिना देश को उन्नत बनाने की कल्पना बेमानी है। मैं इंजीनियर बनकर औद्योगिक विकास में योगदान करने की जगह कृषि के क्षेत्र में अपना योगदान देना पसंद करूँगा। मैं चाहता हूँ की कृषि-प्रणाली को उन्नत बनाने वाले यंत्रों का आविष्कार करूँ। जो परंपरागत यंत्र हैं, उनमें सुधार करूँ, जिससे कृषि की मानवीय श्रम पर निर्भरता कम हो। इससे किसानों का जीवन सुखमय होगा तो वहीं उपज में वृद्धि होगी। मैं जानता हूँ कि अपना लक्ष्य प्राप्त करने के लिए मुझे कठोर परिश्रम करना होगा। 'जहाँ चाह वहाँ राह' वाली कहावत चरितार्थ करते हुए मैं अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त करूँगा। इसके लिए मैंने अभी से परिश्रम करना शुरू कर दिया हैं। मैंने भौतिक-विज्ञान, रसायन-विज्ञान और गणित जैसे कठिन समझे जाने वाले विषयों पर ध्यान देना शुरू कर दिया है। मैं अगली कक्षाओं में इतना परिश्रम करना चाहता हूँ कि उनमें 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने के साथ ही अधिक-से-अधिक ज्ञान की प्राप्ति कर सकूँ। मुझे विश्वास है कि मैं अपने जीवन के लक्ष्य को अवश्य प्राप्त करूँगा।

3. पेड़-पौधे और हम

पृथ्वी को बचाए रखने के लिए पेड़-पौधों का होना अत्यंत आवश्यक है। हम पेड़-पौधों के बिना जीवित नहीं रह सकते हैं। पेड़-पौधों से हमें अनगनित और बहुमूल्य चीज़ें प्राप्त होती हैं। हमारी अनेक ज़रूरतों को पेड़-पौधे पूरा करते हैं। सर्वप्रथम हमें जीने के लिए ऑक्सीजन की ज़रूरत है। इसके बिना हमारा और अन्य जीव-जंतुओं का जीवित रहना असंभव है। अगर पेड़-पौधे नहीं होंगे तो वर्षा नहीं होगी। पेड़-पौधे वातावरण में आर्द्रता पैदा करते हैं। पेड़-पौधों की वजह से पृथ्वी पर वर्षा होती है। पेड़-पौधों को बचाए रखना हमारा परम कर्तव्य है। ये भूमि कटाव को रोकने में भी सहायक हैं।

पेड़-पौधे बाढ़ जैसे हालात को रोकने में मदद करते हैं। जब बाढ़ आती है तो पेड़ों की जड़ें, मिट्टी को रोकती हैं। पेड़ हमें छाया, फल और लकड़ी प्रदान करते हैं। पेड़ों से हमें औषधियाँ प्राप्त होती हैं। वन संपदा हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। वनों का संरक्षण भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। पेड़ों पर पक्षी अपना घोंसला बनाते हैं। अगर पेड़ नहीं होंगे तो पशु-पक्षियों का जीवन कठिन हो जाएगा। पक्षियों को रहने के लिए उनका घर नहीं मिलेगा। मनुष्य इतना स्वार्थी हो गया है कि निरंतर पेड़ों को काटकर खुद अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मार रहा है।

जंगलों से हमें अनगिनत वस्तुएँ प्राप्त होती हैं। उन्हीं पेड़ों को लगातार काटने की वजह से प्रलय जैसे हालात हो गए हैं। आए दिन तूफ़ान, बाढ़ और भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदाएँ दस्तक दे रही हैं। वक्त आ गया है कि हम इनके संरक्षण की ओर ध्यान दें। जितने वृक्ष काटे जा रहे हैं, उससे अधिक वृक्ष लगाएँ। मनुष्य ने जैसे-जैसे उन्नति की, उसकी ज़रूरतें बढ़ गईं। लकड़ियों का इस्तेमाल फर्नीचर आदि बनाने में अत्यधिक होने लगा है। जंगलों को काटकर बड़ी-बड़ी इमारतें मनुष्य ने बनाई हैं। जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ी, हर चीज़ की माँग बढ़ी। इसकी पूर्ति के लिए उसने जंगलों का सफ़ाया कर दिया। पर्यावरण की रक्षा करना हम सभी का कर्तव्य है। हम सबको मिलकर पौधे लगाने चाहिए। पेड़ों की कटाई के विरुद्ध जागरूकता फैलानी चाहिए। लोगों को पेड़ और पर्यावरण का महत्व समझाना चाहिए। मनुष्य को अब यह समझना होगा कि वृक्ष हमारे सच्चे मित्र हैं। अपने मित्रों को कष्ट पहुँचाकर हम स्वयं कभी सुखी नहीं रह सकते।

4. मेरा प्रिय पर्व

हमारा देश भारत पर्वों एवं त्योहारों का देश है। यहाँ शायद ही ऐसा कोई महीना हो जब कोई पर्व या त्योहार न मनाया जाता हो। यहाँ कभी धर्म के आधार पर त्योहार मनाए जाते हैं, कभी मौसम के आधार पर तो कभी फसलों के आधार पर। इन त्योहारों में दशहरा, दीपावली, रक्षाबंधन, होली आदि प्रमुख हैं। मेरा प्रिय त्योहार होली है। यह त्योहार हर छोटे-बड़े को मस्ती एवं उल्लास से भर देता है। इस त्योहार की मस्ती का इंतज़ार हर आयु वर्ग के लोगों को रहता है। इस दिन लोग रंग, अबीर-गुलाल और मस्ती के रंग में इस तरह डूब जाते हैं कि उन्हें अपना होशोहवाश ही नहीं रहता। होली मनाने के संबंध में एक पौराणिक कथा प्रचलित है। असुरराज हिरण्यकश्यप का पुत्र प्रह्लाद ईश्वर का पक्का भक्त था। हिरण्यकश्यप ने उसे ईश्वर की भक्ति से विमुख करने के लिए तरह-तरह के उपाय अपनाए, किंतु वह सफल न हो सका। अंत में उसने अपनी बहन होलिका को आदेश दिया कि तू प्रह्लाद को अपनी गोद में लेकर आग में बैठ जा। अग्नि से न जलने का वरदान पाने के कारण होलिका ऐसा करने को तैयार हो गई। प्रभु की कृपा से प्रह्लाद का बाल भी बाँका न हुआ और होलिका जलकर राख हो गई। इस तरह होलिका दहन के रूप में यह त्योहार प्रति वर्ष मनाया जाने लगा।

होली वंसत ऋतु का त्योहार है। इस समय सर्दी बीत चुकी होती है, ग्रीष्म ऋतु दस्तक देती हुई प्रतीत होती है। सर्दी और गर्मी के संधिकाल में मौसम अत्यंत सुहावना होता है। इस समय प्राकृतिक सौंदर्य अपने चरम पर होता है। चारों ओर छाई हरियाली और खिले फूल वातावरण को मादक बना देते हैं।

फागुन मास की पूर्णिमा की रात में होलिका दहन किया जाता है। अगले दिन सुबह से ही बच्चों तथा नवयुवकों की टोली रंग-गुलाल लिए निकल पड़ती है। वे एक-दूसरे को रंग से भिगोते हैं और अबीर लगाते हुए होली की शुभकामनाएँ देते हैं। बूढ़ों को अबीर लगाकर उनका आशीर्वाद लेते हैं। इस अवसर पर विभिन्न प्रकार के पकवान बनाए जाते हैं जो होली की मिठास को और भी बढ़ा देते हैं। हमें होली को बड़े आदर और प्रेम के साथ मनाना चाहिए।

5. हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी

भारत के संविधान में हिंदी भाषा को एक महत्वपूर्ण स्थान दिया है और इसलिए यहाँ की राष्ट्रभाषा के रूप में इसकी पहचान भी है। यह भाषा देवनागरी लिपि में है और इसके अधिकतर शब्द संस्कृत से लिए गए हैं एवं इसकी व्याकरण भी संस्कृत से ही प्रेरित है। पूरी दुनिया में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं, लेकिन हिंदी चौथे स्थान पर बोली जाने वाली भाषा है। जब भारत को स्वतंत्रता मिली उस वक्त यहाँ पर किसी एक भाषा को महत्वपूर्ण दर्जा नहीं मिला हुआ था, इसलिए यह निर्णय लिया गया कि हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिया जाए।

हिंदी भाषा बोलने और समझने में काफ़ी आसान है इसलिए आज 90 करोड़ लोग इसे आसानी से समझ लेते हैं। इसे सीखने के लिए अधिक पुस्तकें पढ़ने की आवश्यकता नहीं पड़ती, बल्कि कम-से-कम मेहनत करके और जल्दी ही आप हिंदी सीख लेते हैं। राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी देश की एकता की भाषा है। यह एक समृद्ध भाषा है। इस भाषा में देश की मिट्टी की महक है। इसका साहित्य ऊँचे दर्जे का है। लगभग सभी विषयों पर पुस्तक हिंदी में उपलब्ध हैं।

आज विदेशों में भी हिंदी के प्रति आकर्षण बढ़ रहा है। इतना होने पर भी हमारे देश में आज भी अंग्रेज़ी का बहुत महत्व है। नौकरी या ऊँचा पद पाने के लिए अंग्रेज़ी का ज्ञान अनिवार्य समझा जाता है, पर यह कभी हमारी राष्ट्रभाषा नहीं बन सकती क्योंकि इस विदेशी भाषा को बहुत कम लोग समझते हैं। इस भाषा में देश की आत्मा और संस्कृति की वास्तविक अभिव्यक्ति नहीं हो सकती। निस्संदेह हिंदी सच्चे अर्थों में हमारे देश की राष्ट्रभाषा है। अत: हिंदी की शिक्षा एवं प्रसार को उचित महत्व देना चाहिए।

हिंदी दिवस भारत में हर वर्ष 14 सितंबर को मनाया जाता है। इसके प्रति अपना प्रेम और सम्मान प्रकट करना हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य है। इसी कर्तव्य हेतु हम 14 सितंबर के दिन को 'हिंदी दिवस' के रूप में मनाते हैं। राष्ट्रभाषा हिंदी का भविष्य उज्ज्वल है।

6. संचार के आधुनिक साधन

संचार मानव की प्रगति के लिए अति महत्वपूर्ण है। यह विश्व के एक देश में बैठे लोगों को दूसरे देशों से जोड़ता है। आज मानव सभ्यता प्रगति की ओर अग्रसर है। इसका प्रमुख श्रेय संचार के आधुनिक साधनों को जाता है। संचार के क्षेत्र में मनुष्य की उपलब्धियों ने विश्व की दूरियों को समेटकर बहुत छोटा कर दिया है। प्राचीन काल में एक स्थान से दूसरे स्थान तक संदेश भेजने के लिए दूत भेजे जाते थे जो प्राय: आवागमन के लिए घोड़ों का प्रयोग करते थे। पक्षियों द्वारा संदेश भेजने के भी अनेक उदाहरण मिलते हैं, परंतु आज स्थिति पूर्णत: बदल चुकी है। तार की खोज के साथ ही संचार के क्षेत्र में क्रांति का प्रारंभ हो गया। इसके पश्चात् दूरभाष के आविष्कार ने तो संचार जगत में हलचल ही मचा दी।

वर्तमान समय में संचार के क्षेत्र में वैज्ञानिकों ने अद्भुत सफलताएँ अर्जित की है। कंप्यूटर के आविष्कार के बाद इस क्षेत्र में प्रतिदिन नए आयाम स्थापित हो रहे हैं। संचार जगत में ई-मेल की

लोकप्रियता धीरे-धीरे बढ़ती जा रही है। इसके माध्यम से हम विश्व के किसी भी कोने में बैठे व्यक्ति से संपर्क स्थापित कर सकते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसमें होने वाला खर्च बहुत कम है। संचार के क्षेत्र में 'विडियो कॉन्फ्रेंसिंग' भी वैज्ञानिकों की एक अद्‌भुत देन है। इसके माध्यम से दो या दो से अधिक व्यक्ति एक-दूसरे से मीलों दूर रहकर भी आपस में बातचीत कर सकते हैं तथा साथ ही स्क्रीन पर एक-दूसरे को देख भी सकते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि मनुष्य ने संचार के क्षेत्र में असीम सफलताएँ अर्जित की हैं। आज इन्हीं सफलताओं व उपलब्धियों के कारण विश्व के सभी देशों का आपसी संपर्क बढ़ा है। हम भारत में बैठे हुए भी दुनिया के दूसरे कोने जैसे अमेरिका में होने वाली घटनाओं से तुरंत अवगत हो जाते हैं। संचार साधनों के विकास ने अन्य क्षेत्रों में व्यापार प्रगति को अपेक्षाकृत सरल बना दिया है। आज व्यापार से संबंधित कार्य संचार के साधनों की बदौलत घर या कार्यालय में बैठे-बैठे संपन्न किए जा सकते हैं। यदि संचार के साधनों को हम अपने जीवन से निकाल दें तो फिर से आदिकाल में पहुँच जाएँगे। इसके बिना जीवन अधूरा है।

7. पर्यावरण संरक्षण

मानव और प्रकृति का संबंध अनादिकाल से चला आ रहा है। दोनों एक-दूसरे पर अवलंबित हैं तथा एक-दूसरे के पोषक हैं। पर्यावरण अपने संरक्षण के लिए मनुष्य पर आधारित है, तो मनुष्य भी पूर्णतः पर्यावरण पर निर्भर है। सभी प्राणियों का हमारे प्राकृतिक परिवेश के साथ घनिष्ठ संबंध है। इसका हमारे जीवन में महत्व क्या है, इसे इस बात से समझा जा सकता है कि हमारा जीवन पाँच तत्वों जल, पृथ्वी, वायु, अग्नि और आकाश से बनता है तथा मृत्यु के बाद पुनः इसी में विलीन हो जाता है।

यदि पर्यावरण के संरक्षण की ओर हमारा ध्यान नहीं गया तो निश्चित ही एक दिन पृथ्वी भी मंगल आदि अन्य ग्रहों की भाँति जीवन विहीन हो जाएगी। पर्यावरण को संरक्षित करने के लिए सबसे पहले हमें इसके संतुलन को बिगाड़ने वाले कारकों को नियंत्रित करना होगा। जिन भी कारकों से हमारी वायु, परिवेश आदि प्रभावित हो रहे हैं, उनमें कमी करने के उपाय अपनाने चाहिए। यज्ञ, अन्न, जल, वायु, औषधि संरक्षण के अच्छे उपाय हो सकते हैं। भारतीय संस्कृति में ऋषि-मुनियों द्‌वारा नित्य यज्ञ की परंपरा अपनाई जाती थी। वृक्ष लगाने को पुत्रोत्पादन जैसा पुण्य कार्य माना गया है।

हमारी संस्कृति के मूल में प्रकृति रही है, जिसके साथ सह अस्तित्व की भावना के साथ जीने की पद्‌धति हमारे पूर्वजों ने अपनाई थी। प्रकृति, पेड़-पौधे, नदियाँ, पहाड़ को हमने पूजनीय मानकर इन्हें पवित्र रखने का विचार भी इसे संरक्षित करने से प्रेरित था। पर्यावरण के कारण ही हम जीवित हैं। यदि इसमें आवश्यकता से अधिक गर्मी या ठंडक बढ़ जाए तो जीवन का अंत हो सकता है। यदि प्राकृतिक रूप से मिलने वाला जल मिलना बंद हो जाए, धरती दूषित फ़सलें उगाने लगे तो हमारा जीवन दूभर हो जाएगा। हम मानव और जीव सुरक्षित और स्वस्थ वातावरण में ही जी सकते हैं। इसलिए हमारा दायित्व बनता है कि हम अपने पर्यावरण को स्वस्थ बनाए रखें। इसके लिए हमें धरती को हरा-भरा रखना होगा। इसके जल-संसाधनों को पवित्र बनाए रखना होगा। हम अपनी आकांक्षाओं के लिए जो अंधाधुंध प्रदूषण फैला रहे हैं, उसे रोकना होगा।

8. मनोरंजन के आधुनिक साधन

आज का युग विज्ञान का युग है। इस युग में मनोरंजन के अनेक साधन हमें उपलब्ध हैं। इनका सदुपयोग करके हम अपने जीवन को आनंदमय कर सकते हैं। मनोरंजन का जीवन में बहुत महत्व है। स्वस्थ मनोरंजन जीवन में औषधि का काम करता है। जिस प्रकार शरीर को निरोग रखने के लिए अच्छे भोजन की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार जीवन में आनंद के लिए मनोरंजन की आवश्यकता होती है।

मनोरंजन के मुख्य रूप से दो प्रकार हैं। मनोरंजन के पहले प्रकार में रेडियो, दूरदर्शन, चलचित्र, पत्र-पत्रिकाएँ आदि आते हैं। इन सबका आनंद घर में बैठे-बैठे या चारदीवारी के भीतर बैठकर लिया जा सकता है। मनोरंजन के दूसरे प्रकार—कुश्ती, कबड्डी, रस्साकशी, तैराकी, हॉकी, प्रातःभ्रमण आदि भी मनोरंजन के साधन हैं। इनका आनंद कमरे की चारदीवारी से बाहर निकलकर ही लिया जा सकता है।

रेडियो मनोरंजन का महत्वपूर्ण साधन है। इससे मनोरंजन तो होता ही है, ज्ञानवर्धन भी होता है। रेडियो की भाँति दूरदर्शन भी मनोरंजन की दृष्टि से बहुत उपयोगी साधन है। इसके द्वारा चलचित्रों का आनंद भी लिया जा सकता है और मैचों को खेलते हुए देखा जा सकता है। इसी प्रकार पत्र-पत्रिकाएँ, प्रेक्षागृह, पुस्तकालय, कवि सम्मेलन तथा विभिन्न प्रकार की गोष्ठियाँ भी मनोरंजन का अच्छा साधन हैं। विभिन्न प्रकार के खेलों से भी हमारा मनोरंजन होता है। इससे शरीर और मन दोनों स्वस्थ रहते हैं। देश-विदेश में घूमना या पर्वतारोहण करना भी मनोरंजन का साधन है। इससे ज्ञान और अनुभव की प्राप्ति होती है।

इस प्रकार आज हमें मनोरंजन के अनेक प्रकार के साधन उपलब्ध हैं। इनके समुचित प्रयोग से व्यक्ति अपना मनोविनोद कर सकता है और अपना तन-मन स्वस्थ रख सकता है।

9. पुस्तकालय

'पुस्तकालय' शब्द 'पुस्तक + आलय' इन दो शब्दों के योग से बना है। इसका अर्थ है—पुस्तकों का घर। अध्ययन के लिए जहाँ अनेक पुस्तकों का संग्रह होता है, उसे ही पुस्तकालय कहते हैं। पुस्तक प्रेमी अपनी इच्छा और रुचि के अनुसार वहाँ एकांत और शांत वातावरण में बैठकर अपनी जिज्ञासा को पुस्तकों के माध्यम से शांत करते हैं। पुस्तकालय निजी, विद्यालयी तथा सार्वजनिक भी होते हैं। पुस्तक-प्रेमी अपना निजी पुस्तकालय भी बनाते हैं। विद्यालय के पुस्तकालयों का उपयोग वहीं के छात्र व शिक्षक करते हैं, लेकिन सार्वजनिक पुस्तकालयों का प्रयोग जन-सामान्य कर सकता है। विभिन्न संस्थाओं द्वारा चलाए गए पुस्तकालय तथा राजकीय पुस्तकालय इसी श्रेणी में आते हैं।

पुस्तकालयों का सबसे बड़ा लाभ यह है कि जिन पुस्तकों को खरीदकर पढ़ना आम आदमी के बस में नहीं होता, उन्हें हम थोड़ा-सा शुल्क देकर पढ़ सकते हैं। पुस्तकालय पढ़ने में तो रुचि जगाते ही हैं, साथ-साथ ये हमारे अकेलेपन को भी दूर करते हैं। ये हमारे सबसे अच्छे मित्र हैं क्योंकि यहीं

बैठकर हम अपने खाली समय का सदुपयोग कर सकते हैं। जो पुस्तकें अप्राप्य हैं, वे पुस्तकालयों से लेकर पढ़ी जा सकती हैं। पुस्तकालयों में देश-विदेश के समाचार-पत्र, विभिन्न भाषाओं तथा विषयों की पत्र-पत्रिकाएँ उपलब्ध होती हैं। पुस्तकालय वास्तव में ज्ञानवर्धन के महत्वपूर्ण स्रोत हैं।

पुस्तकालय जब हमारे लिए इतने उपयोगी हैं तो हमें भी पुस्तकालय के नियमों का पालन करना चाहिए। हमें वहाँ के शांत वातावरण को बातें करके भंग नहीं करना चाहिए। कुछ लोग पुस्तकों पर लिख देते हैं या रेखांकित कर देते हैं। कुछ लोग तो पुस्तकों से पृष्ठ ही फाड़ लेते हैं। वे यह भूल जाते हैं कि पुस्तकालय सार्वजनिक संपत्ति है। यह हमारा स्वयं का नुकसान है। हमें पुस्तकों को सुरक्षित और सँभालकर रखना चाहिए।

आज कंप्यूटर व इंटरनेट के युग में पुस्तकालयों का महत्व कुछ कम होता जा रहा है, किंतु वास्तविकता यह है कि पुस्तकों में रुचि रखने वालों तथा विद्यार्थियों के लिए पुस्तकालय आज भी वरदान से कम नहीं है। सरकार को पुस्तकालयों के रख-रखाव की ओर ध्यान देना चाहिए।

10. समाचार-पत्र

वर्तमान समय में समाचार-पत्र पढ़ना हमारी दैनिक ज़रूरत बन गई है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज की गतिविधियों से परिचित रहना चाहता है और इसका सहज उपलब्ध साधन है–समाचार-पत्र। हमारे देश में अनेक समाचार-पत्र प्रकाशित होते हैं। कई समाचार-पत्र तो लाखों की संख्या में प्रकाशित होते हैं।

समाचार-पत्रों के प्रकाशन की प्रक्रिया बहुत जटिल है। विभिन्न स्थानों से समाचारों का संकलन करना, उन्हें संपादित करना एवं अल्पकाल में प्रकाशित करना तथा समाचार-पत्र को पाठकों तक समय पर पहुँचाना कोई आसान काम नहीं है। बड़े-बड़े समाचार-पत्रों के संवाददाता सारे विश्व में फैले हुए हैं। वे ही वहाँ से समाचार भेजते हैं।

वर्तमान युग में समाचार-पत्रों की महत्ता असंदिग्ध है। इसे प्रजातंत्र का चौथा स्तंभ माना जाता है। समाचार-पत्र सरकार एवं संस्थाओं के भ्रष्टाचार एवं गलत कार्यों की पोल खोलते हैं और जनता के हितों की रक्षा करते हैं। वे आम लोगों में जन-चेतना उत्पन्न करने का काम भी करते हैं। ये हमें समाचार तो देते ही हैं इसके साथ-साथ इसके अन्य उपयोग भी हैं। ये ज्ञान के भंडार हैं। इनमें ज्ञानवर्धक लेख प्रकाशित होते हैं। इसके अतिरिक्त समाचार-पत्रों में साप्ताहिक संस्करणों में मनोरंजन सामग्री भी प्रकाशित होती है। इस अंक में कहानी, संस्मरण, चुटकुले आदि छपते हैं। समाचार-पत्रों में ज्योतिष, विज्ञान-चर्चा, पाठकों के पत्र, पुस्तक एवं कला की समीक्षा आदि भी छपती है, जिससे हमें सही चुनाव करने में पर्याप्त सहायता मिलती है।

समाचार-पत्र विज्ञापन के सर्वोत्तम साधन हैं। इनमें उत्पादन कर्ताओं के विज्ञापन तो छपते ही हैं इसके साथ-साथ नौकरी, विवाह आदि के भी विज्ञापन प्रकाशित होते हैं। इससे हम उन बातों से परिचित हो जाते हैं और मनचाही वस्तु खरीद सकते हैं।

समाचार-पत्रों को निष्पक्ष होकर अपना काम करना चाहिए, तभी उनकी उपयोगिता है। समाचार-पत्र को सरकारी दबाव के सामने भी नहीं झुकना चाहिए। भारत के अधिकांश समाचार-पत्र इस कसौटी पर खरे उतरते हैं।

11. स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत

स्वच्छता केवल हमारे घर-सड़क तक के लिए ही ज़रूरी नहीं होती है बल्कि यह देश और राष्ट्र की आवश्यकता होती है। इससे न केवल हमारा घर-आँगन ही स्वच्छ रहेगा बल्कि पूरा देश ही स्वच्छ रहेगा। इसी को मद्देनज़र रखते हुए भारत सरकार द्वारा चलाया जा रहा स्वच्छ भारत अभियान जो कि हमारे देश के प्रत्येक गाँव और शहर में प्रारंभ किया गया है। देश की प्रत्येक गली, गाँव की प्रत्येक सड़क से लेकर शौचालय का निर्माण कराना और देश के बुनियादी ढाँचे को बदलना ही इस अभियान का उद्देश्य है।

भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने महात्मा गांधी की जयंती 2 अक्टूबर, 2014 को स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत की। स्वच्छ भारत अभियान को 'भारत मिशन' और 'स्वच्छता अभियान' भी कहा जाता है। स्वच्छता का हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है परंतु हमने इसका अर्थ सिर्फ़ स्वयं के शरीर की सफ़ाई से लगा लिया है। स्वच्छता, भक्ति के बाद दूसरी सबसे महत्वपूर्ण बात है। स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत स्वयं हमारे प्रधानमंत्री ने झाड़ू लगाकर की थी। स्वच्छ भारत का सफलतम क्रियान्वयन करना भारत जैसे बड़े क्षेत्रफल वाले देश में अत्यंत कठिन था, परंतु हमारे प्रधानमंत्री के दृढ़-संकल्प ने गांधी जी के इस सपने को सच कर दिखाया है। अभी हाल ही में हमारे प्रधानमंत्री जी को अमेरिका में 'गोलकीपर ग्लोबल गोल्स' नामक पुरस्कार से सम्मानित किया। यह पुस्कार उन्हें 'स्वच्छ भारत अभियान' के उनके सफलतम क्रियान्वयन के लिए दिया गया।

हालाँकि इस अभियान की कार्याविधि अब समाप्त हो गई है, फिर भी इस अभियान ने लोगों के दिलों में स्वच्छता की जो मशाल जला दी है जो अब बुझने वाली नहीं है। यदि हम इसे अपने जीवन का हिस्सा बना लें तो वो दिन दूर नहीं जब भारत का सिर्फ़ एक शहर ही नहीं अपितु संपूर्ण भारत स्वच्छ हो जाएगा। इस प्रकार स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत का सपना भी सच हो जाएगा।

12. विज्ञान वरदान है या अभिशाप

आधुनिक युग विज्ञान का युग कहलाता है। आज मानव ने विज्ञान के सहारे ऐसे-ऐसे कार्य सिद्ध किए हैं जो पहले असंभव प्रतीत होते थे। विज्ञान ने संपूर्ण विश्व का रूप बदल दिया है। आज मनुष्य चंद्रमा और अन्य ग्रहों-उपग्रहों तक पहुँचकर अपनी कीर्ति-पताका फहरा रहा है। यह सब विज्ञान की ही देन है।

विज्ञान की सहायता से मानव आज वैभवपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहा है। सुख-समृद्धि के सभी उपाय उसके अधीन हैं। आज रेडियो, टेलीविज़न, मोबाइल, इंटरनेट, कंप्यूटर आदि अनेक आविष्कारों ने जीवन को सुखमय बना दिया है। आज दिनों की यात्रा घंटों में और घंटों की यात्रा मिनटों में पूरी की

जा सकती है। संचार साधनों के आश्चर्यजनक विकास ने पृथ्वी को एक मुहल्ले जैसा बना दिया है। कृत्रिम उपग्रहों ने तो जैसे क्रांति ही ला दी है। दूरदर्शन पर घर बैठे विदेशों में होने वाली घटनाओं को सहज ही देखा जा सकता है। अलादीन के चिराग की भाँति सारे सुख हमारे सामने हैं। बटन दबाया और पानी गरम। ऐसे आविष्कारों की सूची तो बहुत लंबी है। मुद्रण यंत्रों से हज़ारों किताबें घंटे भर में छप जाती हैं, समाचार-पत्र की लाखों प्रतियाँ देखते-ही-देखते देश भर में छा जाती हैं। चिकित्सा के क्षेत्र में भी विज्ञान की उपलब्धियाँ अनंत हैं।

आज इतनी उपलब्धियों के बावजूद विज्ञान एक अभिशाप भी है। ऐसे-ऐसे अस्त्र-शस्त्रों का विकास हुआ है, जो एक ही प्रहार में पूरे शहर को नष्ट कर देने की क्षमता रखते हैं। न्यूट्रान-बम सारे जीवित प्राणियों को मार डालता है और संपत्ति बच जाती है। आपसी होड़ के कारण रूस, अमेरिका, फ्रांस, चीन, इंग्लैंड आदि देशों ने हथियारों का इतना भयानक भंडार बना लिया है कि यदि कभी विश्व युद्ध छिड़ गया तो आधी दुनिया तत्काल समाप्त हो जाएगी। सच तो यह है कि विज्ञान अपने-आप में एक महान शक्ति है। मनुष्य इसका जैसा चाहे वैसा उपयोग कर सकता है। अणु शक्ति के प्रयोग से बड़े-बड़े बिजली घर भी बना सकता है और पलक झपकते लाखों लोगों की जान भी ले सकता है। यह तो हमारी विवेक बुद्धि पर निर्भर करता है कि हम इसका किस प्रकार उपयोग करें।

13. समय का सदुपयोग

संसार में समय को सबसे अधिक महत्वपूर्ण एवं मूल्यवान माना गया है, क्योंकि किसी व्यक्ति का धन नष्ट हो जाए, तो उसे पुनः प्राप्त किया जा सकता है, किसी का स्वास्थ्य नष्ट हो जाए तो उसे भी किसी हद तक प्राप्त किया जा सकता है, परंतु जो समय एक बार नष्ट हो गया, उसे दोबारा प्राप्त नहीं किया जा सकता है। इसलिए समय का एक-एक क्षण कीमती है। उसे बिलकुल नष्ट नहीं करना चाहिए। जो व्यक्ति समय को व्यर्थ गँवा देता है, वह सारी उम्र पछताता रहता है। फिर उस पश्चाताप से कुछ भी हासिल नहीं हो सकता। किसी ने सही कहा है–"का वर्षा जब कृषि सुखाने, समय चूकि पुनि का पछताने।"

संसार में उसी ने शासन किया है जिसने अच्छे-बुरे समय को समझा और समय को अपने अनुकूल बनाया। समय के सदुपयोग की सबसे सरल विधि है–प्रत्येक कार्य को करने के लिए समय तय करना तथा नियत समय पर करना। आलस्य मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है। समय के सदुपयोग में आलस्य ही सबसे बड़ी अड़चन है। आलसी व्यक्ति जीवन में कुछ भी नहीं करता है और जीवनभर अपनी असफलताओं के लिए अपने आपको दोषी ठहराता रहता है।

विद्यार्थी जीवन में समय के सदुपयोग की बड़ी महत्ता है। जिस विद्यार्थी को समयबद्धता की आदत पड़ जाती है, वह जीवन भर सुखी रहता है। नेपोलियन केवल पाँच मिनट देरी से ही युद्ध-भूमि में पहुँचा और पराजित हो गया। अतः हमें आज का काम कल पर नहीं टालना चाहिए। हमें समय के एक-एक क्षण का उपयोग भली-भाँति सोच-समझकर करना चाहिए। समय के सदुपयोग से ही जीवन में सुख-शांति और समृद्धि की प्राप्ति होती है। समय का सदुपयोग करने वाले व्यक्ति का

जीवन प्रेरणादायक होता है। समय कभी किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। इसलिए हमें समय के महत्व को समझते हुए, समय का भरपूर सदुपयोग करना चाहिए।

14. विज्ञान के बढ़ते कदम

वर्तमान युग में विज्ञान अपने चरम उत्कर्ष पर है। विज्ञान ने हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में घुसपैठ कर ली है। विज्ञान नित्य नए-नए आविष्कार करता जा रहा है। एक ओर इन आविष्कारों ने मनुष्य का जीवन सुखमय बनाया है, तो दूसरी ओर उसके विनाश के नए-नए उपाय निकल आए हैं। आज विज्ञान ने मनुष्य को अपना दास बना लिया है। विज्ञान ने हमें विद्युत प्रदान कर बहुत बड़ा उपकार किया है। हमारे घर के सभी महत्वपूर्ण उपकरण बिजली से ही चलते हैं। बिजली हमें प्रकाश देती है। हमारे टी०वी०, फ्रिज, वाशिंग मशीन, कूलर, हीटर आदि उपकरणों को चलाती है। विद्युत के कारण हम घर पर ही स्वर्ग जैसा आनंद प्राप्त कर सकते हैं। विज्ञान ने हमें भौतिक सुविधाएँ प्रदान की हैं।

पहले जो बात असंभव प्रतीत होती थीं, अब वे ही बातें सत्य प्रतीत होती हैं। आवागमन के साधनों को देखकर पुष्पक विमान की कल्पना यथार्थ लगती है। अब तो ध्वनि से भी तीव्र गति से चलने वाले वाहन उपलब्ध हैं। अब प्राकृतिक दूरियाँ समाप्त हो गई हैं। विज्ञान ने चिकित्सा के क्षेत्र में चमत्कारी आविष्कार किए हैं। अब मनुष्य दीर्घ-जीवी हो गया है। रोगों पर काबू पाने में विज्ञान ने हमारी बहुत सहायता की है।

विज्ञान ने मनोरंजन की दुनिया में भी करिश्मा कर दिखाया है। एक-से-एक बढ़कर ऐसे उपकरण हमें विज्ञान ने प्रदान किए हैं, जो हमारा मनोरंजन करने में सक्षम हैं। कंप्यूटर के प्रयोग ने मानव-मस्तिष्क को बहुत राहत प्रदान की है। अब इसका प्रयोग दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। इन आविष्कारों के साथ-साथ विज्ञान ने कई विनाशकारी बमों का निर्माण भी किया है। द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् अमेरिका-इराक युद्ध और यूक्रेन-रूस युद्ध में हम इन बमों एवं मिसाइलों के घातक परिणाम देख चुके हैं। मनुष्य को चाहिए कि वह विज्ञान का प्रयोग मानव-हित के लिए करे। विज्ञान के खतरे के प्रति सावधान रहे।

15. बदलता समय : बदलते खेल

एक समय था जब केवल क्रिकेट और हॉकी को भारत में महत्वपूर्ण खेलों की श्रेणी में रखा जाता था, परंतु बदलते परिदृश्य के साथ लोगों के मिजाज भी बड़ी तेज़ी से बदल रहे हैं। वर्तमान समय में लोग कई सारे अन्य खेलों को भी बहुत अधिक महत्व देने लगे हैं और उनकी लोकप्रियता भी दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है; जैसे–वर्तमान समय में लोग कबड्डी भी देखना पसंद कर रहे हैं और फुटबॉल का भी आनंद ले रहे हैं। साथ-ही-साथ बैडमिंटन और टेनिस जैसे खेल भी भारत में बड़ी ही तेज़ी से लोकप्रिय हो रहे हैं। यह समय के साथ एक परिवर्तन है जिसका आनंद सभी लोग

लेना चाहते हैं। अगर कुश्ती खेल की बात करें तो साक्षी मलिक ने भी ओलंपिक में कांस्य पदक जीतकर एक इतिहास रच दिया है।

इस प्रकार से हम कह सकते हैं कि बदलते परिदृश्य में खेलों का मिजाज़ भी बदल रहा है। प्रधानमंत्री जी के द्वारा चलाई गई एक मुहिम है जिसका नाम है–'खेलो इंडिया'। इसका मुख्य उद्देश्य यह है कि क्रिकेट और हॉकी के अलावा कई सारे अन्य खेलों को भी प्रोत्साहन मिले।

आज के समय में बदलता समय, बदलते खेल सब बदल गया है। आज के समय में बच्चे शारीरिक खेलकूद तो भूल ही गए हैं। जब से मोबाइल फ़ोन आए हैं तब से बच्चे अपना सारा समय मोबाइल फ़ोन में बिता देते हैं। बच्चों का ज़्यादा समय मोबाइल या टी०वी० के साथ बीतता है। सब कंप्यूटर में खेलना पसंद करते हैं। सब बदल गया है। इससे न तो मानसिक विकास होता है और न ही शारीरिक विकास होता है। बदलता समय, बदलते खेल सब बदल गया है।

16. समाचार-पत्र की उपयोगिता

अगर हम समाचार-पत्र के बारे में ऐसा कहें कि यह हमारी सुबह की पहली ज़रूरत है, तो यह गलत नहीं होगा। हम में से कुछ लोग तो ऐसे हैं जिन्हें बिना समाचार-पत्र पढ़े सुबह की चाय पीना भी पसंद नहीं। आज समाचार-पत्र हमारे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुके हैं। समाचार-पत्र संसार का दर्पण तथा संसार भर में घटित घटनाओं का विश्वसनीय दस्तावेज है।

आज के समय में अनेक प्रकार के समाचार-पत्र प्रकाशित किए जा रहे हैं; जैसे–दैनिक, अर्ध साप्ताहिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक, छमाही एवं वार्षिक इत्यादि। इन सभी में दैनिक समाचार-पत्र सबसे अधिक लोकप्रिय हैं, क्योंकि इनमें नित्य प्रति के समाचारों और घटनाओं की जानकारी प्राप्त होती रहती है। आज के लोकतांत्रिक युग में समाचार-पत्रों से सभी को लाभ पहुँच रहा है। ये मात्र 5-10 रुपये में विश्व भर से परिचित कराते हैं। इन समाचार-पत्रों से हर देश के समाचार हमें दूसरे दिन प्राप्त हो जाते हैं। समाचार-पत्रों में समाचारों के अलावा गहन विषयों पर भी प्रकाश डाला जाता है, जिनके अध्ययन से हमें ज्ञान-विज्ञान की अनेक बातें मालूम होती रहती हैं। कम पढ़े-लिखे लोगों के लिए उनके ज्ञान को बढ़ाने में समाचार-पत्रों का विशेष महत्व है। समाचार-पत्रों के द्वारा सर्वसाधारण के बीच भी शिक्षा के विस्तार में अधिक सहायता मिलती है।

पत्रकारिता एक बड़ी ही पवित्र वृत्ति है। किसी पत्रकार, पत्र-संपादक अथवा संचालक की पवित्रता तथा न्याय निष्ठा देश को नैतिकता की ओर अग्रसर करने की ताकत रखती है। समाचार-पत्रों की ताकत, महत्व तथा उपादेयता आधुनिक युग के मानव के लिए वरदान है। ये सरकार तथा जनता के बीच संपर्क-सूत्र का कार्य करते हैं। आज के समय में बिना समाचार-पत्र के जीवन की कल्पना करना भी काफ़ी कठिन है।

34. अपठित बोध

अपठित गद्यांश

लिखने की बारी

1. (क) खेल प्रतियोगिताएँ राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर होने लगी हैं।

   (ख) आज खेल बड़े-बड़े नियमों-कमेटियों की जकड़ में आ गए हैं।

   (ग) पहले वाले खेलों का क्षेत्र बढ़ती जनसंख्या, शहरीकरण और व्यावसायिकता की मानसिकता के चलते सिमट रहा है।

   (घ) शहरों में वीडियो गेम्स और इसी तरह के दूसरे खेल जिनमें शारीरिक व्यायाम न के बराबर हैं, बढ़ने लगे हैं।

   (ङ) शरीर + इक।

2. (क) पुस्तकालय से ज्ञान-प्राप्ति, मनोरंजन, चरित्र-निर्माण, समय का सही उपयोग आदि अनेक लाभ हैं।

   (ख) पुस्तकों के माध्यम से एक युग की बात दूसरे युग तक सहज ही पहुँचती है।

   (ग) पुस्तकालय सामाजिक और मानसिक उन्नति करने वाले हैं।

   (घ) पुस्तकालय मानव के अंदर बुराई को मिटाकर अच्छाई को स्थापित करते हैं।

   (ङ) शीर्षक– 'पुस्तकालय के लाभ'।

3. (क) (*i*) बेईमानी, झूठ और रिश्वत

   (ख) (*ii*) प्रकृति से

   (ग) (*iv*) गिने-चुने लोगों के लिए

   (घ) (*iii*) गांधी जी के विचारों की

   (ङ) (*ii*) सत्य के लिए आग्रह

अपठित पद्यांश

1. (क) कवि नया मार्ग अपनाने का आग्रह कर रहे हैं।

   (ख) कवि को इस बात का दुख है कि दुनिया बहुत आगे बढ़ गई है, किंतु हम अपने पुराने आदर्शों को दृढ़ता से पकड़े वहीं खड़े हुए हैं।

   (ग) कवि समाज में व्याप्त रूढ़ियों और अंधविश्वास को हटाकर नई कल्पना, कामना और नए विचारों का परिवर्तन लाने के लिए कह रहे हैं।

(घ) यहाँ नई कल्पना, नई कामना और नए विचार जगाने की बात कही गई है।

(ङ) शीर्षक– 'नया मार्ग अपनाना होगा'।

2. (क) बच्चा राजकुमार का खिलौना लेने के लिए मचल गया था।

(ख) माँ बच्चे की हठ को देखकर व्यथित हो उठी।

(ग) तुम अपने खिलौने से खेलो और दूसरे के खिलौने के लिए ज़िद मत करो। यह खिलौना तो राजा के घर भी नहीं है।

(घ) राजा + पुत्र।

(ङ) शीर्षक– 'बाल हठ'।

3. (क) (*iii*) हरे गुलाबी

(ख) (*i*) सुंदर दृश्य

(ग) (*iv*) सज्जनता के नाते

(घ) (*ii*) साया बनते हैं।

(ङ) (*ii*) बेल

कार्य-प्रपत्र–1

(भाषा, बोली, लिपि और व्याकरण; वर्ण-विचार एवं संधि)

1. (क) जिस माध्यम से हम अपने विचार प्रकट करते हैं तथा दूसरों के विचारों को समझते हैं, उसे 'भाषा' कहते हैं।

(ख) लिपि का शाब्दिक अर्थ होता है– लिखित या चित्रित करना। अत: भाषा को लिखित रूप प्रदान करने के लिए जिन ध्वनि-चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें 'लिपि' कहते हैं।

(ग) व्याकरण के मुख्य रूप से तीन भेद हैं–

1. वर्ण-विचार, 2. शब्द-विचार, 3. वाक्य-विचार।

(घ) वह छोटी-से-छोटी ध्वनि जिसके और टुकड़े नहीं किए जा सकते हैं, उसे 'वर्ण' कहते हैं। इसके दो भेद हैं– 1. स्वर, 2. व्यंजन।

(ङ) दो शब्दों के मेल से निकटवर्ती ध्वनियों में जो परिवर्तन होता है, उस परिवर्तन या विकार को 'संधि' कहते हैं।

उदाहरण– शिक्षा + आलय = शिक्षालय (आ + आ = आ)

अति + अधिक = अत्यधिक (इ + अ = य)

(च) व्यंजन ध्वनि के बाद स्वर या व्यंजन आने पर व्यंजन में जो परिवर्तन आता है, उसे 'व्यंजन संधि' कहते हैं। उदाहरण–

दिक् + गज = दिग्गज

परि + छेद = परिच्छेद

सम् + मान = सम्मान

पद् + हति = पद्धति

चित् + मय = चिन्मय

2. (क) दो, लिखित

(ख) हिंदी

(ग) अंग्रेज़ी

(घ) दाईं से बाईं

(ङ) साहित्य

3. (क) च्च – बच्चा, सच्चा, कच्चा

(ख) ज्ञ – अज्ञान, विज्ञान, कृतज्ञ

(ग) न्य – न्याय, अन्य, शून्य

(घ) त्त – पत्ता, गत्ता, कुत्ता

(ङ) क्ष – क्षमा, शिक्षक, क्षेत्र

4. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✓

5. (क) धर्मार्थ (ख) परमाणु

(ग) योगेश (घ) प्रत्येक

(ङ) उन्नति (च) निराशा

(छ) स्वागत (ज) स्वेच्छा

6.

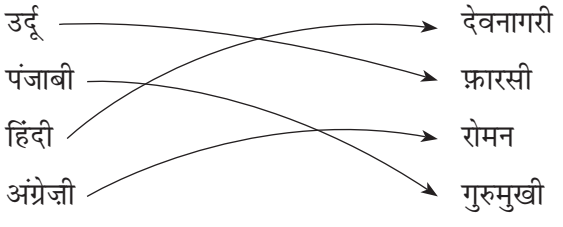

7. (क) आ, ई

(ख) य, र

(ग) अं, अः

(घ) क, च

(ङ) श, ष

8. पाठशाला – प् + आ + ठ् + अ + श् + आ + ल + आ

वसुंधरा – व् + अ + स् + उ + न् + ध + अ + र् + आ

चम्मच – च् + अ + म् + म् + अ + च् + अ

प्रयोगशाला – प् + र् + अ + य् + ओ + ग् + अ + श् + आ + ल् + आ

स्वास्थ्य – स् + व् + आ + स् + थ् + य् + अ

9. स्पर्श व्यंजन – क, म, द, न

अंतस्थ व्यंजन – य, र, ल, व

ऊष्म व्यंजन – स, श, ष, ह

10. (क) अन्वेषण – अनु + एषण – यण् संधि (स्वर संधि)

(ख) लंकेश – लंका + ईश – गुण संधि (स्वर संधि)

(ग) महेंद्र – महा + इंद्र – गुण संधि (स्वर संधि)

(घ) दिगंबर – दिक् + अंबर – व्यंजन संधि

(ङ) हितोपदेश – हित + उपदेश – व्यंजन संधि

कार्य-प्रपत्र–2

(शब्द-विचार एवं शब्द-संपदा)

1. (क) वर्णों का सार्थक एवं व्यवस्थित मेल 'शब्द' कहलाता है; जैसे– कमल, उल्लू, सुपुत्र आदि।

(ख) वे शब्द जो अपना अर्थ रखते हैं, 'सार्थक शब्द' कहलाते हैं; जैसे– शत्रु, सूर्य, पहाड़ आदि। जबकि निरर्थक शब्द वे होते हैं जिनका कोई अर्थ नहीं होता है; जैसे– आना-वाना, पेन-वेन, लोटा-वोटा आदि। इन शब्दों में वाना, वेन, वोटा आदि का कोई अर्थ नहीं है। इनका प्रयोग केवल बोलचाल में किया जाता है।

(ग) जिन शब्दों का एक ही अर्थ होता है तथा ऐसे शब्दों के टुकड़े करने पर कोई अर्थ नहीं निकलता है, उन्हें 'रूढ़ शब्द' कहते हैं।

(घ) अर्थ की दृष्टि से शब्द दो प्रकार के होते हैं–1. निरर्थक शब्द, 2. सार्थक शब्द।

(ङ) प्रयोग के आधार पर शब्दों के दो भेद हैं–1. विकारी शब्द, 2. अविकारी शब्द।

1. विकारी शब्द– जिन शब्दों में लिंग, वचन, कारक, काल आदि के कारण विकार आ जाता है, उन्हें 'विकारी शब्द' कहते हैं। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के अंतर्गत आने वाले शब्द विकारी शब्द हैं।

2. अविकारी शब्द– जिन शब्दों पर लिंग, वचन, कारक और काल का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है, उन्हें 'अविकारी शब्द' कहते हैं। क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक और निपात अविकारी शब्द हैं।

2.

तद्भव	**तत्सम**	**तद्भव**	**तत्सम**	**तद्भव**	**तत्सम**
सूरज	सूर्य	घी	घृत	छेद	छिद्र
पाँच	पंच	गाँव	ग्राम	मछली	मत्स्य
नींद	निद्रा	परख	परीक्षा	भौंरा	भ्रमर

3. (क) तीन (ख) पाँच (ग) चार (घ) यौगिक (ङ) निरर्थक

4. (क) हवा के तेज़ चलने पर अनल और फैल गई।

(ख) हाथी अपनी सूँड़ से सारा काम करता है।

(ग) इंद्र देवताओं के राजा हैं।

(घ) मैं हरिद्वार से गंगा जल लाया।

5. (क) उग्र × शांत – केशव बहुत शांत स्वभाव का व्यक्ति है।

(ख) सच × झूठ – वह कभी झूठ नहीं बोलता।

(ग) गगन × धरा – उसके लिए सारी धरा एक कुटुंब समान है।

(घ) सुलभ × दुर्लभ – सिद्ध महात्माओं के दर्शन दुर्लभ होते हैं।

6. (क) अरे! मैं तो तुम्हारा **मित्र** हूँ।

(ख) आपने मुझे सदैव **मूढ़** ही समझा है।

(ग) जल के बिना **जीवन** संभव नहीं है।

(घ) कोई भी कार्य **गुप्त** रूप से मत करो।

(ङ) दिसंबर में बहुत अधिक **सरदी** होती है।

7. (क) धरा – धरा का प्राकृतिक सौंदर्य अद्भुत है।
धारा – वह नदी की तेज़ धारा में बह गया।

(ख) उपयुक्त – मन का मैल धोने के लिए नयन-जल से उपयुक्त और कोई वस्तु नहीं है।
उपर्युक्त – उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।

(ग) जलज – जल में तैरते जलज बहुत सुंदर लगते हैं।

जलद – जलद के घिर आने से कृषकवर्ग प्रसन्न हो गया।

8. (क) कूल / कुल

(ख) अनिल / अनल

(ग) परिमाण / परिणाम

(घ) चिंता / चिता

(ङ) जलद / जलज

9. जिसका कोई दोष न हो – निर्दोष

जिसका मन उदार हो – उदारमना

जो मांस नहीं खाता – शाकाहारी

प्रति सप्ताह होने वाला – साप्ताहिक

जीवन भर रहने वाला – आजीवन

जिसमें पाप नहीं है – निष्पाप

जिसका कोई आकार न हो – निराकार

अवश्य होने वाला – अवश्यंभावी

10. (क) कर –हाथ – अतुल के कर कमलों द्वारा यह कार्य संपन्न हुए।

टैक्स – किसान राजा का कर चुकाने जा रहा था।

(ख) अर्थ – मतलब – 'पेट में चूहे कूदना' मुहावरे का अर्थ बताइए।

धन – भारत की अर्थ व्यवस्था मज़बूत है।

(ग) विधि – ब्रह्मा – मरना-जीना सब विधि के हाथ है।

भाग्य – वह विधि के आगे कभी झुका नहीं।

कार्य-प्रपत्र–3

(शब्द-रचना : उपसर्ग, प्रत्यय एवं समास; संज्ञा)

---

1. (क) हिंदी में उपसर्ग के चार भेद हैं–

1. संस्कृत के उपसर्ग, 2. हिंदी के उपसर्ग, 3. विदेशी उपसर्ग (उर्दू/फ़ारसी, अंग्रेज़ी),
4. उपसर्ग की भाँति प्रयुक्त संस्कृत के अव्यय।

(ख) उपसर्ग शब्द के आरंभ में जुड़ता है जबकि प्रत्यय बाद में जुड़ता है। उपसर्ग जुड़ने पर मूल शब्द का अर्थ बदल सकता है; जैसे– प्र + चार = प्रचार। इसमें 'प्र' उपसर्ग है जो 'चार' शब्द के पहले जुड़ा है जबकि प्रत्यय जुड़ने पर अर्थ मूल शब्द के इर्द-गिर्द ही रहता है; जैसे– इतिहास + इक = ऐतिहासिक। इसमें 'इक' प्रत्यय है जो शब्द के अंत में जुड़ा है।

(ग) समास के छह भेद हैं–

1. अव्ययीभाव समास, 2. तत्पुरुष समास, 3. कर्मधारय समास,
4. द्वंद्व समास, 5. द्विगु समास, 6. बहुव्रीहि समास।

(घ) किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, भाव आदि के नाम को संज्ञा कहते हैं; जैसे– महाराणा प्रताप, हिरन, पेड़, चंडीगढ़, मिठास आदि।

(ङ) संज्ञा के मूलतः तीन भेद हैं–

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा, 2. जातिवाचक संज्ञा, 3. भाववाचक संज्ञा। उदाहरण–

पटना बिहार की राजधानी है। (व्यक्तिवाचक संज्ञा)

वृक्ष हमें छाया देते हैं। (जातिवाचक संज्ञा)

चाय में **मिठास** बहुत है। (भाववाचक संज्ञा)

2. (क) अति – अतिरिक्त, अत्याचार

(ख) निर् – निर्धन, निर्गुण

(ग) अध – अधपका, अधमरा

(घ) ना – नासमझ, नापसंद

(ङ) पुनः – पुनर्जन्म, पुनर्मिलन

(च) भर – भरपूर, भरपेट

3. (क) हरा – सुनहरा, इकहरा

(ख) ईय – भारतीय, अनुकरणीय

(ग) दार – हवादार, मालदार

(घ) ए – आए, खाए

(ङ) ई – अमीरी, गरीबी

(च) या – पीया, सोया

4. (क) बंगाली – ई – बंगाल

(ख) लड़ाई – आई – लड़

(ग) सजावट – आवट – सज

(घ) भूला – आ – भूल

(ङ) नौकरानी – आनी – नौकर

(च) मिठास – आस – मीठा

5.

	समस्तपद	समास-विग्रह	समास का नाम
(क)	यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार	अव्ययीभाव समास
(ख)	भला-बुरा	भला और बुरा	द्वंद्व समास
(ग)	प्रेमसागर	प्रेम का सागर	तत्पुरुष समास
(घ)	मृत्युदंड	मृत्यु का दंड	तत्पुरुष समास
(ङ)	त्रिनेत्र	तीन हैं नेत्र जिसके अर्थात् शिव	बहुव्रीहि समास
(च)	पीतांबर	पीत अंबर हैं जिसके अर्थात् श्रीकृष्ण	बहुव्रीहि समास

6. (क) भीड़

(ख) लालकिला, दिल्ली

(ग) ताजमहल, सुंदरता

(घ) अजंता, गुफाएँ, महाराष्ट्र

(ङ) श्रेष्ठ, लड़का

7. (क) **जंगल** में **अंधकार** छाया था। (जातिवाचक संज्ञा/भाववाचक संज्ञा)

(ख) **गीता** की तीन **बहने** हैं। (व्यक्तिवाचक संज्ञा/जातिवाचक संज्ञा)

(ग) **जलेबी** की **मिठास** अब तक **जीभ** पर है।
(व्यक्तिवाचक संज्ञा/भाववाचक संज्ञा/जातिवाचक संज्ञा)

(घ) **सचिन तेंदुलकर देश** का श्रेष्ठ **क्रिकेट खिलाड़ी** है।
(व्यक्तिवाचक संज्ञा/जातिवाचक संज्ञा)

(ङ) **हिमालय** की **चढ़ाई** सरल नहीं है। (व्यक्तिवाचक संज्ञा/भाववाचक संज्ञा)

(च) **भेड़िए** की ज़िंदगी में यह पहला **अवसर** था। (जातिवाचक संज्ञा/भाववाचक संज्ञा)

(छ) **नेहरू जी** दिनभर व्यस्त रहते थे। (व्यक्तिवाचक संज्ञा)

(ज) **समय-तालिका** का **दृढ़ता** से पालन करना चाहिए। (व्यक्तिवाचक संज्ञा/भाववाचक संज्ञा)

(झ) हम **जलाशयों** को देखते ही तैरने के लिए मचल उठते हैं। (जातिवाचक संज्ञा)

8. **महात्मा गांधी** ने जो भी **आंदोलन भारत** में चलाया, उन सबमें उनका तरीका एक ही था–**शांति** और **दृढ़ता** से अपनी बात कहना और उसके लिए **अहिंसात्मक आंदोलन** करना। **चंपारन**, **खेड़ा** और **बारदोली** के **आंदोलन** के अतिरिक्त उन्होंने चार बड़े आंदोलनों का **नेतृत्व** किया। जब भी वे **सरकार** के खिलाफ़ आंदोलन छेड़ते, हज़ारों **व्यक्तियों** से भेंट करते और सारी **सूचनाएँ** एवं तथ्य एकत्रित करते थे।

9. (क) (*iii*) दीवान

   (ख) (*iv*) अनु

   (ग) (*i*) भलाई

   (घ) (*ii*) द्विगु

   (ङ) (*iii*) स्वर्ण का घट

   (च) (*iv*) प्रतिदिन

10. कार – कलाकार, कहानीकार; ईला – रंगीला, चमकीला।

कार्य-प्रपत्र–4

(संज्ञा के विकार : लिंग, वचन एवं कारक; सर्वनाम)

1. (क) शब्द के जिस रूप से उसके स्त्री जाति या पुरुष जाति के होने का पता चले, उसे 'लिंग' कहते हैं।

   (ख) लिंग दो प्रकार के होते हैं–1. स्त्रीलिंग, 2. पुल्लिग। शब्द के जिस रूप से यह पता चले कि वह स्त्री जाति से संबंधित है, उसे 'स्त्रीलिंग' कहते हैं; जैसे– शेरनी, मालिन आदि। शब्द के जिस रूप से यह पता चले कि वह पुरुष जाति से संबंधित है, उसे 'पुल्लिग' कहते हैं; जैसे–शेर, माली आदि।

   (ग) शब्द के जिस रूप से उसके एक अथवा अनेक होने का पता चलता है, उसे 'वचन' कहते हैं; जैसे– पुस्तक (एकवचन) – पुस्तकें (बहुवचन)।

   (घ) आदरसूचक बहुवचन में एकवचन के लिए क्रिया के बहुवचन रूप का प्रयोग होता है। हिंदी में आदरसूचक शब्दों के लिए बहुवचन का ही प्रयोग होता है; जैसे–गांधी जी एक महान व्यक्ति थे। यहाँ पर गांधी जी एकवचन है लेकिन उनके लिए बहुवचन का प्रयोग हुआ है।

   (ङ) संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों से जाना जाता है, उसे 'कारक' कहते हैं। इसके आठ भेद हैं–1. कर्ता कारक, 2. कर्म कारक, 3. करण

कारक, 4. संप्रदान कारक, 5. अपादान कारक, 6. संबंध कारक, 7. अधिकरण कारक, 8. संबोधन कारक।

2.

	पुल्लिंग		**स्त्रीलिंग**
देशों के नाम	भारत, इंग्लैंड	लिपि के नाम	देवनागरी, गुरुमुखी
पर्वतों के नाम	हिमालय, विंध्याचल	नदियों के नाम	गंगा, कृष्णा
सागरों के नाम	हिंद महासागर, अरब सागर	भाषाओं के नाम	हिंदी, अंग्रेज़ी
धातुओं के नाम	सोना, ताँबा	तिथियों के नाम	एकादशी, अमावस्या
दिनों के नाम	सोमवार, मंगलवार	बेलों के नाम	जूही, मधुमालती

3. (क) मोर के पंख सुंदर होते हैं।

(ख) ऋषिकेश मुझे एक संत मिले।

(ग) बच्चे बगीचे में खेल रहे थे।

(घ) उनकी आँख में तिनका चला गया।

(ङ) वह ऊँची इमारत को देखता ही रह गया।

4. (क) के लिए – संप्रदान कारक

(ख) को – कर्म कारक

(ग) को – संप्रदान कारक

(घ) को – संप्रदान कारक

(ङ) को – संप्रदान कारक

5. (क) भारत में अनेक **विद्वान** पुरुष हुए हैं।

(ख) इस कविता की **रचयित्री** कौन है?

(ग) **शेर** दहाड़ता है।

(घ) इस बालक ने एक **छात्र** को कलम दी।

(ङ) **धोबिन रानी** के वस्त्र **धोती** है।

6. (क) धातु – एकवचन

(ख) पंखे – बहुवचन

(ग) धेनुएँ – बहुवचन

(घ) रात – एकवचन

(ङ) लुटियाँ – बहुवचन

(च) दिन – एकवचन

(छ) रीति – एकवचन

(ज) कमरे – बहुवचन

7. (क) लताएँ वृक्ष पर फैल गई हैं।

(ख) विद्यालय में छात्रगण कक्षा में बैठे हैं।

(ग) अपने शिक्षकों का नाम बताओ।

(घ) पंचतंत्र कथाओं की किताब है।

(ङ) सक्षम ने कुत्ता और गाय पाल रखे हैं।

8. (क) में, पर

(ख) संप्रदान

(ग) अपादान

(घ) कर्म

(ङ) कर्म कारक

9. (क) 'तू' मध्यम पुरुषवाचक

(ख) 'वह' अन्य पुरुषवाचक

(ग) 'तुमने' मध्यम पुरुषवाचक

(घ) 'आपका' मध्यम पुरुषवाचक

(ङ) 'तू' मध्यम पुरुषवाचक

(च) 'हम' उत्तम पुरुषवाचक

(छ) 'वह' अन्य पुरुषवाचक

10. (क) मेरी

(ख) मुझसे

(ग) इन्हें

(घ) कौन

(ङ) किसी का

(च) जिसको

कार्य-प्रपत्र–5

(विशेषण; क्रिया एवं काल)

1. (क) संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को 'विशेषण' कहते हैं; जैसे– **सफ़ेद** गाय घास चर रही है।

   (ख) 1. गिलास में **गरम** दूध है।

   2. **मूर्ख** लड़का कुछ नहीं समझता।

   3. **मीठा** आम सभी को अच्छा लगता है।

   4. यह **सुंदर** भवन है।

   5. **मोटा** बंदर पेड़ पर बैठा है।

   (ग) विशेषण शब्द द्वारा जिस शब्द की विशेषता बताई जाती है, उन्हें 'विशेष्य' कहते हैं; जैसे–हमारे ध्वज में तीन रंग हैं। इस वाक्य में रेखांकित शब्द की विशेषता 'तीन' विशेषण द्वारा बताई जा रही है। अतः रेखांकित शब्द विशेष्य है।

   (घ) विशेषण के चार भेद हैं–

   1. गुणवाचक विशेषण– वह **सच्चा** आदमी है।

   2. परिणामवाचक विशेषण– मुझे **दो मीटर** कपड़ा चाहिए।

   3. संख्यावाचक विशेषण– मेज़ पर **अनेक** पुस्तकें रखी हैं।

   4. सार्वनामिक विशेषण– **उस** लड़के को बुलाओ।

   (ङ) जो शब्द किसी कार्य के करने या होने का बोध कराते हैं, उन्हें 'क्रिया' कहते हैं।

   (च) मुख्य क्रिया संपन्न होने से पहले जो क्रिया की जाती है, उसे 'पूर्वकालिक क्रिया' कहते हैं; जैसे–सभी बच्चे **खेलकर** सो गए।

   (छ) क्रिया के जिस रूप से उसके होने के समय का पता चलता है, उसे 'काल' कहते हैं। काल के वर्गीकरण का आधार क्रिया के होने का समय है।

2. (क) वीर

   (ख) वे

   (ग) आठवीं

   (घ) दस लीटर

3. (क) उत्तमावस्था

   (ख) उत्तरावस्था

(ग) मूलावस्था

(घ) उत्तमावस्था

4. (क) बात – बतियाना

(ख) साठ – सठियाना

(ग) गरम – गरमाना

(घ) नरम – नरमाना

(ङ) चक्कर – चकराना

(च) झूठ – झूठलाना

5.	**काल**	**भेद**
	(क) भूतकाल	पूर्ण भूतकाल
	(ख) भूतकाल	सामान्य भूतकाल
	(ग) वर्तमान काल	सामान्य वर्तमान
	(घ) भूतकाल	आसन्न भूतकाल
	(ङ) भविष्यत् काल	संभाव्य भविष्यत्

6.	**विशेषण**	**भेद**
	(क) अनेक	अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण
	(ख) हट्टा-कट्टा	गुणवाचक विशेषण
	(ग) ज़्यादा	अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण
	(घ) गरम	गुणवाचक विशेषण
	(ङ) थोड़ी	अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण

7. (क) सकर्मक क्रिया

(ख) अकर्मक क्रिया

(ग) सकर्मक क्रिया

(घ) सकर्मक क्रिया

(ङ) अकर्मक क्रिया

8. (क) निशा ने पुस्तक पढ़ी होगी। (संदिग्ध भूतकाल)

(ख) रमेश मेला देखेगा। (सामान्य भविष्यत् काल)

(ग) वह कल खेल रहा था। (पूर्ण भूतकाल)

(घ) मामा जी मिठाई ला रहे होंगे। (संदिग्ध वर्तमान काल)

(ङ) मम्मी ने जेवर पहने होंगे। (संदिग्ध भूतकाल)

9. (क) **वह** लड़की सुंदर गाना गा रही है, परंतु **वह** चुप बैठी है।

(ख) **उसने** तो अपना काम कर लिया है, परंतु **उस** लड़के ने नहीं किया।

(ग) **इन** लड़कों को बुलाओ, **उन्हें** नहीं।

(घ) **आप** तो आ गए, पर पता नहीं क्यों **वे** विद्यार्थी आज भी नहीं आए?

(ङ) सहायता के लिए **उन्हें** बुला लो, **ये** लड़के तो बहुत आलसी हैं।

(च) जेब में **कुछ** ताश के पत्ते थे।

10.

	कर्ता	**क्रिया**
(क)	बंदर	है
(ख)	हितेश	सोता है
(ग)	उसने	खरीदी
(घ)	कवि	लिखीं
(ङ)	गांधी जी	थे

कार्य-प्रपत्र–6

(वाच्य; अव्यय : क्रियाविशेषण एवं संबंधबोधक)

1. (क) क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि उसके प्रयोग का आधार कर्ता, कर्म या भाव है, उसे 'वाच्य' कहते हैं। इसके तीन भेद हैं–

   1. कर्तृवाच्य – सविता खाना बनाती है।
   2. कर्मवाच्य – सविता से खाना बनाया जाता है।
   3. भाववाच्य – सविता से बैठा नहीं जाता।

   (ख) जो अव्यय शब्द संज्ञा या सर्वनाम के साथ जुड़कर उनका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों के साथ बताते हैं, उन्हें 'संबंधबोधक अव्यय' कहते हैं; जैसे– परिश्रम के बिना सफलता नहीं मिलती।

   (ग) कर्मवाच्य प्रमुख रूप से सदैव सकर्मक क्रिया वाले वाक्यों का बनाया जाता है; जैसे–लता से पुस्तक पढ़ी जा रही है।

(घ) वे शब्द, जिनमें लिंग, वचन, कारक और काल के कारण कोई बदलाव नहीं आता है, उन्हें 'अव्यय' या 'अविकारी शब्द' कहते हैं; जैसे– सारे कपड़े **हाथोंहाथ** बिक गए।

(ङ) क्रियाविशेषण के चार भेद होते हैं–1. रीतिवाचक क्रियाविशेषण, 2. परिमाणवाचक क्रियाविशेषण, 3. कालवाचक क्रियाविशेषण, 4. स्थानवाचक क्रियाविशेषण।

2. (क) कलाकार द्वारा मूर्ति गढ़ी जाती है। (कर्मवाच्य)

(ख) राजा प्रजा को कष्ट देता है। (कर्तृवाच्य)

(ग) हमसे इतना दुख सहा नहीं जाता। (भाववाच्य)

(घ) मैं पत्र लिखूँगा। (कर्तृवाच्य)

(ङ) महात्मा गांधी द्वारा शांति और अहिंसा का संदेश दिया गया। (कर्मवाच्य)

3. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✗

4. संबंधबोधक के दस भेद हैं–

1. कालवाचक – जैसे – के पहले
2. कारणवाचक – जैसे – के कारण
3. विषयवाचक – जैसे – के संबंध में
4. समतावाचक – जैसे – के तुल्य
5. दिशावाचक – जैसे – की ओर
6. साधनवाचक – जैसे – के सहारे
7. स्थानवाचक – जैसे – के पीछे
8. संगवाचक – जैसे – के साथ
9. उद्देश्यवाचक – जैसे – के लिए
10. तुलनात्मक – जैसे – से बढ़कर

5. (क) कर्मवाच्य (ख) कर्मवाच्य (ग) कर्तृवाच्य

(घ) कर्तृवाच्य (ङ) कर्मवाच्य

6.

	क्रियाविशेषण	**संबंधबोधक**
(क)	के पीछे	संबंधबोधक
(ख)	सामने	क्रियाविशेषण
(ग)	बाहर	क्रियाविशेषण
(घ)	के नीचे	संबंधबोधक
(ङ)	के सहारे	संबंधबोधक

7. (क) के मारे

   (ख) के सिवा

   (ग) की खातिर

   (घ) के अलावा

   (ङ) के बाहर

8. **सहसा** आंधी **ज़ोर** से चली। सब पत्ते आदि **चारों ओर** बिखर गए। घर के **आगे** का बूढ़ा पेड़ **एकाएक** गिर गया। धूल भरे वातावरण में बच्चे **धीरे-धीरे** घर भागने लगे; **अभी-अभी** अन्नू को **बहुत** चोट आ गई।

9. (क) भाववाच्य

   (ख) कर्तृवाच्य

   (ग) भाववाच्य

   (घ) कर्मवाच्य

   (ङ) कर्मवाच्य

10. (क) के बाद (संबंधबोधक)

    (ख) इधर-उधर (क्रियाविशेषण)

    (ग) हँसते-हँसते (क्रियाविशेषण)

    (घ) की ओर (संबंधबोधक)

    (ङ) के पास (संबंधबोधक)

कार्य-प्रपत्र–7

(समुच्चयबोधक एवं विस्मयादिबोधक)

1. (क) समुच्चयबोधक दो शब्दों, पदों और वाक्यांशों को आपस में जोड़ते हैं; जैसे– वह बाहर नहीं गया **क्योंकि** वर्षा हो रही थी।

   (ख) समुच्चयबोधक के दो भेद हैं–

   1. समानाधिकरण समुच्चयबोधक

      उदाहरण– • सीता **और** कविता आ गई।

      • आज मुझे बुखार है **इसलिए** आ नहीं पाऊँगा।

      • गौरव परिश्रमी है **लेकिन** अजय आलसी है।

2. व्यधिकरण समुच्चयबोधक

उदाहरण– • हमें तेज़-तेज़ चलना होगा **ताकि** ट्रेन मिल जाए।

• ऐसा लगता है **मानो** अच्छे दिन आ गए हों।

• वह अनुत्तीर्ण हो गया **क्योंकि** वह पढ़ा नहीं।

(ग) जो शब्द आश्चर्य, हर्ष, घृणा, शोक, उल्लास आदि मनोभावों का बोध कराते हैं, उन्हें 'विस्मयादिबोधक अव्यय' कहते हैं।

2. (क) और (ख) तो

(ग) तो (घ) क्योंकि

3. (क) और – पिता और पुत्र बाज़ार जा रहे हैं।

(ख) अथवा – कविता वाचन तुम करोगे अथवा वह।

(ग) क्योंकि – वह अनुत्तीर्ण हो गया क्योंकि उसने परिश्रम नहीं किया था।

(घ) रोहन ने कठोर परिश्रम किया किंतु उसे सफलता नहीं मिली।

4. (क) अन्यथा – समानाधिकरण समुच्चयबोधक

(ख) ताकि – व्यधिकरण समुच्चयबोधक

(ग) इसलिए – समानाधिकरण समुच्चयबोधक

(घ) एवं – समानाधिकरण समुच्चयबोधक

(ङ) न तो, न ही – समानाधिकरण समुच्चयबोधक

5. (क) शाबाश! – प्रशंसाबोधक

(ख) छी! – तिरस्कारबोधक

(ग) ठीक! – स्वीकृतिबोधक

(घ) ऐं! विस्मयादिबोधक

(ङ) बाप-रे-बाप! – भयबोधक

(च) हाय! – शोक या पीड़ाबोधक

6. (क) बहुत सुंदर! इन पंक्तियों को फिर से पढ़िए।

(ख) **शाबाश!** ऐसे ही मेहनत करते रहो।

(ग) **सावधान!** सामने गहरी खाई है।

(घ) **अरे!** तुम्हें कब अक्ल आएगी।

(ङ) **उफ़!** सिर दर्द से फटा जा रहा है।

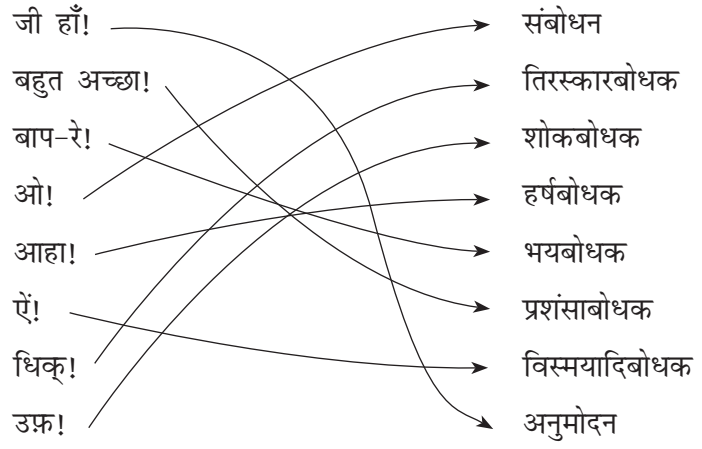

7. जी हाँ!	→	अनुमोदन
बहुत अच्छा!	→	प्रशंसाबोधक
बाप-रे!	→	भयबोधक
ओ!	→	संबोधन
आहा!	→	हर्षबोधक
ऐं!	→	विस्मयादिबोधक
धिक्!	→	तिरस्कारबोधक
उफ़!	→	शोकबोधक

8. (क) वाह! सचिन ने सौ रन बना लिए।
   (ख) हाँ! अब मैं बिलकुल ठीक हूँ।
   (ग) सुखी रहो! ईश्वर तुम्हें तरक्की दे।
   (घ) अरे! इधर तो आना।

9. (क) ओहो! – ओहो! मैं तुम्हें बुलाना भूल गया।
   (ख) हाय! – हाय! अब मैं क्या करूँ।
   (ग) धत् – धत्! मैं आपको क्यों लिखने लगी।
   (घ) बार रे! – बाप रे! इस सुरंग में कितना अँधेरा है।
   (ङ) अच्छा! – अच्छा! आगे सुनाओ।

10. (क) अविकारी शब्द
   (ख) समुच्चयबोधक
   (ग) विस्मयादिबोधक अव्यय
   (घ) दो
   (ङ) वाक्य

कार्य-प्रपत्र–8

(शब्द, पद और पदबंध; पद-परिचय; वाक्य-विचार; अशुद्धि-संशोधन, विराम-चिह्न)

1. (क) शब्द भाषा की एक स्वतंत्र इकाई है लेकिन जब शब्द व्याकरण के नियमों में बाँधकर वाक्य में प्रयुक्त किए जाते हैं तब वह पद बन जाते हैं। यही पद वाक्य में कोई-न-कोई व्याकरणिक कार्य करने लगते हैं।

(ख) एक या अनेक वर्णों से बने अर्थपूर्ण समूह को 'शब्द' कहते हैं; जैसे–राम, आम, खा इत्यादि। किंतु जब इन सार्थक मतलब अर्थपूर्ण शब्द का प्रयोग वाक्य में किया जाता है तो उस शब्द को 'पद' कहते हैं।

(ग) संज्ञा का पद-परिचय देते समय संज्ञा, संज्ञा के भेद, लिंग, वचन, कारक तथा क्रिया के साथ उसका संबंध बतलाना आवश्यक होता है जबकि सर्वनाम का पद-परिचय देते समय सर्वनाम, सर्वनाम के भेद, लिंग, वचन, कारक तथा क्रिया के साथ उसका संबंध बतलाना आवश्यक होता है।

(घ) शब्दों का सार्थक समूह जिससे मन के भाव एवं विचार पूरी तरह प्रकट होते हैं, उसे 'वाक्य' कहते हैं।

(ङ) एक से अधिक पदों का मेल जब एक व्याकरणिक इकाई का कार्य करने लगता है, तब उस बँधी इकाई को 'पदबंध' कहते हैं।

2. (क) खिला रही है।

(ख) कर सो गया।

(ग) पड़ोस में रहने वाला

(घ) शेर की तरह दहाड़ने वाले

3. (क) मधु – व्यक्तिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्ता कारक

(ख) वह – पुरुषवाचक सर्वनाम, अन्य पुरुष, एकवचन, पुल्लिग, कर्ता कारक

(ग) चतुर – गुणवाचक विशेषण, एकवचन, पुल्लिग (छात्र–विशेष्य)

(घ) पाठशाला – जातिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्म कारक

(ङ) वाह! – विस्मयादिबोधक, आश्चर्य का भाव।

4.

	उद्देश्य	**विधेय**
(क)	राकेश	पुस्तकें खरीदने बाज़ार गया।
(ख)	वह	अपने गाँव नहीं जा सकता।
(ग)	मैं	भाग नहीं सकता।
(घ)	पक्षी	आकाश में उड़ रहे हैं।
(ङ)	नेता जी	द्वारा मदद की गई।

5. (क) मिश्र वाक्य

(ख) सरल वाक्य

(ग) मिश्र वाक्य

(घ) मिश्र वाक्य

(ङ) संयुक्त वाक्य

6. (क) संयुक्त वाक्य

(ख) सरल वाक्य

(ख) मिश्र वाक्य

(घ) संयुक्त वाक्य

7. (क) सरल वाक्य

(ख) सरल वाक्य

(ग) सरल वाक्य

(घ) सरल वाक्य

(ङ) संयुक्त वाक्य

8. (क) उसकी माता जी जालंधर रहती हैं।

(ख) उसके चार मामा हैं।

(ग) वह दिल्ली से लौट आया।

(घ) रोगी ने प्राण त्याग दिए।

(ङ) आज की ताज़ा खबरें सुनो।

9. (क) इंदिरा गांधी भारत की प्रधानमंत्री थीं।

(ख) वाह! कितना मज़ा आ रहा है।

(ग) किसान, प्रधान और पंच बैठे हैं।

(घ) मैं कभी-कभी घूमने चला जाता हूँ।

(ङ) कौन आया है, देखें?

10. "कर्तव्य की सीमा?" कड़ककर हमीर ने पूछा, "कर्तव्य की सीमा है कर्तव्य-पालन। कर्तव्य-पालन में सुख मिलेगा या दुख, जय होगी या पराजय, यह दुकानदारी की वृत्ति राजपूतों को शोभा नहीं देती। माहम शरणार्थी है, शरणार्थी की रक्षा राजपूत का कर्तव्य है। यह कर्तव्य हमें पूरा करना है, फिर इससे दिल्ली का बादशाह नाराज़ हो या दुनिया का बादशाह।"

कार्य-प्रपत्र–9

(मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ; अलंकार; अपठित बोध)

1. (क) निन्यानवे का फेर– निन्यानवे का फेर बड़ा खराब होता है। इसमें आदमी अपना-पराया सब भूल जाता है।

   (ख) सूरज को दीपक दिखाना– धनुर्धर अर्जुन के बारे में कुछ कहना, सूरज को दीपक दिखाने वाली बात है।

   (ग) गागर में सागर– कबीर के दोहों की क्या बात है, बस दो ही पंक्तियों में गागर में सागर भर दिया है।

   (घ) रंगा सियार– अरे! उसकी बात मत मान बैठना, वह तो रंगा सियार है।

   (ङ) फूटी आँख न सुहाना– झूठ बोलने वाले लोग मुझे फूटी आँख नहीं सुहाते।

2. (क) दाल न गलना– काम न बनना।

   (ख) मुँह बंद कर देना– शांत कर देना।

   (ग) घोड़े बेचकर सोना– निश्चिंत रहना।

   (घ) आँखें खुलना– होश आना।

   (ङ) पीठ दिखाना– भाग जाना।

   (च) पत्थर की लकीर– पक्की बात।

   (छ) ओखली में सिर देना– जान-बूझकर संकट में फँसना।

3. (क) जल में रहकर मगर से बैर– जिसके आश्रय में रहना उसी से बैर करना।

   (ख) चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए– कंजूस की जान भले चली जाए पर वह पैसा नहीं निकलने देता।

   (ग) नाच न जाने आँगन टेढ़ा– अयोग्यता छिपाने के लिए बहाने बनाना।

   (घ) आप भले जग भला– अच्छे को सभी अच्छे लगते हैं।

   (ङ) अंधा क्या चाहे दो आँखें– जो वस्तु जिसके लिए आवश्यक होती है, वह उसी को पाना चाहता है।

4. (क) छोटी-छोटी बातों पर मुँह फुलाना नहीं चाहिए।

   (ख) वह अखबार भी नहीं पढ़ सकता। उसके लिए तो काला अक्षर भैंस बराबर है।

   (ग) चोरी करते पकड़े जाने पर साधु की कलई खुल गई।

5. (क) ऊँट के मुँह में जीरा– पं० रामचरन जी को भोजन में दस पूरियाँ भिजवाना ऊँट के मुँह में जीरे के समान है क्योंकि पचास पूरियाँ खाकर ही वे डकार लेते हैं।

(ख) अंधों में काना राजा– पूरा गाँव तो निरक्षर है, सिर्फ़ रामलाल ही कुछ पढ़-लिख सकता है। इसलिए वही अकड़ में रहता है। ठीक ही कहा है– अंधों में काना राजा।

(ग) ऊँची दुकान फीका पकवान– हमने तो रामप्रसाद दरज़ी का नाम बहुत सुना था। जब उससे कमीज़ सिलवाई तो पछता रहे हैं– ऊँची दुकान फीका पकवान।

6. (क) चोर की दाढ़ी में तिनका–जैसे ही लेखिका महादेवी वर्मा को पता चला कि गौरा को गुड़ में डालकर सुई खिलाई गई है तो उनका नौकर भाग गया। सच ही कहा है– चोर की दाढ़ी में तिनका।

(ख) दबे पाँव निकल जाना– इस कमरे से दबे पाँव निकल जाना, क्योंकि अंदर बच्चा सो रहा है।

(ग) आगे कुआँ पीछे खाई– कुछ समझ में नहीं आता क्या करें। दिल का ऑपरेशन करवाएँ तो मौत का डर है, नहीं करवाएँ तो चलना-फिरना मुश्किल–आगे कुआँ पीछे खाई।

(घ) सुध-बुध खोना– अचानक बहुत से मेहमानों को देखकर नेहा ने अपनी सुध-बुध खो दी।

(ङ) थोथा चना बाजे घना– सुरेश का छोटा-सा व्यापार है, पर स्वयं को बड़ा बताता फिरता है। इसे कहते हैं–थोथा चना बाजे घना।

7. (क) अनुप्रास अलंकार

(ख) उपमा अलंकार

(ग) श्लेष अलंकार

8. (क) काव्य की शोभा बढ़ाने वाले गुण धर्मों को 'अलंकार' कहते हैं। इसके दो भेद हैं– 1. शब्दालंकार, 2. अर्थालंकार।

9. (क) वसंत शीत ऋतु के खत्म होने का संदेश लाता है।

(ख) वसंत ऋतु में व्यक्ति नई चेतना एवं स्फूर्ति का अनुभव करता है।

(ग) वसंत ऋतु में युवा-मन चहक उठते हैं।

(घ) 'जिह्वा' का समानार्थी शब्द है–'जीभ'।

(ङ) शीर्षक – 'वसंत ऋतु'।

10. (क) प्रारंभ में धूम्रपान लोग फ़ैशन में करते हैं और धीरे-धीरे फ़ैशन व्यसन में बदल जाता है।

(ख) धूम्रपान से खाँसी, श्वास, फेफड़ों की खराबी तथा कैंसर जैसी बीमारियाँ लग जाती हैं।

(ग) बीड़ी-सिगरेट के धुएँ में निकोटीन होती है जो स्वास्थ्य के लिए घातक होती है।

(घ) 'कठिन' का विलोम है–'सरल'।

(ङ) शीर्षक – 'धूम्रपान स्वास्थ्य के लिए हानिकारक'।

कार्य-प्रपत्र–10

(डायरी-लेखन; संवाद-लेखन; विज्ञापन-लेखन; कहानी-लेखन एवं संदेश-लेखन)

1. 20 सितंबर, 20xx बुधवार

आज का दिन बहुत अच्छा बीता। विद्यालय की प्रार्थना-सभा में समस्त विद्यार्थियों के सामने मुझे अंतर्विद्यालयी हिंदी प्रतियोगिता में जीता गया प्रथम पुरस्कार दिया गया। घर आने पर मैंने माता-पिता को पुरस्कार दिखाया। यह देखकर वे बहुत खुश हुए। उन्होंने मुझे ढेर सारा आशीर्वाद दिया। अब मैं नहाने और खाना खाने के बाद पढ़ने जा रहा हूँ।

अक्षत

2. सीमा – राधा बहन, आप इतनी चिंतित क्यों हो?

राधा – क्या बताऊँ बहन, महँगाई दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। घर का खर्च चलाना मुश्किल हो रहा है।

सीमा – हाँ बहन सही कहा तुमने, आमदनी अठन्नी और खर्चा रुपया वाली बात है।

राधा – सब्ज़ी हो या राशन, कपड़े हों या पढ़ाई हर क्षेत्र में महँगाई का असर है। हर चीज़ में कटौती करनी पड़ती है।

सीमा – हम मध्यम वर्ग के लोग इस महँगाई की चक्की में पिस्ते जा रहे हैं।

राधा – सही कहा बहन, अब तो सरकार पर ही भरोसा है कि वह इसके लिए कुछ कदम उठाए।

सीमा – हाँ, अब तो इसी की आस है बहन।

3. **चित्रकला प्रतियोगिता चित्रकला प्रतियोगिता चित्रकला प्रतियोगिता**

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि दिनांक 2 सितंबर, 20xx को बाल विकास विद्यालय में चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन होने जा रहा है।

इच्छुक प्रतिभागी
30 अगस्त, 20xx तक संपर्क करें।
पता – बाल विकास विद्यालय, जयपुर
मोबाइल नं०- 75432xxxxx

4. एक गाँव के नज़दीक एक घना जंगल था। उस घने जंगल में एक शेर रहता था। गाँववाले शेर से बहुत परेशान थे। शेर से छुटकारा पाने के लिए गाँववालों ने एक पिंजरा बनवाया। उस पिंजरे को उन्होंने वहाँ रख दिया जहाँ से शेर आता था। जब शेर रात को अँधेरे में गाँव की ओर जा

रहा था तो गलती से पिंजरे के अंदर चला गया। शेर के भार से पिंजरा अपने आप बंद हो गया। शेर बहुत चिल्लाया पर वहाँ उसकी सुनने वाला कोई नहीं था। काफ़ी देर बाद एक यात्री वहाँ से गुज़रा। शेर ने बहुत मासूमियत से गिड़गिड़ाते हुए यात्री से कहा कि मैं काफ़ी देर से इस पिंजरे में बंद हूँ। कृपया मुझे बाहर निकाल दीजिए। मैं ज़िंदगी भर आपका अहसानमंद रहूँगा। यात्री को शेर पर दया आ गई और उसने पिंजरे का दरवाज़ा खोल दिया। पिंजरे से बाहर आते ही शेर ने यात्री से कहा कि मैं तुझे खा जाऊँगा। यात्री ने शेर से ऐसा न करने के लिए कहा, लेकिन शेर नहीं माना। अब यात्री ने शेर से तीन निर्णायकों द्वारा इस संबंध में फ़ैसला कराने का आग्रह किया। इस पर शेर राजी हो गया। गीदड़, बैल और घोड़े को निर्णायक बनाया गया। बैल और घोड़े ने शेर द्वारा यात्री को खाने के पक्ष में निर्णय दिया। लेकिन गीदड़ का कहना था कि वह देखना चाहता है कि शेर पिंजरे के अंदर कैसे था? वास्तव में गीदड़ यात्री को बचाना चाहता था। जैसे ही शेर दोबारा पिंजरे में गया तो गीदड़ ने पिंजरे का दरवाज़ा फिर से बंद कर दिया। यात्री ने गीदड़ का धन्यवाद किया और वहाँ से शीघ्र चला गया। इस तरह गीदड़ ने अपनी चतुराई से एक यात्री की जान बचा दी।

शिक्षा–दुष्ट पर दया करना ठीक नहीं।

5.

संदेश

दिनांक : 15-10-20xx समय : प्रातः 6 बजे

प्रिय मित्र मयंक

आज दीपावली के शुभ अवसर पर आपको और आपके पूरे परिवार को हमारी तरफ़ से दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ। मैं आशा करता हूँ कि आप सभी लोग सकुशल होंगे और दीपावली में ढेर सारे दीप जलाकर खुशियाँ मना रहे होंगे। इस दीवाली के अवसर पर आप सभी को माता लक्ष्मी का ढेर सारा आशीर्वाद मिले और आप लोग शांति और समृद्धि हासिल करें।

आपका मित्र

प्रदीप

कार्य-प्रपत्र–11

(पत्र-लेखन; अनुच्छेद-लेखन एवं निबंध-लेखन)

1. प्रधानाचार्य महोदय

नवभारत पब्लिक स्कूल

झाँसी, उत्तर प्रदेश

विषय– क्रीड़ा-सामग्री की दयनीय दशा से अवगत कराना

महोदय

सविनय निवेदन यह है कि हमारे विद्यालय में क्रीड़ा-सामग्री समाप्त हो गई है। क्रिकेट का सामान टूट-फूट गया है, उसकी गेंद भी काफ़ी पुरानी हो चुकी है। वॉलीबॉल और बास्केटबॉल भी जर्जर अवस्था में हैं। खेलों की प्रतियोगिता भी नज़दीक हैं। अतः आपसे प्रार्थना है कि विद्यालय में समुचित क्रीड़ा-सामग्री उपलब्ध कराने की कृपा करें।

आशा है आप हम लोगों की प्रार्थना पर जल्द ही ध्यान देकर विद्यालय में खेल के सामान की उचित व्यवस्था करने की कृपा करेंगे।

आपका आज्ञाकारी शिष्य
अमित भार्गव
दिनांकः 15 दिसंबर, 20xx

2. 428, सेक्टर-45
मयूर विहार
दिनांक 10 अगस्त, 20xx
मधुर स्नेह

आशा करता हूँ कि तुम स्वस्थ और सकुशल होगे।

अभी तुम जिस दौर और उम्र से गुज़र रहे हो इस उम्र में विशेष रूप से संगति का असर बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस पत्र द्वारा मैं तुम्हें सत्संगति और कुसंगति के बारे में बताऊँगा। कुसंगति का असर इतना ज़्यादा प्रभावी होता है कि इससे तुम्हारा समस्त शैक्षिक रिकॉर्ड खत्म हो जाएगा। जिस प्रकार एक सड़ा सेब टोकरी के समस्त सेब को सड़ा देता है, उसी प्रकार कुसंगति तुम्हारे व्यक्तित्व को धूमिल कर देगी। मैं तुम्हें यही सलाह देना चाहूँगा कि हमें सदैव कुसंगति से बचना चाहिए। शेष सब कुशल है। सभी लोगों का प्यार तुम्हें भेज रहा हूँ।

तुम्हारा अग्रज
नमन

3. **भारत का मंगल अभियान : एक गौरव गाथा**–24 सितंबर, 1914 को मंगल पर पहुँचने के साथ ही भारत विश्व में अपने प्रथम प्रयास में सफल होने वाला पहला देश है। यह नासा, सोवियत रूस और यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी के बाद दुनिया का चौथा देश बन गया। इसके अलावा मंगल पर भेजा गया यह सबसे सस्ता मिशन है। इस मिशन को पूरा करने में 450 करोड़ रुपये लगे। यह नासा के पहले मंगल मिशन का दसवाँ तथा चीन और जापान के नाकाम मंगल अभियान का एक चौथाई भर है। मंगलयान का मुख्य उद्देश्य भारत के रॉकेट प्रक्षेपण प्रणाली, अंतरिक्ष यान के निर्माण तथा संचालन क्षमताओं का प्रदर्शन करने के लिए है। मुख्य रूप से मिशन का पहला उद्देश्य ग्रहों के बीच के लिए मिशन, उपग्रह डिज़ाइन योजना तथा प्रबंधन के लिए आवश्यक तकनीक का विकास करना। मंगलयान पृथ्वी की कक्षा के सबसे नज़दीकी बिंदु पेरोगी में जाकर

स्थापित हो गया जो की पृथ्वी की सतह से लगभग 248 किलोमीटर की दूरी पर है। इसके बाद पृथ्वी की कक्षा में निरंतर चक्कर काटने के बाद ओपीजी पर जा पहुँचा जो की पृथ्वी से 23,550 किलोमीटर की दूरी पर है। उसके बाद यह मंगल ग्रह की ओर चल पड़ा। भारत का मंगल ग्रह जाने का सपना साकार हो गया। भारत की इस उपलब्धि पर इसरो के वैज्ञानिकों ने बहुत ही ज़्यादा खुशी व्यक्त की है। भारतीय मंगलयान ने अपनी कामयाबी को छू लिया है। मंगलयान ने अपने तीन वर्ष पूरे कर लिए हैं साथ ही दो हज़ार रुपये के भारतीय नोट पर भी इसने अपना स्थान बना लिया है।

4. **स्वच्छ भारत अभियान**–स्वच्छ भारत अभियान भारत सरकार द्वारा चलाया जा रहा एक सफ़ाई अभियान है, जो कि भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा महात्मा गांधी की 145वीं जन्मतिथि पर उनके स्वच्छ भारत के सपने को साकार करने के उद्देश्य शुरू किया गया था। इस अभियान के अंतर्गत सरकार द्वारा विभिन्न प्रयास किए जा रहे हैं और प्रधानमंत्री मोदी ने देश के नागरिकों को अपना पूरा योगदान देने को कहा है ताकि भारत जल्द-से-जल्द एक स्वच्छ देश बन सके। इस अभियान की शुरुआत में स्वयं प्रधानमंत्री ने रोड साफ़ कर इस अभियान का श्रीगणेश किया था।

   भारत का अगर हर एक शहर, गाँव, सड़क, गली साफ़-सुथरी होंगी तो हमारा वातावरण भी शुद्ध रहेगा, जिससे लोग बीमार कम पड़ेंगे और इससे देश के आर्थिक विकास में भी सहायता होगी। इसी सिद्धांत के तहत भारत सरकार ने 'स्वच्छ भारत अभियान' की नींव रखी। स्वच्छ भारत अभियान से हमारा देश केवल स्वच्छ ही नहीं होगा, इससे देश में हर तरफ़ खुशहाली आएगी और लोग खुश रहेंगे, क्योंकि अगर हमारे आसपास की जगह साफ़-सुथरी होगी तो हम भी खुश रहेंगे। स्वच्छ भारत अभियान का जब आगाज़ किया गया उसमें प्रसिद्ध हस्तियों को जोड़ा गया तब से देश कि जनता ने साफ़-सफ़ाई पर ज़ोर दिया और जहाँ गंदगी दिखाई देती तो तुरंत सोशल मीडिया के जरिए उस गंदगी का रूबरू उनसे संबंधित कर्मचारी को भेज देते हैं, जिससे वह कर्मचारी वहाँ की सफ़ाई तुरंत प्रभावी ढंग से कर सकें।

   स्वच्छ भारत अभियान से भारतीय नागरिकों में शौच, सफ़ाई आदि की जागरूकता फैलने के साथ-साथ उनके जीवन स्तर में भी सुधार देखने को मिला है। इस अभियान का यह असर हुआ कि देश के कोने-कोने से हर व्यक्ति इसमें भाग लेने लगा, जिससे देश पहले की तुलना में साफ़ होने लगा। यदि सभी नागरिक ऐसे ही प्रयत्न करते रहे तो जो सपना देखा गया है, उसके पूर्ण होने में देर नहीं लगेगी।

Notes